MATS UNIVERSITY

NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

हिन्दी भाषा एवं समसामयिकी

बैचलर ऑफ़ आर्ट्स (बी.ए.)

तृतीय सेमेस्टर

SELF LEARNING MATERIAL

COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

1- Prof.(Dr.) Reshma Ansari, HOD Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh
2- Dr. Sudhir Sharma , Subject Expert ,HOD Hindi Department, Kalyan College, Bhilai
3- Dr. Kamlesh Gogia Associate Professor, MATS University ,Raipur, Chhattisgarh
4- Dr. Sunita Shashikant Tiwari Associate Professor, MATS University Raipur Chhattisgarh
5- Dr. Rajesh Kumar Dubey , Subject Expert, Principal , Shahid Rajeev Pandey Government College ,Bhatagaon , Raipur ,Chhattisgarh

COURSE COORDINATOR

Prof.(Dr.) Kamlesh Gogiya, Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

COURSE /BLOCK PREPARATION

Prof.(Dr.) Reshma Ansari, HOD Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

March, 2025

ISBN-978-93-49916-65-4

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & Published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhudu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer-Publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from contents of this course material, this is completely depends on AUTHOR'S MANUSCRIPT.
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

Acknowledgement

The Material (Pictures and images) we have used is purely for educational purpose. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Sould any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future of this book.

अनुक्रमणिका

माड्यूल	विषय – हिन्दी भाषा एवं समसमायिकी – III	
माड्यूल – 1	हिन्दी की प्रमुख प्रतिनिधि रचनाएँ इकाई – 1 भारतमाता (कविता) – सुमित्रानंदन पंत 2. परशुराम की प्रतीक्षा – रामधारी सिंह दिनकर 3. बहुत बड़ा सवाल (एकांकी) –मोहन राकेश 4. संस्कृति और राश्ट्रीय एकीकरण –योगेश अटल	1-50
	इकाई – 2 कथन की शैलियां 1 विवरणात्मक शैली 2. मूल्यांकन शैली 3. व्याख्यात्मक शैली 4. विचारात्मक शैली	51-61
माड्यूल – 2	प्रतिवेदन एवं शैली संरचना इकाई – 3 1. विकासशील देशों की समस्याएं : मानव विकास प्रतिवेदन – डॉ. रामशंकर तिवारी 2. विकासात्मक पनु र्विचार : कल्याण के प्रश्न डॉ. ओकारशरण श्रीवास्तव	62-73
	इकाई – 4 विभिन्न संरचनाएं 1. विनम्रता सूचक संरचना 2. विधि सूचक संरचना 3. निशेधपरक संरचना 4. कालबोधक संरचना 5. स्थानबोधक संरचना 6. दिशा बोधक संरचना 7. कारण–कार्य सम्बन्ध संरचना 8. अनुक्रम संरचना	74-92

माड्यूल – 3	निबंध इकाई – 5 प्रौद्योगिकी एवं नगरीकरण 1. डॉ. रामशंकर तिवारी 2. आधुनिक तकनीकी सभ्यता डॉ. रामशंकर तिवारी 3. पर्यावरण प्रदूषण तथा धारणीय विकास डॉ. चन्द्रलेखा रघुवंशी	93-110
माड्यूल – 4	कार्यालयीन पत्र एवं आलेख इकाई – 6 कार्यालयीन पत्र एवं आलेख 1. परिपत्र 2. आदेश 3. अधिसूचना	111-129
	इकाई – 7 1. ज्ञापन 2. अनुस्मारक 3. पृष्ठांकन	130-137
माड्यूल – 5	आलेख एवं अनुवाद इकाई – 8 1. जनसंख्या रू भारत के संदर्भ में डॉ. हरिनारायण पटैरिया 2. गरीबी तथा बेरोजगारी	138-183
	इकाई – 9 अनुवाद – डॉ. आनन्द पयासी	184-193
	इकाई – 10 ऊर्जा – डॉ. अरूण रघुवंशी	194-211
	इकाई – 11 शक्तिमानता का अर्थशास्त्र डॉ. ओंकारशरण श्रीवास्तव	212-217
	इकाई – 12 1. घटनाओ समारोहो आदि का प्रतिवेदन 2. विभिन्न प्रकार के निमंत्रण–पत्र	218-249

इकाई – 1

(क)– 1 भारत माता

सुमित्रानंदन पंत

भारत माता

ग्राम–वासिनी !

खेतों में फैला है ष्यामल

धूल भरा मैला – सा अंचल गंगा–यमुना में आंसू –जल मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी !

दैन्य जड़ित, अपलक नत चितवन, अधरों में चिर नीरव रोदन, युग–युग के तम से, विशण्ण मन, वह अपने घर में प्रवासिनी !तीस कोटि सन्तान नग्न तन अर्ध, क्षुधित, षोशित, निरस्त्र जन मूढ़, असभ्य,अषिक्षित, निर्धन,

नत मस्तक; तरू – तल निवासिनी !

स्वर्ण षस्य पर पद–तल लुण्ठित, धरती – सा सहिश्णु मन कुण्ठित

क्रन्दन कंपित अधर मौन स्मित,

राहु ग्रसित षरदेन्तु हासिनी !

चिंतित भष्कुटि क्षितिज तिमिरांकित,

नमित नयन–नभ वाश्पाच्छादित,

आनन श्री छाया – षषि उपमित,

ज्ञान–मूढ़

गीता प्रकाषिनी!

भारत माता

सफल आज उसका तप संयम, पिता अहिंसा स्तन्य सुधोपम,

हरती जन–मन भय, भव–तम–भ्रम,

जन–जननी

जीवन विकासिनी !

(भारत माता कविता पंत जी ने जनवरी 1940 में लिखी थी । उस समय भारत माता पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी अतः उसकी विपन्नता, दीनता तथा विशाद का चित्रण कवि ने किया है ।)

लघुत्तरीय प्रष्न

1. भारत माता कहां रहती है?

2. भारत माता सिर झुकाये किसके नीचे निवास कर रही है?

3. हमारी भारतमाता किसकी उन्नति चाहती है?

4. भारत माता का तप कब सफल हुआ?

5. भारत माता कविता का आषय समझाइए ?

6. पंत जी की भाशा–षैली पर प्रकाष डालिए?

7. कवि ने प्रवासिनी किसको कहा है और क्यों?

8. भारत माता के स्वरूप को कवि ने किस तरह व्यक्त किया है?

9. भारत माता में कवि ने किस तरह के जनजीवन की विषेशताओं को चित्रित किया है?

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. भारत माता को ग्रस्त किया है

(क) राहु ने

(ख) केतु ने

(ग) चन्द्र ने

(घ) सूर्य ने

2. भारत माता जीवन–यापन कर रही है

(क) चिन्ताओं में डूबकर

(ख) वाश्पाच्छादित होकर

(ग) निराष होकर

(घ) प्रवासिनी के समान

3. भारत माता निवास करती हैं

(क) षहरों में

(ग) कस्बों में

(ख) जंगलों में (घ) ग्रामों में

4. भारत माता का मन है

(क) विद्रोही

(ग) संकीर्ण

(ख) निराष

(घ) सहनषील और उदार

2 परषुराम की प्रतीक्षा

हे वीर बन्धु ! दायी है कौन विपद का ? हम दोशी किसको कहें तुम्हारे वध का ?

रामधारी सिंह दिनकर

यह गहन प्रष्न; कैसे रहस्य समझायें? दस–बीस वधिक हों तो हम नाम गिनायें द्य

पर, कदम–कदम पर यहां खड़ा पातक है, हर तरफ लगाये घात खड़ा घातक है 1

घातक है, जो देवता–सदृष दिखता है, लेकिन, कमरे में गलत हुक्म लिखता है । जिस पापी को गुण नहीं; गोत्र प्यारा है, समझो, उसने ही हमें यहां मारा है ।

जो सत्य जान कर भी असत्य कहता है, या किसी लोभ के विवष मूक रहता है, उस कुटिल राजतंत्री कदर्य को धिक् है, यह मूक सत्यहन्ता कम नहीं वधिक है।

चोरों के हैं जो हितू, ठगों के बल हैं, जिनके प्रताप से पलते पाप सकल हैं, जो छल–प्रपंच, सब को प्रश्रय देते हैं, या चाटुकार जन से सेवा लेते हैं;

यह पाप उन्हीं का हमको मार गया है, भारत अपने घर में ही हार गया है ।

है कौन यहाँ, कारण जो नहीं विपद का ? किस पर जिम्मा है नहीं हमारे वध का ? जो चरम पाप है, हमें उसी की लत है, दैहिक बल को कहता यह देष गलत है ।

नेता निमग्न दिन–रात षान्ति – चिंतन में, कवि–कलाकार उपर उड़ रहे गगन में।

4 परषुराम की प्रतीक्षा

यज्ञाग्नि हिन्द में समिध नहीं पाती है, पौरूश की ज्वाला रोज बुझी जाती है ।

ओ बदनसीब अंधो ! कमजोर अभागो! अब भी तो खोलो नयन, नींद से जागो । वह अघी, बाहुबल का ऊजो अपलापी है, जिसकी ज्वाला बुझ गयी, वही पापी है ।

जब तक प्रसन्न यह अनल, सुगुण हँसते हैं; है जहाँ खड्ग, सब पुण्य वहीं बसते हैं। वीरता जहाँ पर नहीं, पुण्य का क्षय है, वीरता जहाँ पर नहीं, स्वार्थ की जय है ।

तलवार पुण्य की सखी, धर्मपालक है, लालच पर अंकुष कठिन, लोभ – सालक है । असि छोड़, भीरू बन जहाँ धर्म सोता है, पातक प्रचंडतम वहीं प्रकट होता है।

तलवों सोतीं जहाँ बन्द म्यानों में,

किस्मतें वहाँ सड़ती हैं तहखानों में । बलिवेदी पर बालियाँ – नथें चढ़ती हैं, सोने की ईंटें, मगर, नहीं कढ़ती हैं ।

पूछो कुबेर से, कब सुवर्ण वे देंगे? यदि आज नहीं तो सुयष और कब लेंगे? तूफान उठेगा, प्रलय–वाण छूटेगा, है जहाँ स्वर्ण, बम वहीं, स्यात् फूटेगा ।

जो करें, किन्तु, कंचन यह नहीं बचेगा, षायद, सुवर्ण पर ही संहार मचेगा द्य हम पर अपने पापों का बोझ न डालें, कह दो सब से, अपना दायित्व सँभालें ।

कह दो प्रपंचकारी, कपटी, जाली से, आलसी, अकर्मठ, काहिल, हड़ताली से, सी लें जबान, चुपचाप काम पर जायें, हम यहाँ रक्त, वे घर में स्वेद बहायें ।

परषुराम की प्रतीक्षा

तुम हम देंगे दो षस्त्र और अपना संकल्प अटल दो ।

को विजय, हमें तुम बल दो,

हों खड़े लोग कटिबद्ध वहाँ यदि घर में, है कौन हमें जीते जो यहाँ समर में?

हो जहाँ कहीं भी अनय, उसे रोको रे!

जो करें पाप षषि – सूर्य, उन्हें टोको रे!

जा कहो, पुण्य यदि बढ़ा नहीं षासन में, या आग सुलगती रही प्रजा के मनम ें; तामस बढ़ता यदि गया ढकेल प्रभा को, निर्बंध पंथ यदि मिला नहीं प्रतिभा को, रिपु नहीं, यही अन्याय हमें मारेगा,अपने घर में ही फिर स्वदेष हारेगा; 1962 के नेफा युद्ध के प्रसंग में परषुराम का नाम अत्यन्त समीचीन है । जब परषुराम पर मातष हत्या का पाप चढ़ा तो वे पिता के परामर्ष पर कैलाष पहुँचे और ब्रह्म कुंड में स्नान किया, जहाँ उनका मन पापमुक्त हो गया। ब्रह्मकुंड का एक नाम लोहित कुण्ड भी मिलता है। लोहित भारतवर्श का एक बड़ा ही पवित्र भाग है। यह कविता वीर रस पूर्ण आह्वान षैली में लिखी गई । दिनकर जी की अपने समय की यह एक बहुचर्चित कविता है ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. परषुराम की प्रतीक्षा कविता का भावार्थ अपने षब्दों में लिखिए ।

2. विपद का दामी कवि ने किसको कहा है?

3. वीरता का आह्वान कविता ने किस रूप में किया है?

4. भारत अपने घर में ही हार गया से कवि कि तरफ इषारा कर रहा है?

5. तलवार की महत्ता को कवि ने किस रूप में प्रतिपादित किया है?

6. जहाँ स्वर्ण बम वहीं से कवि का क्या अभिप्राय है?

7. कवि किसको स्वेद बहाने को कह रहा है?

8. षस्त्र और संकल्प के द्वारा कवि क्या पाने की प्रेरणा दे रहा है?

9. कवि किसके विरूद्ध खड़े होने को उत्प्रेरित कर रहा है?

10. प्रतिभा का सम्मान न होने पर देष की क्या स्थिति हो जायेगी?

11. प्रस्तुत कविता की विषेशताएं लिखिए ।

12. कवि किन बातों को लेकर चिन्तित है और क्यों ।

13. राश्ट्रकवि दिनकर ने राश्ट्र के प्रति अपनी सद्भावना किस रूप में व्यक्त की है ?

14. हिन्दी भाषा एवं समसायिकी

15. परषुराम की प्रतीक्षा कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाष डालिए ।

16. दिनकर ने राश्ट्र के उज्जवल भविश्य की कल्पना किस रूप में की है ?

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. कदम कदम पर यहाँ खड़ा है –

(क) लोभ

(ख) चातक

(ग) पातक

(घ) घातक

2. जहाँ खड्ग होती है, वहाँ बसते हैं –

(क) लालच

(ख) पुण्य

(ग) पाप

(घ) स्वार्थ

3.पुण्य की सखी है

(क) वीरता

(ग) तलवार

4. चुपचाप काम पर जायेंरू

(क) वीर

(ग) राजतंत्री

5. बल के बदले हम तुमको देंगे –

(क) सुवर्ण

(ग) विजय

6. रिपु नहीं, हमें मारेगा–

(क) अधर्म

(ख) किस्मत

(घ) ज्वाला

(ख) हड़ताली

(घ) धर्मपालक

(ख) तलवार

(घ) षस्त्र

(ख) तामस

(ग) अन्याय

(घ) पाप

3 बहुत बड़ा सवाल

मोहन राकेष

पात्र – परिचय

कपूर

मनोरमा

सन्तोश

गुरप्रीत

प्रेम प्रकाष

दीन दयाल

रमेष

मोहन

सत्यपाल

स्थान

एक स्कूल का कमरा, जिसे ब्लेक बोर्ड कोने में हटाकर मीटिंग के लिए तैयार कर लिया है। मास्टर की कुर्सी – मेज अध्यक्ष के लिए है और बच्चों के डेस्क षेश सदस्यों के लिए। पीछे दीवार पर संसार का बहुत बड़ा मानचित्र लटक रहा है आने–जाने के लिए दोनों तरफ दरवाजे हैं। परदा उठने पर रामभरोसे और ष्याम भरोसे डेस्कों से धूल झाड़ रहे हैं ।

ष्याम भरोसे

(हाथ रोककर) राम भरोसे !

(रामभरोसे बिना सुने धूल झाड़ता रहता है ।)

(बिना हाथ रोके) क्या है?

ष्याम भरोसे इतनी धूल

क्यों उड़ाता है। आहिस्ता से नहीं झाड़ा जाता?

रोज–रोज की धूल फेफड़े पहले ही खाये

तो रोता क्यों है? जान पांच बरस में नहीं जायेगी, चार बरस में चली जायेगी द्य तू अपनी जान चाहे पांच बरस में दे, चाहे एक बरस में । पर मेरी जान अभी रहने दे।

ससुर रोज–रोज ये मीटिंग होंगी, तो किसकी जान रहेगी? आज एक का जन्म–दिवस होकर निकलता है, तो कल दूसरे का मरन – दिवस आ जाता है। जनमें – मरें ये, धूल खायें राम भरोसे, ष्याम भरोसे ।

(जोर–जोर से झाड़ता हुआ) सबेरे निकालो, तो षाम को चली आती है ।

षाम को निकालो, तो सबेरा नहीं होने देती ।

आज भी किसी का जनम – दिवस है क्या?

पता नहीं, कौन दिवस है? अपना मरन – दिवस है ।

ढीले–ढाले ढंग से फाइल हाथ में लिये षर्मा बाहर से आता है

(अपने–आप बड़बड़ाता हुआ) अभी तक कोई नहीं है यहां!

माने–जो आने वाले थे, उनमें से कोई भी । लोग समझते हैं, मेरे बाप के घर का काम है। जैसे मुझे तनख्वाह मिलती है इसकी । कोई एक आदमी वक्त से नहीं

आता।

साहब, आज किसी की साल – गिरल है यहाँ पर ?

मेरे झख मारने की सालगिरह है। तुम लोगों से अभी तक डेस्क साफ नहीं हुए?

देख रहे हो, कर ही रहे हैं ।

साढ़े पाँच बजे मीटिंग षुरू होनी थी और पौने छह बज रहे हैं। लोग देर से आयें,

तुम

लोगों को तो जगह वक्त से तैयार कर देनी चाहिए ।

एक घड़ी दिला दो, साहब! तब हम वक्त से सब काम कर सकते हैं। हमें क्या मालूम, कब पाँच बजता है, कब साढ़े पाँच?

स्कूल में वक्त से घंटी नहीं बजाते?

सुपरीडेंट की डांट सुनकर बजाते हैं, घड़ी तो स्कूल की कब से खराब पड़ी है।

आप लोगों के हाथ पर लगी रहती है, फिर भी देर कर जाते हो। हमारी तो कोई बात ही नहीं है ।

और जल्दी कर दें, तो डाँट पड़ती है, कि जल्दी क्यों किया, फिर से

धूल भर गयी । जल्दी न करें, तो डाँट पड़ती है जल्दी क्यों नहीं किया, टाइम बरबाद हो रहा है । कोई जादू तो जानते नहीं । हाथ से काम करते हैं, सो कर रहे हैं।

बक–बक मत करो, काम करो । अभी कितना काम बाकी है ।

क्लास सारी झाड़ दी है। मास्टर की कुरसी बाकी है ।

(जाकर उस कुरसी – मेज को साफ करने लगता है ।)

लो हो गयी यह भी । और बता दो जो झाड़ना हो । ब्लेक बोर्ड तो नहीं चाहिए?

नहीं। पर दोनों आदमी कहीं जाना नहीं । यहीं दरवाजे के पास बैठना ।पता नहीं,

किस काम के लिए जरूरत पड़ जाये ।

(आगे की डेस्क पर बैठने लगता है, पर सहसा उठ जाता है ।) यह सफाई की है ? देखो, कितनी धूल जमी है यहाँ ! सफाई इस तरह से की जाती है ?

क्या पता साहब, किस तरह से की जाती है। किसी स्कूल से इस काम की पढ़ाई तो पढ़े नहीं है ।

सुपरीडेंट कहता है, सीधा झाड़ना मारो, सो सीधा मार देते हैं । आप कोई तरीका बताओ, तो वैसे कर देते हैं ।

नानसेंस ! अब जैसा हुआ है, रहने दो।

रू रहने दो, तो रहने देते हैं ।

षर्मा रूमाल से सीट साफ करके डेस्क पर बैठ जाता है ।

जाओ, बाहर बैठो अब ।

क्यों साहब, मीटिंग बरखास्त कब होगी?

मनोरमा

क्या पता, कब होगी, तुम्हें क्या करना है ?

कमरे को ताला नहीं लगाना है? ताला लगेगा, तभी हो यहां से जा पायेंगे। नहीं तो सुपरीडेंट कल हमारी जान को आयेगा ।

(वह और राम भरोसे दोनों दायीं तरफ के दरवाजे के बाहर जो बैठते हैं। राम भरोसे हाथ पर सुरती मलने लगता है। ष्याम भरोसे ऊँघने की मुद्रा में टेक लगा लेता है। मनोरमा, संतोश और गुरप्रीत उसी दरवाजे से आती हैं। राम भरोसे आँखें उठाकर चिढ़े हुए भाव से उन्हें आते देखता है।)

रू क्या बात है, षर्मा? पहरा क्यों बिठा रखा है बाहर ? मीटिंग में मार–धाड़ तो नहीं

होने वाली है?

(उठता हुआ) साढ़े पांच हो गये आप लोगों के?

मनोरमा षर्मा

अभी कोई भी तो नहीं आया, सिवाय हमारे ।

संतोश

मनोरमा

साढ़े डह तक आराम से आयेंगे लोग। वक्त की पाबन्दी तो सिर्फ एक आदमी पर है । क्योंकि वह कमबख्त सेक्रेटरी है।

मैंने इसीलिए अपना नाम वापस ले लिया था। मुफ्त की सिर–दर्दी द्य

रू तूने इसीलिए नाम वापस ले लिया था कि षर्मा के खिलाफ तुझे तीन वोट भी न

मिलते! अवर षर्मा इज ग्रेट द्य

संतोश लांग लिव षर्मा !

मनोरमा

(गुरप्रीत से) तू इतनी गुपचुप क्यों है?

संतोश

गुरप्रीत

षर्मा के सामने यह हमेषा गुपचुप हो जाती है ।

प्लीज !

(कपूर मुस्कुराता हुआ बांयी तरफ के दरवाजे से आता है ।)

कपूर

वाह, वाह !

मनोरमा

वाह, वाह!

कपूर मनोरमा

कपूर

आप किस चीज की दाद दे रही हैं?

आपकी वाह–वाह की ।

मैं तो इस बात पर वाह–वाह कर रहा था कि षर्मा तीन–तीन लेडिज से घिरा है।

सेक्रेटरी होने के ये मजे होते हैं ।

षर्मा

आज से तुम सेक्रेटरी हो जाओ ।

मनोरमा और षर्मा को चेयरमेन बना दीजिए ।

कपूर संतोश

चेयरमेन मत कहिएकृकृकृ वह कहिए कृकृ क्या होता है वह

अधि–अक्ष ।

अध्यक्ष ।

कपूर षर्मा

(जोर देकर) अधि–अक्ष द्य वह तुम्हारा अधि–अक्ष अभी तक नहीं आया, षर्मा? तुम्हीं कौन वक्त से आ गये हो?

कपूर मनोरमा

दस–बीस मिनट लेट, लेट नहीं होता । और फिर मैं तो साधारण सदसिय हूँ ।

सीधे मेम्ब क्यों नहीं कह देते ? सदसिय !

कपूर मनोरमा

वह लफ्ज क्या है वैसे?

सदस्य ।

कपूर मनोरमा

सदसिय ।

कपूर

(जोर देकर) सदस्य ।

(जोर देकर) सदसिय । मैं पहले ही कहता था, इस आदमी को चेयरमेन नहीं बनाना चाहिए। आज छुट्टी का दिन है, वैसे भी ठंड है, घर में रजाई में दुबककर

सो रहा होगा । सो रहा होगा । सॉरी घर में नहीं, वह होगा आजउसके य हाँ

संतोश

किसके यहाँ?

गुरप्रीत

प्लीज !

संतोश गुरप्रीत

नाम तो जान लेने दे ।

प्लीज ! प्लीज ! प्लीज !

कपूर

संतोश

जानती है तू ?

गुरप्रीत

गुरप्रीत जी नाम जानती हैं।

मैं इसीलिए आप लोगों की मीटिंग में नहीं आना चाहती। यहां काम तो कुछ होता नहीं, बस इसी तरह की बातें होती रहती हैं ।

कपूर संतोश

गुरप्रीत जी की सहेली है वह ।अच्छा........ वह ?

कपूर

हाँ वहीं ।

संतोश

यह कब से ।

1 1 कम–से–कम चेयरमेन तो आ जाये । क्यों षर्मा, तब तक एक–एक प्याली चाय

कपूर

संतोश

कपूर

कब से ? दो साल से तो मैं ही जानता हूँ।पर वह तो पहलू

रू आप बहुत पुरानी बात कर रही हैं। लगता है, आप षहर में नहीं रहतीं ।

संतोश

(गुरप्रीत से) सच बात है यह?

गुरप्रीत

(षर्मा से) मैं जान सकती हूँ, मीटिंग कब षुरू होगी?

कपूर

मनोरमा

कपूर

षर्मा

गुरप्रीत

न पी ली जाये ? ठंड आज वाकई बहुत है । क्यों, मनोरमा जी ?

रू आई डोंट माइन्ड ।

रू (सुरती फाँक कर) फरमाइए ।

जा कर लाला से एक सेट चाय ले आ । पांच प्यालियां ।

मैं नहीं पिऊँगा ।

मैं भी नहीं लूंगी।

आपको लेनी चाहिए। आपकी तबीयत सुस्त लग रही है।

थैंक्स । मुझे इस वक्त जरूरत नहीं है ।

राम भरोसे, आधा सेट और तीन प्यालियां ।

षर्मा से भी तो दूसरी बात पूछ लेते।

क्यों भई, षर्मा ?

कपूर गुरप्रीत

कपूर मनोरमा

कपूर षर्मा

कपूर

संतोश

कपूर षर्मा

पचीस पैसे की मूँगफली ।

राम भरोसे

मनोरमा

यह मीटिंग का वक्त है, चाय पीने का नहीं ।

राम भरोसे । आधा सेट और तीन प्यालियां ।

साथ थोड़ी मूँगफली; षर्मा मूँगफली खायेगा !

मैं ठीक छह बजे मीटिंग षुरू कर दूंगा। तुम लोग चाय पीते रहना ।(राम भरोसे सहज भाव से चल कर षर्मा के पास आ जाता है ।)(षर्मा से) पैसे आप देंगे या?

कपूर साहब देंगे द्य

(कपूर जेब से बटुवा निकालकर देखता है ।)

रू मेरे पास दस का नोट है ।

(कपूर राम भरोसे को नोट देता है ।)

कपूर मनोरमा

कोई बात नहीं, टूट जायेगा ।

कपूर राम भरोसे

(जाते–जाते) जितनी गिनती आती है, उतना गिनकर ले आयेंगे ।

चेंज गिनकर लाना;

गुरप्रीत

संतोश

कपूर

षर्मा

मनोरमा

मुझे आज मीटिंग होती नहीं लगती।

अभी तो कोरम ही पूरा नहीं है ।

क्यों न मीटिंग केंसिल करके सब लोग कैंटिन में चलकर चाय पियें?

मीटिंग कैंसिल नहीं होगी। आज की छुट्टी तो बरबाद हुई ही है, फिर एक और छुट्टी बरबाद करनी पड़ेगी ।

सेक्रेटरी के मुंह से ऐसी बात अच्छी नहीं लगती ।

षर्मा

कपूर संतोश

कपूर

मनोरमा

कपूर

षर्मा

मैं तो इसी वक्त तयागपत्र देने को तैयार हूं। आप लोग मंजूर कर दीजिए ?

वाह! तिआगपतर कैसे दे सकते हो तुम ?

त्यागपत्र ।

(जोर देकर) तिआगपतर । तुम तिआगपतर दे दोगे, तो दूसरा सेक्रेटरी हमें कहां मिलेगा ?

हियर – हियर ! सेक्रेटरी षर्मा जिन्दाबाद द्य

सबकी तरफ से जिन्दाबाद !

ष्याम भरोसे!

संतोश सो रहा है वह ।

षर्मा (ऊँचे स्वर में) ष्याम भरोसे ।

ष्याम भरोसे

सुन रहे हैं, साहब! बोलिए तो ?

षर्मा

तुमसे मैंने क्या कहा था ?

ष्याम भरोसे

क्या कहा था?

षर्मा

बैठने को कहा था ।

तो हम बैठे ही हैं, खड़े तो नहीं हैं ।

लेकिन बैठे–बैठे ऊँघ रहे हो

मानुस हैं, साहब! रबड़ के पुतरे – नहीं हैं। आ गयी होगी ऊँघ । काम बताइए ।

राम भरोसे चाय लाने गया है ।

रू गया है । आपके सामने गया है।

मैं भी कह रहा हूं, गया है। तुम उसके पीछे चले जाओ द्य बोलो, चाय एकदम जल्दी आनी चाहिए ।

(उठता हुआ) बोल देते हैं, पर आयेगा तो पैरों से चलकर ही । हमारे जाने से उसके पंख तो उग नहीं आयेंगे ।

(गुस्से से) तो मत जाओ तुम द्य आने दो उसे, जब भी आता है।

(बैठता हुआ) नहीं जाते । वैसा हुकुम तो, वैसा। ऐसा हुकुम है, तो ऐसा ।

क्यों षर्मा, लो ग्रेड में ये लोग नहीं आते ?

तो इन्हें भी मेम्बर नहीं होना चाहिए ? लो ग्रेड वर्कर्ज वेल्फेयर सोसायटी जैसे हम

लोगों की है, वैसे ही इन लोगों की भी है।

है तो नहीं, पर होना चाहिए ।

कपूर षर्मा

कपूर

मनोरमा

संतोश

तब राम भरोसे चेयरमेन हो जायेगा, ष्याम भरोसे सेक्रेटरी ।

षर्मा

तुम मेरा अपमान कर रहे हो ।

अगर अपमान हो गया हो तो मैं माफी मांग लेता हूं। मैंने तो एक बात कही थी ।

(राम भरोसे चाय और मूंगफली लिये हुए आता है ।)

मनोरमा

लीजिए, चाय आ गयी ।

कपूर

गुरप्रीत जी, आप बनाइए चाय ।

गुरप्रीत

मुझे सबके टेस्ट का पता नहीं है ।

कपूर

आपको नहीं है पता ? बनाइए, बनाइए ।

संतोश

कपूर मनोरमा

सबसे छोटी और सबसेकृकृकृकृ ।

(गुरप्रीत से) सबसे छोटी तू ही है ।

कह दीजिए, कह दीजिए ।

कपूर

मनोरमा

सॉरी, मेरा वह मतलब नहीं था ।

(गुरप्रीत चाय बनाने लगती है । प्रेम प्रकाष, दीन दयाल बायीं तरफ से आते हैं ।) क्या मौके पर आये हैं आप लोग ।

चाय और मूंगफली । किसने दावत की है ?

कपूर साहब ने।

प्रेम प्रकाष मनोरमा

प्रेम प्रकाष

किस खुषी में ?

मनोरमा

आप लोगों के देर से आने की।

दीन दयाल

मैं एक प्याली ले सकता हूं ?

गुरप्रीत

दीन दयाल गुरप्रीत

प्रेम प्रकाष गुरप्रीत मनोरमा

(पहली प्याली उसकी तरफ बढ़ाकर) लीजिए ।

(प्याली लेकर) थैंक्स ।

(प्रेम प्रकाष से) आप भी लेंगे ।

क्यों नहीं ।

(प्याली बढ़ाकर) लीजिए। चीनी कम डाली है । अब तीसरी प्याली कौन लेगा ?

कपूर साहब, जिन्होंने चाय मंगवायी है ।

नहीं, नहीं आप लीजिए ।

आप तकल्लुफ कर रहे हैं । ले लीजिए ।

तकल्लुफ तो आप कर रहीं हैं ।

(मोहन बायीं तरफ से आता है ।)

मीटिंग षुरू नहीं हुई अभी ? चाय चल रही है ! यह एक्सट्रा प्याली किसके लिए रखी है? मैं ले सकता हूं ?

क्यों नहीं ?

(मोहन प्याली उठा पीने लगता है ।)

खूब गर्म चाय है । मेजबान कौन है ? दीन दयाल जी, आप ?

कपूर मनोरमा

कपूर

मोहन

गुरप्रीत

मोहन

दीन दयाल मोहन

मैं भी तुम्हारी मेहमान हूं ।

प्रेम प्रकाष

मोहन

संतोश

पैसे कपूर साहब के खर्च हुए हैं ?

मोहन संतोश

मोहन

तो प्रेम प्रकाष जी की तरफ से है चाय? (प्रेम प्रकाष से) धन्यवाद,

बहुत–बहुत धन्यवाद !

मुझे धन्यवाद क्यों देते हो ? मैं खुद मेहमान हूं।

हम तीनों मेहमान हैं ? तो मेजबान ?

पैसे खर्च किये हैं, फिर खुद नहीं पी रहे ? क्या बड़प्पन है!

बड़प्पन तो अपने–आप हो गया, जब कृकृकृ द्य

किसी—किसी में होता है ऐसा बड़प्पन । हमारी पहचान के एक साहब और हैं ऐसे ।

षादी– –षुदा हैं । वे अपनी पत्नी को खुद सैर कराने नहीं ले जाते, दोस्तों को ले जाने देते हैं ।

गुरप्रीत

प्लीज !

षर्मा

मोहन

षर्मा

मुझे ऐसी बातचीत पर सख्त एतराज है। मैं चाहूंगा कि हम मीटिंग का वातावरण गम्भीर रहने दें ।

मैं इसके बाद गम्भीर रहने की प्रतिज्ञा करता हूं। थोड़ी मूंगफली तो ले सकता हूं न ?

तो अब कार्यवाही आरम्भ की जाय ।(बाहर से एक ठहाका सुनायी देता है ।)

मनोरमा

अभी और लोग आ रहे हैं ।

मोहन

रमेष और सत्यपाल हैं । ऐसी वहषियाना हंसी और कोई हंस ही नहीं सकता।

कपूरदेखो, तुमने अभी प्रतिज्ञा की है कि मोहन

सॉरी, मगर कोई भी कह दे, यह हंसी इन्सानों की – सी है ।

रमेष

मोहन

सत्यपाल

रमेष

षर्मा

रमेष

मनोरमा

रमेष

(रमेष और सत्यपाल बायीं तरफ से आते हैं ।)

किसी हंसी इन्सानों की–सी नहीं है ?

मेरा मतलब आप की ही हंसी से था । लेकिन मैं अपने षब्द वापस लेता हूं। आप मूंगफली खाइए ।

यह जरा–सी मूंगफली आप किस–किस को खिलायेंगे ?

ले भी लो अब । षर्मा साहब, आप भी लीजिए ।

(एक दाना लेकर) तो मीटिंग की कार्यवाही अबकृकृकृकृ।

मनोरमा जी, आप परे क्यों खड़ी हैं? लीजिए न । कुछ आठ–दस दाने बचे हैं ।

ये कपूर साहब को दे दीजिए, वह बेचारेकृकृकृ!

आप लीजिए, उन्हें भी देता हूं द्य आप भी लीजिए, संतोश जी ! गुरप्रीत जी, आप छिप

क्यों रही हैं ? लीजिए, कुल दो ही दाने बचे हैं । अरे, दो में से भी एक दाना छोड़

दिया ? लीजिए, कपूर साहब !

कपूर

यह तुम ले लो।

रमेष

नहीं, आप ले लीजिए ।

कपूर

नहीं, तुम्हीं ले लो ।

रमेष

नहीं–नहीं द्य आप ले लीजिए ।

षर्मा

दोस्तों !

कपूर

दीन दयाल

ऐसा भी क्या तकल्लुफ है? आप दोनों मत लीजिए। मैं ले लेना हूं । थैंक्स ।

(षर्मा मास्टर जी कुरसी के पास चला जाता है ।)

पहले सब लोग बैठ जायें ।

मोहन

लेडीज फ्रन्ट । जेन्ट्स बैक

रमेष

क्यों? एक–एक डेस्क पर एक–एक पेयर क्यों नहीं ?

मोहन

लेडीज कम हैं, जेन्ट्स ज्यादा हैं ।

रमेष

तो दो–दो डेस्क जोड़ लिये जायें जिससे कृकृकृकृ ।

मोहन

मुझे कोई एजराज नहीं ।

षर्मा

मुझे एतराज है । डेस्क इतने हैं कि एक – एक डेस्क पर एक – एक आदमी बैठ

सकता है। जहां–जहां बैठना हो बैठ जाइए ।

मोहन

इस सुझाव से कौन – कौन सहमत हैं ?

कौन–कौन

मनोरमा

हम सब सहमत हैं ।

मोहन

आप सब सहमत हैं, तब तो कुछ कहने को बचता ही नहीं ।

षर्मा

सत्यपाल

(एक डेस्क पर बैठ जाता है ।और लोग भी बिखरकर बैठ जाते हैं ।)

मैं समझता हूं, अब और किसी के आने की आषा नहीं करनी चाहिए ।अध्यक्ष महोदय नहीं आये, इसलिए आज की मीटिंग की अध्यक्षता के लिए मैं कपूर साहब के नाम का प्रस्ताव करता हूं ।

मैं इसका समर्थन करता हूं ।

रू आइए, कपूर साहब !

(कपूर मास्टर की कुर्सी पर जा बैठता है ।सब लोग ताली बजाते हैं ।) रू (गला साफ करके) भाईयों और बहनकृकृकृ द्य

मेरा एक संषोधन है। बहनों पहले और भाईयों बाद में होना चाहिए ।

क्यों मैं अनुरोध कर सकता हूं कि आप अब गम्भीर होकर बैठें ?

मैं बिल्कुल गम्भीर होकर यह बात कह रहा हूं ।

षर्मा

कपूर मोहन

षर्मा

मोहन

षर्मा

रमेष

आप बिल्कुल गम्भीर होकर नहीं कह रहे ।

षर्मा रमेष

षर्मा

सत्यपाल षर्मा

सत्यपाल

दीन दयाल

सत्यपाल

प्रेम प्रकाष

सत्यपाल

मोहन

सत्यपाल

आप कैसे कह सकते हैं कि ये गम्भीर होकर नहीं कह रहे ? सभ्य समाज में हमेषा

लेडीज एण्ड जेंटलमेन कहा जाता है, जेंटलमेन एण्ड लेडीज नहीं ।

अच्छा, अच्छा। मैं आपका संषोधन स्वीकार करता हूं ।

आपका मतलब है, आप मिस्टर मोहन का संषोधन स्वीकार करते हैं ।

आपका मतलब है, मैं मिस्टर मोहन का संषोधन स्वीकार करता हूं, बहनों और भाईयोंकृकृकृ!

मैं एक बात कह सकता हूं ?

कहिए ।

बहनों और भाईयों, यह एक झूठा स्टेटमेंट नहीं है ?

बात करने का मुहावर ऐसा है, यार !

लेकिन यह झूठ मुहावरा नहीं है? क्या षर्मा साहब कह सकते हैं कि जितनी महिलाएं यहां बैठी हैकृकृकृकृ!

आप पर्सनल बातें बीच में नहीं ला सकते ।

मैं कोई पर्सनल बात बीच में नहीं ला रहा । मेरा मतलब सिर्फ इतना है कि हमें इस मुहावरे की जगह कोई दूसरा मुहावरा इस्तेमाल करना चाहिए जो कि लेडीज एण्ड जेंटलमेन की तरह न्यूट्रल हो द्य

लेडीज एण्ड जेंटलमेन की तरह न्यूट्रल ? ग्रामर ठीक है आपकी?

मैं मुहावरे की बात कर रहा हूं।

प्रेम प्रकाष

गुरप्रीत मनोरमा

वह मुहावरा भी न्यूट्रल किस तरह से है? किसी भी सभा में बैठी हुई सब लेडीज लेडीज नहीं होती ?

दिस इज टू मच ।

आप इन्डायरेक्टली हमारा अपमान कर रहे हैं ।

प्रेम प्रकाष

मैं सिर्फ इतना कह रहा हूं कि बहनों और भाईयों यह मुहावर उतना ही सही है जितना कि लेडीज एण्ड जेंटलमेन । इसलिए षर्मा साहब को आगे चलने दिया

जाये ।

कपूर षर्मा

बोलिए, षर्मा साहब !

(फिर गला साफ करके) आप सब जानते हैं कि लो ग्रेड वर्कर्ज वेलफेयर सोसायटी की स्थापना किस उद्देष्य से की गयी है । लगातार बढ़ती महंगाई के इस जमाने में हमारे जैसे सब लोग अपने लिए खान–पान के मामूली साधन जुटाने में भी असमर्थ हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि हम अपने वर्ग के लोगों के वेल्फेयर की ऐसी स्कीमें सरकार के सामने रखें और उन्हें मनवाने के लिए जितना जोर सरकार पर डाल सकें, डालें जिससे कि कृकृकृ मेरा मतलब है, ऐसी स्कीमें जो कि जैसे पिछली बार सरकार से ज्यादा – से – ज्यादा छोटे कर्जों की मांग की गयी थी कृकृकृ द्य उस मांग का अब तक हुआ भी है कुछ ?

रू बाद में क्यों ? अगर उसी बारे में अब तक कुछ नहीं

दीन दयाल

कपूर

यह सवाल बाद में उठाइयेगा ।

दीन दयाल

कपूर षर्मा

मोहन षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

रमेष

कपूर

सत्यपाल

कपूर

दीन दयाल

प्रेम प्रकाष

मनोरमा

कपूर

षर्मा

क्यों षर्मा, हुआ है उस बारे में कुछ ?

हुआ ।

रू थोड़ा बहुत हुआ है या नहीं भी हुआ, तो होने की आषा की जा सकती है।

फिलहाल हम अपने आज के एजेंडे को ध्यान में रखें ।

आज का एजेंडा क्या है ?

मैं उसी पर आ रहा हूं। आज हम सरकार के सामने यह ठोस सुझाव रखना चाहते हैं कि मेरा मतलब है कि आबादी बढ़ जाने से षहर बी ग्रेड से ए ग्रेड हो जाते हैं लेकिन जहां तक हम लोगों का ताल्लुक है कहना चाहिए कि लो ग्रेड वर्कर्ज की जिन्दगी लो ग्रेड से लोअर ग्रेड होती जाती है इसलिए हमारे लिए जरूरी है कि और हमें सिर्फ प्रस्ताव ही पास नहीं करना, उसके लिए, उसे मनवाने के लिए, पूरी कोषिष भी करनी है एक डेढ़ साल के अन्दरकृकृ जैसे इतनी कॉलोनीज हैं, उसी तरह एक निम्न–स्तर गृह निर्माण योजना के अन्तर्गतकृकृ । क्या ? क्या ?

निम्न स्तर गष्ह–निर्माण योजना

इसका मतलब ?

घटिया किस्म के घर बनाने की स्कीम

(अविश्वास के स्वर में) नहीं – नहींकृकृकृ

घर बनाने की घटिया किस्म की स्कीम

नहीं–नहीं ।

वह स्कीम, जिसके मातहत निचले दरजे के घर बनाये जायें

निचले दरजे के घर तो सारे देष में हैं ही । उनके लिए सरकार को और स्कीमें

बनाने की क्या जरूरत है?

ही मीन्स हाउसेज फॉर लो ग्रेड वर्कर्ज ।

आई सी, आई सी

तो कहने का मतलब है कि ऐसी एक योजना हो जिससेकृकृ वह सरकारी योजना भी हो सकती है और छोटे कर्जों की योजना का हिस्सा भीकृ एक सुझाव था कि घर नीलाम किये जायें, लेकिन मैं उसके पक्ष में नहीं हूंकृकृकृ क्योंकि नीलामी जो है, वह समाजवादी नीति नहीं हैकृकृकृ उसमें बड़ा छोटे को निगल जाता है और

17 हिन्दी भाशा एवं समसायिकी

दीन दयाल

प्रेम प्रकाष षर्मा

छोटाकृ   वैसे लाटरी भी डाली जा सकती है घरों कीकृकृकृकृकृ पर योजना जो भी हो, ऐसी होनी चाहिए कि उसका लाभ हमारे सब सदस्यों को हो सके रू हियर, हियर !

क्योंकि घर एक ऐसी चीज है जो हर आदमी की बुनियादी जरूरत है । उसकी सुख–षान्ति का आधार है । आदमी काम करता है कमारे के लिए । कमाता है आराम पाने के लिए। और सही माने में आराम वह तभी पा सकता है जब उसके पास अपना एक ऐसा घर हो जिसमें सर्दी हो या गर्मी, दुख हो या सुख एक ऐसी जगह जहां जहां जहां पर वह उन लोगों के साथ जो कि उसका परिवार है हममें से हर एक का अपना परिवार है उस परिवार के साथ वह आदमी वह आदमीकृकृकृ ।

(आँखें गुरप्रीत के चेहरे पर अटक जाती है जिससे जबान और अटकने लगती है ।) मैं हर परिवार की बात नहीं कहताकृकृकृ कई बार कुछ परिवारों मेंकृकृकृ कुछ ऐसे परिवार भी होते हैंकृकृकृ जिनमें जिनमें वह भी होता है ? उस कलह–क्लेष के कारण आदमी के लिए . उसकी आवष्यकता था कि एक आदमी ने

उसके कारण आदमी के लिए किसी भी

घर की आवष्यकता जो सुख–षान्ति वह चाहता है एक अंदरूनी आवष्यकता जैसे आज ही समाचार

अपने पूरे परिवार के साथ

उसने जहर दे दिया और उसके साथ

आत्महत्या करने का प्रयत्न किया हैकृकृकृकृ

हियर, हियर!

रमेष, सत्यपाल

कपूर

(डस्टर से मेज ठोकता हुआ) ऑर्डर ऑर्डर!

षर्मा

पूरे परिवार को उसके बाद स्वयं भी

जानने की बात यह है

कि ऐसा जब भी होता हैकृकृकृ जब भी ऐसा होता है

यदि उसके मूल कारणों की खोज की जाये तो तो पता कहीं न
अवष्य कहीं—न—कहीं कृकृ और यह बात किसी के

तो उसके मूल मेंकृकृकृ चलेगा कि

लिए भी सच हो सकती है कि कहीं—न—कहीं कुछ—न—कुछ ऐसा है कि हो सकता है कि मैं अपने विशय से थोड़ा भटक गया हूंकृकृ परन्तु यह इसलिए है कि यदि हम सोचना चाहें, तो पता चल सकता है कि वह कुछ—न—कुछ क्या है?

(जेब से रूमाल निकालकर माथे पर पसीना पोंछता है ।)

षर्मा, पानी पी लो थोड़ा । राम भरोसे, षर्मा को एक गिलास पानी देना ।

थोड़ा पी लो, तरावट आ जायेगी ।

नहीं, नहीं। (राम भरोसे की तरफ) पानी नहीं चाहिए ।

दीन दयाल षर्मा

मुझ पानी नहीं चाहिए ।

दीन दयाल षर्मा

प्रेम प्रकाष

षर्मा

नहीं चाय नहीं चाहिए। मैं जो बात आपके सामने रख रहा हूंकृकृ द्य

कपूर

सीधे आज का परस्ताव ही क्यों नहीं पढ़ देते? जो बात है, वह सब लोग जानते हैं।

रमेष

बोल लेने दीजिए उन्हें । अगली मीटिंग जाने कब होगी !

चाय मंगवा लो।

रमेष

कपूर संतोश

कपूर संतोश

सत्यपाल

षर्मा साहब, सीधे उस बात पर आ जाइएकृकृ जब से इंदिरा सरकार बनी है, तब से.

बल्कि उससे भी आगे से षुरू कीजिए जब से आपने सेक्रेटरी पद सम्भाला है, तब से .

ऑर्डर– ऑर्डर ! षर्मा, तुम परस्ताव पढ़ दो अब ।

क्षमा कीजिए, परस्ताव नहीं, प्रस्ताव ।

परस्ताव द्य

(जोर देकर) प्रस्ताव द्य

कपूर

(जोर देकर) परस्ताव द्य

दीन दयाल

पी ए आर ए एस नहीं, पी आर ए एस

प्रस्ताव

कपूर

षर्मा

जो भी हो वह रेजोल्यूषन की हिन्दी । वह पढ़ दो तुम ।

तो मैं आपका अधिक समय न लेकर आपके सामने प्रस्ताव पेष कर रहा हूं ।

(अपनी फाइल खोलता है । फिर उसे आगे–पीछे पलटने लगता है ।)

प्रस्ताव हैकृकृ प्रस्ताव था द्य

—————

रमेष

था, मतलब खो गया कहीं ?

षर्मा

नहीं, इस फाइल में है

मतलब इसी फाइल में था

अभी सुबह मैंने ड्राफ्ट

बनाया थाकृकृकृद्य

सत्यपाल षर्मा

किसी और फाइल में तो नहीं है ?

सत्यपाल

गुरप्रीत

सत्यपाल

गुरप्रीत रमेष

गुरप्रीत रमेष

कपूर

दीन दयाल

षर्मा

सत्यपाल

प्रेम प्रकाष

दीन दयाल

प्रेम प्रकाष षर्मा

प्रेम प्रकाष

(सख्त पड़कर) उनके पास कोई फाइल नहीं है ।

तो हो सकता है, उनके बटुवे में हो ।

रू (सख्त पड़कर) इनका प्रस्ताव मेरे बटुवे में ? आप कहना क्या चाहते हैं ?

नाराज होने की बात नहीं । क्योंकि प्रस्ताव खो गया है, इसलिए मैंने सोचा कि हो सकता है इधर–उधर पड़ा देखकर आपने अपने बटुवे में सम्भाल लिया हो ।

(उसी तरह सख्त) मेरे बटुवे में ऐसी फालतू चीजों के लिए जगह नहीं है । क्या कहा आपने? फालतू या पालतू ?

(और भी सख्त) रमेष चौपड़ा !

रू प्रेजेंट मिस !

ऑर्डर–आर्डर!

रू षर्मा, फाइल में नहीं है, तो कहीं–न–कहीं तो होगा ही। एक बार पतलून की जेब

में देख लो ।

पतलून की जेब में कैसे हो सकता है ? (दोनों जेबें टटोलता है) घर से चलते समय मैंने फाइल में रखा था (जेबों का सामान निकालकर) पतलून में सिर्फ रूमाल है और तीस पैसे हैंकृकृ

रू सिर्फ तीस पैसे ? व्हाट पिटी !

पतलून में नहीं है, तो कोट की जेबों में देख लो

कोट की जेबें सिली हुई हैं। आज ही ड्राईक्लीन होकर आया लगता है ।

तो, अन्दर कमीज की जेब में हो षायद ?

कमीज में जेब नहीं है। मैं जेब वाली कमीज नहीं पहनता ।

फिर तो एक ही बात हो सकती है। भागकर घर पर देख आओ ।

दीन दयाल

प्रेम प्रकाष

सत्यपाल

कपूर षर्मा रमेष

षर्मा

सत्यपाल

कपूर षर्मा

षायद बच्चों ने निकाल लिया हो ।

बच्चों को प्रस्ताव का क्या करना है ?

खेल रहे होंगे ।

या वहां मोहल्ले में पेष कर रहे होंगे। हो सकता है, अब तक उन्होंने पास भी कर दिया हो ऑर्डर–ऑर्डर कृकृ

मेरा ख्याल है षर्मा, तुम जल्दी से नया ड्राफ्ट बना लो ।

नया ड्राफ्ट बन सकता है, लेकिन कृकृकृ

उसके लिए इन्हें किताब चाहिए वहकृकृ . वन हंड्रेड ड्राफ्ट रेजोल्यूषंज ।

मैं किताब देखकर ड्राफ्ट नहीं बनाता ।

ठीक बात है । वरना स्पेलिंग की इतनी गलियां नहीं हो सकतीं ।

तुम साथ के कमरे में चले जाओ, षर्मा !

(चुनौती स्वीकारने के स्वर में) ठीक है । मैं अभी नया ड्राफ्ट बनाकर लाता हूं।

(फाइल समेटकर दायीं तरफ के दरवाजे से चला जाता है। राम भरोसे आँख उठाकर उसे जाते देखता है, फिर सिर हिलाता है ।)

(जम्हाई रोककर) उतरी देर अब क्या करना चाहिए? रू आप बतायें ।

रू आप लोग बताइए द्य

जो चेयरमैन की रूलिंग हो ।

मैं काहे का चौयरमेन हूं ? चेयरमेन तो आज आया ही नहीं ।

आप अपना वह भाशण दे दीजिए – असूल कहती है कि कृकृकृ द्य

कपूर

दीन दयाल

कपूर

दीन दयाल

कपूर

रमेष

कपूर

रमेष

कपूर

मुझे खुद भी तो सुनना पड़ता है ।

दीन दयाल

तो मनोरमा जी से कहा जाये, ये गीत सुना दें

प्रेम प्रकाष

नहीं—नहीं, बहुत हो चुका वह । बोर हो गये ।

रू आप भी बोर हो गये ?

दीन दयाल

प्रेम प्रकाष

दीन दयाल

मैं कहता हूं, पहले गीत हो जाने दो।

प्रेम प्रकाष

दीन दयाल प्रेम प्रकाष

रमेष

ये तो मीटिंग के अन्त में सुनाती हैं ।

हाँ—हाँकृकृ आज पहले सुना दें ।

(दबे स्वर में) पहले मोहन से कविताएं सुन ली जायें ।

रू मैं कहता हूं, पहले कविताएं हो जाने दो।

गीत में देर कम लगती है ।

इसीलिए तो कह रहा हूं बाद में कविताओं में बहुत देर लग जाती है । (ऊँचे स्वर में)

मेरा प्रस्ताव है कि मनोरमा जी गीत सुनायें ।

मैं इसका समर्थन करता हूं।

दीन दयाल

मेरा प्रस्ताव है कि मोहन अपनी कविताएं सुनायें ।

सत्यपाल

मैं इसका समर्थन करता हूं ।

संतोश

मेरा प्रस्ताव है कि सत्यपाल सब सदस्यों की नकलें सुनायें ।

रमेष

मैं इसका भी समर्थन करता हूं ।

कपूर

और मेरा प्रस्ताव है कि गुरप्रीत जी जिस प्रस्ताव का समर्थन करें, वह प्रस्ताव

मान लिया जाये ।

रू इसका समर्थन कौन करता है ?

दीन दयाल कपूर

मैं

प्रेम प्रकाष

सत्यपाल

मोहन

सत्यपाल मोहन

सत्यपाल

मोहन

सत्यपाल

मोहन

सत्यपाल मोहन

सत्यपाल

खुद

ही समर्थन भी करता हूं ।

आप खुद अपने प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकते, इसलिए आपका प्रस्ताव केंसिल हुआ।

रमेष ने एक साथ दो–दो प्रस्तावों का समर्थन किया है, इसलिए वे दोनों प्रस्ताव भी केंसिल हुए । अब सिर्फ दीन दयाल जी का प्रस्ताव रह जाता है कि मोहन अपनी कविताएं सुनायें। (मोहन की तरफ देखकर) मोहन ! अरे, इसे क्या हुआ है?

मोहन !

(मोहन हड़बड़ाकर आँखें खोलता है ।)

क्या बात है ?

उठ जाओ, तुम्हें कविताएं सुनानी है ।

रू प्रस्ताव पास हो गया ?

में वह साथ के कमरे में ड्राफ्ट हो रहा

कौन ड्राफ्ट कर रहा है?

षर्मा है

तब ड्राफ्ट हो जाने दो । हो जाये, तो जगा देना द्य

पर इस बीच दूसरा प्रस्ताव पास हो गया है। रू क्या ?

रू कि तब तक तुमसे तुम्हारी कविताएं कृकृ ।

(षर्मा दायीं तरफ से आता है ।)

मिल गया ।

वही ड्राफ्ट जो खो गया था ।

षर्मा

कपूर

षर्मा

हाँकृ बाहर कूड़े में था ।

कपूर

कूड़े में ।

षर्मा

आते हुए गिर गया होगा। जमादार ने झाड़ू से कूड़े में डाल दिया था ।

कपूर

षर्मा

संतोश

दीन दयाल

रमेष

सत्यपाल संतोश

अच्छा है, मिल गया । वक्त की बचत हो गयी । अब तुम जल्दी से इसे पढ़ दो।

(षर्मा पहले वाली जगह पर उसी मुद्रा में खड़ा हो जाता है ।)

(गला साफ करके) प्रस्ताव की रूपरेखा इस प्रकार हैकृकृ (कागज देखता है) हम, लो ग्रेड वर्कर्ज सोसायटी के सब सदस्यकृकृकृ।

मुझे आपत्ति है । जब प्रस्ताव हिन्दी में है, तो संस्था का नाम भी हिन्दी में होना

चाहिए ।

मुझे भी आपत्ति है । जब सब सदस्य यहां उपस्थित नहीं है तो प्रस्ताव में सब

सदस्यों का उल्लेख कैसे किया जा सकता है ?

मैं पहली आपत्ति का समर्थन करता हूं।

मैं दूसरी आपत्ति का समर्थन करता हूं।

कपूर

आप पहले पूरा ड्राफ्ट सुन लें। उसके बाद जो संषोदन करना हो, करें । रू संषोदन नहीं, संषोधन ।

संतोश

धन धन धन

संषोधन ।

कपूर

धन धन धन

संषोदन द्य

संतोश

संकृकृ षोकृकृकृ धन ।

कपूर

संकृ षोकृकृ दन ।

दीन दयाल

डी ए एन् नहीं, डी एच् ए एन् ।

कपूर

संतोश

कपूर

प्रेम प्रकाष

षर्मा

प्रेम प्रकाष षर्मा

प्रेम प्रकाष

षर्मा

प्रेम प्रकाष

षर्मा

प्रेम प्रकाष

कपूर षर्मा

दीन दयाल

षर्मा

दीन दयाल

षर्मा रमेष

सत्यपाल

कपूर षर्मा

आप पहले पूरा ड्राफ्ट सुन लें। उसके बाद जो एमेंडमेंट करना हो करें।

परन्तु हिन्दी के प्रस्ताव में संस्था का नाम अंग्रेजी में हो यह राश्ट्रभाशा का अपमान है । आप इनसे कहिएकृकृ पहले नाम हिन्दी में कर दें ।

क्यों षर्मा, लो ग्रेड वर्कर्ज वेल्फेयर सोसाइटी की हिन्दी क्या है ?

निचला दर्जा कामगार हितकारी सभा द्य

यह गलत है। इसकी असल हिन्दी है – निम्न स्तर कर्मचारी कल्याण समाज ।

रू यह भी गलत है।

रू यह कैसे गलत है?

रू मेरे वाली हिन्दी कैसे गलत है ।

यह पुरानी हिन्दी है, इसलिए गलत है।

आप अंग्रेजी जानते हैं ?

रू आप लड़ना चाहते हैं?

रू जी नहीं आपकृकृकृ।

दोस्तों, वक्त बहुत हो रहा है। काम जल्दी होने दीजिए। जल्दी करो, षर्मा !

मैं आपकी दोनों आपत्तियां स्वीकार कर रहा हूं (संषोधन करके) तो अब प्रस्ताव इस प्रकार हैकृकृ (कागज देखता है) हम, निम्न स्तर – कर्मचारी – कल्याण समाज के सब, उपस्थित सदस्य कृकृ ।

यह कैसे कहा जा सकता है कि प्रस्ताव सर्व–सम्मति से पास होगा? इसलिए सब

उपस्थित सदस्यों का उल्लेख भी नहीं किया जा सकता;

तो आप क्या चाहते हैं, मैं प्रस्ताव पेष न करूं ?

मैंने यह कहा है? मैंने तो कहा है, षब्द श्सब श बीच में नहीं होना चाहिए ।

मैं जब तक प्रस्ताव पूरा नहीं पढ़ लेता, तब तक इसमें कोई संषोधन नहीं करूंगा ।

यह आप कैसे कह सकते हैं? अभी–अभी आपने दो संषोधन स्वीकार किये हैं ।

और जब दो–दो संषोधन स्वीकार कर सकते हैं, तो तीसरा क्यों नहीं कर सकते?

घड़ी पर नजर रखकर चलो, षर्मा ।

रू तो लीजिए, मैं तीसरा संषोधन भी स्वीकार कर लेता हूंरू (कागज देखता है) हम, निम्न स्तर – कर्मचारी – कल्याण समाज के उपस्थित सदस्य बहुत तीव्रता से अनुभव करते हैं कि सामाजिक पुनर्निर्माण की सरकारी नीतियों में हमारे हितों का ठीक से संरक्षण नहीं हो पा रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत देष के बदलते आर्थिक ढांचे में निम्न स्तर कर्मचारियों के लिए समुचित निम्न स्तर आवास–व्यवस्था सरकार का एक प्रमुख उत्तरदायित्व है । इस उत्तरदायित्व के निर्वाह कीकृकृ निर्वाह की एक षब्द मिट गया है

क्या षब्द है? की

निर्वाह

कपूर

षर्मा

मिट कैसे गया ? रू पता नहीं कैसे

रमेष

जमादार की झाड़ू से मिट गया होगा ।

षर्मा

संतोश

दृश्टि से ?

षर्मा

हाँ, हाँ

निर्वाह की कृकृ निर्वाह की कृकृकृ किस उससे ?

दृश्टि से सरकार को चाहिए कि षीघ्र – से– षीघ्र एक निम्न स्तर –गृह–निर्माण योजना बनाकर सब ऐसे कर्मचारियों को, जिनकी सेवा पांच साल से अधिक की है, छोटी–छोटी किस्तों पर एक–एक घर उप उप उपकृकृ कृकृ । एक और षब्द मिट गया ?

रू पूरा नहीं मिटा । घर उप उप उपकृ.कृ ।

उपद्रव ?

उपद्रव कराने का बीड़ाकृकृ नहीं, यह नहीं हो सकता ।

दीन दयाल

षर्मा

दीन दयाल

षर्मा

संतोश

षर्मा

कपूर

इतना ही है या और भी है ?

षर्मा

उपलब्ध ?

हाँ–हाँ कृकृ उपलब्ध कराने का बीड़ा उठायें द्य

है तो और भी, पर वह छोड़ा जा सकता है ।

जो छोड़ा जा सकता है, उसे छोड़ दो। तो सज्जनों, अब इसका समर्थन कौन करता है ?

समर्थन का क्या है, मैं समर्थन कर देता हूं । (मास्टर की कुरसी के पास आकर) मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ ।

(बैठे–बैठे) मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं ।

(सब लोग घूमकर उसकी तरफ देखते हैं।)

इसका मतलब है, अभी और वक्त लगेगा।

कपूर

रमेष

मोहन

कपूर

प्रेम प्रकाष

तुम्हारी नींद कब खुली ?

दीन दयाल मोहन

तुमने प्रस्ताव सुना भी है ?

सब सुना है, इसीलिए विरोध कर रहा हूं ।

दीन दयाल मोहन

प्रस्ताव में कहा क्या गया है ?

क्या कहा गया है?

दीन दयाल मोहन

तुम

बताओ

दीन दयाल

कपूर

आप बताइए ।

रू कपूर साहब, आप बताइए इसे ।

मैं? मुझे तो हिन्दी समझ ही नहीं आती ।

संतोश

प्रस्ताव अपने में बिल्कुल स्पश्ट है ।

मोहन

क्या स्पश्ट है ?

संतोश

क्या स्पश्ट नहीं है ।

मोहन

बहुत कुछ स्पश्ट नहीं है ।

संतोश जैसे ?

मोहन

जैसे

कपूर

मोहन

कपूर

मोहन

रमेष

कपूर

रमेष

तुम्हें ज्यादा कुछ कहना है ।

बहुत कुछ कहना है ।

तो यहां षर्मा की जगह पर आ जाओ ।

(षर्मा अनमने भाव से नीचे उतर जाता है मोहन उसकी जगह पर आ खड़ा होता है)

प्रस्ताव में तीन जगह एक षब्द आया है – निम्न स्तर । इसका अर्थ है, चूंकि आज हम निम्न स्तर के कर्मचारी है, इसलिए जीवन–भर हमें निम्न स्तर के ही बने रहना है। हमारे लिए आवास – व्यवस्था हो, तो कैसी ? निम्न स्तर की। हमारे लिए घर बनाये जायें, तो कैसे ? निम्न स्तर के । इसके बाद षायद हम लोग यह मांग करें कि हमारे निम्न स्तर बच्चों के लिए निम्न स्तर बाल–संरक्षण व्यवस्था के अंतर्गत निम्न स्तर पालन की एक योजना बनायी जाये जिससे हर ऐसे बच्चे को, जिसकी कि उम्र पांच साल से अधिक की है, कम–से–कम आधा पाव दूध उपलब्ध हो सके । हियर–हियर !

रू आपने प्रस्ताव का समर्थन किया है और उसके विरोध में भी हियर – हियर कर रहे हैं?

(पहले की तरह उठकर और मास्टर की कुरसी के पास आकर) मैं अपना समर्थन वापस लेता हूं।

(वापस जा बैठता है ।)

आप अपना समर्थन वापस कैसे ले सकते है? समर्थन कभी वापस नहीं लिया जाता है ।

क्यों नहीं लिया जाता ?

जब प्रस्ताव वापस लिया जा सकता है, तो समर्थन भी वापस लिया जा सकता है ।

षर्मा

रमेष

सत्यपाल

रमेष

कपूर

मोहन

बहुत कुछ कहना है ।

कपूर

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

मुझे विश्वास हो गया है कि आपका प्रस्ताव गलत है। इसलिए मैंने अपना समर्थन

वापस ले लिया है।

(मोहन से) तुम्हें और भी कुछ कहना है अभी ?

(घड़ी देखकर उठता हुआ) तो मैं आप लोगों से इजाजत चाहूंगा। मुझे एक जगह

पहुंचना है जरूरी कृ

रू (आगे आकर) नहीं – नहीं कपूर साहब !

रू भई, देखो, षर्माकृकृ!

नहीं–नहीं, कपूर साहब !

रू भई, ऐसा है कि कृकृ ।

(कपूर को बांह से पकड़कर कुरसी पर बिठाता है) नहीं—नहीं, आप नहीं जा सकते ।

(मिन्नत और षिकायत के स्वर में) भई, मेरा बहुत जरूरी है जाना ।

प्रस्ताव उससे ज्यादा जरूरी है ।

नहीं है ।

मनोरमा

कपूर

सात बज गया है।

मनोरमा

कपूर

षर्मा

मनोरमा

षर्मा

कपूर

नहीं है ।

षर्मा है।

कपूर

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

तुम किसी और को बना लो चेयरमैन थोड़ी देर के लिए ।

आप रूख देख ही रहे हैं । आपके बगैर यह प्रस्ताव पास नहीं हो सकता ।

रू क्यों नहीं हो सकता ।

नहीं हो सकता ।

जहां– मुझे पहुंचना है, वहीं बल्कि मनोरमा जी को भी पहुंचना है। पूछ लो इनसे ।

(फिर से उठने की चेश्टा करता है ।)

(फिर से उसे बिठाकर) तब तो आप हरगिज नहीं जा सकते । मनोरमा जी का वोट बहुत इंपार्टेंट है ।

(असहाय भाव से मनोरमा को देखता हुआ) आप क्या कहती हैं ।

(उससे आँखें बचाती है) मैं कुछ नहीं कहती द्य

रू मुझे आठ से पहले घर पहुंच जाना है ।

(फिर से उठता है) इसलिए, षर्मा ८

(फिर से बिठाता है) नहीं–नहीं, कपूर – साहब !

मैं यहां से सीधी घर जाऊंगी ।

कपूर मनोरमा

सीधे घर जायेंगी ?

कपूर

मनोरमा

कपूर

मनोरमा

कपूर

मनोरमा

आठ तक वे भी लौट आयेंगे ।

कपूर

सीधी घर जाऊंगी द्य

तो वह जहां चलना था?

मैं नहीं चल सकूंगी।

क्या कर रही हैं ?

मैं नहीं चल सकूंगी। आठ से पहले मेरा घर पहुंचना जरूरी है। बच्चों को खाना खिलाना है ।

वह तो साढ़े आठ भी खिलाया जा सकता है ।

रू (निढाल होकर) तब तो तब तो कृकृ खैर, ठीक है, षर्मा !

तुम प्रस्ताव पास करा लो अपना । (मोहन से) बोलिए आपस ।

षर्मा

(मोहन से) बोलिए आप ।

मोहन

सबसे पहले मैं आपका ध्यान इस चीज की ओर दिलाना चाहता हूं कि हमारे अंदर यह निम्न स्तर की वषत्ति क्या है, क्यों है ?

षर्मा

मोहन

कपूर

मोहन

विशय से बाहर मत जाइए ।

आप बीच में मत टोकिए । यह निम्न स्तर की वषत्ति एक संक्रामक रोग की तरह है, जिसके कीटाणुकृकृ ।

जिसके क्या ?

कीटाणुकृ जर्म्सकृ हमारी नस–नस में फैल जाते हैं और रात–दिन दुगुने,

चौगुने, दस गुने, सौ गुने होते जाते हैं। इनसे आदमी की महत्वाकांक्षा मर जाती हे, कार्य–षक्ति जवाब दे जाती है, किसी भी चीज को लेकर श्नश कह सकने का साहस उसमें नहीं रह जाता । वह केवल दूसरों का मुंह ताकने और हां–हां करने की एक मषीन में बदल जाता है। जिसका सारा ध्यान निम्न स्तर की

कुछ आवष्यकताओं को छोड़कर और किसी चीज पर नहीं टिक पाता। परिणाम होता यह गाली नहीं है।

कुछ निम्न स्तर की मांगें, कुछ निम्न स्तर के प्रस्तावकृकृ ।

रमेष, सत्यपाल

(डेस्क थपथपाते हैं) हियर – हियर !

षर्मा

यह मुझे गाली है।

मोहन

षर्मा मोहन

रू गाली है ।

है

है

षर्मा

मोहन

दीन दयाल

कपूर

गाली नहीं है ।

है ।

नहीं है ।

मिस्टर चेयनमैन, आप फैसला कीजिए, यह गाली हैया नहीं ।

यहां हिन्दी–से–हिन्दी की डिक्षनरी मिल सकती है?

डिक्षनरी की क्या जरूरत है ? संतोशी जी यहां हैं?

क्यों, संतोश जीकृकृ?

माफ कीजिए, जितने भी अर्थ हैं, उनमें कोई गाली तो नहीं है ।

प्रेम प्रकाष

कपूर

संतोश

निम्न स्तर के दो अर्थ हैं, एक न्यून स्तर । दूसरा हीन स्तर ।

कपूर

उन दोनों के क्या अर्थ है ?

संतोश

न्यून स्तर के भी दो अर्थ हैं ।

कपूर

संतोश

कपूर

मोहन

कपूर

षर्मा

मोहन

कपूर

मोहन

गाली भी हो सकती है, नहीं भी हो सकती है । यह षब्द का प्रयोग करने वाले की

भावना पर है ।

मिस्टर मोहन, आपकी भावना गाली देने की थी ? रू बिल्कुल नहीं ।

तो आगे चलिए । (षर्मा से) इन्होंने गाली नहीं दी । रू इन्होंने मेरे प्रस्ताव को निम्न स्तर का कहा है द्य रू बिल्कुल नहीं ।

यार, यही लफ्ज तुमने भी तीन बार इस्तेमाल किया है। अब आगे चलने दो । (मोहन से) चलिए ।

यह निम्न स्तर की व1त्ति हमारे अन्दर इस तरह घर कर गयी है कि हमारी जीवन–सम्बन्धी धारणा ही निम्न स्तर की होकर रह गयी है हम हंसते हैं, तो वह हंसी निम्न स्तर की होती है। प्रेम करते हैं तो वह प्रेम निम्न स्तर का होता हैकृ कृ । आप किस विशय में बोल रहे हैं? प्रस्ताव से इन बातों का कोई सम्बन्ध नहीं है । सम्बन्ध है ।

नहीं है ।

मनोरमा मोहन

मनोरमा

मोहन गुरप्रीत षर्मा

(उठती हुई) भई, मैं जा रही हूं। आप लोग प्रस्ताव पास करते रहिए ।

(हताष भाव से) रूकिए, रूकिए आप लोग ।

(खड़ा होकर) जाइस नहीं, मैं दस मिनट में मीटिंग खत्म कर रहा हूं ।

कपूर

षर्मा

सुनिए, मनोरमा जीकृकृ ।

कपूर

ठहरिए, गुरप्रीत जीकृकृ ।

(वे दोनों दायीं तरफ निकल जाती हैं ।)

षर्मा

कपूर

षर्मा

कपूर

मोहन

षर्मा

मोहन

षर्मा

मोहन

कपूर

मोहन

कपूर

रमेष

कपूर

सत्यपाल

कपूर

सत्यपाल

कपूर

(कुरसी छोड़कर उन दोनों के पीछे जाने लगता है, पर षर्मा उसे बांह पकड़कर रोक लेता है)

कम–से–कम आप तो मत जाइए;

लेकिन, षर्माकृकृकृ!

(उसे कुरसी पर बिठाता है) अब साथ ही चलेंगे थोड़ी देर में ।

(निढाल होकर मोहन से) आपको और भी कुछ कहना है अभी?

केवल इतना कहना है कि इस निम्न स्तर की वषत्ति से छुटकारा पाने के लिए हमें प्रस्ताव यह पास करना चाहिए कि आज से हम कहीं भी, किसी भी रूप में अपने साथ इस षब्द का प्रयोग नहीं करेंगे । इसलिए सबसे पहले हम अपनी संस्था का नाम बदलकरकृकृ!

जब तक पहले प्रस्ताव पर विचार नहीं हो जाता, तब तक आप दूसरा प्रस्ताव पेष नहीं कर सकते ।

यह दूसरा प्रस्ताव नहीं है ।

बिलकुल दूसरा प्रस्ताव है।

नहीं है ।

(मेज पर मुक्का मारता है) है – है – है ! मैं आपको अब और बोलने की इजाजत नहीं

दे सकता । आप अपनी जगह लौट जाइए ।

लेकिन, अध्यक्ष महोदय ।

आप अपनी जगह पर लौट जाइए । मैं अब षर्मा के प्रस्ताव पर वोट लूंगा ।

आप वोट नहीं ले सकते क्योंकि और लोगों को भी प्रस्ताव पर बोलना है । रू अब उसके लिए वक्त नहीं है ।

पर वक्त क्यों नहीं है?

आप एक लाइन में कहिए, आपको क्या कहना है?

मैं एक लाइन में नहीं कर सकता ।

तो मत कहिए ।

मोहन

लेकिन, अध्यक्ष महोदयकृकृ!

कपूर

मोहन

आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

कपूर

(गुस्से से) आपसे कहा है, आप लौट जाइए अपनी जगह पर ।

आप चेयर का अपमान कर रहे हैं ।

मोहन

आपको इस तरह बोलने का कोई अधिकार नहीं है।

कपूर

मोहन

कपूर

आपको इस तरह खड़े रहने का कोई अधिकार नहीं है । जो लोग प्रस्ताव के हक में

हैं, वे लोग अपने हाथकृकृ ।

आप प्रस्ताव पर वोट नहीं ले सकते। पहले आप आपने व्यवहार के लिए क्षमता

मांगें ।

रू मुझे किसी से क्षमा नहीं मांगनी है जो लोग हक में हैंकृकृ ।

हिन्दी भाशा एवं समसायिकी

सत्यपाल

षर्मा रमेष

कपूर

दीन दयाल

सत्यपाल

षर्मा

रमेष

सत्यपाल

रमेष

कपूर

रमेष

संतोश

मोहन

संतोश

मोहन

आप वोट नहीं ले सकते, क्योंकि अभी तक प्रस्ताव का समर्थन नहीं हुआ ।

समर्थन हो चुका है ।

रू नहीं हुआ। मैंने अपना समर्थन वापस ले लिया है।

दीनदयाल जी, आप समर्थन कर दें ।

मैं समर्थन करता हूं।

आप फिर भी वोट नहीं ले सकते, क्योंकि मुझे अभी प्रस्ताव के बारे में अपने विचार सामने रखने हैं।

आप अपने विचार सामने नहीं रख सकते, क्योंकि आप इस समय सदस्य नहीं हैं ।

आपका चंदा अभी तक नहीं आया है ।

रू जिस दिन आप सेक्रेटरी चुने गये थे, उस दिन आपका भी चंदा नहीं आया था, और आप सदस्य नहीं थे । जो सदस्य न हो वह सेक्रेटरी कैसे बन सकता है? मैं सेक्रेटरी के चुनाव को चौलेंज करता हूं।

बल्कि जिस दिन यह संस्था बनी थी, और पदाधिकारियों का चुनाव किया गया था, उस दिन किसी का भी चंदा नहीं आया था और कोई भी सदस्य नहीं था। इसलिए मैं संस्था पूरे चुनाव को चौलेंज करता हूं ।

और क्योंकि तब के चुने हुए पदाधिकारी इस संस्था को चला रहे हैं, इसलिए मैं इस संस्था को चौलेंज करता हूं ।

(डस्टर से मेज को ठोकता हुआ) ऑर्डर– ऑर्डर ऑर्डर ! मैंने वोटिंग के लिए कह दिया है। जिन लोगों को एतराज हे, वे चाहें तो वाक–आउट कर सकते हैं।

रू हम वाककृआउट नहीं करेंगे ।

(उठती हुई) आप लोग कार्यवाही जारी रखिए। मुझे जाने की अनुमति चाहिए । (नीचे आकर) ठहरिए, संतोश जी ! मुझे भी उधर ही जाना है ।

रू (बाहर निकलती) आप अपना देख लीजिए। मैं अब और नहीं रूकूंगी ।

(पल–भर की खामोषी । मोहन– अनिष्चित भाव से सबकी तरफ देखता है ।)

(आकस्मिक ढंग से) मैं वाक–आउट कर रहा हूं ।

(जल्दी से संतोश के पीछे निकल जाता है । उसके बाद भी पल–भर खामोषी रहती है ।)

कपूर

(अपने को सहेजकर) तो अब कृकृकृ ।

षर्मा

(पस्त भाव से) अब कुछ नहीं हो सकता ।

कपूर

क्यों ?

षर्मा

क्योंकि कोरम पूरा नहीं है ।

लेडीज एण्ड जेंटलमेनकृकृकृ ।

कपूर

प्रेम प्रकाष

कपूर

माफ कीजिए, लेडीज सब चली गयी हैं, सिर्फ जेंटलमेन बाकी हैं ।

तोकृ तो जेंटलमेन, मुझे अफसोस है, कि कोरम पूरा न होने से मीटिंग अब जारी

नहीं रह सकती। मैं मीटिंग बरखास्त करता हूं । (खलबली – सी मच जाती है रमेष और सत्यपाल डेस्कों पर हाथ मारते हुए शषेम–षेमश के नारे लगाते हैं । पहले

कपूर और षर्मा फिर प्रेम प्रकाष और दीन दयाल कमरे से चलते जाते हैं। रमेष और सत्यपाल को जरा बाद में ध्यान आते है कि वे खाली कमरे में षेम–

राम भरोसे

–षेमश कर रहे हैं। वे दोनों अचानक हाथ रोककर एक–दूसरे की तरफ देखते हैं, ठहाका लगाते हैं और बाहर चले जाते हैं ।

(ष्याम भरोसे ऊँघ रहा है ! राम भरोसे उसे हिलाता है ।)

उठ भइया, ष्याम भरोसे ! तमाषा खत्म हुआ ।

(जागकर) बाबू लोग चले गये ?

चले गये ।

कया–क्या पास कर गये ?

पास कर गये कि राम भरोसे, राम भरोसे के घर में रहेगा; ष्याम भरोसे ष्याम भरोसे

के घर में द्य और बाबू लोग अपने–अपने घर में रहेंगे ।

ष्याम भरोसे

राम भरोसे

ष्याम भरोसे

राम भरोसे

ष्याम भरोसे राम भरोसे

ष्याम भरोसे

और कुछ नहीं ?

राम भरोसे

लघु उत्तरीय प्रष्न

और ?

और कि मूंगफली के आधे छिले राम भरोसे साफ करेगा आधे ष्याम भरोसे द्य

(ष्याम भरोसे आंखें झपकाता है ।)

कुछ नहीं। (उसे गले से पकड़कर सीधा खड़ा करता हुआ) अब सीधा हो जा ।

बहुत कूड़ा कर गये हैं । साफ करना है।

(एक झाड़न ष्याम भरोसे के हाथ में देता है। दोनों फिर कुरसियां झाड़ने लगते हैं ।)

परदा गिरता है।

मोहन राकेष की पांच कृतियों के नाम लिखिए ।

एकांकी श्बहुत बड़ा सवाल के पात्रों में से किसने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

बहुत बड़ा सवाल एकांकी के माध्यम से लेखक मध्यम वर्ग की किस समस्या की ओर इषारा करता है ?

मध्यम वर्गीस लोगों के दुःख एवं उनके कल्याण की योजनाएं एकांकी में अर्थहीन क्यों प्रतीत होती हैं ?

एकांकी के पात्र मोहन का श्निम्न स्तरीय मानसिकता के विरोधश से क्या तात्पर्य है ?

लेखक के नजरिए से एकांकी में सबसे बड़ा सवाल क्या है ?

बैठक जिन प्रष्नों पर ध्यान दिए बगैर संचालित हुई वे प्रष्न क्या हैं ?

एकांकी का सार अपने षब्दों में लिखिए द्य

एकांकी के उद्देष्य पर प्रकाष डालिए ।

मोहन की चरित्रगत विषेशताओं पर प्रकाष डालिए ।

"बहुत बड़ा सवाल" एकांकी के आधार पर मोहन राकेष की भाशा–षैली पर प्रकाष डालिए एकांकी के तत्वों के आधार पर श्बहुत बड़ा सवाल श एकांकी की समीक्षा कीजिए द्य

एकांकी के संवादों में गहरा व्यंग्य छुपा हुआ हैश उदाहरण सहित लिखिए ।

लेखक की दृश्टि में मध्यमवर्गीय समाज की वास्तविक उन्नति कब संभव है ?

हिन्दी भाषा एवं समसायिकी

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. यह निम्न स्तर की वषत्ति एक संक्रामक रोग की तरह हैश यह कथन है

(क) सत्यपाल का

(ग) रमेष का

(ख) मोहन का

(घ) कपूर का

2. जब प्रस्ताव वापिस लिया जा सकता है तो समर्थन भी वापस लिया जा सकता है ।श

यह कथन है –

(क) सत्यपाल का

3. यह कथन है

(ग) ष्याम भरोसे का

क्यों षर्मा, लो ग्रेड वर्कर्स वेल्फेयर सोसायटी की हिन्दी क्या है?श

(ख) कपूर का

(घ) मोहन का –

(क) कपूर का

(ग) ष्याम भरोसे का

(ख) षर्मा का

(घ) प्रेम प्रकाष का

4. परन्तु हिन्दी के प्रस्ताव में संस्था का नाम अंग्रेजी में हो यह राश्ट्रभाशा का अपमान हैश

यह कथन है

(क) प्रेम प्रकाष

(ग) संतोश

मैं इसलिए आप लोगों की मीटिंग में नहीं आना चाहती।

बस इसी तरह की बातें होती रहती हैंश यह कथन है–

(क) मनोरमा का

(ग) षर्मा का

(ख) दीन दयाल (घ) रमेष

यहां काम तो

कुछ

होता नहीं,

(ख) संतोश का

(घ) गुरप्रीत का

संस्कृति और राश्ट्रीय एकीकरण

डॉ. योगेष अटल

पषु जगत् के अन्य प्राणियों से मानव की भिन्नता की सूचक है उसकी संस्कृति । प्रकृति ने मानव को ही कुछ ऐसे जैविकीय वरदान दिये हैं जिससे वह स्वयं कुछ नया रच सके, अपने व्यवहार को बदल सके और अपने अनुभवों और विचारों को भाशा के माध्यम से समाज के अन्य लोगों तक पहुंचा सके । मानव की इसी क्षमता के कारण प्रत्येक मानव समाज की अपनी विषिष्ट छवि है, उसके सदस्यों की अपनी अलग जीवन षैली है जो उनका जीवन निर्देषित करती है, पर जो स्वयं उसके पालनकर्ताओं द्वारा जाने–अनजाने बदलती रहती है

किसी भी समाज की सूची जीवन षैली उसे उसके पूर्वजों से विरासत में मिलती है और बाद में आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित होती रहती है । इस सारी प्रक्रिया में संस्कृति के कई तत्व बने रहते हैं जो श्परम्पराश बन जाते हैं । कई उपेक्षित हो जाते हैं या अपनी उपयोगिता खो देते हैं और कई नये तत्व जुड़ जाते हैं। ये नये तत्व समाज के सदस्यों द्वारा आविश्कृत हो सकते हैं या फिर बाहर से आयातित । इस प्रकार किसी भी समाज की संस्कृति किसी एक समय – बिन्दु पर न केवल अन्य समाजों की संस्कृति से भिन्न होती है, वरन् स्वयं अपने अतीत के स्वरूप से भी भिन्न होती है । परम्परा और परिवर्तन सभी जीवन्त संस्कृतियों के अभिन्न अंग होते हैं ।

सांस्कृतिक विविधता मानव की विवषता नहीं, वरन् विषेशता है। विश्व सभ्यता तो एक काल्पनिक संबोध है। वस्तुतः सारा विश्व विभिन्न संस्कृतियों का समागम है। पिछले पचास–साठ वर्शों में चले आधुनिकीकरण के प्रयासों से कई पुराने समाजों की संस्कृतियों में परिवर्तन की आंधियां तो चलीं पर उन संस्कृतियों की अपनी पहचान बनी रही, उनके अस्तित्व को आंच नहीं आई । एक विश्व, एक संस्कृति का सपना पूरा नहीं हो सका । आज भी यह स्वीकार करते हैं कि जिस प्रकार एक निर्वहमान पर्यावरण के लिये जैविकीय विविधता अनिवार्य है इसी प्रकार सांस्कृतिक विविधता भी सामाजिक और राश्ट्रीय विकास और एकीकरण के लिये अपरिहार्य है ।

संस्कृति मानव—समाज का अभिन्न अंग है । प्रत्येक समाज – चाहे वह छोटा हो या विषाल, आधुनिक हो या आदिवासी, वर्तमान का हो या प्रागैतिहासिक – अपनी संस्कृति से ही पारिभाशित होता है । उसी से उसकी स्वतंत्र पहचान बनती है। समाज में आने वाला हर नया सदस्य – जन्म से या आप्रवास द्वारा – उस समाज की संस्कृति में दीक्षित होता है और उसी के अनुरूप अपने को ढालता है ।

जन्म के समय हर षिषु मात्र एक पषु होता है। संस्कृति उसे संस्कार देती है और वह पषु से परिश्कृत होकर सामाजिक प्राणी बन जाता है। संस्कृति ही उसका भाशा, उसकी वेष—भूशा, उसका भोजन और उसकी भावनाएं एवं मूल्य निर्धारित करती है । इस दृश्टि से संस्कृति अधिजैविक कही जा सकती है।

यह सच है कि मानव ही संस्कृति का सष्टा है, पर इसकी यह सषश्टि इससे हटकर अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व बना लेती है। ध्यान योग्य बात यह है कि संस्कृति की सषश्टि कोई एक व्यक्ति नहीं कर सकता। न ही संस्कृति किसी एक काल – बिन्दु पर सहसा सषजित हो जाती है । संस्कृति उसके सदस्यों द्वारा निरंतर समष्द्ध होती रहती है। उसकी अपनी एक गतिमयता है । वह एक नदी की भांति है जो अपने उद्‌गम से लेकर गंतव्य तक अपनी पहचान तो बनाये रखती है पर मार्ग में लगातार कई चीजें पीछे छोड आती हैं और कई नई चीजें जोड़ती जाती है ।

समाज षास्त्रीय अर्थों में संस्कृति समाज द्वारा सीखे हुए व्यवहार – प्रकारों की उस समग्रता का नाम है जो किसी समाज की विषिश्ट पहचान बनाती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती जाती है। व्यवहार प्रकार की ऐसी ऐतिहासिक निरन्तरता को बनाये रखने में केवल मानव ही सक्षम है ।

वही ऐसा प्राणी है जिसके पास चिन्तन योग्य मस्तिश्क हे, स्मरण का सामर्थ्य है और ध्वनि विन्यास एवं षब्द उच्चारण की अद्‌भुत क्षमता है। इसीलिये वह बोधगम्य प्रतीकों का निर्माण कर सकता है और अपनी वाचा एवं लेखनी के माध्यम से औरों तक पहुंचा सकता है। आने वाली पीढ़ियां वर्शों के संचित अनुभवों को कार्य करने के ढंग को तथा संगीत, नृत्य, साहित्य की विधाओं को समाज के बड़े—बूढ़ों से सीखती है । लिखित समाजों में यह धरोहर पुस्तकों और दस्तावेजों में संचित होती है और पीढ़ी—दर—पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। जो पीढ़ियों से चला आने वाला कम है वही श्परम्पराश की संज्ञा पा लेता है और उसमें जो कुछ नया जुड़ता है समाज से ही उदभुत या अन्य समाजों से आयातित – वह नवाचार के रूप में आधुनिकताश का अंग हो जाता है । यह सही है कि संस्कृति प्रत्येक

नवाचार को अपनी कसौटी पर नापती – तौलती है और उसी के आधार पर उसका स्वीकार या तिरस्कार तय होता है । नवाचार के स्वीकार की इस प्रक्रिया के साथ–साथ पुरानी परम्पराओं की भी निरंतर समीक्षा होती रहती है और समय की परिस्थितियों के अनुसार उनका भी परिमार्जन और तिरस्कार होता रहता है। इस प्रकार किसी भी समयदृबिन्दु पर कोई भी संस्कृति परम्परा और आधुनिकता का युक्तियुक्त सम्मिश्रण होती है ।

बोलचाल की भाषा में संस्कृति षब्द का उपयोग इस व्यापक अर्थ में नहीं किया जाता । संकीर्ण अर्थ में इसे केवल संभ्रान्त वर्ग की जीवन–षैली का पर्याय गिना जाता है। षास्त्रीय संगीत और नृत्य, साहित्य और कला, उच्च दार्षनिक सिद्धान्त और मीमांसा को ही संस्कृति का सूचक मान लिया जाता है । परिभाशा की इस संकीर्ण कसौटी पर खरी न उतरने वाली समाज की अनेकानेक बातों को असभ्य, अभद्र, असंस्कृत, देषज, ग्रामीण, पिछड़ी हुई आदि की संज्ञा दे दी जाती है । अठारहवीं – उन्नीसवीं षताब्दी में पाष्चात्य देषों के उपनिवेषवादी दौर में इसी कसौटी पर गैर पाष्चात्य समाजों को संस्कृतिविहीन और श्प्रिमिटिवश की श्रेणी में रख दिया गया ताकि तुलना में पाष्चात्य देष अपने को ऊंचा रख सकें ।

मानव षास्त्र के अध्येयताओं ने संस्कृति के इस उपनिवेषवादी भ्रम को तोड़ा। उन्होंने यह स्थापित किया कि कोई भी समाज संस्कृतिविहीन नहीं होता । मानवषास्त्र की यह मान्यता रही है कि सांस्कृतिक तत्वों को अच्छा या बुरा कहना भ्रामक है क्योंकि अच्छे या बुरे की परिभाशा संस्कृतिपरक होती है, जिसे एक संस्कृति वाले अच्छा मानते हैं, वहीं दूसरी संस्कृति की मूल्यप्रणाली के हिसाब से बुरा हो सकता है उदाहरण के लिये षाकाहारिता को कुछ लोग पिछड़ेपन की निषानी मानते हैं तो अन्य षाकाहारी मांसाहारिता को बर्बरता की । वैसे मांसाहारी भी हर प्रकार का मांस नहीं खाते।

जैसे मुसलमान सुअर के गोष्त से परहेज रखते हैं तो पष्चिम के लोग कुत्ते के गोष्त से । कोरिया के लोगों दोनों ही प्रकार का मांस खाते हैं। इसी प्रकार हिन्दू मांसाहारी गौ–मांस नहीं खाते। क्या खाया जा सकता है और क्या नहीं, यह संस्कृति पर आधारित होता है, इसीलिये उसका औचित्य भी संस्कृति ही निर्धारित करती है।

संस्कृति की समाज वैज्ञानिक परिभाषा समाजव्यापी होती है । संस्कृति समाज के हर पक्ष को छूती है। समाज में होने वाली विभिन्न अंतः क्रियाओं के अंचल

एक–दूसरे से आबद्ध होते हैं। संस्कृति ही उन्हें जोड़ती है और समाज और राश्ट्र को एकता प्रदान करती है ।

संस्कृति समाज की अर्थव्यवस्था, सामाजिक संगठन, राज्यतंत्र, धर्म और अंधविश्वास, साहित्य और कला आदि विभिन्न पक्षों का कुल योग ही नहीं होती । इन विभिन्न पक्षों को एक दूसरे के साथ वह जिस प्रकार से गूंथती और एकत्र करती है उससे ही समाज की विषिश्ट छवि उभरकर आती है। यही कारण है कि समाज के किसी एक पक्ष में होने वाले परिवर्तन समाज के अन्य पक्षों को भी प्रभावित करते हैं। यदि समाज की जनसंख्या में वषद्धि होती है तो उसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है और षिक्षा व्यवस्था पर भी । यदि अप्रवासियों की संख्या बढ़ती है तो उसका प्रभाव न केवल षहरी विकास पर पड़ता है वरन् उस समुदाय की भाशा, रहन–सहन, भोजन की पसंद आदि पर भी पड़ता है।

यह आप्रवास का ही प्रतिफल है कि आज हमारे देष में कई धर्मों के मानने वाले लोग हैं। एक राश्ट्रभाशा होते हुए भी कई भाशाओं के बोलते वाले लोग हैं, भोजन के व्यंजनों, में इतनी विविधता पाई जाती है और कई प्रादेषिक और अंतर्राश्ट्रीय पसंदीदा व्यंजन अखिल भारतीय होते जा रहे हैं। दक्षिण भारत में परम्परागत खाये जाने वाले दोसा–इडली – सांभर को चाव से खाने वाले लोगों की संख्या उत्तर भारत में भी बढ़ रही है। यही हाल तंदूर में पकने वाले मूल रूप से पंजाबी व्यंजनों का है। तंदूरी रोटी और तंदूरी चिकन दक्षिण भारत में भी लोकप्रिय हैं और विदेषों में भारतीय रेस्तारांओं की विषेशता बन गए हैं द्य इतावली पित्सा और स्पेग्हेटी का प्रचलन भी भारत में बढ़ रहा है। मेकडोनल्ड, केन्टकी फ्राइड चिकन, कोका कोला अब भारत में रहने वालों की भी पसंद बन गए हैं। इन नयी चीजों के स्वीकार से ये भी परिवर्तनषील भारतीय संस्कृति के अंग बनते जा रहे हैं ।

संस्कृति को जब हम उसके व्यापक अर्थ में एक संबोध के रूप में प्रयोग करते हैं तो हमारा परिप्रेक्ष्य समाज वैज्ञानिक हो जाता है । इस दृश्टि से संस्कृति को धर्म का पर्याय नहीं गिन जा सकता । अन्य पक्षों की भांति धर्म भी संस्कृति का एक अंग मात्र है । बहुधर्मी समाजों की संस्कृति समन्वित संस्कृति होती है। जब हम संस्कृति – बहुत समाज की बात करते हैं तब हमारा अभिप्राय होता है ऐसी संस्कृति से जो अनेक उपसंस्कृतियों का संगम होती है । उपसंस्कृतियों के समागम और बाहर की संस्कृतियों से आयातित तत्वों के समागम की सम्मिलित प्रक्रिया से ही संस्कृतियां विशम स्वरूप कर लेती हैं । वैश्वीकरण के आज के दौर में यह प्रक्रिया संसार की सभी संस्कृतियों को प्रभावित कर रही हैं।

परिवर्तनों के पर्यावरण में पहचान बनाये रखने की क्षमता ही संस्कृति को समुत्थान– षक्ति प्रदान करती है, उन्हें लचीला बनाती है। जो संस्कृतियां परिवर्तन का स्वागत नहीं करतीं वे टूट जाती हैं । उनमे प्रगति का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है । प्रगति और परिवर्तन के स्त्रोत आभ्यांतरिक भी होते हैं और बाह्य भी, समाज के सदस्य भी परिवर्तन में योग देते हैं और बाहरी समाजों से भी परिवर्तन की प्रेरणाएं मिलती हैं। समाजों के आपसी संपर्क बढ़ने से उनमें बहुलता आने लगती है। बाहर से आकर बसे लोग धीरे–धीरे अपने नये परिवेष के अनुकूल ढल जाते हैं और अपने अपनाये देष की संस्कृति के कई तत्वों को ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रकार इन लोगों की जीवन – विधि का जो स्वरूप निखरता है उसमें अपने पूर्वज समाज और पोशद समाज की संस्कृतियों का अद्भुत मिश्रण होता है। मैं ऐसी उपसंस्कृतियों को श्संधिवीची संस्कृतिश की संज्ञा देता हूं। अनेकों देषों में बसे हमारे भारतीय उन देषों में रहकर भी जिस भारतीय संस्कृति को जीते हैं, वह भारतीय होकर भी हर देष में एक जैसी नहीं है। मलेषिया में वह वहां की मूल संस्कृति से प्रभावित हुई है तो अमेरिका में अमेरिकी संस्कृति से । पाष्चात्य देषों में पिछले पचास वर्शों में तथादृकथित तृतीय विश्व के कई समाजों से लोग जाकर बसे हैं और वे ऐसी ही संधिवीची संस्कृतियों का जीवन जीते हैं। इन संस्कृतियों के प्रादुर्भाव से पाष्चात्य देष भी अब भारत और चीन की भांति संस्कृति बहुत होते जा रहे हैं। इस प्रकार हमारा विश्व, सांस्कृतिक बहुलता वाले देषों का समुदाय होता जा रहा है । आज केवल भाशा या धर्म या प्रजाति के आधार पर राश्ट्रों को परिभाशित नहीं किया जा सकता ।

इस संस्कृति बाहुल्य ने राश्ट्रीय एकता की समस्या को नये रूप में प्रस्तुत किया है । प्राचीन आदिवासी और छोटे समाजों में भाशा, भूशा और धर्म की समानता पाई जाती थी और इसलिये सामाजिक एकता में अधिक बाधाएं नहीं होती थीं, किन्तु जब समाज का आकार बड़ा होने लगता है तब उसमें विविधताएं भी बढ़ने लगती हैं। इसीलिये उन समाजों में ऐसे प्रक्रम होते थे जो विविधता में भी एकता लाने में सहायक हों। ऐसे देषों का अनुभव बताता है कि भाशा या धर्म के नाम पर राश्ट्रीय अस्मिता स्थापित नहीं की जा सकती । धर्म और भाशा दोनों ही प्रान्त और देष की सीमा लांघ सकते हैं । एक ही व्यक्ति कई भाशाएं बोल सकता है, एक ही देष में कई धर्मों के लोग रहते हैं, एक ही धर्म के लोग कई देषों में रहनते हैं। इस्लाम को राज्य–धर्म मानने वाले भी कई राश्ट्रों में बंटे हैं। धर्म के नाम पर भारत से विभाजित हुआ पाकिस्तान भी कुछ वर्शों में फिर से दो देषों में विभक्त हो गया। एक ही धर्म के मानने वाले इराक और ईरान एक दूसरे के षत्रु हैं ।

कुवैत के प्रति भी इराक का वैसा ही रूख है । हमारे यहां महाभारत का युद्ध भी एक ही धर्म के मानने वाले भाई–भतीजों के बीच हुआ ।

सन् 1947 के विभाजन के बाद जो विषाल भाग स्वतंत्र भारत के रूप में षेश रहा उसका आधार धम्र नहीं था। निष्चय ही जो पाकिस्तान में रहे या भारत के अन्य भागों से पलायन कर गए वे मुसलमान थे। फिर भी षेश भारत की जनसंख्या का लगभग ग्यारह प्रतिषत मुसलमानों का था । आज भी भारत में मुसलमानों की संख्या पाकिस्तान की कुल जनसंख्या से अधिक है। ध्यान देने योग्य यह भी है कि पाकिस्तान में भी अन्य धर्मों के लोग पाए जाते हैं । यही स्थिति हिन्दू–राज्य नेपाल की है जहां अन्य धर्मों को मानने वाले नागरिक भी रहते हैं ।

राश्ट्रीय एकता की आवष्यकता को लक्ष्य में रखकर ही भारत के संविधान निर्माताओं ने इस देष को धर्म–निरपेक्ष प्रजातांत्रिक – गणतंत्र घोशित किया । धर्म–निरपेक्षता का अभिप्राय यही है कि राज्यतंत्र उसके नागरिकों को धर्म की स्वतंत्रता देता है और राज्य और धर्म को अन्योन्याश्रित नहीं मानता।
धर्म–निरपेक्ष भारत की संस्कृति को सामंजस्य और सहिश्णुता की संस्कृति कहा जा सकता है । सर्व धर्म

ज समभाव पर यहां बल दिया जाता है विविधता में एकता का सूत्र पिरोने वाली यहां की संस्कृति वस्तुतः कई उपसंस्कृतियों का मधुर संगम है।

विविधताओं के इस देष में यातायात और संचार की बढ़ती सुविधाओं के कारण लोगों में अंतरप्रांतीय अंतः क्रियाओं के दायरे बढ़े हैं। यद्यपि पिछले वर्शों में कतिपय प्रादेषिक आंदोलन हुए हैं फिर भी इन बढ़ती अंतर प्रादेषिक अंतः क्रियाओं ने भारत में विभाजन की नई भित्तियों को खड़ा होने से रोका है। संचार सूत्रों और आवागमन ने प्रदेषों के गवाक्षों को खुले रखा है । कोई भी प्रदेष एक भाशी नहीं है । कोई भी प्रदेष किसी एक संस्कृति या धर्म के लोगों में आक्रान्त नहीं है। पूरे भारत में जिस प्रकार अनेकताएं पाई जाती हैं वैसे ही प्रत्येक प्रदेष के सामाजिक ढांचे में भी विविधताएं हैं द्य आर्थिक दृश्टि से भी विभिन्न प्रदेष अंतर्निभर है । प्रादेषिक स्वायत्तता या छोटे राज्यों की मांग भी देष की केन्द्रीय सरकार से की जाती है जिस पर संसद निर्णय लेती है । इस दृश्टि से देखा जाये तो प्रदेषवाद पर चलने वाले सभी आंदोलन देष के लिये विघटनकारी नहीं होते । वस्तुतः प्रदेषवाद से देष में सहभागी राजनीतिक संस्कृति पनप रही है ।

भारत राश्ट्र निर्माण की अपनी प्रक्रिया में बहुत अंषों तक सफल रहा है। लड़खड़ाता अवष्य पर टूटा नहीं। भारत ने एक उभरती भारतीय संस्कृति की विविधता के मोतियों को एक सूत्र में पिरोये रखा है । उसने परम्परा का पोशण

किया है और वांछित परिवर्तन का स्वागत। उसके सीमान्तों पर द्वारपाल सजग हैं जो अभीसिप्त का सत्कार करते हैं और अवांछित का तिरस्कार द्य इस देष की विषाल संस्कृति की ढेरों उपसंस्कृतियों में सहचार है, वे दीवारों में बंद नहीं हैं, उनके गवाक्ष खुले हैं। इसी से भारतीय संस्कृति सुसमष्द्ध है, विकासमान है। वर्तमान विश्व की अनिवार्यताओं को झेलने में उसका सामर्थ्य बढ़ा है । भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में वह सक्षम है । सहिश्णुता और सामंजस्य की उसकी विषेशता का ही यह प्रतिफल है कि हमारी संस्कृति की भारतीयता बरकरार है।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. मानव प्राणी जगत् के अन्य प्राणियों से कैसे भिन्न है ?

2. संस्कृति व परम्परा में क्या भेद है ?

3. सामाजिक एवं राश्ट्रीय एकीकरण के लिए सांस्कृतिक विविधता अपरिहार्य हैश इस कथन को स्पश्ट करें ।

4. किस दृश्टि से संस्कृति अधिः जीवी कही जा सकती है ?

5. समाजषास्त्रीय अर्थों में संस्कृति के अर्थ को स्पश्ट करें ।

6. सांस्कृतिक तत्वों को अच्छा या बुरा कहना भ्रामक हैश इस कथन पर मानवषास्त्र की क्या दृश्टि है ?

7. समाज के किसी एक पक्ष में होने वाले परिवर्तन समाज में अन्य पक्षों को भी प्रभावित करते हैं स्पश्ट करें।

8. "नवाचार" किसे कहते हैं ?

9. बहुधर्मी समाजों की संस्कृति समन्वित संस्कृति होती हैश इस कथन की विवेचना करें

10. वैश्वीकरण के दौर में सभी संस्कृतियां एक दूसरे को किस तरह प्रभावित कर रही हैं ?

समझाइए ।

11. सांस्कृतिक प्रगति और परिवर्तन के स्त्रोत आभ्यांतारिक भी होते हैं और बाह्य भीश विवेचना कीजिए ।

12. लेखक श्संधिवीची संस्कृतिश की संज्ञा किसे देता है ?

13. सांस्कृतिक बाहुल्य राश्ट्रीय एकता की समस्या को लेखक ने किस रूप में वर्तमान में

प्रस्तुत किया है ?

14. भारत में धर्म निरपेक्षता से क्या अभिप्राय है ।

15. संचार एवं यातायात की बढ़ती सुविधाओं ने भारत में विभाजन की नई भित्तियों को खड़ा होने से रोका है ।श क्या आप उक्त कथन से सहमत हैं ?

16. "एक उभरती भारतीय संस्कृति की विविधता के मोतियों को एक सूत्र में पिरोये रखा है," कथन को स्पश्ट करें ।

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

1. आधुनिकीकरण के प्रयासों से एक विश्व, एक संस्कृति का सपना पूरा हो सका ।

(सत्य / असत्य)

2. सामाजिक एवं राश्ट्रीय विकास एवं एकीकरण के लिए सांस्कृतिक विविधता अपरिहार्य है

(सत्य / असत्य)

3.प्रत्येक समाज हर काल में अपनी संस्कृति से परिभाशित होता है ।

(सत्य / असत्य)

4. बोल–चाल की भाशा में संस्कृति षब्द का उपयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है ।

(सत्य / असत्य)

5. संस्कृति की समाज वैज्ञानिक परिभाषा समाज व्यापी होती है।

(सत्य / असत्य)

6. संस्कृति समाज ही अर्थ व्यवस्था, सामाजिक संगठन, राज्यतंत्र, धर्म और अंधविश्वास साहित्य–कला आदि विभिन्न पक्षों का कुल योग है ।

(सत्य / असत्य)

7. संस्कृति को धर्म का पर्याय नहीं गिना जा सकता, अन्य पक्षों की भांति धर्म की संस्कृति का एक अंग मात्र है।

(सत्य / असत्य)

8. बहुधर्मी समाजों की संस्कृति समन्वित संस्कृति होती है।

(सत्य / असत्य)

9. सांस्कृतिक बहुलता में राश्ट्रीय एकता की समस्या को नये रूप में प्रस्तुत किया है ।

(सत्य / असत्य)

10. राश्ट्रीय एकता की आवष्यकता को लक्ष्य में रखकर ही संविधान निर्माताओं ने इस देष को धर्म–निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणतंत्र घोशित किया ।

(सत्य / असत्य)

(ख) कथन की षैलियाँ

षैली मनुश्य की पहचान कही गई है। वह अपने भावों अथवा विचारों को दूसरों तक संप्रेशित करने के लिए भाशा में अनेक प्रयोग करता है । उसकी यह इच्छा रहती है कि अपनी बात स्पश्ट एवं प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुंचा सके । मनुश्य द्वारा भाशा – प्रयोग में उसकी यही इच्छा कार्य करती है । भाषा के ये विविध प्रयोग परिस्थितियों और विशयवस्तु पर निर्भर करते हैं। यहां कथन की षैली का तात्पर्य भाशा प्रयोग के ढंग से ही है ।

विभिन्न विशयों के अनुकूल भाशा के प्रयोगों को प्रयुक्ति कहा जाता है। वैज्ञानिक और वाणिज्य के विशयों के प्रतिपादन में भाशा के प्रयोग कला विशयों के प्रतिपादन में किये गए भाशा के प्रयोग से भिन्न होते हैं । प्रयुक्ति का सीधा सम्बन्ध कथ्य के प्रतिपादन से होता है।

कथन की निम्नलिखित प्रमुख षैलियां हैं –

(1) विवरणात्मक षैली

(2) मूल्यांकन षैली

व्याख्यात्मक षैली

विचारात्मक षैली

विवरणात्मक षैली –

भाशा के प्रयोग की ऐसी षैली जिसमें घटना अथवा किसी वस्तु का यथावत् प्रस्तुतिकरण हो, जिसमें वक्ता तटस्थ हो, उसकी अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न हो, विवरणात्मक षैली कहलाती है। विवरण का अर्थ है भाशा के माध्यम से किसी

घटना अथवा व्यक्ति की यथावत् प्रस्तुति । घटना अथवा कथ्य के विशय में वक्ता का अपना कोई राग या द्वेश नहीं होता । वह जैसा देखता है अथवा सुनता है वैसा विवरण प्रस्तुत कर देता है । वक्ता के द्वारा दिया हुआ विवरण दो प्रकार से होता है

1. प्रत्यक्ष कथन के रूप में जैसे– दीक्षित जी ने कहा, अचानक एक बूढ़ा व्यक्ति सड़क पर मोटर की चपेट में आकर गिर पड़ा, लहू से धरती रंग गई । वह बूढ़ा घायल होकर भी चिल्ला रहा था, श्मुझे जान–बूझकर, मेरी सम्पत्ति हथियाने के लिये मार डालने का प्रयास किया गया है और मैं षायद अब बचूंगा भी नही ।

2. अप्रत्यक्ष कथन के रूप में जैसे – वर्शा हो रही थी, चारों ओर पानी ही पानी, कहीं सूखी जमीन नहीं, बादल और भी घने होते जा रहे थे, बिजली की कड़क और चमक भी अपना जोर दिखला रही थी ।

प्रत्यक्ष कथन के विवरण में वक्ता का उल्लेख होता है, पाठक जानता है कि वक्ता कौन है किन्तु अप्रत्यक्ष कथन के विवरण में वक्ता स्वयं व्यक्त नहीं होता

विवरणात्मक षैली की विषेशताएं

इसमें तथ्यपरकता होती है ।

अलंकारों वाली संरचनाएं नहीं होतीं ।

1. कर्मवाच्य की संरचनाओं की अधिकता होती है ।

2. सामान्यतः ऐसा कोई वाक्य या वाक्यांष नहीं रहता जिसमें वक्ता की प्रतिक्रिया प्रकट हो

3. . विवरण सामान्यतः भूतकाल में घटित बातों का होता है इसलिए साधारणतः इसमें भूतकाल के क्रियाकलापों का प्रयोग किया जाता है ।

उदाहरण –

1. विज्ञान के विशय में विवरणात्मक षैली

अम्ल वर्शा का कारण वायुमंडल में हो रही फोटो रासायनिक प्रक्रिया है। वहां व्याप्त ओजोन गैस सूर्य की रोषनी के साथ मिलकर सषक्त उत्प्रेरक बन जाती है । धुएं में नाइट्रोजन तथा सल्फर के ऑक्साइड तथा अन्य हाइड्रो कार्बन्स होते हैं जो प्रक्रिया के बाद हाइड्रोक्लारिक या सल्फ्यूरिक अम्ल बन जाते हैं । यह अम्ल बारिष के साथ पष्थ्वी पर आकर फैल जाता है

2. वाणिज्य के विशय में विवरणात्मक सैली

अंतर्राश्ट्रीय मुद्रा कोश का प्रमुख उद्देष्य विश्व में विभिन्न राश्ट्रों में अंतर्राश्ट्रीय मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना है। इसके द्वारा अंतर्राश्ट्रीय आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु समस्त राश्ट्रों को परामर्ष दिया जाता है। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए कोश को विषेशज्ञों का एक दल रखना पड़ता है । मुद्रा कोश के द्वारा इस बात का भी प्रयत्न किया जाता है कि सभी देषों द्वारा समान मुद्रा – नीति का अनुकरण किया जाए ।

3. कला के विशय में विवरणात्मक सैली

श्माटी तिहारश पर पूजा विधि भी आदिवासियों की अपनी परंपरागत सैली की पूरी की जाती है । सबसे पहले गांव के पटेल, कोटवार या सरपंच जो भी मुखिया हो, के द्वारा माटी पुजारी के घर जाकर माटी तिहार मनाने के लिए निवेदन किया जाता है । वह श्माटी पुजारीश सलाह करके तिथि तथा मुहूर्त निर्धारित करता है । उस तय की गई तिथि के अंदर सूर्योदय से काफी पहली उठकर नहा–धोकर तैयारी करके माटी देव गुड़ी पहुंच जाता है। वहां लोक देवी–देवताओं की मूर्ति या चित्र के आगे दीपक जलाए जाते हैं। विचित्र आवाजों के साथ आम षब्दों का ऊंचे स्वर में उच्चारण किया जाता है। पुजारी उस दिन निराहार उपवास करता है ।

(2) मूल्यांकन सैली –

किसी भी घटना अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध में देखने या सुनने वाले के मानस में प्रतिक्रिया होती है । यह प्रतिक्रिया ही भाशा प्रयोग में मूल्यांकन परक सैली को प्रेरित करती है । घटना अथवा व्यक्ति का मूल्यांकन प्रत्येक व्यक्ति अपनी दृश्टि से करता है । प्रत्येक व्यक्ति के सोचने का ढंग उसके संस्कारों, उसकी षिक्षा आदि पर निर्भर करता है जिसके कारण एक ही घटना, वस्तु या व्यक्ति का मूल्यांकन अलगदृअलग व्यक्ति अलग–अलग ढंग से करते हैं तथा अपनी अलग–अलग राय देते हैं ।

मूल्यांकन सैली की विषेशताएं

1. इसमें वैयक्तिकता दिखलाई पड़ती है ।

2. तर्कसम्मता स्थापित करने वाले मिश्र वाक्य होते हैं ।

3. कारणदृकार्य सम्बन्ध वाक्यों की तथा विधि निशेध मूलक वाक्यों की संरचना होती है ।

4. संक्षेप में, निश्कर्शतः मेरा मत है, हमारी धारणा है, किन्तु, परंतु, यदि, मगर आदि का प्रयोग होता है ।

प्रष्न वाक्यों का प्रयोग होता है ।

तुलना सूचक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण –

1. विज्ञान के विशय में मूल्यांकन षैली

षहरी कुश्ठ कार्यक्रमों का लेखा–जोखा तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक इन रोगियों की कमियां व पुनर्व्यवस्थापन की बात सामने नहीं आती । गन्दी बस्तियों में ऐसे मरीजों पर सर्वेक्षण करने के बाद यह पाया गया है कि रोग की प्राथमिक अवस्था में ही विभिन्न उपचार साधनों के प्रयोग के लिए इन्हें प्रोत्साहित नहीं किया गया। वहां ऐसे मरीज अधिक संख्या में पाए जाते हैं, जिसमें रोग की प्राथमिक अवस्था में कुरूपता आ जाती है । इसलिए यह आवष्यक है कि अर्ध चिकित्सीय कर्मचारियों, समाज सेवियों आदि के दल बनाए जाएं जो उन्हें आवष्यक जानकारी दें । कुश्ठ रोग से निबटने के लिए दो तरह से अभियान चलाया जाना चाहिए । प्रथम यह कि प्रभावषाली दवाओं के द्वारा ऐसे मरीजों का उपचार करके उनकी संख्या कम की जानी चाहिए। दूसरा, सर्वेक्षण दल इस रोग से बचने के बारे में सलाह दें ।

2. वाणिज्य के विशय में मूल्यांकन षैली

अल्प–विकसित देषों की आबादी के स्वरूप, प्राकृतिक साधन, विकास के स्तर, संवर्षद्धि की गति और राजनीतिक तथा सामाजिक संस्थाओं में अन्तर्निहित अनेकता से नीति सम्बन्धी विषिश्ट उपायों के बारे में सम्भावित सामान्यीकरण कर सकने की गुंजाइष कम हो जाती है । प्रति व्यक्ति आय तथा पूंजी का निम्न स्तर, जो कि सभी अल्प – विकसित देषों का एक सामान्य लक्षण है, वह सामान्य विष्लेशण सम्बन्धी निश्कर्शों के लिए अक्सर एक अपर्याप्त आधार सिद्ध होता है और नीति निर्धारण के लिए सामान्य सिफारिषों के सम्बन्ध में तो और भी अपर्याप्त होता है। इसी कारण नीति सम्बन्धी एक ही उपाय के परिणाम भिन्न भिन्न अल्पविकसित देषों में भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए सरकारी प्रषासन और उसकी सेवाओं का लाभ उठाने वाली जनता के स्वरूप में भारी परिवर्तन होता है, इसलिए नीति–संबंधी विषेश उपायों की कुषलता पर इसका असर पड़ता है।

3. कला के विशय में मूल्यांकन षैली

अरस्तू पाष्चात्य काव्य षास्त्र के आद्याचार्य हैं । ऐतिहासिक दृश्टि से उनका स्थान वही है जो भारतीय काव्य–षासत्र में भरत का । यद्यपि भारत में भरत मुनि से पूर्व वृषाश्व, षिलालि आदि अनेक आचार्य इस क्षेत्र में कार्य कर चुके थे किन्तु काव्य का सर्वप्रथम व्यवस्थित विवेचन आज भरत मुनि के नाट्य–षास्त्र में ही उपलब्ध है। इसी प्रकार यूरोप में भी अरस्तू से पहले प्रोतगोरस, हिप्पिअस, अरिस्तोफनेस और प्लेटो आदि विद्वान काव्य के विभिन्न अंगों का सैद्धांतिक विवेचन कर चुके थे परन्तु उनमें से किसी का विवेचन इतना नियमित एवं व्यवस्थित नहीं था कि उसे काव्य – षास्त्र की कोटि में रखा जा सके। प्लेटो ने यों तो काव्य और कवि के विशय में बहुत कुछ कहा है, किन्तु इस विशय में उनका दृश्टिकोण निशेधात्मक ही था, अतः कतिपय स्थापनाओं को स्वीकार करते हुए भी उन्हें काव्य–षास्त्र के प्रथम आचार्य पद पर अधिश्ठित करना अनुचित होगा। यह गौरव केवल अरस्तू को ही प्राप्त है।

(3) व्याख्यात्मक षैली

व्याख्या का अर्थ है किसी अस्पश्ट अथवा जटिल विशय–वस्तु को समझाकर प्रस्तुत करने की विधि द्य इसमें वक्ता या लेखक स्वयं व्याख्या करता है इसलिए तटस्थ नहीं रह पाता है यह षैली सूत्र रूप में कही गई बात को स्पश्ट करने के लिये भी प्रयुक्त होती है । ।

व्याख्यात्मक षैली की विषेशताएं

1. व्याख्या में स्पश्टीकरण के लिए एक ही बात को अनेक प्रकार से कहा जाता है अतः यह षैली अध्यापन में विषेश प्रभावी होती है।

2.इस षैली में उदाहरण – वाक्यों का महत्व होता है जिससे बात स्पश्ट हो सके।

3. वाक्य एक सुनिष्चित अर्थ वाले होते हैं।

4. सरल वाक्य होते हैं ।

5. अधूरे अथवा दो अर्थों वाले वाक्यों का प्रयोग नहीं होता है।

6. इस षैली में आवष्यकतानुसार किसी भी काल को व्यक्त करने वाली क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है

7. इस षैली में कारण– कार्य सम्बन्ध के वाक्यों का अत्यधिक महत्व होता है। इनसे व्याख्या के सूत्र एक दूसरे के साथ सम्बद्ध हो जाते है ।

8. यदि, मान लिया जाये, अतएव, वरन्, किन्तु, परन्तु आदि का प्रयोग होता है

बात की स्पश्ट व्याख्यात के लिए कथ्य के निशेधात्मक पक्ष को भी प्रकट करना होता है ।

9. व्याख्या के प्रसंग में जिस बात की व्याख्या की जाती है उससे सम्बद्ध विशयों का आख्यान भी होता है ।

उदाहरण –

1. विज्ञान के विशय में व्याख्यात्मक षैली

षरीर की जैविक क्रिया विधि में जब किसी प्रकार का अवरोध पैदा हो जाता है तो षारीरिक व्यवस्था में असंतुलन आ जाता है । यह असंतुलन अल्पकालिक अथवा स्थाई हो सकता है। इस प्रकार की अव्यवस्था ही रोग, व्याधि अथवा बीमारी का लक्षण लेकर उभरती है । तपेदिक तथा अन्य कई बीमारियां पहले स्थाई एवं प्राणघातक मानी जाती थीं पर आयुर्विज्ञान की बढ़ती सीमाओं के साथ असाध्य रोगों की सूची सिमटते – सिमटते आज कैंसर तक पहुंच गई है।

केंकड़े की तरह एक बार जकड़ लेने पर फिर कभी न छोड़ने वाले इस दुर्निवार रोग को षायद इसीलिए श्कर्क रोगश की संज्ञा मिली । कैंसर आज असाध्यता का पर्याय बन गया है। कैंसर का पता लगते ही रोगी अपने आप को मौत के कुएं में गिरा हुआ समझने लगता है। रोगी का संपूर्ण षारीरिक और मानसिक प्रणाली पर कैंसर का आतंक छा जाता है । फलस्वरूप षरीर कमजोर पड़ने लगता है तथा रोगी का मनोबल गिरने लगता है। इसका प्रभाव यह होता है कि उसकी मेटाबोलक क्रियाएं मंद पड़ जाती हैं। 2. वाणिज्य के विशय में व्याख्यात्मक षैली

वस्तु का मूल्य निर्धारित करने हेतु मांग और पूर्ति दोनों ही आवष्यक है । केवल मांग या केवल पूर्ति मूल्य निर्धारण के लिए पर्याप्त नहीं है जिस प्रकार कैंची के दोनों फलकों में कोई एक फलक अकेला ही कागज को नहीं काट सकता उसी प्रकार केवल उत्पादन व्यय (पूर्ति) अथवा केवल तुश्टिगुण (मांग) वस्तु का मूल्य

निर्धारित नहीं कर सकता। यह हो सकता है कि हम कैंची के किसी एक फल को स्थिर रखकर दूसरे फल की सहायता से कागज को काटने में सफल हो जायें, किन्तु इस आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि कागज को कैंची के केवल एक फल ने काटा है । वास्तव में कागज तब ही कटता है जबकि इसके दोनों फलक किसी एक स्थान पर एक–दूसरे से मिलते हैं । उपर्युक्त उदाहरण में सन्देह नहीं कि एक फलक सक्रिय रहा है और दूसरा निश्क्रिय, किन्तु कागज तब ही

कटा है जबकि दोनों फलकें अपने–अपने भाग का कार्य करते रहे हैं। इसी प्रकार वस्तु का मूल्य उसी स्थान पर निर्धारित होता है जहां कि मांग और पूर्ति की षक्तियां संतुलन में होती हैं।

3. कला के विशय में व्याख्यात्मक षैली

कर्म, ज्ञान और योग से भक्ति की तुलना करते हुए इसे इन सबकी अपेक्षा श्रेश्ठतर घोशित किया गया है। ज्ञान भक्ति का साधन है, भक्ति साध्य है । जिस प्रकार भोजन का ज्ञान कर लेने से क्षुधा षान्त नहीं होती, उसी प्रकार ब्रम्ह प्राप्त कर लेने से ही मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है, अतएव मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन भक्ति ही है। भक्ति के साधन हैं – विशय वासनाओं का त्याग, अखण्ड भजन, भगवद् गुण–श्रवण, कीर्तन, महापुरूशों की कृपा और ईश्वर की अनुकंपा ।

भक्ति के बाधक तत्वों में एक मात्र कुसंगति की चर्चा की गई है, समस्त बुराईयों, काम, क्रोध, मोह आदि कुसंगति के प्रभाव से ही उत्पन्न होती है ।

भक्ति के व्यावहारिक पक्ष में ईश्वर के प्रति प्रेम को महत्व दिया गया है। प्रेम के लिए ईश्वर के साकार और सगुण रूप की अपेक्षा होती है । अतः अवतारवाद का विकास हुआ। दूसरी ओर श्रद्धा के निमित्त अवतार पुरूशों की षक्ति और उनके पराक्रम का चित्रण भी आवष्यक था। इन दोनों उद्देष्यों की पूर्ति के लिए हरिवंष पुराण, वायु पुराण, विश्णु पुराण आदि की रचना की गई, जिनमें विभिन्न अवतारों की लीलाओं का चित्रण इस ढंग से किया गया है कि वह सौन्दर्य और षक्ति – प्रेम और श्रद्धा की उत्पत्ति में सहायक हो सके ।

(4) विचारात्मक षैली

यह कथन की ऐसी षैली है जिसमें प्रयुक्ति के सारे संरचक वाक्य किसी एक विचार या उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करते हैं । इस षैली में विवरण, मूल्यांकन या व्याख्या नहीं होती है । इस षैली में श्रोता या पाठक के मानस को एक ही केन्द्रीय बिन्दु पर विचार करने के लिए तथा प्रमुख विचार बिन्दु के चतुर्दिक रखने का उद्देष्य रहता है ।

विचारात्मक षैली की विषेशताएं

© MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University

1. विभिन्न विशयों के अनुकूल भाशा का प्रयोग होता है

2. वैज्ञानिक और वाणिज्य के विशयों से सम्बद्ध प्रतिपादनों में वक्ता तटस्थ होता है। इनमें वस्तुनिश्ठता होती है, किन्तु कला विशयक प्रतिपादनों में वक्ता अधिक मुखर रहता है तथा अपना मत भी व्यक्त करता है ।

3. भाशा संरचना की दृश्टि से प्रमुख कथ्य को वाचक षब्द का अथवा उसके पर्यायवाची अथवा उसकी भाव–छाया को व्यक्त करने वाले षब्द का अथवा उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम का आवर्तन होता है । उपवाक्य भी मुख्य विचार के विविध पक्षों को उजागर करते हुए उसे ही सघन करते हैं ।

उदाहरण –

1. विज्ञान के विशय में विचारात्मक षैली

अक्टूबर के अन्त में सोवियत संघ द्वारा अमेरिकी कार्रवाई के प्रत्युत्तर में अमेरिका की ओर उन्मुख क्रूज प्रक्षेपास्त्र नियोजित करने की घोशणा की गई है । पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले वर्श दिसम्बर में अमेरिका द्वारा प. जर्मनी में क्रूज तथा पर्सिंग प्रक्षेपास्त्र नियोजित किये गये थे । प्रक्षेपास्त्रों के नियोजन द्वारा अमेरिका ने जिन हितों की पूर्ति की परिकल्पना की थी, रूसी कदम से निष्चय ही उनकी पूर्ति न हो सकेगी। महाषक्तियों की इस प्रकार की कार्रवाई का विषुद्ध परिणाम यह होगा कि परमाणु अस्त्र की रोक के स्थान पर परमाणु अस्त्रों की दौड़ और तीव्र होगी ।

दोनों महाषक्तियों के मध्य प्रक्षेपास्त्र नियोजन प्रतिद्वन्द्विता इस कारण विषेश रूप से चिन्ता का विशय है क्योंकि क्रूज प्रक्षेपास्त्र से उत्पन्न समस्या नितांत भिन्न प्रकार की है। सही बिन्दु पर मार करने वाले क्रूज प्रक्षेपास्त्र अत्यन्त निम्न ऊँचाइ से अपना मार्ग तय करते हैं अतः राडार द्वारा इनका पता लगाना कठिन है। पुनः बिना खोले हुए यह पता लगाना कठिन है कि प्रक्षेपास्त्र में परमाणु विस्फोटक है अथवा परम्परागत विस्फोटक द्य इसके चलते क्रूज प्रक्षेपास्त्रों को सीमित करने की वार्ता का सफल होना कठिन है क्योंकि दोनों महाषक्तियों में से प्रत्येक इस बात का पता कैसे लगायेगा कि षत्रु पक्ष के क्रूज प्रक्षेपास्त्र उसके परमाणु अस्त्र भण्डार के भाग है अथवा परम्परागत अस्त्र भण्डार के । इसी कठिनाई के चलते द्वितीय परमाणु अस्त्र परिसीमन वार्ता ॅ(।स्ज्–प्प) में क्रूज प्रक्षेपास्त्रों के विशय में कुद नहीं कहा गया जबकि दोनों महाषक्तियों को यह ज्ञात था कि षत्रुपक्ष के पास इनका भण्डार है। अब तक जितनी भी परमाणु अस्त्र वार्तायें हुई हैं उन सबमें षस्त्रों के

उत्पादन पर मात्र परिमाणपरक रोक लगायी जा सकी है जबकि परमाणु अस्त्र दौड़ के गुणात्मक पक्ष पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। वास्तव में परमाणु अस्त्रों के गुणात्मक विकास पर श्बातचीत श के माध्यम से अथवा परमाणु अस्त्र भण्डारों को श्संतुलित करने के माध्यम से नियन्त्रण लगा सकना कठिन है। जब तक निषस्त्रीकरण की सहज इच्छा का महाषक्तियों में विकास नहीं होता है तब तक इस प्रकार का नियन्त्रण न हो सकेगा ।

2. वाणिज्य के विशय में विचारात्मक षैली

कथन की षैलियां अन्तर्राश्ट्रीय मुद्रा–कोश विभिन्न राश्ट्रों को आर्थिक विकास के लिए ऋण एवं सहायता प्रदान करता है। अल्प–विकसित तथा विकासषील राश्ट्रों के लिए आर्थिक विकास के प्रयास में आन्तरित स्त्रोतों के अतिरिक्त अन्तर्राश्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से ऋण तथा सहायता प्राप्त करना आवष्यक होता है। विषेश रूप से जब देष आर्थिक आयोजन क्रम के द्वारा आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है तो स्वाभाविक रूप से ही उसे बहुत बड़े आकार में विनियोजन करने की आवष्यकता है । सामान्यतः विनियोग के लिए इन देषों के पास पूंजी की कमी रहती है, जिसे पूरा करने के लिए अर्राश्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से सहायता / ऋण लेने की आवष्यकता होती है । अन्तर्राश्ट्रीय मुद्रा – कोश के द्वारा श्सरकार–स्तर" पर ऋण / सहायता दी जाती है ।

भारत ने इस संस्था से जो ऋण प्राप्त किया है वह भारतीय रूपया तथा के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित है । यह एक मुख्य कारण है, जिससे भारत के लिए यह ऋण इतना महंगा सिद्ध हो रहा है। भारतीय रूपये का मूल्य दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है, जिससे इसका ैक्त से अनुपात भी बदल रहा है, क्योंकि भुगतान में भारतीय रूपया तथा ैक्त का सम्बन्ध है और रूपये का मूल्य निरन्तर कम होता जा रहा है, इसलिए भारत को बहुत अधिक (रूपये के रूप में) भुगतान करना पड़ रहा है ।

इस सम्बन्ध में केवल एक बात भारत के पक्ष में है । वह यह है कि 1980–81 से 1984–85 के बीच भारत ने इस संस्था से जो ऋण प्राप्त किया था, उसके एक बड़े अंष का भुगतान भारत के द्वारा किया जा चुका है किन्तु इसके होते हुए भी, अभी भारत को रूपये के रूप में पर्याप्त रूप से बढ़ी हुई रकम का भुगतान करना है।

भारत ने 1980दृ81 से 1984–85 के मध्य अन्तर्राश्ट्रीय मुद्रा कोश से ैक्त 4429 मिलियन का ऋण ग्थ्थ् (की के अनुसार प्राप्त किया था उस समय के भारतीय

रूपये के मूल्य के अनुसार इसका समस्त मूल्य 4706.63 करोड़ रूपये के बराबर था।

इकोनोमिक टाइम्स, जुलाई 13, 1987 में प्रकाषित आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 30, 1987 तक भारत नें क्त 763—85 मिलियन का भुगतान किया है जो भारतीय रूपये के अनुसार 1155.2 करोड़ रूपया है। इस प्रकार बचा ऋण क्त 3665—15 मिलियन का था जो कि भारतीय रूपये के मौजूदा मूल्य पर 6851.7 करोड़ रूपया होता है। वास्तव में क्त 3665.15 मिलियन पर भारतीय रूपये के मूल्य के अनुसार (1980—81 से 1984—85) जो भुगतान बाकी होना चाहिए था। उससे अब 1345.0 करोड़ रूपया अधिक का भुगतान करना पड़ेगा । यदि भारतीय रूपये का मूल्य और कम हो जाए तो भारत को और अधिक का भुगतान करना पड़ेगा । 3. कला के विशय में विचारात्मक षैली

साहित्य में हमारा संघर्श समता स्वाधीनता के लिये उसी तरह छिड़ा है। मैं यह नहीं मानता हूं कि भूखे लोगों को स्वाधीनता से कोई लेना देना नहीं है; सच्चाई तो यह है कि उन लोगों को ही स्वाधीनता की सबसे अधिक जरूरत है। भूख जब राजनीति का हिस्सा हो तब उसके लिए स्वाधीनता की बात जरूरी है ।

साहित्य भूख और स्वाधीनता के नारों को अलग—अलग उछाल कर सष्जनषीलता की उच्च कोटियां हासिल नहीं करता, वे दोनों के अविभाज्य एहसास को पोशित करता है और हमेषा रचनाषीलता के मोर्चे पर सजग रहता है ।

निश्कर्श में प्रायः साहित्य और स्वाधीनता के मिले—जुले पत्र की बात करता रहा हूं — मैंने साहित्य की स्वायत्तता और सापेक्षता, दलीय प्रतिबद्धता और साहित्य, साहित्य के जैविक, मनोवैज्ञानिक, मार्क्सवादी, उत्स या कि दूसरे प्रष्नों पर जान—बूझकर चर्चा नहीं की। दरअसल इन प्रष्नों से सबकी वाक्फियत है । मैं तो एक भयावह मानवीय स्थिति और उसके लिए सजग साहित्यिक पक्ष की तैयारी की की बात करता हूं जिसे षिविर बद्ध साहित्यकार अपने ही स्वार्थों के लिए अनुचित मानते हैं ।

हम किसी भी पक्ष को खेमों में बांट सकते हैं; किसी भी आदमी, साहित्य या उसके वक्तव्य को संदेह की दृश्टि से देख सकते हैं, ऐसा करना कभी — कभी आवष्यक भी होता है षत्रु — मित्र की पहचान भी जरूरी है लेकिन विश्व — परिदृष्य और साहित्य के मिजाज से अपरिचित रहकर सिर्फ अन्दाजों के आधार पर साहित्य के प्रायोजकों की कांट—छांट षायद अज्ञान नहीं तो अवसरवादिता तो आवष्यक ही कही जायेगी ।

साहित्य के संदर्भ में मैं यह वक्तव्य समकालीन कविता के भूमिका लेखक डॉ. विश्वम्भरनाथ जी उपाध्याय के षब्दों में करूंगा – कविता, कविता के रूप में परखी जाएगी और सामाजिकता के संदर्भ में भी उस पर विचार होगाकृकृ रचना एक व्यवस्था है, विन्यास है, वह सायास हो या अनायास, पर वह रचना है, सृजन है, उद्वमन नहीं ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

(1) कथन की षैलियों से क्या तात्पर्य है? इनके प्रकार लिखिए

(2) विवरणात्मक षैली से आप क्या समझते है ? उदाहरण सहित लिखते हुए, इसकी विषेशताएं लिखिए ।

(3) मूल्यांकन षैली किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए ।

(4) मूल्यांकन षैली की विषेशताएं लिखिए ।

(5) व्याख्यात्मक षैली से क्या अभिप्राय है ?

(6) व्याख्यात्मक षैली की विषेशताएं लिखिए द्य

(7) विचारात्मक षैली की परिभाषा लिखते हुए उसकी विषेशताओं पर प्रकाष डालिए ।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. विवरण षैली

कृकृ होती है । (तथ्यपरक / यथार्थ परक)

2. मूल्यांकन षैली में

दिखाई देती है । (वैयक्तिकता / सामूहिकता)

3. करता है । (व्याख्या / आलोचना)

4. बिन्दु पर विचार करने के लिए

5. व्याख्यात्मक षैली में वक्ता या लेखक स्वयं विचारात्मक षैली में श्रोता एवं पाठक के मानस को एक प्रेरित किया जाता है (प्रमुख / केन्द्रीय)

विभिन्न विशयों के अनुकूल भाषा के प्रयोगों को चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

1. प्रयुक्ति का सीधा सम्बन्ध होता है

(क) षैली के प्रतिपादन से

(ख) विशय वस्तु के प्रतिपादन से

कहा जाता है । (युक्ति / प्रयुक्ति)

(ग) कथ्य के प्रतिपादन से

(घ) भाशा के प्रतिपादन से

2. जिस षैली में वक्ता तटस्थ होता है वह कहलाती है–

(क) व्याख्यात्मक षैली

(ग) मूल्यांकन षैली

(ख) विवरणात्मक षैली (घ) विचारात्मक षैली

3. घटना अथवा व्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है–

(क) विचारात्मक षैली में

(ख) मूल्यांकन षैली में

(ग) विवरणात्मक षैली में

(घ) व्याख्यात्मक षैली में

व्याख्यात्मक षैली प्रभावी होती है

(क) समीक्षा करने में

(ग) अध्ययन में

विचारात्मक षैली का उद्देष्य होता है –

(क) विवरण देना

(ग) केन्द्रीय बिन्दु पर विचार करना

(ख) अध्यापन में

(घ) विवरण देने में

(ख) मूल्यांकन करना

(घ) व्याख्या करना

इकाई—2

(क) – 1

विकासषील देषों की समस्याएँ

विकास प्रतिवेदन

डॉ. रमाषंकर तिवारी

मानव विकास का लक्ष्य रखकर अनेक देष अनेक प्रकार के प्रयास कर रहे हैं और इसीलिये उन्हें विकासषील कहते हैं । विकास की प्रक्रिया में सबसे बड़ी समस्या है – समानता के अभाव । असामानताएं ही दुनिया की व्यवस्था का नियम है। उल्लेखनीय है कि दुनिया में न कभी समानता रही है और लगता है कि न कभी रहेगी। यह असमानता अनेक आधारों पर देखी जा सकती है चाहे वह प्रति व्यक्ति आय हो या जीवन प्रतयाषा या सुविधाओं और वस्तुओं का उपभोग या मन चाहे काम करने की स्वतंत्रता । कुछ देष और क्षेत्र ज्यादा विकसित हैं जबकि कुछ बहुत पिछड़े और कुछ विकास के रास्ते पर चलने की कोषिष कर रहे हैं। भारत जैसे देष विकास की गति की तेजी से बढ़ाकर अपने लोगों के लिये सुख और समषृद्धि लाना चाहते हैं। पर दिक्कतें बहुत हैं। जैसा हमने कहा दुनिया में बहुत संपन्नता और बहुत गरीबी है, आज यानी 21वीं सदी के प्रारंभ होते समय हमारी संख्या 600 करोड़ है, इसमें से 280 करोड़ यानी लगभग आधे लोग प्रतिदिन 2 डॉलर से कम पैसे का और लगभग 120 करोड़ यानी दुनिया के 20 प्रतिषत लोग केवल 1 डॉलर प्रतिदिन की आमदनी पाते हैं। इनमें से 44 प्रतिषत दक्षिण एषिया में रहते हैं । पर बात केवल आमदनी की नहीं हैं, क्योंकि विकास मात्र आमदनी के साथ जुड़ा हुआ नहीं है। बेहतर जीवन आमदनी से कुछ और भी है । सम्पन्न देषों में 100 में से एक 1 बच्चा 5 साल तक जीवित नहीं रहता लेकिन गरीब देषों में 20 प्रतिषत बच्चे और अपनी पांचवी वर्शगांठ नहीं मनाते । संपन्न देषों में 5 प्रतिषत से कम बच्चे कुपोशण का षिकार होते हैं किन्तु सम्पन्न देषों में ऐस बच्चों की संख्या 50 प्रतिषत से भी अधिक है और यह स्थिति तब है जब 20 वीं षताब्दी के कम से कम उत्तरार्द्ध में दुनिया में समानता लाने में गरीब देषों की स्थिति सुधारने में उनकी क्षमताएं बढ़ाने की अनेक कोषिषें की हैं और की जा रही हैं । यह समझाया गया है कि सम्पन्न देषों की सम्पन्नता तभी रह सकती है जब गरीब देषों की स्थिति सुधर जाये । सम्पन्न देष गरीबी के समुद्र में टापू के समान ज्यादा दिन तक टिके नहीं रह सकते। मानवतावादी दृश्टिकोण के साथ आर्थिक मजबूरियां और विकास प्रक्रिया की षर्तों के कारण विकासषील देषों की स्थिति सुधारने की लगातार कोषिषें होती रही हैं। इसलिये विश्व के स्तर पर संपत्ति के

बेहतर बंटवारे और क्षमताओं के विकास का प्रयास हुआ है पर इस सबके बावजूद सम्पन्नतम 20 देषों की औसत आमदनी गरीबतम 20 देषों से 37 गुना अधिक है और विकास की इस प्रक्रिया में पिछले 40 सालों में यह अंतर दुगना हो गया है । समस्याएँ —

विकासषील देषों की सबसे प्रमुख समस्या गरीबी और बेकारी है जो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। 90 के दषक में गरीबी घटाने में काफी प्रगति हुई है। उदाहरण के लिये ऐसे लोग जिनकी जीवन प्रत्याषा 40 वर्श से अधिक नहीं रही, 1990 से 1998 के बीच उनका प्रतिषत 20 से घटकर 14 रह गया है । सुरक्षित पानी की उपलब्धता न होने वाले लोगों का प्रतिषत इस दौरान 32 प्रतिषत से घटकर 28 प्रतिषत रह गया है, अषिक्षित प्रौढ़ों का प्रतिषत 35 प्रतिषत से घटकर 28 प्रतिषत रह गया और 1 डालर से कम आय वाले गरीब लोगों का अनुपात 29 प्रतिषत से घटकर 24 प्रतिषत रह गया है । यद्यपि इस प्रकार के परिवर्तन सभी देषों में आये हैं पर यह परिवर्तन असमान रहा है उदाहरण के लिये गरीबी घटाने में पूर्वी एषियाई देषों में 11 प्रतिषत बिन्दु रही है जबकि सहारा के अफ्रीका के क्षेत्रों में यह मात्र

विकासषील देषों की समस्याएँ

मानव विकास प्रतिवेदन 0.3 प्रतिषत बिन्दु। कुछ देषों ने गरीबी घटाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। मलेषिया में जहां 60 प्रतिषत लोगा 1960 में गरीब थे 1993 में उसका अनुपात घटकर केवल 14 रह गया । चीन में 1978 में 33 प्रतिषत लोग गरीबी रेखा के नीचे थे, 1994 में यह प्रतिषम मात्र 7 रह गया। भारतवर्श में 1974 में 54 प्रतिषत लोग गरीबी की रेखा के नीचे थे, अनुपात आज घटक 27 प्रतिषत रह गया । आज (सन् 2000) केवल आमदनी के मामले में नहीं अन्य क्षेत्रों में प्रगति हुई है जैसे भोजन, स्वास्थ्य और षिक्षा द्य पिछले 20 वर्शों में कुपोशण में काफी कमी आई और कम वजन वाले बच्चों का अनुपात 37 प्रतिषत से घटकर 27 प्रतिषत रह गया है। इसी अवधि में षिषु मष्त्यु दर प्रति हजार जीवित बच्चों में 168 से घटकर 93 रह गई । आज प्राथमिक षिक्षा में बच्चों का प्रवेष अनुपात 86 प्रतिषत के आसपास है पर इनसे विकासषील देषों की समस्याएं स्पश्ट नहीं होतीं । आज दुनिया में 5 वर्श से कम आयु वाले लगभग एक तिहाई बच्चे कुपोशण के षिकार हैं, कोई 180 लाख लोग छूत की बीमारियों से और 300 लाख लोग गैर छूत की बीमारियों से मर जाते हैं। अभी भी 9 करोड़ बच्चे प्राथमिक षालाओं के बाहर रहते हैं और देषों के बीच अंतर बहुत अधिक है। अभी भी असमानताएं बहुत अधिक हैं, दुनिया के सम्पन्न देषों के 20 प्रतिषत लोग दुनिया

के कुल उपभोग का 86 प्रतिषत उपयोग करते हैं । इन देषों के सम्पन्नतम 20 प्रतिषत लोग दुनिया का 45 प्रतिषत मांस और मछली खा जाते हैं जबकि गरीब देषों के 20 प्रतिषत लोग केवल 5 प्रतिषत हिस्सा पाते हैं। सम्पान्नतम देषों के 20 प्रतिषत लोग 58 प्रतिषत ऊर्जा का उपयोग करते हैं । गरीब देषों के गरीबतम 20 प्रतिषत लोग मात्र 4 प्रतिषत का । सम्पन्न देषों के 20 प्रतिषत लोग 74 प्रतिषत टेलीफोन पर अधिकार रखते हैं जबकि गरीबतम 20 प्रतिषत लोग केवल प्रतिषत । इतना ही नहीं सम्पन्नतम 20 प्रतिषत लोग दुनिया के कागज का 84 प्रतिषत भाग उपयोग लाते हैं जबकि गरीबतम 20 प्रतिषत लोग केवल 1.1 प्रतिषत ।

समस्याओं की प्रकृति व दायरा बहुत व्यापक है –

भारत में कुल प्रजनन दर 3.5 है और इसे घटाकर 2.1 लाना है, भारत में 48 प्रतिषत जनसंख्या कुपोशण का षिकार है और राश्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार 93–94 में 80 प्रतिषत ग्रामीण और 70 प्रतिषत नगरीय जनसंख्या का कैलोरी उपभोग आदर्ष मानदण्डों से कम था ।

षिषु मष्त्यु दर भारत में लगभग 72 प्रतिषत हे, ग्रामीण क्षेत्रों में 78 प्रतिषत और नगरीय क्षेत्रों में 76 प्रतिषत, कई राज्यों की स्थिति बहुत खराब है जिनमें म.प्र. एक है।

आज कोइ 62 प्रतिषत लोग साक्षर हैं किन्तु गुणात्मक दृश्टि से उनकी साक्षारता बहुत महत्व की नहीं है। इन साक्षरों में 24 प्रतिषत पुरूश और 28 प्रतिषत महिलाएं वास्तव में किसी भी षिक्षा के स्तर से काफी पीछे हैं।

आज भारत में कोई 2.29 करोड़ मकानों की कमी अनुमानित है। बावजूद सारे प्रयासों के यह अनुमान है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 85 प्रतिषत और नगरीय क्षेत्रों के 30 प्रतिषत लोगों के पास षौचालय की सुविधा नहीं है । यही हाल अन्य स्तरों पर है ।

आज सभी देषों के लोग विषेशकर विकासषील देषों के लोग हिंसा और धमकियों के साये में जीने के लिये बाध्य हैं और नगरीय सभ्य जीवन जीने में अनेक कठिनाईयां हो रही हैं। संघर्श, राजनैतिक दबाव, अपराध और हिंसा, लोगों के विकास को प्रभावित करने में काफी योगदान देते हैं ।

पूरी दुनिया में हर तीसरी महिला को अपने परिचितों के द्वारा ही किसी न किसी प्रकार हिंसा का सामना करना पड़ता है। पूरी दुनिया में 120 लाख महिलाएं और 18 वर्श से कम आयु की लड़कियां वैष्यालयों की ओर धकेली जाती हैं ।

10 करोड़ से ज्यादा बच्चे अभी भी सड़कों पर काम कर रहे हैं । मानव अधिकारों के मामलों में काफी प्रगति हुई है पर अभी भी बहुत कुछ समस्याएं बाकी हैं।

महिलाओं के संबंध में कई विकासषील देषों में कानून बनाये गये हैं, लोकहित मुकदमों के द्वारा पर्यावरण, षिक्षा आदि के क्षेत्र में भारत में काफी प्रगति हुई है, कोई 12 देषों में मानव अधिकार ओमबड्समैन काम कर रहे हें पर 45 से अधिक देषों प्रति लाख जनसंख्या में 10 से भी कम जज हैं इसलिये मुकदमे लंबित हैं ।

सन् 1900 में पूरी दुनिया में कहीं वयस्क मताधिकार नहीं था आज लगभग सभी देषों में है । 1974 और 1999 के बीच बहुदलीय चुनाव पद्धति कोई 113 देषों में प्रदान की गई पर 40 देष अभी इससे वंचित हैं। अनेक देषों में प्रजातंत्र खतरे में है और हाल के दषक में कई देष चुनाव से परे हटकर षासन व्यवस्था में आ गए हैं। अभी भी दुनिया में केवल 14 प्रतिषत महिलाएं संसदीय निर्वाचित पदों पर हैं और 1999 में दुनिया में 87 जर्नलिस्ट और मीडिया के लोगों को अपना काम करते हुए मौत के घाट उतार दिया गया ।

1998 के अंत में 15 करोड़ से अधिक लोग बेकार थे । विकासषील देषों में 25 करोड़ से ज्यादा बालश्रमिक पाये जाते हैं ।

राश्ट्र की सीमा के भीतर संघर्शों ने अनेक समस्याएं खड़ी कर रखी है और ये संघर्श आधुनिक हथियारों के साथ 90 के दषक में घरेलू संघर्शों में 50 लाख से ज्यादा लोगों की मष्त्यु हुई । 1 करोड़ से अधिक षरणार्थी और 50 लाख लोग घरेलू स्तर पर विस्थापित हुये हैं । सुधार के युग में ये असमानताएं और अधिक बढ़ी है ।

समस्याएं और भी जटिल हैं । इन सम्पन्नतम देषों के बढ़ते उपभोग के कारण कार्बन डाई आक्साईड का उत्पादन सर्वाधिक होने लगा और पूरी दुनिया का वातावरण प्रदूशित हो रहा है । यही कारण है कि ओजोन की परत में छेद हो गया है। उल्लेखनीय है कि हर वर्श अमेरिका 20.5 मैट्रिक टन कार्बनडाईआक्साइड निकालता है । ये आंकड़े 1995 के हैं। जबकि ब्राजील केवल 1.6 मैट्रिक टन द्य दुनिया में स्वच्छ पानी का उपभोग 1960 के बाद से दुगुना हो गया, मछली पकड़ना 4 गुना हो गया है, लकड़ी का उपभोग 25 सालों में 40 प्रतिषत बढ़ गया है, पानी का संकट अनेक देषों में व्याप्त है, भारत उनमें से एक है, अत्यधिक चराई होने के कारण दुनिया 1/6 भाग जो लगभग 2 बिलियन हेक्टेयर्स होता है, बेकार हो गया है। वन क्षेत्र निरंतर घटता जा रहा है, 1970 में प्रतिषत हजार व्यक्तियों के पीछे वन क्षेत्र 11.4 वर्ग कि.मी. से घटकर आज 7.3 रह गया है। दुर्लभ जाति के वन्य प्राणी लगातार घटते जा रहे हैं। नतीजा यह हे कि उन्नत देषों में जो

बच्चा पैदा होता है वह दुनिया को ज्यादा उपभोग और प्रदूशण देता है जबकि विकासषील देषों के 30 से लेकर 50 बच्चे भी उतना नहीं कर पाते हैं । विकासषील देषों की समस्याओं में बढ़ती जन्मदर या और बेहतर षब्दावली में कुछ प्रजनन दर बढ़ती षिषु मृत्यु दर, कुपोशण, अषिक्षा, मकानों की कमी और समाज में गरीब और कमजोर वर्गों की उपेक्षा प्रमुख समस्याएं हैं। इसलिये समस्या केवल आर्थिक वृद्धि दर बढ़ाने या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि लाने की नहीं है बल्कि व्यक्ति के विकास की अधिक है ।

मानवीय विकास

आज जब मानव विकास की बात की जाती है तो मानव विकास के 2000 के प्रतिवेदन में

मूलतः लोगों को सम्मानपूर्वक जीने और स्वतंत्रतापूर्वक निवास करने की बात महत्वपूर्ण बताई जाती है। गरीबी की रेखा से ऊपर उठ जाने, कुछ अधिक वस्तुओं का उपभोग करने, टेलीविजन और समाचार पत्र पढ़ लेने या स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार होने को मात्र मानव विकास नहीं माना जा सकता । यदि मानव विकास की बात होनी है तो वह कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सही मायनों में अनेक बातों से मुक्ति होना जरूरी है जैसे विभेद से मुक्ति चाहे वह लिंग के आधार पर हो, जाति के आधार पर हो, वर्ण के आधार पर हो, राश्ट्रीयता के आधार पर हो या अन्य किसी आधार पर । क्योंकि व्यक्ति को यह विभेद बहुत अधिक खलता है ।

मूलभूत आवष्यकताओं से मुक्ति यह तभी संभव है जब व्यक्ति को एक न्यूनतम जीवन स्तर

– विकासषील देषों की समस्याएँ

मानव विकास प्रतिवेदन उपलब्ध हो ।

अपने विकास करने की स्वतंत्रता ताकि वह अपनी क्षमताओं के अनुरूप उन्नति प्राप्त कर सके ।

डर से मुक्ति, धमकी, व्यक्तिगत सुरक्षा की समस्याओं, ह्रास, राज्य और सरकार के द्वारा अनावष्यक दण्ड, हिंसा सभी से मुक्ति आम व्यक्ति के विकास के लिये आवष्यक है ।

अन्याय और कानून के नियम में उल्लंघन से मुक्ति ।

विचार करने और उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और निर्णय लेने में भागीदारी ।

बिना षोशण के बेहतर ढंग से काम करने की स्वतंत्रता ।

मानवीय विकास के लिये जिन चीजों की आवष्यकता है वह है समुदाय के लिये ऐसे मानदण्ड तय करना ताकि व्यक्ति के जीवन मूल्यों की रक्षा की जा सके ।

संस्थाओं का निर्माण करना ताकि अच्छी परंपराएं डल सकें और लोग इन संस्थाओं के आधार पर, अच्छा व्यवस्थित जीवन गुजार सकें ।

कानून को मान्यता होना और उसका पालन होना ताकि आम आदमी का जीवन सुरक्षित और सुखी हो सके ।

एक सुरक्षित और बेहतर आर्थिक वातावरण ताकि व्यक्ति एक न्यूनतम स्तर पर जी सके ।

प्रजातंत्र की स्थापना अधिक खुली और पारदर्षी सामाजिक व्यवस्था और भ्रश्टाचार से मुक्ति ।

मानवीय विकास का उद्देष्य एक ऐसे वातावरण का निर्माण है जिसमें लोग अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकें और उनके चुनाव का दायरा और उनके विकल्पों का दायरा विस्तष्त हो सके तथा राश्ट्र में उपलब्ध साधनों के उपयोग के संबंध में प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को समान रूप से भागीदार महसूस कर सकें।

विकासषील देषों में आने वाले 25 वर्शों में जनसंख्या निष्चित रूप से बढ़ती रहेगी और यह वष्द्धि 1. 84 बिलियन की संभावित है । इसलिये अगर 2015 तक हम गरीबों का अनुपात घटाना चाहते हैं तो गरीबी घटाने की चक्रवष्द्धि दर 2.7 प्रतिषत प्रतिवर्श होना चाहिये । इसलिये चुनौतियां बहुत अधिक हैं। कम से कम तीन क्षेत्रों में सोच–विचार कर प्रयास किये जाना चाहिये तभी विकासषील देषों की मूलभूत समस्याओं से मुक्ति मिल सकेगी और वास्तविक मानव विकास प्राप्त किया जा सकता है –

अवसरों का विस्तार जब तक भौतिक सुख–सुविधाओं का विस्तार नहीं होगा लोगों का जीवन स्तर बेहतर नहीं होगा तब तक हिंसा, अत्याचार, अपराध और अन्य प्रकार की समस्याएं बनी रहेंगी। इसके लिये आवष्यक है कि गरीब लोगों के लिये परिसंपत्तियों का निर्धारण किया जाये। ऐसे गरीब बच्चों के लिये वजीफे की व्यवस्था, अच्छी गुणवत्ता वाली सेवाओं की उपलब्धता, असमानताओं में कमी आदि ।

2. सषक्तिकरण को प्रोत्साहन इसके लिये राजनैतिक, सामाजिक और अन्य संस्थाओं के विकास और उनकी प्रक्रियाओं को विकसित करने के द्वारा लोगों को

सषक्त बनाया जा सकता है। वर्तमान में विकासषील देषों में गरीब और कमजोर हैं वे निरंतर हाषिये पर डाले जाते रहे हैं। इस प्रवष्त्ति को रोके बगैर मानव विकास की बात करना निरर्थक है । इसके लिये राजनैतिक और कानूनी रूप से व्यवस्थाएं बहुत आवष्यक हैं। एक ऐसा लोक – प्रषासन जो विकास और समानता को बढ़ाये । विकेन्द्रीकरण, सामुदायिक विकास के बिना लोगों का सषक्तिकरण संभव नहीं है

द्य सामाजिक बुराईयों से और बंधनों से मुक्ति की व्यवस्था बहुत महत्वपूर्ण षर्त है और इसके लिये सामाजिक पूंजी और विकास आवष्यक है।

3. सुरक्षा को बढ़ावा लोगों को आर्थिक झड़पों, प्राकृतिक विपदाओं, कमजोर स्वास्थ्य, अपंगता, निजी हिंसा और राज्य के द्वारा की जाने वाली हिंसा से मुक्ति मिलना बहुत आवष्यक है ।

इसके लिए सतत् प्रयास किये जाने चाहिये व्यक्तिगत हिंसा और राज्य के द्वारा हिंसा को रोकने के सोचे–समझे प्रयास के बगैर यह संभव नहीं है ।

एक बेहतर मानवीय विकास के लिये आने वाले दिनों के लिये विश्व स्तर में कुछ एजेण्डा इस प्रकार का निर्धारित किया गया है

सन् 2015 तक गरीबी की रेखा के नीचे वाले लोगों का अनुपात घटाकर आधा करना ।

सन् 2015 तक सभी बच्चों को प्राथमिक स्कूलों में प्राथमिक षालाओं में प्रवेष दिलाना ।

जेण्डर समानता और महिलाओं की सषक्तिकरण की दिषा में इस प्रकार से प्रगति करना कि जेण्डर

असमानताएं सन् 2005 तक कम से कम षिक्षा के क्षेत्र में समाप्त हो जाये ।

2015 तक षिषु और बाल मष्त्यु दर को दो तिहाई घटाने का प्रयास करना ।

सन् 2015 तक मातष मष्त्यु दर का अनुपात तीन चौथाई घटाना ।

सन् 2005 तक पुनउत्पादन, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सभी लोगों को उपलब्ध कराना । सन् 2005 तक ऐसे राष्ट्रीय व्यूह रचना अपनाना ताकि टिकाऊ विकास कायम हो सके ताकि पर्यावरण में होने वाली हानिक की क्षतिपूर्ति 2015 तक पूरी की जा सके।

विकासषील देषों की समस्याएं कई अर्थों में विकसित देषों से भिन्न हैं और उनकी मात्रा में अंतर है। यह कहना बहुत मुष्किल है कि विकसित देषों में वास्तव में मानव विकास हुआ है पर वर्तमान दृश्टिकोण से एक बेहतर दुनिया बनाने के लिये सभी को प्रयास करने होंगे। यह उल्लेखनीय है कि सारी व्याख्याओं और स्पश्टीकरण के बावजूद विकास की धारणा की एक निष्चित रूपरेखा नहीं बनाई जा सकी है और यह बहुत कुछ व्यक्तिगत सोच पर निर्भर करता है ।

बीसवीं सदी के 60 के दषक तक विकास के लिये आमदनी और पूंजी में वषद्धि को आवष्यक माना जाता रहा। 1970 के दषक में ही यह बात स्पश्ट हुई कि भौतिक पूंजी पर्याप्त नहीं है। अगर लोगों को सही विकास के रास्ते में लाना है तो स्वास्थ्य और षिक्षा जैसे मुद्दों को महत्व दिया जाना आवष्यक है। 1980 के विश्व विकास प्रतिवेदन में इस पर जोर दिया गया था। 1990 के विश्व विकास प्रतिवेदन में गरीबी घटाने के उपायों के साथ—साथ गरीबों के लिये मूलभूत सेवाओं को देने की व्यवस्था भी सुझायी गई। 1990 में संयुक्त राश्ट्र संघ के तत्वावधान में मानव विकास रपट पहली बार प्रकाषित हुई और उस समय प्रति व्यक्ति आमदनी को छोड़कर मानव विकास निर्देषांक विकसित किये गये और तब से लेकर अब तक हर वर्श मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाषित होते हैं और उस दिषा में प्रयास किये जा रहे हैं ।

इन प्रतिवेदनों में हर बार नीतिगत सुझाव दिये गये और मानव विकास के विभिन्न पहलुओं को गया। 1990 के प्रतिवेदन में टिकाऊ मानव विकास की बात की गई और मानव सुरक्षा को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया । 1992 के प्रतिवेदन में स्वास्थ्य, षिक्षा, सुरक्षित जल तथा सेनीटेषन तथा परिवार नियोजन के विशयों को प्राथमिकता दी गई। 1994 के प्रतिवेदन में आर्थिक सुरक्षा को महत्वपूर्ण बताया गया और अंतर्राश्ट्रीय आतंकवाद, नषीली दवाइयों, प्राकृतिक विपदा से राहत को महत्वपूर्ण माना गया। 1995 प्रतिवेदन जेण्डर विभेद पर आधारित था। 1996 में गरीबोन्मुखी विकास की बात की गई। 1997 में लोगों के सषक्तिकरण के लिये गरीबी हटाने पर जोर दिया गया । 1998 का प्रतिवेदन गरीबी और असमानताओं पर आधारित था और मिलजुल कर उपभोग करने की प्रवषत्ति की आवष्यकता इसमें प्रतिपादित की गई । 1999 के प्रतिवेदन में मानवीय चेहरे के साथ भूमण्डलीकरण के पहलुओं पर प्रकाष डाला गया और 2000 के प्रतिवेदन में मानवीय अधिकारों की बात की गई ।

मानव विकास प्रतिवेदन में मानव विकास को नापने के लिये कुछ निर्देषांकों का उपयोग किया गया और 1990 में सबसे पहले मानव विकास निर्देषांक

विकसित किया गया जो एक कंपोजिट इंडेक्स है। इसमें तीन बातों को षामिल किया गया है– जीवन प्रत्याषा, साक्षरता और बेहतर जीवन स्तर द्य 1995 के प्रतिवेदन में जेण्डर सषक्तिकरण और जेण्डर आधारित विकास निर्देषांक को विकसित करने की कोषिष की गई है। इसमें जेण्डर आधारित असमानताओं को मापा गया। इसमें जीवन प्रत्याषा विकासषील देषों की समस्याएँ

मानव विकास प्रतिवेदन महिला और पुरूश के आधार पर, साक्षरता और आय के स्तर को लिंग भेद के आधार पर नापने की कोषिष की गई । 1997 में मानवीय गरीबी निर्देषांक विकसित किया गया और यह वंचना को और ऐसे लोगों के अनुपात को षामिल किया गया जिनकी पहुंच सुरक्षित पानी, स्वास्थ्य सुविधाएं और 5 वर्श तक के वे षिषु जिनका वजन कम है विकासषील देषों के लिये काफी महत्वपूर्ण माना जाता है । उसी प्रकार विकसित देषों के लिये मानवीय गरीबी निर्देषांक भी विकसित किया गया है उसमें जीवन प्रत्याषा 60 वर्श और वयस्क काम करने की साक्षरता बेकारी की दर और गरीबी की रेखा के नीचे के निर्देषांक मानव विकास प्रतिवेदनों में यह बात स्पश्ट रूप से स्वीकार की गई कि आर्थिक सफलता और मानवीय विकास के संबंध होते हुये भी यह बहुत सीधा और स्वमेव रहा है क्योंकि समान आमदनी के बावजूद दो देषों के मानव विकास निर्देषांक अलग–अलग है। इसी प्रकार समान मानवीय विकास का स्तर होने के बावजूद दो देषों की राश्ट्रीय आमदनी अलग–अलग पाई जाती है। विभिन्न देषों ने अपने–अपने मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किये। उल्लेखनीय है कि भारत में विभिन्न राज्यों के लिये मानव विकास निर्देषांक तैयार किये गये और म.प्र. पहला राज्य है जिसने 1975 में पहली बार व 1998 में दूसरी बार मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किया ।

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. मानव विकास प्रतिवेदन से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

2. विकास की सबसे बड़ी समस्या क्या है एवं वह समस्या किन–किन आधारों पर है ?

3. ″विकास मात्र आमदनी से जुड़ा नहीं है, बेहतर जीवन आमदनी से कुछ और भी है ।ं कथन को स्पश्ट कीजिए ।

4. दुनिया के सम्पन्न देषों में 20 प्रतिषत लोग कुल उपभोग का 86 प्रतिषत उपभोग करते हैं। इस कथन के लिए प्रमाण दें;

5. विकासषील देषों की प्रमुख समस्याएं क्या हैं ?

6. मानव विकास के 2000 प्रतिवेदन में मुख्य बातें क्या हैं ?

7. विकासषील देषों में कित तीन क्षेत्रों में मानव विकास के लिए गंभीर प्रयास किया जाना चाहिए ?

8. मानव विकास के लिये बने विश्व एजेण्डा के किन्ही तीन बिन्दुओं को बताइए ।

9. वर्श 1990 में विकसित मानव विकास निर्देषांक क्या है ?

10. मानवीय गरीबी निर्देषांक वर्श 1997 को समझाइये

11. विकासषील देषों की मूलभूत समस्याओं से श्मुक्ति में अवसरों का विस्तारश किस तरह

उपयोगी है ?

12. विकासषील एवं विकसित देषों में षिक्षा, कुपोशण, प्रजनन दर, षिषु एवं मातष्त्व मष्त्यु दर एवं जीवन प्रत्याषा पर अपने विचार संक्षेप में व्यक्त करें ।

13. उपभोग एवं प्रदूशण में विकसित देषों की क्या भूमिका है ?

खाली स्थान भरें

लाना है।

(2.1 प्रतिषत / 2.2 प्रतिषत) कुपोशण का षिकार है । (48 प्रतिषत / 49 प्रतिषत)

1. भारत की कुल प्रजनन दर 3.5 प्रतिषत है इसे घटाकर

2. भारत की कुल आबादी का

3. भारत में षिषु मष्त्यु दर

4. विकासषील देषों में बाल श्रमिकों की संख्या

से अधिक है। (25 करोड़ / 29 करोड़)

5. सम्पन्न 20 देषों की औसत आय गरीबतम 20 देषों से

6. गुना अधिक है (37/40 गुना)

सम्पन्न देषों में 20 प्रतिषत लोग ऊर्जा का कृकृ उपयोग करते है । (58 प्रतिषत / 60 प्रतिषत)

1 (72 / 1000 / 78 / 1000)

49 हिन्दी भाशा एवं समसायिकी

जबकि गरीब देषों के 20 प्रतिषत लोग ऊर्जा का

उपयोग करते हैं ।

(4 प्रतिषत / 6 प्रतिषत)

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे

का चिन्ह लगाइए ।

1. सन् 2015 तक गरीबी रेखा के

नीचे वाले लोगों का अनुपात घटाकर करना है–

(क) दुगुना

(ख) आधा

(ग) तीन / चार

2. (क) एक चौथाई

(ग) तीन चौथाई

(घ) षून्य

सन् 2015 तक षिषु और बाल मष्त्यु दर को घटाकर करना है

(ख) आधा

(घ) दो तिहाई

3. वर्श 1990 के मानव विकास निर्देषांक में क्या नहीं है.

(क) बेहतर जीवन स्तर

(ख) साक्षरता

(ग) तकनीकी ज्ञान

4. (घ) जीवन प्रत्याषा

गरीबी घटाने में परिवर्तन असामान्य है । पूर्वी एषियाई देषों में 11 प्रतिषत बिन्दु रही है जबकि सहारा के अफ्रीका के क्षेत्र में प्रतिषत बिन्दु हैं –

(क) 0.3 प्रतिषत बिन्दु

(ग) 33 प्रतिषत बिन्दु

(ख) 0.3 प्रतिषत बिन्दु

(घ) 13 प्रतिषत बिन्दु

सम्पन्न देषों में 20 प्रतिषत लोग कागज का 84 प्रतिषत उपयोग करते हैं, जबकि गरीबी देषों के 20 प्रतिषत लोग कागज का उपयोग करते हैं –

(क) 11 प्रतिषत

(ग) 1.1 प्रतिषत

(ख) 10 प्रतिषत

(घ) 16 प्रतिषत

वर्श 1970 से 1999 तक बहुदलीय चुनाव पद्धति 113 देषों में प्रदान की गई है, पर अभी भी इससे वंचित हैं –

(क) 50 देष

(ख) 40 देष

(ग) 75 देष

(घ) 80 देष

7. अभी भी दुनिया में महिलाएं संसदीय निर्वाचित पदों पर हैं –

(क) 16 प्रतिषत

(ख) 13 प्रतिषत

(ग) 14 प्रतिषत

(घ) 19 प्रतिषत

8. भारत का पहला राज्य कौन सा है जिसने 1975 में पहली बार व 1998 में दूसरी बार मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किया

(क) उत्तर–प्रदेष

(ग) मध्यप्रदेष

(ख) हिमाचल प्रदेष

(घ) आन्ध्रप्रदेष

2 विकासात्मक पुनर्विचार रू कल्याण के प्रष्न

डॉ. ओंकार षरण श्रीवास्तव

विकास के बारे में अंग्रेजी भाशा में दो षब्द प्रयोग होते हैं जिनमें अन्तर किया जाता है। एक है वृद्धि जिसको हम आर्थिक वृद्धि कहते हैं यह एक –आयामी है अर्थात् मात्र राश्ट्रीय आय में वृद्धि से नापा जाता है। राश्ट्रीय आय में वृद्धि तो खाद्यान्न में वृद्धि से नापी जाती है और युद्ध सामग्री या विलासिताओं में वृद्धि से राश्ट्रीय आय में वृद्धि होती है परन्तु दोनों का महत्व बराबर नहीं मानते, अगर हम आर्थिक वृद्धि का सामाजिक लेखा–जोखा करें ।

आर्थिक वषद्धि का एक और माप है प्रति व्यक्ति आय में वषद्धि, अगर किसी देष की राश्ट्रीय आय + 90,000 करोड़ से + 1,00,000 करोड़ हो जाये और जनसंख्या 9 करोड़ से 10 करोड़ हो जाये तो प्रति व्यक्ति आय तो + 10,000 ही रहेगी इस मानदण्ड से विकास अथवा वषद्धि कुछ नहीं हुई अतः वषद्धि में अपस्फीतिकरण जनसंख्या वषद्धि लगाना पड़ेगी ।

दूसरा अपस्फीतिकारक मूल्य वषद्धि है । अगर राश्ट्रीय आय +90,000 से + 1,20,000 होती है परन्तु वषद्धि 25 प्रतिषत होती है तो 125 / 100 = 1.25 मूल्य + अपस्फीतिकरण 1,20,000/1.25 = 96,000 तो +12,000 में 1.25 से भाग देने पर प्रति व्यक्ति वास्तविक आय गिर कर +96,000 ही रह जायेगी ।

अर्थात् आय वषद्धि दर को जनसंख्या वषद्धि दर से ज्यादा से और फिर मूल्य वषद्धि दर से ज्यादा होना होगा ।

आर्थिक विकास बहुआयामी है यह मात्र विकास की मात्रा पर विचार नहीं करता, बल्कि विभिन्न प्रकार पर विचार करता है। भोजन पर्याप्तता, सबको आवास, सबकी मूलभूत आवष्यकताओं की पूर्ति, सामाजिक रूप से स्वीकार्य आय व सम्पत्ति–धारण, स्वच्छ आर्थिक–सामाजिक–राजनैतिक – भौतिक पर्यावरण, षिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं का फैलाव, अंचल क्षेत्रों का विकास, पिछड़े वर्ग / गरीबों की गरीबी का उन्मूलन। ये सब विकास के मुद्दे हैं। गरीबी उन्मूलन, आर्थिक दुख निवारण, मानव विकास जरूरी

है ।

न्याय का प्रष्न

पहले यह सोच थी कि सामाजिक न्यायपूर्ण वितरण के लिए राश्ट्रीय आय बढ़ाना जरूरी है अन्यथा यह श्गरीबी में समानता श लाना होगा। अधिक आय में सभी का हिस्सा बढ़ेगा । विकास के लाभ नीचे तक पहुंचेंगे।

जब ऐसा नहीं हुआ और स्वतंत्रता के बाद दो दषकों तक गरीबों की दषा में कुछ सुधार नहीं हुआ तो अलग से गरीबी निवारण के कार्यक्रम बने, 20 सूत्रीय कार्यक्रमों से लेकर समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के लगभग 100 कार्यक्रम बने। इनमें व्यय व अपव्यय तथा भ्रश्टाचार अधिक रहा ।

राजनीति तथा राजनीतिज्ञों ने सभी आर्थिक योजनाओं को सफल नहीं होने दिया । जनसंख्या नियंत्रण पर मतभेद हैं; परियोजना कहां हो इस पर मतभेद है; बाढ़ नियंत्रण कार्य सूखे वर्शों में चलते हैं। सूखा राहत कार्य बाढ़ में चलते रहते हैं। दोनों को नहीं किया जा सका, अर्थात् दोनों को काबू में रखने का प्रबंधन न हो सका, अतः फिर विकास, सामाजिक न्याय की मांग हुई और फिर विकास – सामाजिक

विकासषील देषों की समस्याएँ

मानव विकास प्रतिवेदन

5 1 सामाजिक न्याय की मांग हुई और फिर विकास – सामाजिक न्याय के माध्यम से हो, इसकी मांग हुई षहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की मांग हुई

आरक्षण की मांग विकास में न्याय के लिए हुई । उसके लाभ व्यापक नहीं रहे, वे उन्हें ही प्राप्त हुए जो राजनीति में आगे आये । अब यह आरक्षण हमेषा के लिए इसीलिए मांगा जाता है ताकि आर्थिक विकास के साथ, विभिन्न व्यक्तियों को सामाजिक न्याय मिले, उन्हें षक्तिमानता मिले व उनका मानव विकास हो ।

षासकीय उपक्रमों की असफलता ने सरकार का आर्थिक विकास में योगदान कम किया है। पहले विकासरहित रोजगार सृजन बहुत हुआ । अब रोजगार रहित विकास बहुत है । आर्थिक विकास में सामाजिक विकास के प्रष्न हमेषा की तरह उलझे हुए हैं परन्तु समाधान मांगते हैं।

कल्याण के प्रष्न

यूँ तो समस्त अर्थषास्त्र ही सभी के आर्थिक कल्याण का विशय है, परन्तु स्पश्ट रूप से इसे प्रो. ए.सी. पीगू व हाल में भारत के अर्थषास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता इसे नये सन्दर्भों में उठाया है

एडम स्मिथ से लेकर पीगू तक इस बात पर जोर देते रहे हैं कि जो दूसरों को खिलाते व पहनाते हैं वे भी स्वयं अच्छा खायें, पहने व रहें। माल्थस तो यह चाहते थे कि समस्त समाज में दो ही वर्ग हों – मध्यम आय वर्ग व धनी वर्ग। जो. एस.

मिल यह चाहते थे कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में (1) पूंजीवाद की सक्षमतायें व (2) समाजवाद की न्याय पूर्ण वितरण पद्धति को षामिल करें ।

प्रो. पीगू ने आर्थिक कलयाण बढ़ाने के लिए विकास प्रक्रिया में निम्न बातों का समावेष करने को कहा–

(1) राश्ट्रीय आय जब बढ़ायी जाये तो सामाजिक रूप से अधिकाधिक व्यक्तियों द्वारा चाही गयी तथा आम आदमी की जरूरत की मूलभूत वस्तुएं या सभी वेतन मजदूरी कम आय प्राप्त करने वालों की जरूरतों का सामान व सेवायें पहले पैदा की जायें। उत्पादन व उपभोग का महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि कुछ लोगों की विलासिताओं को पूरा करने से पूर्व सबकी आवष्यकतायें पूरी हों । राश्ट्रीय आय बढ़ना तो युद्ध सामग्री के अधिक उत्पादन से भी होता है परन्तु उससे कल्याण नहीं बढ़ता ।

(2) सहकार है ।

(3) श्रम वर्ग व श्रमकर्ताओं से जोरजबरदस्ती काम न लिया जाये ।
उत्पादकता वषृद्धि एक

राश्ट्रीय आय का न्यायोचित वितरण हो । समान वितरण तो सम्भव नहीं है परन्तु समान लोगो में असमानता न हो और न असमान लोगों में समानता लायी जाये । कार्य व दक्षता के आधार पर समानता हो।

यह है

प्रो. अमर्त्य सेन ने आर्थिक विकास व कल्याण के प्रष्न पर तो बहुत अधिक लिखा जिसका सार –

(1) विकास व प्रजातांत्रिक पद्धति एक साथ हो, प्रजातंत्र में दुर्भिक्ष नहीं पड़ते क्योंकि जवाबदारी होती

है । प्रष्न मात्र अत्यन्त भूखमरी अथवा बिल्कुल खाना न मिलने वाली भूख से ही नहीं है बल्कि अध–पेट भोजन से, अर्थात् पोशक भोजन मिलने से भी है ।

(2) विकास व कलयाण के लिए सभी को षक्तिमानता मिलना चाहिए। जिसके लिए निम्न बातें जरूरी हों –

(37) सभी साक्षर हों, उनमें विपणन योग्य योग्यतायें व क्षमतायें हों ।

(ब) देष में सम्पत्ति विहीन परिवार न हों ।

(स) उत्पादन योग्यताओं के प्रयोग, यानी रोजगार के लिए उत्पादन क्षमताओं में वांछित वषृद्धि हो ।

(द) स्वास्थ्य सुविधायें सभी को

सुलभ हों ।

(ई) स्त्रियों के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान हो, जहां लड़कियों को साथ–साथ विकास करने की सुविधा न हो वह एक फेफड़े से सांस लेने के बराबर हैं।

अमर्त्य सेन ने एक सिद्धान्त को गलत सिद्ध किया जो कि केनेथ एरो ने प्रतिपादित किया था कि सामाजिक हित कभी भी व्यक्तिगत हितों का जोड़ नहीं बन सकते । इसलिए विकास को नापने हेतु एक धारणा विकसित की गई जिसे मानव विकास निर्देषांक कहते हैं, मानव विकास निर्देषांक तीन सूचकों से मिलकर बनता है, पहला है जीवन स्तर जो प्रति व्यक्ति आमदनी से नापा जाता है । दूसरा है जीवनदृप्रत्याषा और तीसरा षिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियां जिसमें स्कूलों में प्रवेष अनुपात और वयस्क साक्षरता है। इस प्रकार का प्रयास संयुक्त राश्ट्र विकास कार्यक्रम के द्वारा 1990 से किया जा रहा है और प्रतिवर्श इस प्रकार का प्रतिवेदन तैयार किया जाता है ।

सारांष यह है कि गरीबी, बेरोजगारी, विपन्नता, षक्तिमानता का न हो, निम्न जीवन यापन न हो बल्कि भौतिक समानता या जीवन यापन की भौतिक किस्त ऊँची हो । सभी का अधिकतम कल्याण हो न कि अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण । विकास प्रक्रिया सभी को छुए।

1. कल्याण वर्षद्धि के लिए प्रो. अमर्त्य सेन ने तीन बातों या श्सच्चाइयोंश का जिक्र किया रू–

हमको राश्ट्र की प्रति व्यक्ति आय से ही विकास नहीं नापना चाहिए। यह तो महज एक औसत है । दुख की बात यह है कि असमान वितरण के कारण, आधे व्यक्ति इस औसत से नीचे और आधे ऊपर नहीं होते। कहीं–कहीं तो ऊपर के 10 प्रतिषत लोग (अनेक अफ्रीकी देषों में) राश्ट्रीय आय के 90 प्रतिषत भाग के मालिक होते हैं । अतः हमको गरीबों की औसत आय लगभग से निकालना चाहिए द्य इसके अतिरिक्त बढ़ऋती हुई राश्ट्रीय आय या व्यय का उतना ही भाग जो प्रत्यक्ष रूप से गरीबों को लाभान्वित करता है। उसे ही उपरोक्त प्रति व्यक्ति आय जोड़ना चाहिए । विकास के अनेक कार्य गरीबों को छोड़ते जाते हैं जैसे कि

द्रुतगामी ट्रेन छोटे स्टेषनों को छोड़ती है । अतः हमको इन गरीबों की आय बढ़ाना चाहिए अगर 5 व्यक्तियों के औसत परिवार को पोशणमान से गरीबी नापने के

लिए रु 20,000 वार्शिक यानि रुरु 4,000 प्रति व्यक्ति प्रति वर्श या रू. 333 प्रति व्यक्ति प्रति माह या लगभग रू. 11 प्रतिदिन प्रति व्यक्ति हो ।

19,999 से 15,000 तक गरीब

14,999 से 10,000 तक अति गरीब

9,999 से 5,000 तक निपट गरीब

रू. 4,999 से 1 तक सर्वहारा

हमको विकास के के लिए नीचे से चलना चाहिए और इन वर्गों को मिटाना है।

तीसरी बात राश्ट्रीय आय के पुनर्वितरण की दिषा में कार्य करना होगा । अमीरों की अमीरी कुछ कम करके गरीबों की गरीबी मिटाना ही होगा ।

इस संबंध में विकास की भ्रश्टाचार झिरें समस्यामूलक हो गयी हैं उन्हें तो बन्द करना ही होगा । यह नयी चुनौती है। पूंजीगत वस्तुओं के स्थान पर श्रम – प्रयोज्य वस्तुएं बनाने की जरूरत होगी । पष्चिम की उपभोग व उत्पादन में नकल आज भी अवांछनीय है ।

विकास की समस्या का जटिल होना, राजनीति के दूशित होने के अनुपात में बढ़ता जाता है । आजादी के बाद जो तत्व विकास के लिए सक्रिय हुए थे वे ही अब बाधक बन गये हैं व सारे लाभ लूटने में लगे हैं। विकास प्रक्रिया में व्यापारीकरण का होना तो ठीक था परन्तु उसका आतंकवाद व अवराधवाद में बदल जाना एक चुनौती बन गया है।

यह दुख की बात है कि आर्थिक वर्गों के अन्तर की बजाय जाति व धर्म आदि के अन्तरों पर अधिक

ध्यान जा रहा है ।

विकासात्मक पुनर्विचार कल्याण के प्रष्न 53

जनसंख्या विस्फोट को नियंत्रण में लाने में अब राजनीति आ गयी है । विकास के सरल बिन्दुओं पर मात्र वाद संवाद चलते रहते हैं । नये अवरोधों को हटाना, सबको रोजगार के अवसर देना तथा गांधीवादी ग्रामीण व्यवस्था से न्याय लाना ही आज के नोबेल पुरस्कार विजेता पर पुनर्विचार के मुद्दे मानते हैं ।

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. आर्थिक वष्द्धि किसे कहते हैं ? इसके अपस्फीतिकारक कौन–कौन से हैं?

2. आर्थिक विकास से क्या अभिप्राय है ? इसके प्रमुख मुद्दों के बारे में लिखिये

3. आर्थिक योजनाओं की असफलता, के क्या कारण हैं ?

4. कल्याण के प्रष्नश से क्या आषय है ?

5. आर्थिक कल्याण बढ़ाने के लिए किन बातों का समावेष होना आवष्यक है

6. प्रो. अमर्त्य सेन ने आर्थिक विकास व कलयाण के लिए किन बातों पर जोर दिया है ?

7. प्रो. अमर्त्य सेन ने किन श्तीन सच्चाईयों श का जिक्र किया है ? स्पश्ट कीजिए ।

8. विकास प्रक्रिया में कौन से तत्व बाधक बन गये हैं ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. आर्थिक वषद्धि

2. दूसरा

3. आर्थिक विकास

4. का एक और माप है । (वषद्धि / अपस्फीतिकारक) मूल्य वषद्धि है । (अपस्फीतिकारक / राश्ट्रीयता) है यह मात्र विकास की मात्रा पर विचार नहीं करता, बल्कि पर भी विचार करता है । (बहुआयामी / एक आयामी)

सामाजिक न्यायपूर्ण वितरण के लिए आय)

अमर्त्य सेन)

कृकृकृ बढ़ाना जरूरी है । (प्रति व्यक्ति आय / राश्ट्रीय

ने आर्थिक विकास व कलयाण के प्रष्नों पर बहुत अधिक लिखा है । (प्रो. पीगू / प्रो.

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. आर्थिक विकास है –

(क) एक आयामी

(ग) बहु आयामी

2. सामाजिक न्यायपूर्ण वितरण के लिए आवष्यक है

(क) राश्ट्रीय आय में वषद्धि

(ख) त्रिआयामी

(घ) दो आयामी

(ख) प्रति व्यक्ति आय में वषद्धि

(ग) आर्थिक आय में वषद्धि

3. (क) प्रो. पीगू

(ग) एडम स्मिथ

समस्त समाज में दो ही वर्ग होंश यह किसकी मान्यता है

(घ) गरीबों की आय में वषद्धि

(ख) प्रो. अमर्त्य सेन

(घ) माल्थस

4. हाल ही में भारत के किस अर्थषास्त्री को नोबेल पुरस्कार मिला है –

(क) जे. एस. मिल

(ख) प्रो. पीगू

(ग) प्रो. अमर्त्य सेन

(घ) मार्षल

5. (क) सभी सम्पत्ति विहीन हों

(ग) सभी साक्षर हों

6. मानव विकास के लिए हमें नहीं चाहिए –

(क) प्रति व्यक्ति साक्षरता

(ग) जीवन प्रत्याषा

विकास व कल्याण के लिए आवष्यक है –

(ख) सभी समान हों

(घ) सभी षक्तिषाली हों

(ख) स्वास्थ्य सुविधाएं (घ) ऊँची मष्त्यु दर

9. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

रूदृ

(क) तीन सच्चाईयाँ

(ख) न्याय का प्रष्न

(ग) विकास की समस्या

(ख) विभिन्न संरचनाएँ

भाशा एवं उसके प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति अपनी बात अपने भाव एवं अपने विचार दूसरे तक पहुंचाता है। अपने आवेगों को पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए वह बलाघात आदि का प्रयोग करता है । इसी कारण भाशा में अनेक प्रकार की संरचनाएं प्रयुक्त होती दिखाई पड़ती हैं । कभी वक्ता किसी को आज्ञा देता है, की किसी के प्रति विनम्रता प्रकट करता है, कभी कोई इच्छा व्यक्त करता है, कभी निशेध करता है, कभी कार्य और उसके कारण का कथन करता है तथा कभी स्थान दिषा और काल का बोध कराता है। कभी वह उपयुक्त कंठ सुर के प्रयोग से क्रोध और प्रेम भी प्रकट करता है । भाशा के साथ—साथ। षारीरिक उपादानों; कायिक भाषा के द्वारा भी वह अपनी बात समग्रता में दूसरों तक प्रेशित करने का प्रयत्न करता है। हिन्दी में ये विविध भावमूलक अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने वाली निम्नलिखित संरचनाएं —

विनम्रतापूर्वक

विधि सूचक (चाहिए क्रिया से निर्मित)

निशेधपरक

काल बोधक

स्थान बोधक

दिषा बोधक

कारण—कार्य सम्बन्ध सूचक

अनुक्रम

(1) विनम्रता सूचक संरचना

मनुश्य एक षिश्ट एवं सामाजिक प्राणी है । विनम्रता में उसके षिश्टाचार और सभ्यता प्रकट होते हैं। समाज में विनम्रता, षिश्टता और संस्कार सम्पन्नता की

सूचक है । अपने से बड़ों के प्रति, आदरयोग्य व्यक्तियों के प्रति, अधिकारियों एवं मित्रों के प्रति विनम्र व्यवहार जीवन–षैली को सुन्दर बनाने में सहायक होता है। विनम्रता के मान को व्यक्त करने में भाशा की सक्षमता एवं उसकी व्यंजन षक्ति का पता भी चलता है। विनम्रता को वीरों का गुण कहा गया है। विनम्रता प्रदर्षन का भाव संस्कृति का स्वाभाविक लक्षण है। इसके कारण षब्दों के अर्थों में परिवर्तन भी हो जाते हैं। जैसे अपने भवन को श्गरीबखानाश और दूसरे के सामान्य घर दौलतखाना कहते हैं । विनम्रता के कारण ही अनुग्रहीत कीजिए, मेरा घर पवित्र कीजिए, जूठन गिराइए जैसे वाक्यांषों का प्रयोग होता है । विनम्रता के निम्नलिखित अनेक संदर्भ सम्भव हैं

1. बच्चों के अपने माता–पिता के प्रति व्यवहार में, जैसे– श्पिता जी मैं बाहर जा रहा हूं, आज्ञा दीजिए ।

2. गुरूजनों के प्रति छात्रों के व्यवहार में, जैसे –

गुरूदेव ! आपके आषीश और स्नेह से ही मैं आज कुछ बन पाया हूं।श

3. उच्च अधिकारियों के प्रति व्यवहार में, जैसे–

4. आपकी अनुकंपा मेरा बड़ा सहारा है, सर !

पति–पत्नी के परस्पर व्यवहार में, जैसे –

देवी! तुम्हारे बिना यह घर घूरा हो जाता।श

5. अन्य आदरणीय व्यक्तियों से व्यवहार में, जैसे —

विभिन्न संरचनाएँ 56

6.विराजिए महाषय, पिताजी आ ही रहे हैं ।

अपरिचितों से षिश्ट व्यवहार में, जैसे–

थोड़ा सरकने का कश्ट करें तो कृपा हो, मैं भी टिक जाऊँ ।श

(2) विधि सूचक संरचना (श चाहिए श क्रिया से निर्मित)

हिन्दी में विधि सूचक वाक्यों में श्चाहिएश क्रिया का प्रयोग होता है । श चाहिएश क्रिया की विषेशता है कि यह सदैव एक सी रहती है । लिंग, वचन, पुरूश आदि से प्रभावित नहीं होती । श्चाहिएश से पूर्व आने वाली क्रिया भी ना रूप वाली होती है ।

इस प्रकार के वाक्य की संरचना है –

अध्यापक को पढ़ाना चाहिए ।

सीता को गाना चाहिए ।

छात्रों को पढ़ना चाहिए ।

छात्राओं को खेलना चाहिए ।

इन सभी में श्को" परसर्ग के प्रयोग के कारण को पढ़ाना चाहिए, अंष स्थित रहता है । विधि वाक्य पर के साथ भी बनते हैं –

जानवरों पर दया करनी चाहिए

दुश्टों पर क्रोध करना चाहिए ।

दोनों वाक्यों को देखें। पहले में श्दयाश के साथ श्करनीश क्रिया है, दूसरे में श्क्रोधश के साथ श्करनाश । अर्थात् श्दयाश और श्क्रोधश के लिंग वचन से श्चाहिएश के पूर्व आने वाली क्रिया प्रभावित है–

गावस्कर को सौ रन बनाने चाहिए। श्सेश के साथ भी विधि वाक्य बनते हैं–

(3) नेताजी से बात करनी चाहिए ।

मंत्रीजी से विवाद करना चाहिए ।

के लिए से भी विधि वाक्य बनते हैं–

अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्श करना चाहिए ।

श्मेंश से बनने वाले विधि वाक्य भी हैं.

हम में हिम्मत होनी चाहिए ।

निशेधपरक संरचना –

हिन्दी भाषा में निशेध व्यक्त करने वाले वाक्यों को दो प्रकारों के अन्तर्गत रखा जा सकता है–

किया जाता है जैसे –

वे वाक्य जिनमें षब्द से ही किसी बात का निशेध प्रकट होता है जैसे– राम अनपढ़ है ।

यहां यह चित्र असंगत है ।

वे वाक्य जिनमें षून्य, विहीन, हीन, रहित आदि षब्दों से समास बनाकर निशेध व्यक्त

है

यह स्थान जनषून्य है ।

पांडेय साधनहीन है ।

अरूण बुद्धिरहित है।

पुश्पा ज्ञान विहीन है ।

कुछ ऐसे अव्यय भी हैं जो वाक्य में प्रयुक्त होकर ही निशेध की सूचना देते हैं। ये षब्द साक्षात् निशेध की सूचना देते हैं । ये षब्द साक्षात् निशेध सूचक हैं। जैसे – मत, न, नहीं

इनके अतिरिक्त कुछ प्रयोग और भी हैं जिनसे निशेध की सूचना मिलती है। जैसे– श्थोड़े" षब्द के प्रयोग से –

(4) अब वह थोड़े ही काम करेगा (अर्थात् श्भलाश षब्द के प्रयोग से – अब वह काम नहीं करेगा) ।

भला ऐसा भी होता है (अर्थात् ऐसा नहीं होता ।)

चुका षब्द के प्रयोग से –

हो

चुका उससे यह काम (अर्थात् उससे यह काम नहीं हो सकता है)

जा चुका वह (अर्थात् वह नहीं जा सकता है ।)

कालबोधक संरचना

हिन्दी में काल का बोध सहायक क्रियाओं के द्वारा तो होता ही है, किन्तु काल विशयक विषेश सूचनाओं के लिए कालवाचक षब्दों के प्रयोग की आवष्यकता भी होती है। मनुश्य ने काल को वर्तमान, और भविश्य में तो विभाजित कर ही रखा है क्षण, घंटे, प्रहर, रात्रि, दिन, सबेरे, षाम, मध्यान्ह, पूर्वान्ह, अपरान्ह आदि में भी काल बोध मिलता है ।

भूत क्षण षब्द के प्रयोग से काल बोध–

1. एक क्षण के लिए वह हतप्रभ हो गया ।

2. क्षण भर रूको ।

3. एक क्षण को आदमी चौन से नहीं बैठक सकता ।

घंटा षब्द के प्रयोग से काल बोध–

1. मैं दो घंटे से आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

2. चार घंटे से वर्शा हो रही है।

3. छह घंटे लड़ाई चली ।

4. तीन घंटे में कानपुर पहुंचेंगें

दिन षब्द के प्रयोग से काल बोध

कितने दिन तपस्या की है उसने ।

आग से उठने वाले धुएं के बादल एक ही दिन में छंट गए पर षहरों में गाड़ियों से उठने वाली

धूल

के बादल कई दिन तक मंडराते रहे ।

नौ तारीख को यानि तीन दिन बाद ही मीटिंग का उनकी तरफ से ऐलान हो गया।

सबेरे षब्द के प्रयोग से काल बोध –

1. सबेरे आना ।

2. सबेरे से ही झगड़ा षुरू हो गया।

रात षब्द के प्रयोग से काल बोध –

रात में ठंड बढ़ गई द्य

गाड़ी आज रात पहुंचेगी जम्मू ।

रात भर वह कराहता रहा ।

मध्यान्ह एवं श्पूर्वान्हष् षब्द के प्रयोग से काल बोध

वह मध्यान्ह में आ पहुंचा ।

मध्यान्ह में भोजन होगा ।

पूर्वान्ह में प्रार्थना–सभा हुई ।

पूर्वान्ह में बाहर जाना है ।

दोपहर बाद षब्द के प्रयोग से काल बोध

दोपहर बाद साक्षात्कार हुआ ।

दोपहर बाद किसी का आना अच्छा नहीं लगता ।

षाम षब्द के प्रयोग से काल बोध –

षाम को वह अवष्य आएगा ।

षाम को उदासी बढ़ जाती है ।

कल षब्द के प्रयोग से काल बोध

कल आना । (आने वाला कल)

कल बहुत ठंड थी । (गुजरा हुआ कल)

सन – संवत्श सूचक षब्द के प्रयोग से काल बोध

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सन् 1857 ई. में हुआ ।

संवत् 1913 की दीवाली गई ।

निष्चित समय वाचक षब्द के प्रयोग से काल बोध

1. सुबह आठ बजे मिलना ।

2. कल नौ बजे से परीक्षा प्रारी होगी द्य

(5) स्थान बोधक संरचनाएं

विभिन्न संरचनाएँ

हिन्दी में स्थान बोधक षब्दावली है–

(1) कुछ षब्द निष्चित स्थान का संकेत देते हैं जैसे

बाहर, भीतर, अन्दर, पीछे, आगे, ऊपर, पीछे, आगे, ऊपर, नीचे, पास, आसपास, दूर, दाएं, बाएं आदि ।

(2) दूसरे प्रकार के षब्द सार्वनामिक हैं जैसे —

यहां, वहां, जहां, कहां आदि तथा इनके श्हीश वाले षब्द रूप भी हैं जैसे–

यहीं, वहीं, जहां तहां, कहां आदि ।

उदाहरण –

1. मिनी पुलक कर स्वागत करते हुए बोली, श्अरे, आप यहां क्यों खड़े हैं नरेन दा, मामा तो भीतर बैठे है ।

2. सोचो तो भला, यह भी कोई बात हुई ? बड़ी हो गई है इसलिए घर के अन्दर बंद होकर बैठ जाए।

3. घर से बाहर निकली तो देखा वर्शा षुरू हो चुकी थी ।

4. बाहर जाती मिनी को देखकर गर्व से मणि बाबू बोले ।

5. मिनी तीन बार पहले भी ऊपर जाकर बादलों का रूख देख आई थी ।

6. पर, मिनी नीचे उतरी तो निष्चय करके कि जल्दी से वह एक चक्कर बगीचे का लगाकर ही आएगी ।

7. यह क्या, तू ऐसे में बाहर निकल रही है ?

8. जब बारिष का जोर बढ़ गया तो माला दौड़कर मालियों के छप्पर के नीचे खड़ी हुई ।

9. घूम कर पीछे देखा तो पानी में सराबोर नरेन्द्र खड़ा था ।

10. हंसता हुआ नरेन्द्र एकदम मिनी के पास आ गया ।

11. कुछ है जो बराबर मुझे यहां खींच रहा है।

12. कहां गई थी और कहां थी अब तक ?

13. यहां जा, वहां जा, कहीं चौन नहीं ।

14. आंखें मूंदी ही वह वहां पड़ी रही ।

15. इसलिए लखनसिंह बिना किसी रोकटोक के भीतर चला आया ।

16. ऊपर जयादा पानी बरस गया था, इसलिए बेतवा बेतहाषा इठला गई ।

सार्वनामिक षब्द से स्थान बोध

यहां कौन आएगा ?

आज वहां जाना ही है ।

(6) दिषा बोधक संरचना

हिन्दी में उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पष्चिम दिषावाची षब्द हैं। श्चार दिषाएंश, श्दस दिषाएंश का प्रयोग भी प्रचलित है । इनके अतिरिक्त श्इधर, उधर, किधर, जिधर श के द्वारा भी दिषा बोध होता है । श्उस तरफ, किस तरफ, जिस तरफ, की ओर, की तरफ, के प्रतिश भी दिषा बोध के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं ।

उदाहरण –

षहर के उत्तर में एक बावड़ी है।

सुगन्धित अबीर दसों दिषाओं में उड़ रहा था ।

वह अभी इधर आया था ।

पुलिस किधर गई ?

जिधर देखो अन्याय का साम्राज्य छाया है ।

किस तरफ जाना है ?

उस ओर कुआं है ।

उसने षहर के प्रति रूख किया।

घर के सामने पोखर था ।

चारों ओर नजर रखो ।

मोहन ने चोर को पीछे से पकड़ लिया ।

कारण–कार्य सम्बन्ध संरचना

कारण–कार्य सम्बन्ध की अभिव्यक्ति प्रमुखतम भाशिक अभिव्यक्तियों में से एक है। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है । अतः स्वाभाविक रूप से प्रत्येक भाशा में ऐसे षब्द, ऐसी संरचनाएं होती हैं जिनसे कारण–कार्य सम्बन्ध व्यक्त होता है ।

कारणदृकार्य सम्बन्ध की अभिव्यक्ति के लिए कम से कम दो वाक्यों का होना अनिवार्य है– एक – वह वाक्य जो कारण का कथन करे ।

दो – वह वाक्य जिसमें कार्य कथित हो ।

जैसे – चिड़िया को गोली लगी और वह नीचे आ गिरी ।

हिन्दी में कारण कार्य सम्बन्ध व्यक्त करने वाले अतः, अतएव, चूंकि, इसलिए, परिणामतः,

कयोंकि आदि षब्द हैं ।

अतः से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

गाड़ी छूट गई अतः मैं न आ सका ।

नौकर भाग गया अतः खाना समय पर न बन सका ।

”अतएवश से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

जयचंद ने धोखा दिया अतएव पष्थ्वीराज हार गया ।

उसके पास सिफारिष नहीं थी अतएव उसका चयन नहीं हो सका ।

चूंकि से बनने वाले कारण–कार्य वाक्य

चूंकि आपने रूपये नहीं दिए, वह नहीं आया ।

चूंकि आप समय पर नहीं आए, वह निकल गया ।

श्इसलिएश से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

वह लक्ष्य के प्रति सावधान था इसलिए सफल हुआ ।

तुम केवल वासना को महत्व देती हो इसलिए मुझे तुमसे चिढ़ है ।

श्परिणामतः” से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

पुस्तक नहीं मिली परिणामतः पढ़ नहीं सका द्य तुम माने नहीं परिणामतः बात नहीं बनी ।

श्क्योंकिश से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

क्योंकि तुम नाराज थे, मैं चला गया ।

वे विदेष चले गए क्योंकि सम्पन्न थे ।

श्तोश से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

तुम नहीं आए तो मैं दुखी हुआ ।

कोहरे का परदा हटा तो हरियाली स्पश्ट होने लगी ।

श कारण श से बनने वाले कारण–कार्य सम्बन्ध वाक्य

तुम झूठ बोले यही कारण है कि झगड़ा हुआ ।

वचन की रक्षा के कारण हरिषचन्द्र ने राज्य छोड़ा । अनुक्रम संरचना

प्रत्येक भाषा के वाक्यों में पदों का अनुक्रम एक व्यवस्था से नियमित होता है । वाक्य स्तर पर पदों का अनुक्रम विचारणीय है। वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा पदबन्धों तथा क्रिया पदबन्धों का एक निष्चित अनुक्रम होता है।

हिन्दी भाशा में प्रमुखतः निम्नलिखित रूप में अनुक्रम मिलता है –

कर्ता + क्रिया

जैसे दृ ईश्वर है ।

कर्ता पद + क्रिया पद

जैसे – निखिल सोता है ।

कर्ता पद + लक्ष्य स्थान + क्रिया

जैसे – मोहन घर जाता है

कर्तापदबंध + लक्ष्य स्थान + क्रिया

(स्थिति एवं विकास बोधक – होना, रहना, बनना जैसी अकर्मक क्रियाएं) जैसे – मोहन बीमार है ।

मोहन इंजीनियर बना ।

मोहन बीमार रहा ।

कर्तापदबंध + को + पूरक पदबंध जिसमें क्रिया पदबंध

(योजक श्होना” एवं स्थिति बोधक श्रहनाश अकर्मक क्रियाएं भी सम्मिलित हैं)

जैसे – मोहन को बुखार है ।

मोहन को जुकाम रहा ।

कर्तापबंध + कर्म–पदबंध (भोक्ता) + क्रिया–पदबंध

(सकर्मक क्रियाएं जैसे– पढ़ना, खाना आदि)

जैसे

मोहन पुस्तक पढ़ता है ।

मोहन रोटी खाता है ।

कर्तापदबंध + को + कर्म – पदबंध (भोक्ता) + क्रिया–पदबंध

(मिलना चाहिए जैसी क्रियाएं)

जैसे – मोहन को पुस्तक चाहिए ।

देवी सिंह को धन मिला ।

कर्तापदबंध + कर्म–पदबंध (संप्रदान) + कर्तापदबंध (भोक्ता) + क्रिया – पदबंध (देना, भेजना जैसी द्विकर्मक क्रियाएं)

जैसे – मालवीय जी ने युवक को गीता की प्रति दी ।

ष्याम पुत्र को पैसा भेजता है ।

कर्तापदबंध + कर्म – पदबंध + को + पूरक – पदबंध + क्रिया–पदबंध

(समझ, बन, कह जैसी क्रियाएं)

जैसे – भाई ने मुझ को पराया समझा ।

कर्तापदबंध + को + कर्म–पदबंध + पूरक – पदबंध + क्रिया–पदबंध

(श्लगनाश जैसी क्रियाएं)

जैसे– सतीष को आम अच्छा लगता है ।

कर्तापदबंध + कर्म – पदबंध + को + लक्ष्यस्थान पदबंध + क्रिया–पदबंध

(योजना जैसी प्रेरणा बोधक क्रियाएं)

जैसे – अकबर ने मानसिंह को काबुल भेजा ।

निशेधवाची क्रिया के पूर्व आते हैं

जैसे दृ किंगकांग दारासिंह से नहीं जीत पाएगा ।

तुम रोटी मत खाना

निपातों का प्रयोग उस षब्द के बाद होता है जिस पर बल देना हो ।

जैसे – राम ही जाएगा, तुम नहीं ।

संबोधन एवं विस्मयबोधक वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।

जैसे – अरे ! आप कब आये ?

परसर्ग अपने नाम या सर्वनाम के बाद आते हैं ।

विभिन्न संरचनाएँ 62

जैसे दृ कमल ने गाना गाया ।

मैंने खेल खेला

अतः वाक्यों में पदों के अनुक्रम पर तीन सोपानों में विचार अपेक्षित है –

आधारभूत वाक्य सांचों में प्रयुक्त पद अनुक्रम

अव्यय पदों का अनुक्रम

विषिश्ट पदों का अनुक्रम ।

वाक्य में उद्देष्य और विधेय का सामान्य अनुक्रम उद्देष्य + विधेय होता है । सामान्यतः कर्म

पद कर्तापद के बाद आता है ।

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. विनम्रता सूचक संरचनाओं से क्या तात्पर्य है ? उदाहरण सहित लिखिए
2. विधि – सूचक संरचनाओं की परिभाशा लिखिए ।
3. तं लं वं एं चाहिए क्रिया किस वाक्य संरचना में प्रयुक्त होती है ? उदाहरण सहित लिखिए ।
4. निशेध परक संरचना क्या है ? विभिन्न प्रकार की निशेधपरक संरचनाएं लिखिए ।
5. काल बोधक संरचना से क्या तात्पर्य है ?
6. पांच काल बोधक षब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए ।
7. दिषा बोधक संरचना से क्या तात्पर्य है ? उदाहरण सहित लिखिए ।
8. कारण– कार्य संबंध संरचनाओं से क्या आषय है ? उदाहरण सहित समझाइए
9. अनुक्रम से क्या तात्पर्य है ? इसका प्रयोग किस रूप में होता है ? उदाहरण सहित, लिखें । कार्य–कारण संबंध संरचना को दर्षाने वाले पांच वाक्य लिखिए

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. यह स्थान है । (साधनरहित / जनषून्य)

2. विधि सूचक संरचनाओं में

क्रिया प्रयुक्त होती है । (चाहिए / सकना)

3. चष्मा

तो रखा था। (कहां/जहां– यहीं / कहीं)

आपने रूपये नहीं दिए थे, वह नहीं आया । (चूंकि / तो)

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तर चुनकर का चिन्ह लगाइए ।

विराजिए महाषयश उदाहरण है –

18. 1. (क) विधि सूचक

(ख) स्थान बोधक

(ग) विनम्रता सूचक

(घ) कारण–कार्य संबंध

2. राम अनपढ़ है, उदाहरण है–

(क) विधि परक

(ग) निशेध परक

(घ) स्थान बोधक

(ख) काल बोधक

3. वह उत्तर की ओर जा रहा था, उदाहरण है

(क) काल बोधक

(ख) स्थान बोधक

4. (ग) दिषा बोधक

छात्राओं को पढ़ना चाहिए, उदाहरण है –

(क) स्थान बोधक

(ख) विनम्रता बोधक

(घ) अनुक्रम

(ग) विधि सूचक

(घ) काल बोधक

इकाई – 3

प्रौद्योगिकी एवं नगरीकरण

डॉ. रामषंकर तिवारी

यह दुनिया जब से बनी है तब से लगातार मनुश्य दो बातों के लिये निष्चित रूप से प्रयास करता रहा है, पहला प्रकृति पर विजय और दूसरा ऐसे नये आयामों की खोज जिनसे उसका जीवन अधिक बेहतर हो सके। मनुश्य के पास प्रतिभाओं के रूप में क्षमताओं का अपार भण्डार मौजूद है और दुनिया का इतिहास इन क्षमताओं के प्रयोग पर ही निर्भर करता रहा है । जिस दिन से इस पष्थ्वी का अस्तित्व सामने आया उस दिन से लगातार मनुश्य अपनी प्रतिभा का उपयोग कर नये नये आविश्कार और उन आविश्कारों का प्रयोग व्यावहारिक रूप से जीवन को सुंदर और सुखद बनाने के लिये करता रहा है। यही प्रौद्योगिकी है । प्रौद्योगिकी का तात्पर्य है विज्ञान के आविश्कारों का मनुश्य के लिये उपयोग करना । विज्ञान के द्वारा अनेक प्रकार के आविश्कार संभव होते हैं और हो सकते हैं पर उनमें से सभी मनुश्य और मानवता के काम के नहीं होते या व्यावहारिक नहीं होते या उनका उपयोग दी गई परिस्थिति में मनुश्य के लिये लाभकारी नहीं होता। इसलिये वे विज्ञान के सिद्धांतों में अवष्य प्रवेष पाते हैं किन्तु प्रौद्योगिकी का रूप नहीं ले पाते। इसलिये दुनिया का इतिहास विज्ञान के स्थान पर प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है । सभ्यता के हर मोड़ पर एक निष्चित प्रकार की प्रौद्योगिकी विद्यमान रही है और इसलिये हड़प्पा, मोहनजोदड़ो के संबंध में जब हम बात करते हैं या सिंधु घाटी की सभ्यता का जिक्र करते हैं तब अर्थ यह है कि उस समय एक प्रौद्योगिकी विद्यमान थी । आज अनेक प्राचीन स्मारकों में जली निकासी की व्यवस्था अथवा संदेष भेजने की प्रक्रिया अथवा अन्य प्रकार के प्रयासों को हम कौतुहल और विस्मय की दृश्टि से देखते हैं । लगातार परिवर्तित होने वाली प्रौद्योगिकी ने मनुश्य की संस्कृति, उसकी सभ्यता, उसके सोच और उसकी जीवनषैली पर इतने दूरगामी प्रभाव डाले हें कि कल जिन बातों की व्यक्ति केवल कल्पना करता था आज वे मूर्तरूप ले रही हैं। दूसरे गष्हों तक पहुंच, इंटरनेट से घर बैठे पूरी दुनिया से वार्तालाप, व्यवसाय और संपर्क, अत्याधुनिक प्रकार के अस्त्र और उपकरण सब प्रौद्योगिकी का कमाल है । चाहे अंतरिक्ष की यात्रा हो या समुद्र की गहराइयों की छानबीन अथवा पष्थ्वी के धरातल की जांच पड़ताल हो या मानव षरीर की बारीकियां समझने की कोषिष हो, पेड़ पौधों की प्रकृति का प्रष्न हो या अणु और परमाणुओं के प्रयोग का अथवा उत्पादन की स्थिति हो, उपभोग – वस्तुओं का विस्तार, यह सब प्रौद्योगिकी का परिणाम है

यदि ब्रिटेन में 18वीं षताब्दी में औद्योगिक क्रांति नहीं हुई होती तो आज दुनिया का इतिहास कुछ और होता । वर्तमान में सूचना क्रांति नहीं आती तो भी इतिहास कुछ और होता । आज से 20 वर्श पूर्व आल्विन टाफ्लर की फ्यूचर षाक्स में वर्णित बातों को देखें तो पता लगता है कि जो चित्र दुनिया की सभ्यता का टाफ्लर में खींचा था वह बहुत कुछ सही हो गया है। प्रौद्योगिकी ने मनुश्य का जीवन और जीवन षैली हर दृश्टि से बदल दी है। प्रौद्योगिकी ने व्यक्ति के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। नगरीकरण एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सतत् रूप से बढ़ाने में प्रौद्योगिकी ने अहम् भूमिका निभाई है।

नगर संस्कृति का निर्माण करते हैं, विकास की नींव रखते हैं, देष को दिषा प्रदान करते हैं, लोगों की आजीविका की व्यवसथा करते हैं, आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र होते हैं और एक राश्ट्र का भविश्य निर्धारित करते हैं। विकास और नगरीकरण में बड़ा घनिश्ठ संबंध है और विकास की जिस परिभाशा को हम आमतौर पर स्वीकार करते हैं उसके लिये प्रौद्योगिकी बहुत आवष्यक है इसलिये विकास औद्योगीकरण, नगरीकरण सब प्रौद्योगिकी के ऊपर निर्भर करते हैं। प्राचीन युग में नगर सभ्यता का केन्द्र होते थे। तब चूंकि प्रौद्योगिकी के विकास की गति बहुत धीमी थी, उद्योग तथा व्यापार प्रौद्योगिकी यांत्रिकी तकनीक पर आधारित न होकरमानवीय श्रम पर अधिक निर्भर करता था । मानवीय श्रम के लिये नगरों तक आने अथवा नगरों के बनने की आवष्यकता भी नहीं होती थी । इसी कारण प्राचीन युग में नगरों का विकास उनकी भौगोलिक स्थिति पर, जल तथा समतल स्थान की उपलब्धता तथा केन्द्रीय स्थान पर होता था। यही कारण है कि हम सभी पुराने नगरों को सामान्यतः नदियों के किनारे मैदानी इलाकों में सामान्य रूप से किसी क्षेत्र के मध्य में स्थिर पाते हैं । कुछ नगरों का विकास व्यापार की दृ श्टि से समुद्र के किनारे किया जाता था । पर वर्तमान में औद्योगिक क्रांति के पष्चात् स्थितियां पूरी तरह परिवर्तित हो गई । प्रौद्योगिकी ने मषीनों पर आधारित औद्योगिक व्यवस्था को जन्म दिया जो स्वाभाविक रूप से बड़े पैमाने के उद्योगों के लिये उपयुक्त थी और इस कारण मानवीय श्रम दरूदराजों के स्थान से चलकर उन केन्द्रीय स्थानों पर आने के लिये बाध्य हो गया जहां उद्योग स्थापित होते थे । उद्योगों की स्थापना वहां होती थी जहां प्रौद्योगिकी का उपयोग आर्थिक दृश्टि से लाभकार सिद्ध होता था ।

पूर्व में उद्योगों की स्थापना के लिये कच्चा माल, षक्ति का स्त्रोत और परिवहन की सुविधाएं आवष्यक होती थीं इसलिए स्वाभाविक रूप से नगरों के आसपास उद्योगों की स्थापना की जाने लगी । नगर एक आर्थिक इकाई के रूप में व्यापार और उद्योग के केन्द्र बिन्दु बनें

नगर सामुदायिक और सामूहिक कार्य को प्रोत्साहित करने वाले तथा इसी कारण राजनैतिक इकाई का केन्द्र बिन्दु भी बन गए । धीरे–धीरे वे षक्ति और षासन का केन्द्र बनने लगे । स्वाभाविक रूप से वे सांस्कृतिक षक्ति का स्त्रोत थे ही अतः कुल मिलाकर नगर औद्योगिक विकास, व्यापार, सभ्यता, सामाजिक, राजनैतिक, गतिविधियों और संस्क 1ति का केन्द्र बिन्दु बने गये । स्वाभाविक भी था कि ये नगर बौद्धिक प्रगति का केन्द्र बने और उसके परिणामस्वरूप वे समाज के विचार और प्रवृत्तियों के निर्धारक भी बन गये। इस प्रकार नगर एक राश्ट्र की आत्मा को निर्धारित करने वाली कार्यषाला (वर्कषाप) के रूप में देखे जा सकते हैं। जहां सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियां जन्म लेती हैं और विकसित होती हैं। 20 वीं षताब्दी इस दृश्टि से बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि सही अर्थों में नगरीकरण और आर्थिक विकास इसी युग में संभव हो सका। 20वीं सदी के प्रारंभ में पूरा विश्व मूलतः ग्रामीण था क्योंकि तब विश्व की 8 प्रतिषत जनसंख्या ही नगरों में रहती थी । 1950 तक आते–आते यह प्रतिषत बढ़कर 29 हुआ, 1980 में यह 40 था, वर्तमान में यह 46 प्रतिषत के आसपास है । अतः 21 वीं सदी एक नगरीय विश्व की ओर बढ़ रही है। 1950 से 2000 के मध्य नगरों में विकास की दर गांव की तुलना में दुगनी से भी अधिक रही । विकास की प्रक्रिया को सदी से समझा जा सकता है कि पिछले 10 वर्शों में विश्व की नगरीय जनसंख्या लगभग 83 प्रतिषत बढ़ी। जिसका अर्थ यह है कि औसत रूप से प्रतिवर्श नगरों में 810 लाख लोग बढ़ते रहे। 1950 में विकासषील देषों की नगरीय जनसंख्या का अनुपात 39 था । वर्तमान में यह 70 प्रतिषत अनुमानित है। इस प्रवृत्ति को देखते हुये कुछ लोगों का अनुमान है कि अब नया विश्व नगरों का संघ होगा और विश्वव्यापीकरण के कारण सभी नगर एक दूसरे के साथ संबद्ध होंगे। इंटरनेट की संबद्धता (नेटवर्किंग) के द्वारा ऐसा करना वर्तमान में संभव हो चुका है। इस प्रकार सभी नगर जुड़ते जा रहे हैं। भले ही उनके मध्य कितनी ही दूरी क्यों न हों, चाहे वह सात समुंदर पार के ही क्यों न हों। यह सब प्रौद्योगिकी के बलबूते पर ही हुआ है यदि प्रौद्योगिकी का विकास नहीं होता, उसका प्रयोग नहीं होता तब विकास का यह आधार भी नहीं होता और नगरीकरण की यह प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती ।

नगरीकरण और प्रौद्योगिकी के बीच का संबंध अनेक बातों पर निर्भर करता है । सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रौद्योगिकी, उद्योगों के विकास, जीवनषैली को सुविधाजनक, जीवन स्तर में वर्षद्धि, मानवीय आवष्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति और आर्थिक रूप से समाज के लिये उपयुक्त स्थितियां निर्मित करती हैं । प्रौद्योगिकी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह उपलब्ध वैज्ञानिक

अनुसंधान को मानवता के लिये उपलब्ध कराती है । अतः स्वाभाविक रूप से उसमें पैमाने को बड़ा करने की प्रवष्त्ति निहित होती है । प्रौद्योगिकी अपने मूल रूप में किसी भी व्यक्ति को अपने उपयोग से वंचित नहीं रखती । इसी प्रयोग के बढ़ने के साथ उसकी लागत घटती जाती है परिणामस्वरूप अधिक से प्रौद्योगिकी और नगरीकरण से अधिक लोग उसका उपयोग कर सकते हैं । इस कारण वह स्वाभाविक रूप से ऐसे क्षेत्रों को बढ़ावा देती है जहां अधिक संख्या में लोग रहते हों और यह क्षेत्र नगर होता है । इस प्रकार प्रौद्योगिकी अपने उपयोग के आर्थिक पहलू के कारण नगरों के विकास को प्रोत्साहन देती है। डॉ. वेबर और प्रो. सारजेंट फ्लोरेंस ने जब उद्योगों की स्थापना के सिद्धांत का विकास किया था तब परिवहन लागत और मितव्ययिताओं को बहुत महत्वपूर्ण माना था । आज मितव्ययिता बहुत महत्वपूर्ण है और वह किसी भी आधार पर प्राप्त की जा सकती है। प्रौद्योगिकी ने लागत घटाने व स्थान, समय तथा दूरी को पाटने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है।

एक नगरीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विषेशताएं होती हैं – जनसंख्या के घनत्व का ऊँचा होना, वस्तु तथा सेवाओं के उत्पादन में विषिश्टीकरण होना, अत्यधिक घरेलू परिवारों व औद्योगिक इकाईयों और षासन के मध्य निकट की परस्पर निर्भरता होना, ऊँचे स्तर की तकनीक का पाया जाना, नवोन्वेष और साहस की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलना आदि । नगरीकरण की प्रवृत्ति स्वप्रेरित होती है और एक बार प्रारंभ होने के पष्चात् तीव्र गति से बढ़ती जाती है दूसरे षब्दों में बाजार की षक्तियां नगरीकरण को निरंतर बढ़ाती रहती हैं । इस प्रकार छोटे नगर बढ़े नगरों में और बड़े नगर महानगरों में परिवर्तित होते जाते हैं। नगरों की सत्यता, नगरों की सुविधाएं, नगरों में रोजगार और आय सभी कुछ ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बहुत भिन्न होता है । नयापन, अधिक खुलापन, अधिक उन्मुक्त वातावरण और न्यूनतम दखलंदाजी की प्रवृत्तियों के कारण नगर लोगों के आकर्शण का केन्द्र भी होते हैं। जनसंख्या आमतौर पर

ज गांवों से नगरों की ओर आव्रजन करती रहती है। नगरों में एंजल का नियम एक बड़ी सीमा तक लागू होता है और एक ओर तो विकास के साथ–साथ लोगों की आय बढ़ती जाती है और दूसरी ओर भोजन पर आय का हिस्सा निरंतर घटता जाता है। इससे मांग में परिवर्तन आते हैं और खाद्यान्न की अपेखा औद्योगिक वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ने लगती है । इस प्रकार अधिकाधिक निर्माण और सेवा उद्योग नगरों में स्थापित होने लगते हैं। परिणामस्वरूप नगरीकरण की वषत्ति बढ़ती जाती है। नगरीकरण दो प्रकार का होता है, उत्पादन प्रेरित और दूसरा मांग प्रेरित । प्रौद्योगिकी दोनों प्रकार के नगरीकरण को प्रोत्साहन देती है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की कोई भूमिका नहीं होती । किन्तु प्रौद्योगिकी अपने प्रयोग के विस्तार के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों को नगरों में परिवर्तित करने की भूमिका सहज रूप में निभाती जाती है। इस भूमिका में पैमाने का प्रतिफल बहुत महत्वपूर्ण है । यह महसूस किया गया कि प्रौद्योगिकी न्यूनतम समयावधि में संभव सर्वाधिक अधिक संपत्ति सष्जनकर्ता है; बषर्ते कि इसका उपयोग सही दिषा में किया जाये । प्रौद्योगिकी इसी देष के राजनैतिक, आर्थिक और सुरक्षा के ढांचे को सुदृढ़ बनाती है यह षिक्षा, स्वास्थ्य, कृशि, उद्योग, सुरक्षा, अधोसंरचना दैनिक जीवन के क्रियाकलाप सभी को प्रभावित करती है

प्रौद्योगिकी अपने आप में किसी जीवन मूल्य के साथ जुड़ी हुई नहीं होती । वह विज्ञान के अनुसंधानों का प्रयोग व्यावहारिक जीवन में संभव बनाती है किन्तु वह यह सुनिष्चित नहीं करती कि वह उपयोग मनुश्य किस दृश्टि से कर रहा है। इसलिये जहां परमाणु के द्वारा ऊर्जा का सष्जन कर मानव जीवन को प्रकाषित किया जा सकता हे वहीं उसका उपयोग लाखों, करोड़ों घरों के जीवन द्वीपों को बुझाने के लिये भी संभव है । यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग किस प्रकार से करता है ? जैविक तकनीक के सुधार मनुश्य को न मालूम किन – किन प्रकार की बीमारियों से मुक्ति दिलाने में सहायक हो सकते हैं, अनेक कठिनाइयों से बचा सकते हैं और यदि दुरूपयोग करना चाहें तो महिला भ्रूण नश्ट करने में सहयोग दे सकते हैं। प्रौद्योगिकी के कारण पूरे विश्व को भूख से बचाया जा सकता है। प्रकृति के प्रकोपों जैसे बाढ़ और भूकम्प के पूर्वानुमान देकर लोगों की रक्षा की जा सकती है। ई–कॉमर्स और ई–गर्वनेंस के द्वारा बेहतर व्यापारिक और सामाजिक व्यवसथा स्थापित की जा सकती है। इसका कितना ही दुरूपयोग भी हो सकता है। आखिर कम्प्यूटर में विशाणु पैदा करने में इसी प्रौद्योगिकी का योगदान उल्लेखनीय है । अतः प्रौद्योगिकी अपने आप में मूलयों के प्रति तटस्थ है। इसलिये वह नगरीय जीवन को सुखद भी बना सकती है और नर्क में भी ढकेल सकती है।

तीव्र गति से बढते हुये नगरीकरण के, जिसमें औद्योगिकरण का अत्यधिक योगदान होता है, अनेक दुश्परिणाम देखने को मिलते हैं। नगरीय जीवन जो अत्यधिक आकर्शण का केन्द्र होता है वहां के निवासियों के लिये कश्ट, दुख और अभाव का केन्द्र बन जाता है। नगरीय जीवन का अर्थ होता है भौगोलिक स्थान की कमी और उसकी भूमि की कीमतों का आसमान को छूने लगना । व्यवसाय, उद्योग, आवास अथवा किसी अन्य उद्देष्य से भूमि का उपलब्ध न होना आवासीय और आवसीय समस्याओं का इतना जटिल होना कि गंदी बस्तियां सामान्य बात

हो, खुले स्थानों का नितांत अभाव, नगरीय सेवाओं की कमी, निरंतर बढ़ता हुआ आव्रजन, रोजगार, परिवहन, ऊर्जा, संचार का अभाव, अपराध, स्वास्थ्य और पर्यावरण की समस्याओं की वषद्धि आदि । उदाहरण के लिये भारत में 52 प्रतिषत नगरीय जनसंख्या के लिये स्वच्छता की कोई उपयुक्त व्यवस्था नहीं है । चौथी श्रेणी के षहरों में मलमूत्र निकासी की सुविधा मुष्किल से 35 प्रतिषत लोगों को उपलब्ध है और प्रथम श्रेणी के नगरों में यह सुविधा 75 प्रतिषत उपलब्ध है। यह अनुमान है कि वर्तमान में भारत की 34 प्रतिषत जनसंख्या के पास वर्शा के पानी को बाहर निकालने का साधन उपलब्ध नहीं है । यहां की स्थानीय संस्थाएं मात्र 40 प्रतिषत गंदगी को उठा पाती हैं । लगभग 28 प्रतिषत गंदगी सड़कों और आवासीय स्थानों, औद्योगिकी केन्द्रों के आसपास पड़ी रहती है और वातावरण को प्रदूशित करती है। गंदी बस्तियों की जनसंख्या नगरीय जनसंख्या की तुलना में प्रतिवर्श दुगनी दर से बढ़ रही है । यह अनुमान है कि हमारे देष की नगरीय जनसंख्या का 35 प्रतिषत भाग इन गंदी बस्तियों में निवास कहै ।औद्योगीकरण के कारण नगरों का पूरा पर्यावरण इतना प्रदूशित हो चुका है कि सांस लेने के लिये षुद्ध हवा दुर्लभ हो गई है। पीने का पानी अत्यंत दूशित है। षोर प्रदूशण, वायु प्रदूशण, जल प्रदूशण और पर्यावरण प्रदूशण औद्योगीकरण और नगरीकरण के परिणाम है। उधर दुर्घटना तथा अपराध में दिन दूनी रात चौगुनी वषद्धि हो रही है । नगरों के तीव्र विकास और औद्योगिक केन्द्रों के दूर–दर तक स्थापित होने के कारण व्यक्ति का एक बड़ा समय दूरी तय करने में नश्ट होता है ।

परिणमास्वरूप सामाजिक जीवन, सामुदायिक व्यवस्था और संस्कृति के उत्थान के लिये समय ही उपलब्ध नहीं होता। इस प्रकार मनुश्य संवेदनहीन, यांत्रिकीय जीवन बिताने के लिये बाध्य हो जाता है । परिवहन लागत व अन्य कारणों से जीवन निर्वाह व्यय बढ़ता जाता है । परिणामस्वरूप अधिक कमाने की प्रतियोगिता बढ़ने लगती है जिसके कारण भ्रश्टाचार को प्रोत्साहन प्राप्त होता है। संतोश और षांति दूसरों के प्रति प्रेम व चिन्ता जैसे मानवीय गुण धीरे–धीरे तिरोहित होने लगते हैं । परिणामस्वरूप औद्योगीकृत नगरीय संस्कृति मानवताविहीन मनुश्यों को भीड़ में परिवर्तित होती जा रही है। प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग के कारण न केवल उस नगर का बल्कि संपूर्ण विश्व का वातावरण प्रदूशित होता जा रहा है। इससे मौसम तथा जलवायु संबंधी भारी परिवर्तन आ रहे हैं । ग्रामीन हाउस प्रभाव और ओजोन की परत में प्रक्रिया का परिणाम है। पूरा विश्व इन स्थितियों से परेषान है । यही कारण है कि पृथ्वी को बचाने के लिये अनेक प्रयास करने पड़ रहे हैं। पष्चिमी देषों के वैज्ञानिकों ने 1972 में ही विकास की सीमाएं निर्धारित करने का प्रयास किया और एक संस्था क्लब ऑफ रोम द्वारा इस संबंध में विषुद्ध

रूप से व्याख्या की गई और एक पुस्तक प्रकाषित की गई जिसका नाम श्लिमिट्स टू ग्रोथ श था । इसके पष्चात् अनेक सम्मेलनों में इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई और विश्व को प्रौद्योगिकी के उपयोग व नगरीकरण के दुश्परिणामों से लगातार आगाह किया जाता रहा ।

छूद इसी आर्थिक लाभ की दृश्टि से प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं नगरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों के उपर अत्यधिक दबाव पड़ता है। एषिया के देषों का जो भविश्य का चित्र है वह इस दृश्टि से काफी निराषाजनक है। उदाहरण के लिये एषिया में लकड़ी का भण्डार अधिकतम 40 वर्शों तक उपलब्ध होगा और उसके बाद समाप्त हो जायेगा । ऊर्जा की मांग में वषद्धि के कारण वायु प्रदूशण और वातावरण में रसायनों की उपस्थिति अत्यधिक बढ़ जायेगी जनसंख्या के विकास और घनत्व के बढ़ने के कारण नगरों का जीवन हर दृश्टि से असुरक्षित हो जायेगा ।

प्रौद्योगिकी और नगरीकरण

प्रौद्योगिकी के उपयोग को स्थायी व समाज के लिये उपयोगी बनाने की दृश्टि से भारत में 1988 में तकनीकी सूचना पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिशद का गठन किया गया । इसका मुख्य उद्देष्य यह रहा कि यह संपूर्ण दुनिया में उपलब्ध प्रौद्योगिकी में से उसे छांटे जो भारत के लिये उपयुक्त हो और यह उपयुक्तता निष्चित रूप से भारत के भविश्य को ध्यान में रखकर की जाती है। 1993 में इस संस्था ने वर्श 2020 में प्रौद्योगिकी विजन प्रस्तुत किया। प्रवषत्ति अभिकल्पना (विजन) विकसित किया। भारतीय प्रौद्योगिकी की दिषा इन लक्ष्यों से प्रतिबिम्बत होती है कि वर्श 2000 तक सबके लिये स्वास्थ्य की व्यवस्था कर सके, गरीबी को घटा सके, उपयुक्त षिक्षा और कौषल प्रदान कर सके, रोजगार के अवसर निर्मित कर सके, भारत को निर्यातक देष बना सके और राश्ट्रीय सुरक्षा के मामले में आत्मनिर्भर बना सके। इन सबके लिये प्रौद्योगिकी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है और इनका परिणाम नगरीकरण की प्रवषत्ति को प्रोत्साहन देना है। गरीबी व बेकारी का इलाज औद्योगिक विकास में देखा जाता है। सुरक्षा में आत्मनिर्भरता के लिये पुनः सुरक्षा के उद्योगों की स्थापना की जाती है। षिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था के लिये अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्रों को मनुश्यों के निकट खोलना आवष्यक है और इन सब से नगरीकरण बढ़ता है। तब स्वाभाविक रूप से न चाहते हुये भी अनेक प्रकार की बुराईयां और खराबियां उत्पन्न हो जाती हैं। जिनका पर्यावरण, व्यक्ति की जीवनषैली, अधोसंरचना पर दबाव, जीवन की अत्यधिक मूलभूत आवष्यकता जेसे वायु और जल आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है

। जिसका परिणाम मानव समाज धीरे–धीरे महसूस करता है । यह विचित्र विरोधाभास है कि प्रौद्योगिकी अनेक प्रकार की समस्याएं खड़ी करती हैं और फिर उन समस्याओं का हाल निकालने के लिये नई प्रौद्योगिकी की खोज करती है और यह चक्र चलता रहता है। संभवतः इसे ही विकास का नाम दिया जाता है। इसलिये बढती गर्मी में निपटने के लिये वातानुकूलन की व्यवस्था है, प्रदूशित जल को षुद्ध करने हेतु विषेश प्रयास हैं । नई–नई प्रकार की बीमारियों से बचने के लिये निरोधात्मक टीकाकरण व अन्य व्यवस्थाएं की जा रही हैं। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिये नगरीकरण स्वाभाविक प्रवष्त्ति है और इस कारण सभी चीजें केन्द्रीकृत होने की प्रवष्त्ति रखती हैं। इस केन्द्रीकरण के अनेक लाभ होते हैं जिन्हें हम बाह्य मितव्ययिता के रूप में स्पश्ट कर सकते हैं । इन बाह्य मिव्ययिताओं के कारण नगरों का तीव्र गति से विकास होता है, अनेकानेक आर्थिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है, लागत घटती है, रोजगार और वस्तुओं के बाजार का विकास होता हे और लाभ कमाने के अवसर बढ़ जाते हैं । किन्तु उपर्युक्त लाभों के साथ–साथ प्रौद्योगिकी प्रेरित इस केन्द्रीकरण की प्रवष्त्ति से अनेक कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती हैं । यह राश्ट्रीय हितों के विपरीत होने लगता है और देष की सुरक्षा के लिये समस्याएं खड़ी होने लगती हैं । अनुभव से ज्ञात होता हे कि सामाजिक आर्थिक दृश्टिकोण से अनेक आर्थिक सामाजिक समस्याएं नगरों में खड़ी होने लगी हैं। उदाहरण के लिये जनसंख्या का केन्द्रीकृत होना, परिणामस्वरूप जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाना, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं खड़ी होना, पर्यावरण प्रदूशित होना, षहर के नागरिकों के लिये मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहना, समाज विरोधी तत्वों का जमघट लगना, अपराधों में वष्द्धि होना, जीवन निर्वाह की लागत बढ़ना, बेकारी, परिवहन संबंधी कठिनाइयां, सामाजिक बुराईयां, भ्रश्टाचार तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास आदि । औद्योगीकरण के कारण नगरीकरण की वष्द्धि दर तीव्र हो जाती है इससे नगरों में उपलब्ध अधोसंरचना पर अत्यधिक दबाव पड़ता है । इस कारण सार्वजनिक सुविधाओं का अभाव होने लगता है और धीरे–धीरे जिन सुविधाओं व लाभ को प्राप्त करने के उद्देष्य से उद्योग नगरों में स्थापित हो रहे थे उसके ठीक विपरीत स्थितियां निर्मित होने लगती हैं और मितव्ययिताएं ठीक प्रतिकूल दिषा में कार्य करने लगती हैं किन्तु एक बार इस प्रवषतित का प्रारंभ होने के पष्चात् उसे रोकना अत्यधिक कठिन होता है। उद्योग नगरों से दूर जाने को तैयार नहीं होते क्योंकि प्रौद्योगिकी की मितव्ययिताएं नहीं उपलब्ध होती हैं। जैसा कि दिल्ली की औद्योगिक इकाइयों के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बावजूद कठिनाइयां उत्पन्न हो रही हैं और उद्योग वहां से हटने को तैयार नहीं हैं । धूल और अन्य प्रदूशित कणों और वातावरण में

उपलब्ध अन्य प्रदूशित करणों के कारण अमेरिका के बडत्रे नगरों में 20 से लेकर 200 मौते प्रतिदिन होती हैं। नगरीय व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु यह अनुमान है कि आने वाले 10 वर्शों तक प्रतिवर्श लगातार रू. 2000 करोड़ अधोसंरचना विकास पर खर्च करने की आवष्यकता है । यह राषि वर्तमान में प्रस्तावित योजना राषि के अतिरिक्त होगी । यह महसूस किया जा रहा हे कि नगरीय भारत में संस्थागत ढांचे में मूलभूत परिवर्तन की आवष्यकता है और लोगों का सोच और दृश्टिकोण पूरी तरह बदलने की आवष्यकता है। तकनीक, अर्थव्यवसथा, विश्वव्यापीकरण और बाजारीकरण इन सबके परिप्रेक्ष्य में एक नये प्रकार के नगरीकरण व प्रौद्योगिकी के के उपयोग की व्यवस्था स्थापित करना आज की आवष्यकता है।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. प्रौद्योगिकी से लेखक का क्या अभिप्राय है ?
2. प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान की खोजों में क्या भिन्नता है ?
3. सभ्यता एवं प्रौद्योगिकी में क्या संबंध है ?
4. प्राचीन समय के नगरों के बनने में किन–किन परिस्थितियों का होना आवष्यक था ?
5. वर्तमान में मानव मात्र जयादा प्रौद्योगिकी की आवष्यकता है विकास के लिए श कथन को सिद्ध करें ।
6. नगर एक राश्ट्र की आत्मा को निर्धारित करने वाली कार्यषाला के रूप में देखे जाते हैंश से लेखक क्या कहना चाहता है ?
7. 21वीं सदी में विश्व एक नगरीय विश्व की ओर बढ़ रहा है।श कथन को प्रमाणित करें ।
8. नया विश्व नगरों का संघ होगाश इस कथन का क्या अभिप्राय है ?
9. प्रौद्योगिकी अपने उपयोग के आर्थिक पहलू के कारण कैसे नगरों के विकास को प्रोत्साहन देती है ?

10. एक नगरीय अर्थव्यवस्था की क्या प्रमुख विषेशताएं हैं ?
11. बाजारीकरण की षक्तियां कैसे नगरों को प्रभावित करती है ?
12. नगरों के प्रति लोगों में मुख्य आकर्शण के क्या कारण हैं ?

13. एंजल का नियम क्या है और वह नगरों पर कैसे लागू होता है ?

14. प्रौद्योगिकी अपने आप में मूल्यों के प्रति तटस्थ है वह षहरों को सुखद तथा नारकीय दोनों बना देती है।" कथन से लेखक का क्या आषय है ?

15. औद्योगिकीकृत नगरीय संस्कृति मानवविहीन मनुश्य की भीड़ में परिवर्तित होती जा रही है। कथन की विवेचना करें

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तर चुनकर का चिन्ह लगाइए ।

1. नगर इनमें से नहीं करते –

(क) संस्कृति का निर्माण

(ख) विकास को दिषा देना

(ग) आर्थिक क्रियाओं का संचालन

(घ) लोगों को बेरोजगार

2. प्राचीन नगर के बनने में अनावष्यक था –

(क) भौगोलिक स्थिति

(ग) केन्द्रीय स्थान पर होना

(ख) जल एवं समतल

(घ) जंगलों का निकट होना

2. प्रौद्योगिकी और नगरीकरण

(क) भौगोलिक स्थिति

(ग) केन्द्रीय स्थान पर होना

3. प्राचीन नगर के बनने में अनावष्यक था –

(ख) जल एवं समतल

(घ) जंगलों का निकट होना

4. 20वीं सदी के प्रारंभ में विश्व की जनसंख्या का ग्रामीण प्रतिषत था –

(क) 90 प्रतिषत

(ग) 88 प्रतिषत

(ख) 92 प्रतिषत

(घ) 98 प्रतिषत

4. प्रति वर्श नगरीय जनसंख्या बढ़ती है

(क) 805 लाख

(ग) 809 लाख

(ख) 8.1 लाख

(घ) 810 लाख

5. प्रौद्योगिकी ने भूमिका नहीं निभाई

(क) लागत घटाने में

(ख) स्थान, समय व दूरी को बांटने में

(ग) जीवन षैली को सुविधाजनक बनाने में (घ) बेरोजगारी बढ़ाने में

आधुनिक तकनीकी सभ्यता

डॉ. रामषंकर तिवारी

जब से इस सषश्टि का प्रारंभ हुआ तब से लेकर अब तक दो बातें मानव समाज में प्रकृति को निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाती रही है और वही इतिहास की रचना करती है और वहीं मानवता के विकास के लिए उत्तरदायी होती है, वहीं विकास की सूचक होती है और उसी परीविश्य की प्रगति की रूपरेखा निर्भर करती है, ये हैं प्रौद्योगिकी और सभ्यता । प्राचीन भारतीय सत्यता, ग्रीक और रोमन की सभ्यता और आधुनिक सभ्यता जैसी बातों का यह अर्थ होता है कि मानव समाज की जीवन षैली अलग–अलग युग में अलग–अलग प्रकार की रही है और उसमें अलग–अलग परिवर्तन आये हैं। इन परिवर्तनों को लाने में प्रौद्योगिकी की सबसे बड़ी भूमिका रही है। वैसे सभ्यता और संस्कृति का विकास मनुश्य की विचार षक्ति और सोच पर निर्भर करता है । पर यह सोच और चिंतन प्रौद्योगिकी से बहुत अधिक प्रभावित होहता है । प्रौद्योगिकी मषीन से बहुत कुछ अधिक है और वास्तव में यह किसी काम को करने और किसी ढंग से रहने की तकनीक है । इसीलिए किसी की सभ्यता अपने युग की तकनीकी सभ्यता होती है किन्तु पूर्व में तकनीकी का विकास बहुत धीरे–धीरे होता रहा पर 20वीं सदी में ये परिवर्तन क्रांतिकारी तरीके से आये और 21वीं सदी में प्रवेष करते समय पूरी

सभ्यता तकनीकी से इतनी अधिक प्रभावित हुई है कि इसे आधुनिक तकनीकी सत्यता कहा जाने लगा ।

किसी समय पर नई प्रौद्योगिकी को अपनाने का अर्थ है कि हम अर्थव्यवसथा के साथ अपने पारस्परिक संबंधों को बदल रहे हैं। आर्थिक षक्तियों के संचालन को परिवर्तित कर रहे हैं, जीने के नये तरीके ला रहे हैं और नई प्रकार की सभ्यता और मनोस्थिति को अपना रहे हैं चूंकि प्रौद्योगिकी हमारी नित्य प्रति की आदतों, व्यवहार व संबंधों को प्रभावित करती है । सामाजिक संगठन और ब्रम्हाण्ड के संबंध में हमारे दृश्टिकोण को बदलती है । उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण में स्वरूपों को नये आयाम प्रदान करती है। अतः उसके गंभीर सामाजिक और पारिस्थितिक व भौतिक प्रभाव होते हैं जिसका परिणाम लाभ और हानि, सुख और दुःख व अच्छे और बुरे के रूप में मानव समाज भोगता है। इतिहास में होने वाले महान् प्रौद्योगिकीय जैसे स्थायी कृशि व्यवस्था, औद्योगिकी क्रांति आदि ने उत्पादन के साधन और संबंधों को पूर्ण रूप से बदल डाला । इस धरती के चेहरे का आकार परिवर्तित कर दिया । मानवीय जीवन और समाज के संबंधों को बदल डाला और प्राकृतिक साधन और मनुश्य के संबंधों में नये आयामों की खोज कर डाली पर इतने क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली विधा के संबंध में मानव समाज में सहमति या एकरूपता नहीं है । इसलिए कुछ आषावादी लोग इसे मानव जीवन में सुधार की व्यापक अपार संभावनाओं के रूप में देखते हैं और कुछ इसेह समाज और प्रकृति में भयानक विस्थापन और विकृतियों के लिए उत्तरदायी मानते हैं ।

जब से मानवीय सभ्यता का विकास हुआ है तब से लेकर यह विवाद का विशय रहा है कि प्रौद्योगिकी मानवीय विकास लाती है या उसका विनाष । प्लेटो इस बात से चिंतित था कि नई लेखन की प्रौद्योगिकी मनुश्य की याददाष्त को नश्ट कर देगी। जब इस्पात बनाने की तकनीक ने प्राचीन भारत की स्थिति को बदलना प्रारंभ किया तब परंपरावादी लोग निजी संपत्ति और मौद्रिक सौदों के प्रारंभ होने की अवस्था का गुणगान करते नहीं थकते थे । अनेक षताब्दियों पष्चात् अनेक लोगों ने ब्रिटेन में आये

हुए यांत्रिकीकरण के मार्ग में अवरोध खड़े किये और कारखाना प्रणाली के द्वारा सामाजिक दषाओं को अमानवीयता की ओर ले जाने के विरूद्ध आंदोलन किया । विश्व–युद्धों ने परमाणु बम की प्रौद्योगिकी को मानवता के लिए खतरा बताया और इसे विश्व के विनाष की नीवं समझा। पिछले कुछ वर्शों से

प्रौद्योगिकी के पर्यावरण प्रभाव पर अत्यधिक चिन्ता व्यक्त की जा रही है । अमेरिकन जैविक वैज्ञानिक राचेल कारसन की पुस्तक श साइलेंट स्प्रिंगश में जो 1962 में प्रकाषित हुई थी, असुरक्षित रसायनों के गीर पर्यावरणीय दुश्प्रभावों का उल्लेख किया गया है। उसके बाद इस संबंध में विचारों और लेखों की बाढ़ आ गई और अभी भी अनेक लोग प्रौद्योगिकी और पर्यावरण असंतुलन से बहुत अधिक चिंतित हैं। वर्तमान में सूचना क्रांति जिसे आल्विन टाफ्लर ने तीसरी लहर (थर्ड वेव) कहा था प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा विश्वव्यापीकरण वाली सभ्यता के विकास में, महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

प्रौद्योगिकी और सभ्यता में चोली–दामन का साथ है। जब भाप से चलने वाले इंजिन का आविश्कार नहीं हुआ था तब दूरी तय करने के लिए घोड़े और षक्ति का प्रयोग करने के लिए मनुश्य की मांसपेषियां ही आधार थीं और सभ्यता मनुश्य, पषु और यांत्रिकीय औजारों पर निर्भर थी । दूरियां तय करने का कोई विषेश साधन नहीं था, लोग एक दूसरे के साथ बहुत कम संपर्क में आते थे किन्तु वाश्प इंजिन, फिर मोटर, फिर पेट्रोल–डीजल से चलने वाले इंजिन, फिर वायुयान और उसमें भी सुपरसोनिक यान ने न केवल दुनिया को निकट ला दिया बल्कि परस्पर संबंधों के नये आयाम विकसित किये। ग्रामीण और नगरीय सभ्यता को विभाजित करने में और ग्लोबल विलेज विकसित करने में प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा बहुत बड़ा योगदान है । प्रौद्योगिकी ने औद्योगीकरण को बल दिया और औद्योगिकीकरण ने नगरीकरण को प्रोत्साहन दिया । प्राचीन युग के समान नदी का तट या धार्मिक ऐतिहासिक स्थान पर नगर स्थापित होने अथवा दो भिन्न दिषाओं के मिलन केन्द्र पर औद्योगिक गतिविधियों का केन्द्र बनने के द्वारा दुनिया के तमाम बड़े–बड़े नगर औद्योगिक केन्द्र विकसित हुए थे। जहां एक नई सभ्यता का विकास हुआ। समय और उसका उपयोग, कार्यषैली, जीवनषैली संबंधों का आर्थिक आधार पर अवलंबित होना, पारिवारिक ढांचा बदलना, वैवाहिक व अन्य प्रकार के संबंध सब कुछ बदलने लगे और आज जब प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को मिला रख है तब स्थितियां और भी बदल गई हैं। आज सभ्यता का स्वरूप धीरे–धीरे पूर्णतः एकीकृत होता जा रहा है और बावजूद परंपरावादियों के विरोध करने और अवरोध खड़े करने के पूरी दुनिया एंग्लोसैक्षन रंग में रंगती जा रही है। टेलीविजन, कम्प्यूटर और इंटरनेट ने एक नई क्रांति पैदा की और उसके कारण दुनिया के समाज आज सही मायनों में ग्लोबल विलेज की कल्पना को साकार होते हुये देखते हैं। पूरा ब्रम्हाण्ड, पूरी दुनिया सिमट कर हर उस व्यक्ति और समाज के नियंत्रण में आ गई है जिसके पास यह प्रौद्योगिकी है। अमेरिका

और अमेरिकन संस्कृति का वर्चस्व इसलिये है कि उसके पास प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण है। वहां के लोगों का जीवन स्तर दूसरे देषों की तुलना में अपेक्षाकृत बहुत ऊँचा है, वहां की जीवनषैली दूसरों को बहुत प्रभावित कर रही है, दुनिया के तमाम देषों से लोग अमेरिका में जाकर बसने के लिये प्रयासरत हैं, आर्थिक षक्ति और आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु अमेरिका हो गया है और इसलिये सभ्यता का निर्माण वहीं से हो रहा है।

21वीं सदी का महामंत्र जय विज्ञान निरूपित किया जा रहा है और प्रौद्योगिकी के सहारे पूरी दुनिया से गरीबी और कुपोशण को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया जा रहा है । विज्ञान आधारित कल्पनाओं के लेखक आर्थर सी क्लार्क ने संभाव्य की सीमाओं की खोज करने के लिये यह परामर्ष दिया कि असंभव के क्षेत्र में प्रवेष दिया जाये द्य 21वीं सदी के प्रारंभ होते–होते वैज्ञानिक षोध और प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को इतना अधिक प्रभावित कर रखा है कि हम सोच भी नहीं पाते कि हम अपने जीवनकाल में और क्या अधिक देख सकेंगे और अनुभव कर सकेंगे । प्रौद्योगिकी नये–नये आयाम खोलती जा रही है। यह सोचकर भी आष्चर्य होता है कि अभी भी अनेक बुजुर्ग लोग मौजूद हैं जिन्होंने बिजली, नलों के द्वारा पानी की व्यवस्था, टेलीफोन और टेलीविजन या टीकाकरण आदि की पूर्व की सभ्यता में जीवन षुरू किया था। प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल डाला है और हमारी दैनिक जीवनचर्या का स्वरूप आज जो कुछ भी है वह प्रौद्योगिकी पर बहुत कुछ निर्भर है। कम्प्यूटर, बल्ब, पंखे, गाड़ियां यहां तक कि काम और आराम सब कुछ प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। ज्ञान का स्त्रोत प्रौद्योगिकी पर निर्भर है ।

वर्तमान में अध्यापन का स्वरूप बहुत कुछ बदल गया है और घर बैठे आप

बहुत कुछ सीख सकते हैं, सिखा सकते हैं इसलिये गुरू–षिश्य परंपरा का स्थान दूरस्थ षिक्षा पद्धति ने ले लिया है। उपग्रह की व्यवस्था ने तो अमूल क्रांति कर दी है । युद्धों का स्वरूप बदल गया है । हमारा जीवन स्तर बदल गया है। आज आम–आदमी अनेक ऐसी वस्तुओं का उपभोग कर सकता है जो पहले बहुत सम्पन्नों के लिये दुर्लभ वस्तु के रूप में उपलब्ध थी चाहे वह बर्फ हो या महान् हस्तियों का संगीत या कुछ और । उत्पादन का ढांचा और प्रकृति इस प्रकार बदलती है कि भारत के लोगों की संख्या पिछले 50 वर्शों में 36 करोड़ से बढ़कर 101 करोड़ हो गई है पर दुर्भिक्ष और अकाल जो पहले बहुत सामान्य बात थी अब कल्पनातीत है। महामारियों, गंभीर बीमारियों का इलाज आज संभव है, जीवन प्रत्याषा काफी ऊँची हो गई है, गरीब आदमी के जीवन में प्लास्टिक ने क्रांति ला

दी है, घर की छत से लेकर पानी भरने की व्यवस्था सब प्लास्टिक ने संभव बना दी है वह भी बहुत सस्ती कीमत पर, इसे प्रौद्योगिकी का कमाल कहते हैं और इसने जीवनषैली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया । स्थान और समय की दूरी को पाटने में प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा हाथ है। इस कारण हमारे पूरे जीवन दर्षन में काफी कुछ बदलाव आया है। क्लोनिंग और जीन्स के प्रयोगों ने एक नई सष्श्टि की रचना संभव बना दी है ।औद्योगिकी ने आम आदमी को सषक्त बनाने में अहम् भूमिका निर्वाह की द्य देषों में प्रजातंत्र लाने में इस प्रौद्योगिकी का बड़ा योगदान है। षिकार योग्य और खाद्यान्न बटोरने के युग से वर्तमान में चांद और मंगल ग्रह पर पहुंचने तक की सभ्यता का बदलाव प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। अतः इसे आधुनिक तकनीकी सभ्यता ही कहा जायेगा। खेती की औद्योगिकी का वर्तमान स्वरूप अत्यधिक बदल चुका है। हड़प्पा संस्कृति के तिरोहित होने में आर्यों द्वारा सिन्धु नदी पर बनाये गये बांधों को तोड़ने में ढूंढा जाता है और भारत को उपनिवेष बनाने में प्रौद्योगिकी का बड़ा हाथ था। भारत को वर्तमान स्वरूप लाने में प्रौद्योगिकी का बड़ा योगदान है ।प्रौद्योगिकी विकास की प्रक्रिया में संघर्श और समन्वय दोनों सम्मिलित हैं, पर दोनों ही स्थिति में संघर्श निहित है । साधनों के ज उपयोग की प्रविधि प्रौद्योगिकी के साथ बदलती जाती है इससे समाज में उत्पादन के संबंध बदल जाते हैं। व्यापार और यात्राएं प्रौद्योगिकी के साथ बदलती गई और इन्होंने सभ्यता को बदलने में बहुत बड़ा योगदान दिया ।

संयुक्त परिवार प्रणाली, विवाह की पद्धतियां, बहुविवाह से एक पत्नी वाली सभ्यता और तलाक, संपत्ति में समानता का अधिकार इन सारी बातों को प्रभावित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही हे। यहां तक कि परिवार का आकार और प्रौद्योगिकी का बड़ा घनिश्ठ संबंध रहा है। षिषु मष्त्यु दर को घटा कर जन्म दर घटाने की प्रेरणा मिलती है और प्रौद्योगिकी की दृश्टि से सभी उन्नत देषों की जनसंख्या बहुत सीमित है। यूरोप में 18वीं षताब्दी तक जलाऊ लकड़ी और इमारती लकड़ी की उपलब्धता ने विकास दर को बहुत कुछ प्रभावित किया था पर कोयले की सहायता से होने वाली औद्योगिक क्रांति ने इतिहास और सभ्यता को बदलकर रख दिया ।अनेक लोग मानते हैं कि यूरोपीय प्रौद्योगिकी के कारण भारत गरीबी के इस स्तर तक पहुंचा है, जिसमें अंग्रेजी षासन व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण थी अतः प्रौद्योगिकी से बचकर रहना चाहिए जबकि दूसरों लोगों का विचार है कि प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्र किया जा सकता है और स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखी जा सकती है ।प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर. नरसिम्हा का कहना है कि भारत को उपनिवेष बनाने में राबर्ट क्लाइव और वारने हैस्टिंग का ही हाथ नहीं था अपितु इसाक न्यूटन और जेम्सवाट की भूमिका

काफी महत्वपूर्ण थी । स्वतंत्र भारत में आत्म निर्भर प्रौद्योगिकी का मुद्दा लोगों की आधारभूत आवष्यकताओं की पूर्ति के साथ जोड़ा गया और गरीबी घटने की दृ शिट से उसे महत्वपूर्ण माना गया । पयार्वरणविद् वर्तमान प्रौद्योगिकी को प्रकृति के विरूद्ध छेड़छाड़ के रूप में देखते हैं और प्राकृतिक जीवनषैली व संतुलन को भंग करने की प्रक्रिया समझते हैं। वे पूंजी प्रधान तकनीक के स्थान पर वैकल्पिक प्रौद्योगिकी की बात करते हैं और सौर ऊर्जा, परंपरागत तरीके और मानवीय श्रम पर अधिक जोर देना चाहते हैं, पर प्रौद्योगिकी का समर्थन दोनों करते हैं। कुछ क्षेत्रों में आधुनिक प्रौद्योगिकी के बिना काम नही चल सकता चाहे वह जैविक प्रौद्योगिकी हो या भौतिकी की । प्रौद्योगिकी और सभ्यता का बड़ा घनिश्ठ संबंध है और तमाम पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत बाजार आधारित अर्थव्यवस्थाओं का आधुनिक तकनीकी सभ्यता आधार प्रौद्योगिकी से जुड़ा हुआ है और समता, समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था आधुनिक प्रौद्योगिकी पर बहुत कुछ निर्भर करती है पर प्रौद्योगिकी अपने आप में सभ्यता का निर्माण करने में असमर्थ है । वह केवल अस्त्र प्रदान करती है उसका उपयोग व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है । परमाणु तकनीक के द्वारा षक्ति प्राप्त की जा सकती है, ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है, विकास किया जा सकता है और देषों और सभ्यता का विकास हो सकता है, मंगल ग्रह पर पहुंचा जा सकता है, कृशि क्रांति की जा सकती है, पर करोड़ों लोगों को अपंग, असहाय और विकृत बनाया जा सकता है और लाखों लोगों को काल के गाल में भी भेजा जा सकता है । समानता भी लाई जा सकती है और घोर असमानाएं भी विकसित की जा सकती है। आम आदमी को सषक्त बनाया जा सकता है और उपनिवेष भी कायम किया जा सकता है । भौतिक दूरियां घटाई जा सकती हैं और दिलों की दूरिया बढ़ाई भी जा सकती हैं ।

हालांकि यह कहना कठिन है कि जनसंख्या वषद्धि के कारण प्रौद्योगिकी के आविश्कार हुए अथवा ठीक इसके विपरीत। प्रकृति पर विजय के लिए प्रौद्योगिकी बहुत बड़ा अस्त्र है, प्रष्न सिर्फ यह है कि प्रकृति पर विजय मानव समाज की दीर्घकालीन विकास के लिए है अथवा विलासिता और अधिकार बढ़ाने की लिप्सा के लिए इसलिए टिकाऊ विकास की धारणा हमारे लिए महत्वपूर्ण है। मनुश्य में आविश्कार करने और सीखने की असीमित क्षमता होती है। संस्कृति, विश्वास, परंपराएं और उस पर आधारित सभ्यता बहुत कुछ पर्यावरण और प्रौद्योगिकी की देन होती है। लोग प्रकृति को अपने विश्वास, ज्ञान और उद्देष्य के चष्मे से देखते हैं और प्रकृति के साथ व्यवहार करते समय वे अपनी सांस्कृतिक छवि को ध्यान में रखते हैं। प्रौद्योगिकी जिसका विकास पष्चिम के देषों में किया गया है वह इस धारणा पर आधारित रहा है कि प्रकृति के पास असीमित संसाधन उपलब्ध है और

उसका असीमित दोहन किया जा सकता है। इसके विरूद्ध अनेक धारणाएं विकसित की जा रही हैं क्योंकि यह तथ्य हमेषा स्मरणीय है कि इस विश्व में साधन असीमित नहीं हैं ।

प्रौद्योगिकी मानव समाज के लिए वरदान भी है और अभिषाप भी । अब यह मनुश्य पर निर्भर करता है कि वह इन विकल्पों में से किसे चुनता है । दुनिया में उपलब्ध अनेक वस्तुओं और प्रक्रियाओं के सदृष प्रौद्योगिकी के साथ कुछ अच्छाइयां जुड़ी हुई हैं। ईश्वर ने हमें उन दोनों के साथ ही इस पष्थ्वी पर भेजा है इसलिए यदि प्रौद्योगिकी का विकास और उपयोग बढ़ाया जाता है तो उसके साथ प्रकृति की विसंगतियां उत्पन्न होना स्वाभाविक है, इसके लिए अन्य प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा सकता है पर यह सुनिष्चित करना संभव नहीं है कि प्रौद्योगिकी केवल अच्छाइयां उपलब्ध करायेगी और उसकी खराबियां समाप्त हो जायेंगी या उनसे बचा जा सकेगा । प्रौद्योगिकी से उत्पन्न होने वाली बुराईयां दो प्रकार की हें एक वे जो मनुश्य के द्वारा जानबूझकर उत्पन्न की जाती हैं, जिससे कमजोर या प्रौद्योगिकी विहीन समाज का षोशण किया जा सके और दूसरी, प्रौद्योगिकी के साथ संपूर्ण मानव समाज को प्राप्त होने वाली खराबियां हें जैसे पर्यावरण प्रदूशण। मनुश्य को पहले वाली स्थिति से स्वयं को बचाना है और दूसरी स्थिति से अपने आप को सुरक्षित रखने हेतु प्रयास करना होंगे । आधुनिक तकनीकी सभ्यता वर्तमान प्रौद्योगिकी के ऊपर निर्भर करती है और इसका भविश्य बहुत कुछ इसी संतुलित बुद्धि पर निर्भर करता है। यदि मनुश्य ने इस संतुलन को भंग किया तो विनाष निष्चित है अन्यथा विकास के अपार द्वार खुले हुए हैं।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. प्रौद्योगिकी और सभ्यता मानव समाज को केसे प्रभावित करती है ?
2. "किसी समय की सभ्यता अपने युग की तकनीकी सभ्यता होती है, इस कथन को स्पश्ट करें ।
3. आधुनिक तकनीकी सभ्यता से क्या तात्पर्य है ?
4. प्रौद्योगिकी से लेखक का क्या आषय है ?
5. नई प्रौद्योगिकी मानव समाज को किस तरह प्रभावित करती है ?
6. प्रौद्योगिकी मानवीय विकास में कैसे सहायता है ?
7. प्रौद्योगिकी से मानवीय विनाष संभव है ?

8. पर्यावरण व प्रौद्योगिकी में परस्पर क्या संबंध हैं ?

9. दुनिया के तमाम बड़े नगर कैसे विकसित हुए ?

10. ग्लोबल विलेज से लेखक का क्या आषय है ?

11. अमेरिका सभ्यता का केन्द्र बिन्दु क्यों बन गया है ?

12. 21 वीं सदी गरीबी एवं कुपोशण को किस माध्यम से मुक्ति दिलवाने के लिए संपकल्परत है ?

13. हमारे दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी का क्या योगदान है ?

14. दूरस्थ षिक्षा पद्धतिश से क्या अभिप्राय है ?

15. षिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी किस तरह सहायक है ?

16. गरीब आदमी के जीवन में प्लास्टिक का क्या महत्व है ?

17. प्रौद्योगिकी के विकास की मुख्य अवधारणा क्या है ?

18. प्रौद्योगिकी समाज के लिए वरदान भी है और अभिषाप भी श इस कथन पर अपने विचार संक्षेप में लिखें ।

19. ”प्रौद्योगिकी का उपयोग मनुश्य के विवेक पर निर्भर हैश उक्त कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

चयनात्मक प्रष्न

सही उत्तर चुनकर

का चिन्ह लगाइए ।

1. 21वीं सदी का महामंत्र है –

(क) जय – जवान

(ख) जय किसान

(ग) जय विज्ञान

(घ) जय विधान

2. आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकास हुआ–

(क) भारत में

(ग) अरब राश्ट्रों में

3. प्रौद्योगिकी के विकास की अवधारणा है

(क) सीमित संसाधन

(ग) परमाणु

4. प्रौद्योगिकी के विकास और उपयोग के साथ–

(घ) पष्चिमी देषों में

(ख) असीमित साधन

(घ) सूर्य–ऊर्जा

8 (ख) चीन में

(क) प्रकृति की विसंगतियां बढ़ेंगी

(ख) पर्यावरण में सुधार होगा

(ग) प्राकृतिक संसाधन बढ़ेंगे

5. (घ) विश्‍व षांति स्थापित होगी

मनुश्य की संतुलित बुद्धि प्रौद्योगिकी के उपयोग से मानव का

(क) विनाष करेगी

(ख) विकास करेगी

(ग) अल्प आयु प्रदान करेगी

(घ) विश्‍व बंधुत्व की भावना का विरोध करेगी –

3 पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास

डॉ. चंद्रलेखा रघुवंषी

पर्यावरण रू अन्तरिक्षत से हमारा ग्रह बहुत सुंर दिखायी देता है । इस पर करोड़ों वर्शों से मानव जीवन का संधारण और संवर्धन हुआ है लेकिन आज परिस्थिति बदली हुई है। पर्यावरण पर मानव द्वारा किये गये आघातों ने जीवन के अस्तित्व को ही खतरा पहुंचाने की स्थिति निर्मित कर ली है।

पर्यावरण षब्द का अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के लिए अलग–अलग हो सकता है। कुछ के लिए यह ताजा, स्वच्छ वायु और पवित्र जल का भाव जगाता है। कुछ अन्य के लिए यह मनुश्यों द्वारा परिवर्धित पड़ोस का परिवेष है। कुछ दूसरे पर्यावरण को पारिस्थितिकी से जोड़ते हुए इसे वनस्पतियों और जन्तुओं के परस्पर संबंधों, खाद्य श्रृंखला, जातियों के संकट इत्यादि के रूप में देखते हैं ।

यथार्थ में पर्यावरण में इन सभी गुण–धर्मों के साथ–साथ और भी अनेक तत्वों का समावेष होता है। इसके अंतर्गत वायु, जल, पौधे और जन्तु तो आते ही हैं साथ ही इसमें प्राकृतिक और मानवीय प्रक्रियाओं द्वारा परिवर्तित वातावरण को भी सम्मिलित किया जाता है। ये सभी हमारे परिवेष को सम्पूर्णता प्रदान करते हैं। स्पश्टतः पर्यावरण के अंतर्गत जैविक, अजैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पक्ष या घटक आते हैं। जैविक घटक के अंतर्गत सभी जीव जैसे पेड़–पौधे और जन्तु सम्मिलित होते हैं । अजैविक घटक के अंतर्गत वायु, जल, मष्दा और ऐसे ही अन्य अजीवित पदार्थों का समावेष होता है । जैव – मण्डल ग्रह को पर्यावरण के अध्ययन के अंतर्गत जीवों और उनके पर्यावरण का अध्ययन किया जाता है । सम्पूर्ण अनुमाप बनाकर देखें तो पर्यावरण का अध्ययन ही सम्पूर्ण जैवमण्डल का अध्ययन है। जैवमण्डल से तात्पर्य उस सम्पूर्ण स्थान से है जहां किसी–न–किसी रूप से जीवन पाया जाता है । यद्यपि जीवन के रूप समुद्र की अनन्त गहराइयों से लेकर पर्वतों के षिखरों तक सभी जगह व्याप्त हैं लेकिन अधिकांष जीवन पष्थ्वी की सतह से कुछ मीटर ऊपर और नीचे मिलता है। जैवमण्डल का विस्तार पष्थ्वी की सतह से 10,000 मीटर की ऊंचाई तक समुद्र में लगभग 8000 मीटर की गहराई तक और पष्थ्वी की सतह के नीचे 250 मीटर तक फैला हुआ है।

जीवन के अधिकांष रूप विषिश्ट प्रकार के पर्यावरण के लिए अनुकूलित होते हैं। दूसरे षब्दों मे ये रूप सामान्य जीवन परिस्थितियों और भोजन स्त्रोतों में सीमित रहते हैं । इसके साथ ही किसी जाति विषेश के जीवों का पोशण सम्पूर्ण जैवमण्डल के परिप्रेक्ष्य में सन्तुलित होता है। इस प्रकार जैवमण्डल यथार्थ में एक प्रकार का विश्व जैव तंत्र है जो ऊर्जा और पोशक तत्वों के चकीय प्रवाह पर आधारित है । जैवमण्डल को सामान्यतः तीन बड़े तंत्रों में विभाजित किया जाता है; लिथास्फीअर – इसमें पृथ्वी का ठोस भाग यथा चट्टानें मृदा और अवसादी तत्वों का समावेष है; हाइड्रोस्फीअर – इसमें समुद्र और अलवणीय जल का समावेष है और एटमॉसफीअर दृ इसमें गैसीय भाग अर्थात् वायुमण्डल आता है। ये तीनों आपस में और इनमें से प्रत्येक जीवन के विन्नि रूपों से अनेक प्रकार से जुड़े हुए हैं।

पारिस्थितिक तंत्र–

जैवमण्डल के अन्तर्गत वनस्पतियों और जन्तुओं की असंख्य जातियों का समावेष होता है । जीवन तंत्र के सभी प्रकार के आत्मनिर्भर होने के बावजूद भी कोई पौधा अथवा जन्तु अकेला जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, वह अपने पर्यावरण पर निर्भर

करता है । प्रत्येक प्राणी को, विषेश रूप से भोजन, पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास जल और खनिज ग्रहण करना होता है, व्यर्थ पदार्थों का त्याग करना होता है और अपने षरीर का एक अनुकूल तापमान नियमित करना होता है । जीवों और उनके पर्यावरण की परस्पर क्रियाओं का अध्ययन ही पारिस्थितिकी या इकॉलाजी कहलाता है । जीवन अपने पर्यावरण के अजीवित तत्वों या घटकों से किया करते हुए सम्मिलित रूप से एक तंत्र का निर्माण करते हैं इसे पारिस्थितिक तंत्र या इकोतंत्र कहा जाता है।

इकोतंत्र यथार्थ में जीवित (कार्बनिक या जैविक) और अजीवित (अकार्बनिक या अजैविक) घटकों की आपस में अन्तरक्रियाओं और उनकी परस्पर निर्भरता का समुच्चय है । यह एक विषुद्ध और संक्षिप्त षब्द है जिसे मूलरूप से जीवों के समूहों और उनके आवास के परस्पर मिलने से निर्मित एक क्रियाषील इकाई के निर्माण को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया गया था । स्पश्टतः इस ग्रह पर उपस्थित समस्त इकोतंत्र को सम्मिलित रूप से श्जैवमण्डलश की संज्ञा दी जा सकती है ।

इकोतंत्र या पारिस्थितिक तंत्र षब्द विभिन्न आकार के सभी क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त किया जाता है जैसे इसे पानी के छोटे से गड्ढे के लिए भी प्रयुक्त किया जाता सकता है बड़े वन के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। विभिन्न इकोतंत्रों का संगठन भिन्न–भिन्न होता है । ये भिन्नताएं जातियों की संख्या, अजैविक घटकों के प्रकार और उनके सापेक्ष परिमाण और देषकाल की विभिन्न अवस्थाओं की होती है ।

इकोतंत्र प्राकृतिक भी हो सकते हैं और मनुश्य द्वारा परिवर्तित प्राकृतिक भी। किन्हीं व्यर्थ पदार्थों के उपचार संयंत्र का बनाया गया तालाब जो कि संयंत्र का भाग है, अप्राकृतिक तंत्र का एक उदाहरण है। फिर इकोतंत्र प्राकृतिक भी होते हैं और मनुश्य द्वारा प्रबन्धित भी। प्रबंधन भी एक व्यापक कार्यक्षेत्र में भिन्न–भिन्न रूप धारण कर सकता है। कृशि प्रबंधन भी एक प्रकार के इकतंत्र का आंषिक प्रबंधन है ।

पारिस्थितिक तंत्र के घटक –

सूर्य का प्रकाष – जीवों के जीवन के लिए सूर्य का प्रकाष ही परम ऊर्जा स्त्रोत है। अकार्बनिक पदार्थ इनमें कार्बन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, खनिज और जल तथा ऐसे ही कुछ अन्य पदार्थ हैं, ये पदार्थ, मष्दा, वायु और जल में पाये जाते हैं। ये जीवन के मूल तत्व हैं। कार्बनिक पदार्थ वसा, प्रोटीन, षर्करा और ऐसे दूसरे कार्बनिक पदार्थ जीवन, मष्दा और जल में पाये जाते हैं। ये जीवित और अजीवित

के बीच जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करते हैं। जलवायु या मौसम – हवा, जलीय धाराएं, तापमान, वर्शा, बर्फ, आर्द्रता इत्यादि जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को निर्धारित करते हैं ।

उत्पादककृ ये स्वपोशी या आत्मपोशी जीव हैं। इनमें मुख्यतः हरे पेड़–पौधे का समावेष होता है जो सूर्य के प्रकाष की ऊर्जा को कार्बनिक पोशक पदार्थों में परिवर्तित करते हैं और ऑक्सीजन बनाते हैं ।

बड़े उपभोक्ता दृ ये विशमतापोशी जीव हैं। ये जन्तु या तो दूसरे जन्तुओं को खाते हैं या कार्बनिक पदार्थों को खाते हैं ।

सूक्ष्म उपभोक्ता दृ ये अपघटक जीवन हैं। इनमें बेक्टीरिया और फफूंद का समावेष होता है। ये मष्त जीवों के कार्बनिक घटकों का अपघटन करते हैं । अपघटन में प्राप्त ऊर्जा के कुछ भाग का उपयोग ये अपनी जीवन–क्रियाओं के संचालन में करते हैं और षेश को बाहर निर्मुक्त कर देते हैं।। अपघटन के दौरान अकार्बनिक यौगित बनते हैं जो पोशक तत्व होते हैं। इन्हें अन्य जीवों द्वारा अवषोशित कर लिया जाता है ।

पारिस्थितिक तंत्र की साम्यावस्था

इकोतंत्र एक खुला तंत्र है। यह बाहरी स्त्रोत (सूर्य) से ऊर्जा ग्रहण करता है, उसे निर्धारित

करता है, प्रयुक्त करता है और अन्त में अन्तरिक्ष में ताप को लौटाता है । यदि सूर्य से ऊर्जा मिलना बन्द हो जाए तो इकोतंत्र (और पष्थ्वी पर जीवन) ही समाप्त हो जाए । इकोतंत्र साइबरनेटिक भी है । नियंत्रक पुनर्निवेषन तंत्र साम्यावस्था बनाये रखने के लिए जीवों के माध्यम से कार्य करता है अर्थात् जीवन स्थायित्व के लिए तंत्र का निर्माण करते हैं ।

मानव का पर्यावरण पर प्रभाव

मानव भी पष्थ्वी के इकोतंत्र का एक भाग है। उसका स्वयं का अस्तित्व पष्थ्वी पर मिलने वाली हजारों हजार जातियों के पेड़–पौधों और जन्तुओं के अस्तित्व पर निर्भर करता है । आदिमानव अन्य जीवन जातियों के समान अपने पर्यावरण से सन्तुलन और सामंजस्य बनाये रखने वाली जाति थी । उनमें केवल कुछ ही ऐसी विषेशताएं थीं जो उन्हें अन्य जन्तुओं से भिन्न स्वरूप प्रदान करती थीं। वे जीव समुदाय के एक सामान्य सदस्य के समान ही व्यवहार करते थे। वे पर्यावरण सन्तुलन के भली प्रकार योग्य और उपयुक्त थे । अतः आदिमानव ने पयावरण को जैसा पाया वैसा ही रहने दिया । पर्यावरण में परिवर्तन के

थे। उनके प्रयत्न अत्यन्त सीमित थे ।

विकास की प्रक्रिया में मानव–जाति एक संस्कृति निर्माता जन्तु जाति के रूप में उभरी। मानव के हस्तक्षेप ने धीरे–धीरे पष्थ्वी के स्वरूप को बदलना प्रारंभ किया धीरे–धीरे लेकिन निरंतर उसने प्रकृति के अधिकाधिक तत्वों अपने नियंत्रण में लाना आरंभ किया । इस प्रक्रिया से मानव जीवन में गुणात्मक परिवर्तन आये और वह विकसित और समष्द्ध हुआ । यह प्रक्रिया लगातार चलती रही और समय के साथ इसमें आष्चर्यजनक गति आयी । लेकिन अब यह अनुभव किया जाने लगा है कि यह प्रगति पर्यावरण में अनेक समस्याएं उत्पन्न करने के मूल्य पर प्राप्त हुई है जैसे कि पर्यवरणीय प्रदूशण, प्राकृतिक स्त्रोतों का स्खलन, वन्य जीवन के विलुप्त होने का खतरा, कीटनाषियों के उपयोग से पर्यावरण का विशैलीकरण, रेडियोधर्मिता के जैविक कुप्रभाव, मानव जनसंख्या में असाधारण वष्द्धि और सबसे बढ़ कर इकोतंत्र का असन्तुलन । पष्थ्वी के इकोतंत्रों में असाधारण परिवर्तनों के कारण इन सभी के नश्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया है ।

पर्यावरणीय समस्याएं

विकास की अन्धी दौड़ में हुए औद्योगीकरण और षहरीकरण में पृथ्वी के प्राकृतिक स्त्रोतों का दोहन दूरगामी परिणामों पर विचार किये बिना किया गया। बड़े स्तर पर हुए प्राकृतिक सम्पदाओं के अपघटन और विनाष का कार्य इसी सदी में और विषेश रूप से पिछले पांच दषकों में सर्वाधिक तेजी से हुआ । इस समस्या के कुछ आयामों की ओर विश्व का ध्यान आकर्शित हुआ है। विषेश रूप से विकसित देषों में जहां वायु, जल ओर भू प्रदूशण की समस्याओं ने अनेक स्थानों पर गम्भीर परिणाम हासिल कर लिया । जीवाष्म ईंधनों की कीमत में असाधारण वृद्धि से उत्पन्न ऊर्जा संकट ने औद्योगिक सभ्यता को एक चुनौती दी है और प्राकृतिक पदार्थों और ऊर्जा के प्राकृतिक स्त्रोतों के चूक जाने का खतरा पैदा हो गया है।

विकासषील देषों की पर्यावरणीय समस्याएं, समष्द्ध और औद्योगिक रूप से विकसित देषों की समस्याओं से बिल्कुल भिन्न हैं जहां प्रदूशण की समस्या प्रमुख है । विकासषील देषों की स्थिति ग्रीक पुराणों में वर्णित राजा टांटालस की स्थिति जैसी ही है जिसे देवताओं के आदेषों की अवहेलना करने के जुर्म में अक्षुण्ण भूख और प्यास का अभिषाप झेलना पड़ा था। उस राजा की त्रासदी यह थी कि समस्त जल और खाद्य सामग्री के होते हुए भी वह उसकी पहुंच से केवल कुछ ही दूरी पर था और भूख और प्यास के झेलने के लिए अभिषप्त था । ठीक उसी तरह इन विकासषील देषों के पास असीमित

प्राकृतिक सम्पदा तो है लेकिन इन सम्पदाओं का व्यावहारिक उपयोग इन देषों की पहुंच से बस थोड़ा सा ही दूर है ।

भारत की अनेक पर्यावरणीय समस्याएं दूसरे देषों के समान ही हैं लेकिन उसकी कुछ समस्याएं भी हैं। तीव्रगति से जनसंख्या में वषद्धि, अनियोजित षहरी और औद्योगिक विकास, सीमान्त उद्योग –

पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास

उद्योग–धन्धे सबसे बड़े प्रदूशण के कारक माने जाते हैं । विभिन्न औद्योगिक प्रक्रमों के दौरान अनेक प्रदूशण तत्व उप उत्पाद के रूप में निकलते हैं। अधिकांष औद्योगिक उप उत्पाद बगैर उपचार किये ही नदी – तालाबें या अन्य स्त्रोतों में विसर्जित कर दिये जाते हैं आवा उन्हें खाली पड़ी भूमि पर वैसे ही छोड़ दिया जाता है। इससे पर्यावरण का गम्भीर प्रदूशण होता है । अनेक औद्योगिक व्यर्थ अत्यन्त विशैले होते हैं जिनका पर्यावरण में मिल जाना अत्यन्त घातक सिद्ध होता है। पिछले लगभग 30 वर्शों में हमारे देष में तीव्र गति से औद्योगीकरण हुआ है । देष की प्रगति के लिये औद्योगीकरण की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता, परन्तु प्रदूशण की समस्या से बचने के लिए आवष्यक होगा कि नये उद्योग पूर्व नियोजित रूप से षहर तथा आवासीय बस्तियों से दूर स्थापित किये जाएं तथा उनसे निकलने वाले प्रदूशक – व्यर्थ समुचित उपचार के उपरान्त पर्यावरण में विसर्जित किये जाएं।

कृशि

कृशि के आधुनिकीकरण के साथ–साथ कीटनाषी, पेस्टनाषी, उर्वरक इत्यादि के उपयोग में वषद्धि हुई है । समुचित जानकार के अभाव में अबोध कृशक फसलों पर इन पदार्थों की आवष्यकता से अधिक छिड़काव करते हैं। खेतों में इस प्रकार डाले गये अतिरिक्त उर्वरक व अन्य पदार्थ वर्शा काल में जल के साथ बहकर नदियों तथा तालाब में जा मिलते हैं तथा इन जल स्त्रोतों के प्रदूशण का कारण बनते हैं। इसके अतिरिक्त कीटनाषी दवाओं तथा खरपतवार नाषी दवाओं के फलों तथा सब्जियों के साथ हमारे षरीर में पहुंचने की सम्भावना रहती है

ऊर्जा उत्पादन प्रक्रियायें

हमारे दैनिक जीवन में सभी कार्यों के लिये ऊर्जा की आवष्यकता होती है। यह ऊर्जा हमें लकड़ी, कोयल, मिट्टी का तेल, पेट्रोल इत्यादि ईंधनों के दहने से प्राप्त होती है । विभिन्न दहन प्रक्रमों के दौरान धुंआ, गैसें तथा कोयल

कण निकलते हैं जो वायमुण्डल में मिलकर उसके प्रदूशण का कारण बनते हैं

विद्युत ऊर्जा उत्पादन हेतु ताप विद्युत – घरों तथा परमाणुविक विद्युत – घरों की संख्या में वर्षद्धि हुई । ताप विद्युत घरों में ईधन के रूप में कोयला जलाया जाता है। इससे बड़ी मात्रा में कार्बन डाइ–ऑक्साइड, कोयला कण तथा अन्य प्रदूशण तत्व उत्पन्न होते हैं। बड़ी मात्रा में कोयले की राख भी निकलती है जिसे विसर्जित करना एक समस्या होती है । समुचित विसर्जन व्यवस्था के अभाव में इन पदार्थों से पर्यावरण प्रदूशित होता है।

परमाणुविक विद्युत घरों से निकले अवषिश्टों में कुछ मात्रा में रेडियोधर्मी पदार्थ भी उपस्थित होते हैं जिससे गंभीर प्रदूशण की सम्भावना रहती है।

उपरोक्त विभिन्न स्त्रोतों के द्वारा पर्यावरण के सभी घटक जैसे जल, वायु तथा मष्दा निरन्तर प्रदूशित होते रहते हैं। वर्तमान में तीव्र औद्योगीकरण तथा जनसंख्या में विस्फोटक वर्षद्धि के कारण विभिन्न स्त्रोतों द्वारा होने वाले प्रदूशण के परिणाम में भी वर्षद्धि हुई है और पर्यावरण प्रदूशण की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है ।

जल प्रदूशण

जल की महत्ता विवादातीन है । सभी प्रकार के जीवन के लिए जल प्रथम आवष्यकता है । जल के बगैर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्वयं हमारे षरीर का दो तिहाई भाग जल ही है । जल स्वयं एक पोशक तन्त्र होने के साथ–साथ षरीर के लिए अन्य आवष्यक पोशक तत्वों के संवहन का कार्य भी करता है । अतः मानव स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ व षुद्ध जल की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है ।

सामान्यतः जल प्रदूशण निम्नलिखित कारणों से होता है

1. घरेलू अपजल
2. वाहितमल —
3. औद्योगिक उपजल
4. कृशि बर्हिस्त्राव
5. ऊश्मीय या तापीय प्रदूशण
6. रेडियोएक्टिव अवषिश्ट तथा अवपात
7. तैल प्रदूशण

भारत की विषाल जनसंख्या का अधिकांष भाग स्वच्छ पेयजल की सुविधा से वंचित है औद्योगिक प्रगति के साथ–साथ यह समस्या और भी जटिल होती जा रही है। एक अध्ययन के अनुसार प्रथम श्रेणी के 142 षहरों में प्रतिदिन सात अरब लीटर गंदगी जमा होती है। इसमें से आधी गंगा में गिरा दी जाती है। अध्ययन के अनुसार गंगा देष में सर्वाधिक प्रदूशित नदी है । कृश्णा तथा कावेरी सहित देष की दूसरी चौदह बड़ी नदियां भी प्रदूशण से बुरी तरह ग्रस्त हैं। नदियों, समुद्र, झीलों और बरसाती नालों के किनारों अथवा उनके आसपास स्थापित कारखानों से निरूपयोगी रासायनिक तरल पदार्थ उपचारित किये बिना ही जल स्त्रोतों में बहा दिये जाते हैं । इसके परिणाम बहुत घातक हुए हैं। दिल्ली में 1966 में यमुना के जल प्रदूशण से यकृत षोथ की बीमारी में बड़ी संख्या में लोग मरे। बिहार में मुंगेर के पास गंगा । के प्रदूशण से अनेक लोग प्रभावित हुए । विभिन्न प्रदूशण स्त्रोतों से जल प्रदूशण हो रहा है। दक्षिण भारत की अनेक नदियों के पानी का रंग ही बदल गया है । बम्बई बन्दरगाह के पास तो प्रदूशण के कारण पानी नीला दिखाई देते है। साथ ही समुद्र से निकाले जा रहे खनिज तेल की कुछ मात्रा समुद्र के पानी में मिल रही है। तेल प्रदूशण जहाजों द्वारा भी हो रहा है। उत्तरप्रदेष की प्रमुख नदियां गंगा, यमुना, गोमती, हिंडन तथा नैनीताल की झील प्रदूशित हो चुकी हैं।

प्रदूशित जल का प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर तथा जलीय जन्तुओं पर विभिन्न प्रकार से होता है । प्रदूशित जल के उपयोग से कालरा, टाइफाइड, डायरिया, यकृत षोथ, पोलियो, अमीविक अतिसार, अमीविक यकृत एप्सिरा इत्यादि रोग होते हैं । विभिन्न प्रकार के कृमि (परजीवी) भी प्रदूशित पेयजल के द्वारा षरीर में पहुंचकर रोगों का कारण बनते हैं । विभिन्न प्रकार के रासायनिक पदार्थ जैसे डी.डी.टी., पारा, सीसा, आर्सेनिक इत्यादि विभिन्न रोगों जैसे उदरषूल, वृक्क षोथ इत्यादि रोगों का कारण बनते हैं ।

प्रदूशित जल में ऑक्सीजन की कमी के कारण जलीय जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है । विभिनन रासायनिक पदार्थ भी जलीय जन्तुओं के षरीर में धीमी गति से एकत्रित होते रहे हैं जैसे षैलफिष में झिंक (ँपदा) तथा समुद्री घास (ेमं ूममके) में रूदियम (त्नजीपनउ) का सान्द्रण है । उद्योगों से निकले अनुपयोगी पदार्थों में घातक विश भी होते हैं। ऐसे जल को पीने से चौपायों की मृत्यु की घटनाएं होती हैं। मछलियों व अन्य जलीय जन्तुओं की मृत्यु भी हुई है । 1995 में जापान की मरीमाटा खाड़ी की दुर्घटना इसका उदाहरण है ।

नियंत्रण के उपाय –

जहां तक सम्भव हो किसी भी प्रकार के अपषिश्ट या अपषिश्ट युक्त जल को जलाषयों में मिलने नहीं दिया जाना चाहिए ।

पेय जल के स्त्रोतों के आसपास कूड़ा–कर्कट अथवा अन्य पदार्थ सत्र नहीं किये जाने चाहिए ।

नदी तथा तालाबों में पषुओं को नहलाने पर भी पाबन्दी होनी चाहिए;

उद्योगों से निकलने वाले व्यर्थ जल को उपचारित करने के पष्चात् ही जल स्त्रोतों में मिलाना चाहिए ।

वायु जीवन के लिए आवष्यक –

स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ वायु भी एक आवष्यक तत्व है । सामान्यतः वायु में 78 प्रतिषत पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास

नाइट्रोजन, 21 प्रतिषत ऑक्सीजन, 03 प्रतिषत कार्बन डाइऑक्साइड तथा षेश निश्क्रिय गैसें और जल वाश्प होती है। वायु में उपस्थित ऑक्सीजन पर ही अधिकांष जीवधारियों का जीवन निर्भर करता है मनुश्य को भी श्वसन हेतु ऑक्सीजन आवष्यक होती है। एक सामान्य मनुश्य औसतलन 22,000 बार सांस लेता है जिसके द्वारा वह लगभग 16 किलो वायु ग्रहण करता है ।

(6) वायु प्रदूशण

वर्तमान में औद्योगिक चिमनियों से निकला धुआं एवं धूल कण, मोटरगाड़ियों से निकला धुआं तथा विभिन्न मानवीय गतिविधियों से उड़ने वाली धूल इत्यादि हमारे आसपास की वायु को निरन्तर दूशित कर रहे हैं। इस प्रकार उत्पन्न धुएं से जहां वायु दूशित होती है वहीं दूसरी ओर दहन की प्रक्रिया के फलस्वरूप वायुमण्डलीय ऑक्सीजन की मात्रा भी घटती है।

औद्योगिक क्षेत्रों के निकट के वायुमण्डल में ऑक्सीजन की मात्रा निरन्तर घट रही है और कार्बन डाइ ऑक्साइड, सल्फर डाइ–ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है । इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के हाइड्रोजन, क्लोरी, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, अमोनिया, बेरीलियम, सीसा, आर्सेनिक, केडमियम, ऐस्बेस्टास, बेन्जीपाइरिन, रेडियोएक्टिव पदार्थ मुख्य हैं। एक अनुमान के अनुसार

पिछले 7 दषकों में 6 लाख टन एंटीमनी, दस लाख कोबाल्ट 8 टन निकिल तथा पर्याप्त मात्रा में आर्सेनिक विभिन्न औद्योगिक गतिविधियों के फलस्वयप विश्व भर के वायुमण्डल में समा चुके हैं। इसके अतिरिक्त जीवाष्म ईंधन (थ्वेपस निमस) के दहने से पिछले एक दषक में वायु मण्डल की लगभग 2400000 लाख टन

ऑक्सीजन उपयोग में आई है तथा उसके स्थान पर 3500000 लाख टन कार्बन डाई–ऑक्साइड और वायु में जुड़ी है। भारत में मुम्बई, कलकत्ता और मद्रास में वायु प्रदूशण की समस्या विषेश रूप से चिन्ताजनक है। कोलकोता में व्यस्ततम यात्रा काल के समय वाहनों से निकले धुओं का लगभग 35 पी.पी. एम. तक हो जाता है जो कि न्यूयार्क के 41 पी.पी.एम., लन्दन के 38 पी. पी. एम. तथा रोम के 38 पी.पी.एम. के समकक्ष रखा जा सकता है जबकि हमारे यहां वाहनों की संख्या उतनी अधिक नहीं है, किन्तु दिन–प्रतिदिन मोटर वाहनों की संख्या बढ़ रही है । बम्बई में लगभग 1,50,000 मोटरगाड़ियां हैं जबकि देहली में लगभग 80,000 पेट्रोल चलित तथा 1800 डीजल वाहन हैं। विषेशज्ञों का मत है कि 6 करोड़ भारतीय वायु प्रदूशण की चपेट में हैं। वायु प्रदूशण का प्रभाव ऐतिहासिक इमारतों, पषु–पक्षियों तथा वनस्पतियों पर पड़ रहा है। ताजमहल को उससे केवल 77 किलो – मीटर दूर स्थित मथुरा तेल षोधन षाला से नुकसान पहुंचने की आषंका पर अन्तर्राश्ट्रीय विषेशज्ञों में तीव्र विवाद चल रहा है

वायु प्रदूशण से दमा, श्वसनीषोध (ठतवदबीनजपे), गले का दद्र, निमोनिया आदि रोग होते है। अत्यधिक प्रदूशित वायु में अधिक समय तक रहने से फेफड़े का कैन्सर तक होने की सम्भावना रहती है ज इसके अतिरिक्त वायु में उपस्थित विभिन्न प्रदूशक सीधे या पानी में घुलकर विभिन्न रोगों का कारण बनते हैं, जैसे यकृत तथा वष्क्क (स्पअमत ंदक ापकदमल) को क्षति, आहार नली को क्षति बच्चों में मस्तिश्क विकार तथा हड्डियों का गलना, हृदय रोग, डाइबिटीज, मेलिटस इत्यादि । कार्बन मोनो ऑक्साइड की वायु में उपस्थिति से रक्त में हीमोग्लोबिन की ऑक्सीजन वहन करने की क्षमता में कमी आती है। अधिक समय तक सांस लेने से मष्त्यु तक हो सकती है। वायु प्रदूशण के कुछ सामान्य प्रभाव हैं जैसे आंखों का दुखना, सिरदर्द, जुकाम, खांसी इत्यादि ।

वायु प्रदूशण के षिकार अन्य जन्तु एवं पेड़–पौधे भी होते हैं। प्रदूशित वायु में पौधों की वष्द्धि प्रभावित होती है। ओजोन, कार्बन मोनाऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड तथा फ्लोराइड पेड़–पौधों को अधिक हानि पहुंचाते हैं ।

वायु प्रदूशण को रोकने के लिए कुछ उपाय किये जा सकते हैं जैसे घरों में कुआं रहित ईंधनों के उपयोग को बढ़ावा देना, स्वचलित मोटर वाहन से निकलने वाले धुएं की मात्रा को सीमित करना, उद्योगों को बस्तियों से दूर स्थापित करना, चिमनियों की ऊंचाई अधिक रखना, चिमनियों से निकलने वाले धुएं का उपचार करना इत्यादि ।

षोर हमारा षत्रु –

कोई भी अवांछित ध्वनि, अनचाही आवाज षोर कहलाती है । आज के इस विज्ञान तथा तकनीकी युग में मनुश्य ने अधिकाधिक मषीनों की सहायता ली है । कारखानों की संख्या बढ़ी है । जनसंख्या बढ़ी है, व्यवसाय व यातायात बढ़ा है और हम प्रतिदिन षोर से घिरते जा रहे हैं । कारखानों में प्रयुक्त मषीनों की खट्–खट्, टाइपराइटर, मोटरवाहन, जेट विमान तथा जुलूसों इत्यादि की तेज आवाजें सभी षोर हैं ।

षोर का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि षोर का कारण क्या है और उसकी तीव्रता कितनी है। ध्वनि को मापने की इकाई डेसीबल है। षून्य डेसीबल वह ध्वनि है जिसे एक सामान्य कान द्वारा सुना जा सकता है। 5 डेसीबल की ध्वनि अत्यधिक धीमी होती है। 85 डेसीबल से ऊपर की ध्वनि के प्रभाव में अधिक समय तक रहने पर दुश्प्रभाव दृश्टिगोचर होते हैं । 135 डेसीबल से अधिक ती ध्वनि तो किसी व्यक्ति को सारे सुरक्षा साधनों के बावजूद नहीं सुननी चाहिए । मोटरसाइकिल की ध्वनि 120 डेसीबल होती है। और मोटर हार्न सामान्यतः 110 डेसीबल का षोर करते हैं। षोर के कारण रक्तचाप, श्वसन गति में उतार–चढ़ाव तथा रूधिर संचरण में परिवर्तन होते हैं षोर से षारीरिक तनाव बढ़ता है चक्कर आते हैं, झुंझलाहट और भ्रान्ति / थकान अनुभव होती है।

श्रवण दोश तो सामान्य दुश्प्रभाव है। षोर प्रदूशण का अध्ययन कर जून 1972 से संयुक्त राश्ट्र संघ के मानव वातावरण सम्मेलन में घोशणा की गई थी कि सर्वाधिक खतरनाक प्रदूशण षोर है। बढ़ते षोर को रोकने के लिए कारखानों को षहरी जीवन से दूर स्थापित किया जाना चाहिए। साइलेंसर का उपयोग वाहनों, कारखानों को षहरी जीवन से दूर स्थापित किया जाना चाहिए । कारखानों में कार्यरत मजदूरों को इयर प्लास, इयर मफ्स का उपयोग करना चाहिए । विकसित राश्ट्रों में स्थान–स्थान पर ध्वनि षोशक यंत्र अनावष्यक ध्वनि से बचने के लिए लगाये गये हैं।

निर्धनता और प्रदूशण –

औद्योगिक और कृशि विकास ने अधिकतर प्राकृतिक स्त्रोतों के कुप्रबंध के कारण ही, अनेक पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है जैसे कि जल, वायु और भू–प्रदूशण और इनके फलस्वरूप लोगों के स्वास्थ्य और खुषहाली पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव । इनमें से कुछ समस्याओं का महत्व केवल स्थानीय न होकर कुछ अधिक ही होता है तथा ये स्वयं और ऐसे अन्य कारकों से प्रतिक्रिया के कारण अब यह अंतर्राश्ट्रीय चिन्ता का विशय बन गया है लेकिन अल्प विकास या

अधकचरा विकास भी पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म देता है। आज करोड़ों लोग पर्याप्त भोजन, आश्रय, कपड़ा और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी जीवन की आधारभूत आवष्यकताओं से वंचित है। साथ ही ऐसे करोड़ों हैं जिन्हें आधी–अधूरी षिक्षा तक नहीं मिली है और न ही कोई नियमित रोजगार है । यह स्थिति मानवीय संदर्भों में न केवल असह्य है बल्कि पर्यावरण के लिए भी गम्भीर चुनौती है । जब जीवन की मानवीय आधारभूत आवष्यकताओं की पूर्ति नहीं होती और मानव किसी भी प्रकार से इन आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करता है तो वह जीवन के लिए आवष्यक आधारभूत स्त्रोतों को ही नश्ट करने लगता है जिस पर उसका स्वयं का अस्तित्व निर्भर करता है। वनों का विनाष, कृशि योग्य भूमि का विनाष, रोगों और कुपोशण से उत्पादकता में कमी और गरीबी से पीड़ित जनसमुदाय का नाजुक इकोतंत्रों पर पड़ने वाला दबाव सभी उतने ही घातक हैं जितने कि उद्योगों या विकसित समुदायों में हुई उपभोग में वष्द्धि से होने वाले विभिन्न प्रदूशण

भारत जैसे देष में इकोतंत्रों के स्वास्थ्य को चुनौती तीन स्त्रोतों से मिलती है विकास की कमी से, विकास की प्रक्रिया से और दूसरों के कार्यों से । भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का कथन सही था जब उन्होंने पर्यावरण अपघटन का एकमात्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण गरीबी से होने वाले प्रदूशण को निरूपित किया । हमारी अधिकांष पर्यावरणीय समस्याएं गरीबी में ही निहित है ।

पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास

निर्धनता के कारण प्रदूशण दो प्रकार से होता है – आधार स्त्रोत के अपघटन के कारण और व्यर्थ पदार्थों के उत्पादन से। यह स्पश्ट है कि इन समस्याओं का प्रमुख कारण अत्यधिक जनसंख्या और उसमें तेजी से हो रही वष्द्धि है । प्रत्येक नये मुंह को भोजन चाहिए और प्रत्येक षरीर को वस्त्र और मकान । न्यूनतम रूप मे भी इन्हें पूरा करने का मतलब उत्पादन में तुरन्त वष्द्धि की आवष्यकता है । अन्य गरीब देषों के समान ही भारत में भी बहुत थोड़ी सी कृशि योग्य भूमि बची है जिस पर विस्तार सम्भव हो। इसका फल यह है कि हमें अधिक–से–अधिक कृशि उपज के लिए खादों, कीटनाषकों और अन्य आधुनिक तकनीकों पर निर्भर रहना पड़ता है । ये इकोयंत्रों पर अतिरिक्त दबाव डालती है और पर्याप्त सावधानी के अभाव में मष्दा की गुणवत्ता और इसके पोशण तत्वों के अपघटन का कारण बनती है ।

विकासषील देषों के गरीब परिवारों में अपर्याप्त आय और अपर्याप्त पोशण ही सम्भवतः स्वास्थ्य के निम्न स्तर और समुचित आवासी और रहन–सहन की

सुविधा न मिल पाने का आधारभूत कारण है । वैसे पक्की नालियों का अभाव और पाइपलाइनों और नलों से जलप्रदाय की पर्याप्त सुविधा न होना भी इन बड़ी झुग्गी बस्तियों में टायफाइड, डायरिया, दस्त और मलेरिया आदि बीमारियों के कारण है। भारत में उपलब्ध उपयोगी जल का लगभग 70 प्रतिषत भाग प्रदूशित जल है । एक अन्य अनुमान के अनुसार भारत में होने वाली कुछ बीमारियों का दो तिहाई भाग जलजन्म रोग ही है । इन रोगों के कारण प्रतिवर्श लगभग सात करोड़ बीस लाख कार्य दिवस नश्ट होते हैं। इससे देष की उत्पादकता और स्वास्थ्य दोनों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इन रोगों से होने वाला नुकसान अपर्याप्त आय के कारण भोजन मिलने से और भी बढ़ जाता है। अपर्याप्त आय या निर्धनता गरीब, सघन या अत्यन्त संकुल आवासीय स्थितियों और झुग्गी बस्तियों, झोपड़—पट्टियों का प्रमुख कारण है ।

पष्चिम में जो पर्यावरण समस्याएं मानी जाती हैं जैसे फैक्टरियों, वाहनों द्वारा निश्कासित धुआं, व्यर्थ पदार्थ, घरेलू मल—जल के उपचार की सुविधाओं के अभाव से होने वाला प्रदूशण आदि विकासषील देषों की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं नहीं है हालांकि ये भी यहां बढ़ रही हैं और मानव स्वास्थ्य पर इनका भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जनसंख्या और पर्यावरण

दूसरे विश्वयुद्ध के आसपास अनेक अल्प विकसित देषों में मष्त्यु दर में नाटकीय ढंग से कमी आयी थी । इसका प्रत्यक्ष कारण जनकल्याणकारी स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयात था जिसमें विकसित देषों से नयी दवाओं का आयात प्रमुख था। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण डी. डी. टी. के वष्हद् उपयोग द्वारा मलेरिया पर नियंत्रण था। मानव जाति के इतिहास में इस प्रकार के आयातित मष्त्यु नियंत्रण से जनसंख्या गतिकी में असाधारण परिवर्तन देखा गया। यहां यह भली प्रकार जान लेना आवष्यक है कि इन अल्पविकसित देषों में भी मष्त्युदर में परिवर्तन उन सामाजिक और संस्थानगत परिवर्तनों के परिणामस्वरूप नहीं थे जबकि विकसित देषों में धीमी गति से मष्त्यु दर में आयी कमी का कारण वहां हुए सामाजिक और संस्थानगत परिवर्तन थे। अल्प विकसित देषों में हुए मष्त्यु दर में परिवर्तन बहुत ही तीव्र गति से हुए और इनके कारण बाहर से लिये गये थे।

विकासषील देषों में जनसंख्या वष्द्धि की दर बहुत तीव्र है, लगभग 1.5 प्रतिषत से लेकर 3 प्रतिषत प्रतिवर्श । 1951 से 1981 के तीस वर्शों में भारत की जनसंख्या लगभग दुगनी हो गयी है और एक अनुमान के अनुसार इस सदी के अन्त तक इसमें 10 करोड़ की वष्द्धि हो जायेगी । जनसंख्या सांख्यिकी के अभिलक्षणों का अपने पर्यावरण से बड़ा गहरा संबंध होता है । इसका प्राथमिक प्रभाव यह है कि

किसी दिये गये जनसंख्या स्तर के लिए कुल प्रभाव कुल जनसंख्या के अनुपात में होता है । एक स्थिति जिसमें 100 व्यक्ति किसी विषेश स्तर के प्रदूशण में जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं वह लगभग उस प्रदूशण से दुगना होता हे जिसमें केवल 50 व्यक्ति जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं ।

प्रदूशण, जनसंख्या वर्षद्धि और उसके घनत्व के अनुपात में तेजी से बढ़ता है अधिक जनसंख्या के लिए अधिक उत्पादन की आवष्यकता उद्योगों और कृशि को बढ़ाती है जिससे प्रदूशण बढ़ता है।

अनुपचारित मानव मल – जल के अधिक मात्रा में पानी में मिलने से जल की गुणवत्ता भी विपरीत रूप से प्रभावित होती है। ईंधन और निर्माण सामग्री की आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई होती है। जनसंख्या के अधिक घनत्व से समस्या और गंभीर हो जाती है न केवल इसलिए कि एक छोटे से क्षेत्र में बड़ी मात्रा में व्यर्थ पदार्थ उत्पन्न और निक्षेपित होते हैं बल्कि इसलिए भी कि पर्यावरण की स्वयं को स्वच्छ करने की क्षमता भी टूटती है ।

विकास और पर्यावरण

विकास और पर्यावरण के मुद्दे और उनके परस्पर संबंध आध्यात्मिक महत्व के हैं खासकर भारत के संदर्भ में। पहली प्राथमिकता तो यह है कि सभी लोगों की जीवन की मूलीत आवष्यकताएं पूरी की जा सकें और पर्यावरण और उसकी सम्पदाओं का किसी प्रकार का अवांछित अपघटन न हो सकें । आर्थिक विकास की उच्च ऊर्जा पर आधारित जीवन षैली ने भौतिक समृद्धि को बढ़ाया है । विकासषील देष आज पर्यावरण संकट और विकास के संकट दोनों से घिरे हुए हैं। ये दोनों ही संकट एक दूसरे की तीव्रता और परस्पर प्रतिक्रिया से समस्या को और गहरा बना रहे हैं। एक तरफ तो असमानता, निर्धनता, बेरोजगारी की समस्याओं का कोई अन्तर नहीं दिखाती जिन्हें विकास की प्रक्रिया द्वारा सुलझाना है; दूसरी तरु पर्यावरण का अपघटन बढ़ता ही जा रहा है। रोचक तथ्य है कि जब अधिकांष पर्यावरणीय समस्याएं, विषेशकर वायु और जल के प्रदूशण औद्योगीकृत विश्व के अधिकांष भागों में कम घातक होते जा रहे हैं क्योंकि इन देषों ने प्रदूशण नियंत्रण की उच्च स्तरीय तकनीकों का इस्तेमाल प्रारंभ किया है लेकिन ये समस्याएं विकासषील विश्व में बढ़ती ही जा रही है और अधिकांष स्थानों पर इन्होंने विकराल रूप धारण कर लिया है। यह ध्यान में रखना चाहिए कि विकासषील देष अप्रचलित तकनीकी का आयात करते हैं।

विकासषील देषों की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं साफतौर पर वे है जो आधार स्त्रोतों के गलत उपयोग से उत्पन्न होती हैं जैसे मष्दा, वन और जल स्त्रोतों का

दुरूपयोग । ये समस्याएं इसलिए और बढ़ गयी है क्योंकि आधुनिक उद्योग के लिए कच्चे माल की आपूर्ति का दबाव है । विकासषील देषों का पर्यावरण, अपने स्वयं के उद्योगों के साथ–साथ पष्चिम के उद्योगों के लिए भी कच्चे माल की आपूर्ति करता है ।

पर्यावरणीय दोनह का जो नमूना हम विश्व स्तर पर देखते हैं सीधे–सीधे उसी का प्रतिरूप हमें राश्ट्रीय स्तर पर देखने को मिलता है । पष्चिमी उद्योग जो कुछ विकासषील देषों के पर्यावरण के लिए कर रहे हैं, विकासषील देषों के उद्योग वही कुछ अपने स्वयं के पर्यावरण के लिए कर रहे हैं, विकासषील देषों के उद्योग वही कुछ अपने स्वयं के पर्यावरण के लिए कर रहे हैं। उदाहरण के लिए भारत के उद्योग उत्पादन का करीब आधा भाग जैव भार पर आधारित उद्योगों से प्राप्त करते हैं जैसे सूती कपड़ा, रेऑन, कागज, प्लाइवुड, रबर, साबुन, षकर, तम्बाकू, जूट, चॉकलेट, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ इत्यादि । प्रत्येक ऐसा उद्योग देष के कृ शि और वन क्षेत्रों पर दबाव में असाधारण वृद्धि करता है । इन्हें सफल योगय भूमि की आवष्यकता होती है, इन्हें वनों की आवष्यकता होती है और इन्हें ऊर्जा और सिंचाई की आवष्यकता होती है ।

धारणीय विकास रू

धारणीय विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो वर्तमान में जरूरतों को पूरा करते हुए भी भविष्य की पीढ़ियों की इन आवष्यकताओं की पूर्ति की क्षमता के साथ समझौता नहीं करता हो। इसके अंतर्गत दो केन्द्रीय संकल्पनाएं समाहित होती है।

आवष्यकताओं की संकल्पना, विषेशकर विश्व के गरीबों की आधारभूत आवष्यकताएं, जिसको अतिरिक्त प्राथमिकता दी जानी चाहिये, तथा

तकनीकी तथा सामाजिक व्यवसथा की स्थिति द्वारा पर्यावरण की वर्तमान तथा भविश्य की आवष्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता पर आरोपित परिसीमन की संकल्पना –

पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास 84

दूसरे षब्दों में कह सकते हैं कि श पर्यावरण को विपरीत रूप से प्रभावित न करते तथा लोगों की जरूरत की पूर्ति में सक्षम विकास ही धारणीय विकास है ।श

हुए

इस प्रकार यह जरूरी है कि विकसित तथा विकासषील दोनों ही प्रकार के देषों में आर्थिक तथा सामाजिक विकास के उद्देष्यों को धारणीयता के परिप्रेक्ष्य में

निर्धारित किया जाना चाहिये । यद्यपि इसकी व्याख्याएं भिन्न–भिन्न हो सकती हैं पर उनमें कुछ सामान्य तथ्यों पर सहयोग तथा संधारित विकास के आधारभूत संकल्पनाओं तथा उनको प्राप्त करने के तरीकों पर आम सहमति होना जरूरी होगी ।

विकास के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था तथा समाज का प्रगतिषील रूपान्तरण समाहित होता है । विकास का रास्ता, जो धारणीय हो, भौतिक अर्थों में सैद्धान्तिक रूप में बंधे सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति में भी अपनाया जा सकता है पर भौतिक धारणीयता तब तक प्राप्त नहीं की जा सकती जब तक कि विकास की नीतियों में स्त्रोतों की उपलब्धता तथा कीमत और लाभ के समाज बंटवारे के परिवर्तनों को समुचित ध्यान नहीं दिया जाता । भौतिक संधारण की संकीर्ण से संकीर्ण संकल्पना में पीढ़ियों के बीच सामाजिक बराबरी की भावना निहित रहती है, जो एक ऐसी सम्बद्धता है जिसको प्रत्येक पीढ़ी के अन्दर की समानता तक विस्तारित किया जा सकता है

धारणीय विकास की योजना के आवष्यक तत्व

यह जरूरी है कि विश्व में देष अब अपनी वर्तमान, अक्सर पर्यावरण की दृश्टि से विनाषकारी विकास की प्रक्रिया की जगह संधारित विकास के रास्ते को अपनायें । इस हेतु सभी देषों में नीतियों में परिवर्तन लाने की आवष्यकता होगी, उनके स्वयं के विकास तथा दूसरे देषों के विकास की संभावनाओं पर पड़ने वाले प्रभावों दोनों ही की दृश्टि से ।

धारणीय विकास पर आधारित पर्यावरण तथा विकास की नीतियों में निम्नलिखित आवष्यक उद्देष्य समाहित रहेंगे रू–

- वषद्धि की पुनर्प्राप्ति
- वषद्धि की गुणवत्ता में बदलाव
- नौकरी, भोजन, ऊर्जा, पानी तथा स्वच्छता की मानवीय आवष्यकताओं की पूर्ति
- जनसंख्या के संधारणीय स्तर की सुनिष्चिती
- संपदा के आधार का संरक्षण तथा विस्तार
- तकनीकी की पुनर्भवस्थिति तथा आपदा प्रबंधन, तथा
- निर्णय निर्धारण में पर्यावरण तथा अर्थषास्त्र का संविलयन

अपने वष्हद् अर्थों में संधारणीय विकास की योजना का उद्देष्य मानव जाति में तथा मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य को बढ़ाना है । आधुनिक पर्यावरणीय, अन्तर्राश्ट्रीय तथा राश्ट्रीय राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में संधारणीय विकास हेतु जरूरी है रू–

एक ऐसी राजनैतिक व्यवस्था जो कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में सार्थक जनभागीदारी को सुनिष्चित करती हो ।

• एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था जो कि अधिषेश तथा तकनीकी ज्ञान, आत्मनिर्भर तथा संधारणीय आधार

पर पैदा कर सके ।

• एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जो कि असामजस्यपूर्ण विकास से उत्पन्न तनाव का समाधान प्रदान करती हो

• एक ऐसी उत्पादन व्यवस्था जो कि विकास के पारिस्थितिक आधार को संरक्षित रखने की जिम्मेदारी का सम्मान करती हो ।

• एक ऐसी तकनीकी व्यवस्था जो कि नये समाधानों की तलाष सतत् कर सके

एक ऐसी अन्तर्राश्ट्रीय व्यवस्था जो व्यापार तथा वाणिजय के संधारणीय ढांचे को प्रोत्साहित करती हो ।

एक ऐसी प्रषासनिक व्यवस्था जो कि लचीली तथा स्वतः सुधार की क्षमता रखती हो

उपरोक्त उद्देष्यों को कितनी ईमानदारी के साथ तथा प्रभावषाली ढंग से अपनाया जाता है, इस पर ही धारणीय विकास की योजना की सफलता निर्भर करेगी

उपसंहार

यह स्पश्ट है कि विकासषील देषों को अपनी बढ़ती हुई आबादी की जीवन की आधारभूत आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए विकास करना अत्यन्त आवष्यक हैळ । सभी प्रकार की वैकासिक प्रक्रियाओं को एक आधार स्त्रोत की आवष्यकता होती है और वह एक दिये गये सामाजिक, आर्थिक पर्यावरण की पष्ठभूमि में होता है । विकास की प्रक्रिया पर्यावरण के ढांचे को उसके प्रत्येक क्षेत्र पर लगातार अनुरूप और विपरीत प्रभाव डालकर गहन रूप से परिवर्तित करती है ।

विकसित और विकासषील देषों के बीच एक गम्भीर असन्तुलन सतत् बना हुआ है। इसे सुधारने के लिए यह आवष्यक है कि अहितकारी और हानिकारक आन्तरिक और बाह्य तत्वों द्वारा विकासषील देषों के स्त्रोतों का दोहन करने पर

रोक लगे । विकासषील देषों के समक्ष विकसित देषों के अनुभवों से सबक लेने का अवसर है और वे इसे अपने यहां अपनी आवष्यकताओं के अनुसार अपनी स्त्रोत नियोजन नीति के चुनाव में उपयोग में ला सकते हैं । आज भारत सहित अनेक विकासषील देष आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए नये विकल्प ढूंढने की प्रक्रिया में है । इनमें से कुद विकल्पों में ऐसे विकास पर ध्यान दिया जा रहा है जो पारिस्थितिकीय और स्त्रोत संरक्षण के नियमों पर आधारित हो । विकास

प्रथम उद्देष्य तो आखिर मानव का हित संरक्षण ही है और यही पर्यावरणीय गुणवत्ता के लिए भी आवष्यक है। इस तरह विकास और पर्यावरण ये दोनों ही प्रयोजन एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के सहयोगी हैं और इसका उपयोग पर्यावरण और विकास में एक उपयुक्ततम सामंजस्य बनाने में होना चाहिए। इस योजना का उद्देष्य यथार्थ में सतत् विकास के लिए पर्यावरण का संरक्षण ही है । दूसरे षब्दों में प्राकृतिक सम्पदाओं या स्त्रोतों का अनावष्यक स्खलन या अपघटन किये बिना ही यह पर्यावरण या सम्पदाओं का उपयुक्त प्रबंधन है ।

मष्त्यु पर्यावरण के संबंध में समुचित चिन्तन के बगैर, विचारहीन वैकासिक योजनाएं धीमी गति से की ओर ले जाने जैसी ही हैं । अब समय है कि राह बदलें और मानव जाति को को उसी के द्वारा लाये गये जाति संहार से बचाएं ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. पर्यावरण से क्या तात्पर्य है ?
2. पर्यावरण में मुख्यतः कौन–कौन से घटक आते हैं ?
3. जैव मण्डल का क्या अर्थ है ? संक्षेप में इसके मुख्य घटकों को बतायें
4. पारिस्थितिक या इकोतंत्र से आप क्या समझते हैं ?
5. पारिस्थितिक तंत्र की साम्यावस्था से लेखक का क्या तात्पर्य है ?
6. आदिमानव एवं विकासषील मानव पर्यावरण के संदर्भ में किस प्रकार भिन्न है ?
7. ष्मानव जीवन में प्रगति पर्यावरण में अनेक समस्याएं उत्पन्न करने के मूल्य पर प्राप्त हुई कथन की सत्यता प्रतिपादित करें ।

8. भारत की पद्मवरणीय समस्याएं क्या हैं और वे दूसरे देषों से कैसे भिन्न है ?

9. पर्यावरण प्रदूशण से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख स्त्रोत बतायें ।

10. जल प्रदूशण क्या है ? सामान्यतः यह किन कारणों से होता है ?

11. जल प्रदूशण को रोकने के क्या उपाय है ?

12. पर्यावरण, प्रदूशण तथा धारणीय विकास वायु प्रदूशण को समझायें तथा बताएं कि मनुश्य में यह कौन–कौन से रोगों के लिए उत्तरदायी है ?

13. षोर (ध्वनि प्रदूशण) मनुश्य के स्वास्थ्य को किस तरह हानि पहुंचाता है

14. धारणीय विकास से क्या तात्पर्य है ? इसकी प्रमुख संकल्पनाएं लिखिए

15. धारणीय विकास की योजना के प्रमुख तत्वों के बारे में लिखिए ।

16. धारणीय विकास के उद्देष्यों को संक्षेप में लिखे ।

निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

निर्धनता और

प्रदूशण

जनसंख्या और प्रदूशण

विकास और पर्यावरण

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तर को चुनकर उसके सामने का चिन्ह लगाइए ।

1. जीवों और उनके पर्यावरण की परस्पर क्रियाओं का अध्ययन कहलाता है–

(क) निम्नोलॉजी

(ग) इकॉलॉजी

(ख) बायोलॉजी

(घ) एन्थ्रोपलॉजी

2. (क) जैव मण्डल

पष्थ्वी पर उपस्थित समस्त इकोतंत्र को सम्मिलित रूप से कहते हैं –

(ख) सौर मण्डल

(ग) तारामण्डल

(घ) इनमें से कोई नहीं

3. पारिस्थितिक तंत्र या इकोतंत्र का यह घटक नहीं है –

(क) सूर्य प्रकाष का प्रकाष

(ख) कार्बनिक पदार्थ

(ग) परमाणु ऊर्जा

(घ) जलवायु या मौसम

4. पर्यावरण प्रदूशण का प्रमुख स्त्रोत है.

(क) जंगल

(ख) मानव बस्तियां

(ग) बारिष

(घ) सूर्य का प्रकाष

5. मानव षरीर में जल का हिस्सा है –

(क) एक तिहाई

(ख) एक चौथाई

(ग) आधा भाग

(घ) दो तिहाई

6. भारत में वायु प्रदूशण की चपेट में हैं.

(क) बीस करोड़ लोग

(ग) दस करोड़ लोग

(ख) छरू करोड़ लोग

(घ) दो करोड़ लोग

7. धारणीय विकास की योजना का तत्व नहीं है

(क) वषद्धि की पूर्ण प्राप्ति

(ख) संपदा के आधार पर संरक्षण तथा विस्तार

(ग) आरक्षण की सुविधा

(घ) वषद्धि की गुणवत्ता में बदलाव

8. विकासषील देषों की जनसंख्या वषद्धि है

(क) 1.5 प्रतिषत से 3 प्रतिषत

(ग) 1 प्रतिषत से 2 प्रतिषत

कृ (ख) 1.25 प्रतिषत से 2.75 प्रतिषत

(घ) 1.5 प्रतिषत से 3.5 प्रतिषत

(ख) कार्यालयीन पत्र और आलेख

कार्यालयों में कार्य–प्रणाली की एक निष्चित विधि है । इस विधि में कार्यालयों में होने वाले पत्रों के प्रारूपों अथवा आलेखों की रूपरेखा भी प्रायः निष्चित होती है । प्रारूप का अर्थ है रूपरेखा, मसौदा तथा प्रारूप लेखन का अर्थ होता है रूपरेखा या मसौदा तैयार करना । प्रारूपण के पर्यायवाची रूप में आलेखन षब्द का भी प्रयोग होता है, जो अधिक सार्थक है। प्रारूपण एवं आलेखन षब्दों का प्रयोग अंग्रेजी के ड्राफ्टिंग षब्द के हिन्दी रूपान्तरण के रूप में होता है । अतः प्रारूपण अथवा आलेखन (ड्राफ्टिंग) का सामान्य अर्थ है दृ किसी अधिकृत / अधिकाधिक एवं व्यवस्थित रूप से किये जा रहे कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाशा को निर्विवाद, प्रामाणिक एवं आधिकारिक रूप से प्रयुक्त करना, जिससे कि वह प्रयोजनानुकूल हो, उसकी सभी षर्तों को स्पश्ट रूप से प्रकट करने वाली हो तथा अर्थ की दृश्टि से संदेहरहित एवं सर्वमानय हो । इन प्रक्रियाओं एवं सतर्कताओं से रचित लेख को ष्आलेखष या ष्प्रारूपष कहा जाता है ।

कार्यालयों में किसी संस्था या व्यक्ति को पत्र भेजने के पहले उस पत्र का विशय वस्तु

के साथ आलेख तैयार किया जाता है तथा उसे उच्च अधिकारी द्वारा अनुमोदित करा के पत्र के रूप में भेजा जाता है। यह आलेख पूर्व टिप्पणियों, संबंधित पूर्व पत्रों तथा अधिकारियों के पूर्व आदेषों के आधार पर तैयार किया जाता है। कभी–कभी षासन के महत्वपूर्ण, गोपनीय एवं नीति सम्बन्धी पत्रों के आलेख अधिकारी स्वयं तैयार करते हैं ।

आलेख के लिए लेखन कौषल की पर्याप्त दक्षता अपेक्षित है । इसे निरंतर अभ्यास से भी सीखा जा सकता है। एक अच्छे आलेख में औपचारिकता के साथ तथ्य – परकता, निष्चितता, संक्षिप्तता एवं पूर्णता की आवष्यकता होती है ।

कार्यालयीन पत्रों में कुछ बहुप्रयुक्त पत्र निम्नलिखित है–

परिपत्र

आदेष

अधिसूचना

ज्ञापन

अनुस्मारक

पष्ठांकन परिपत्र

कार्यालयों में सूचनाओं और आदेषों को जिन पत्रों के माध्यम से प्रसारित किया जाता है उन्हें परिपत्र कहा जाता है । परिपत्र सदैव उच्च कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों को भेजा जाता है । एक परिपत्र में एक ही विशय होता है।

उदाहरण —

संख्या 5 / 87.88

प्रधान कार्यालय

राजस्थान राज्य उच्च षिक्षा निदेषालय

जयपुर दृ 282004

दिनांकरू 7.7.87

विशय रू अस्थाई प्रवक्ताओं का स्थाईकरण

राज्य सरकार ने यह निष्चय किया है कि दिनांक 31.12.86 तक जितने भी प्रवक्ता अस्थाई तौर पर राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत थे उन्हें स्थाई कर दिया जाये ।

अतएव सभी महाविद्यालयों के प्राचार्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि दिनांक 31.8.87 तक ऐसे सभी प्रवक्ताओं की सूची संलग्न प्रपत्र में निदेषालय के पास भेज दें ताकि उनके मामलों में उपयुक्त कार्यवाही की जा सके ।

प्रति

सभी महाविद्यालयों के प्राचार्य

निदेषक

आदेष

प्रषासनिक इकाई, निदेषालय

लेखा

कार्यालयों में आदेष एक बहुप्रचलित और महत्वपूर्ण कार्यालयीन पत्र है । जब किसी मंत्रालय, विभाग में एक या अधिक कर्मचारियों को उनसे सम्बन्धित सूचनाएं भेजनी हों तब कार्यालय आदेष का प्रयोग किया जाता है ।

कार्यालय आदेष द्वारा अवकाष स्वीकृत करने, पदोन्नति करने या पदोन्नति रोकने, वेतन–वर्षद्धि रोकने आदि की सूचना दी जाती है।

उदाहरण –

क्रम संख्या 3 / 4 / 76

प्रषासन

भारत सरकार

स्वास्थ्य मंत्रालय

नई दिल्ली,

कार्यालय आदेष

दिनांक 7 फरवरी, 1974

केन्द्रीय सचिवालय सेवा में द्वितीय पदक्रम (प्प्‌ हतंकम) के अधिकारी के रूप में नियुक्त श्री बद्रीप्रसाद की पदवर्षद्धि करके 1 फरवरी, 1974 से इस मंत्रालय में विषेश अधिकारी बना दिया गया है। नए आदेष पर उनकी नियुक्ति विषेश अनुभाग में कर दी गई है।

अवर सचिव, भारत सरकार

सभी मंत्रालयों के अधिकारी तथा अनुभाग ।

प्रतिलिपि

श्री बद्रीप्रसाद,

अनुग, स्वास्थ्य मंत्रालय

अधिसूचना

कार्यालय से सम्बद्ध राजकार्य विशयक सूचनाओं के लिए ष्अधिसूचनाष् पारिभाशिक षब्द है । इसमें नियम, आदेष, आदेषों के लागू होने की तिथियां तथा राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्तियों के कार्यालयीन पत्र और आलेख आदेष, स्थानान्तरण, पदोन्नति और सेवानिवृत्ति के आदेषों की सूचनाएं आदि प्रकाषित की जाती हैं । इन अधिसूचनाओं का प्रकाषन राजपत्र (गजट) में होता है ।

अधिसूचनाओं हमें यह उल्लेख करना आवष्यक होता है कि राजपत्र के किस खण्ड में उन्हें

प्रकाषित किया जाना है ।

उदाहरण

मध्यप्रदेष षासन

राजस्व विभाग अधिसूचना

क्रमांक 3480/1568 / सात / एन – एक

भोपाल, तारीख 22 जून, 1963

भारत सरकार के गष्ह मन्त्रालय की सहमति से राज्य षासन इसके द्वारा आदेष देता है कि मध्यप्रदेष राजपत्र में इस सूचना के प्रकाषित होने की तारीख से भोपाल के समीप स्थित हैवी इलेक्ट्रीकल कारखाने के इलाके में सम्मिलित सम्पूर्ण क्षेत्र का नाम गोविन्दपुरा रहेगा ।

मध्यप्रदेष के राज्यपाल के नाम से तथा

आदेषानुसार

सचिव

मध्यप्रदेष षासन

क्रमांक 3481 / 1568 / सात / एन – एक

भोपाल, तारीख 22 जून, 1963

प्रतिलिपि –.

निम्नलिखित को सूचना तथा आवष्यक कार्रवाई के लिए अग्रेशित –

मध्यप्रदेष षासन के समस्त विभाग,

अध्यक्ष, राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेष, भोपाल

सभी संभागीय आयुक्त, मध्यप्रदेष

सभी विभागाध्यक्ष, मध्यप्रदेष

सभी कलेक्टर, मध्यप्रदेष

रजिस्ट्रार, उच्च न्यायालय, मध्यप्रदेष, जबलपुर

सचिव, लोक सेवा आयोग, मध्यप्रदेष, इन्दौर

सचिव/ सैनिक सचिव, राज्यपाल, मध्यप्रदेष, भोपाल

सचिव, मध्यप्रदेष विधानसभा सचिवालय, भोपाल

निजी सचिव, निजी सहायक, मुख्यमंत्री / मंत्री / उपमंत्री, मध्यप्रदेष, भोपाल

संचालक, सूचना तथा प्रकाषन, मध्यप्रदेष, भोपाल

अधीक्षक, षासकीय मुद्रण तथा लेखन सामग्री, मध्यप्रदेष, भोपाल को मध्यप्रदेष के राजपत्र के आगामी अंक में प्रकाषन के लिए ।

सचिव, भारत सरकार, गष्ह मंत्रालय, नई दिल्ली को उनके पत्र क्रमांक 25/24/62, पता– एक तारीख 10 –4–1963 के संदर्भ में ।

संचालक, दक्षिणी वष्त, भारत सर्वेक्षण, बंगलौर, स्थानीय लिपि में नए नाम का सही

वर्णविन्यास 'गोविन्दपुराष है,

संचालक, उत्तरी वष्तभारत सर्वेक्षण, देहरादून,

अवर सचिव मध्यप्रदेष षासन

(4) ज्ञापन

प्रार्थना–पत्रों अथवा अन्य पत्रों की प्राप्ति सम्बन्धी सूचना भेजने के लिए ज्ञापन दिये जाते

हैं। ऐसे आदेष जो पूरी तरह सरकारी नहीं होते, उनको ज्ञापन के द्वारा ही भेजा जाता है। ज्ञापन में स्वनिर्देष नहीं होता है।

उदाहरण –

कार्यालय ज्ञापन

क्रम संख्याकककक 3/6/68 (मकान)

भारत सरकार

गष्ह मंत्रालय

नई दिल्ली

विशय : मकान देने की सूचना ।

दिनांक, 15 नवंबर, 1976

मुझे यह निर्देष प्राप्त हुआ है कि द्वितीय श्रेणी के पांच मकान करौलबाग क्षेत्र में खाली हो गए हैं, इसलिए जो कर्मचारी इन मकानों में रहने के इच्छुक हो, वे अपनी वरीयता के क्रम से अपने प्रार्थनापत्र 15 दिसंबर, 1976 तक प्रस्तुत कर देवें ताकि उन पर विचार करके मकानों को उन्हें दिया जा सके ।

प्रति रू सभी राजकीय कार्यालय

(हस्ताक्षर) संयुक्त सचिव, गष्ह मंत्रालय

(5) अनुस्मारक

भारत सरकार

स्मरण कराने के लिए भेजे जाने वाले पत्रों को अनुस्मारक कहते हैं । कभी–कभी भूल से या अन्य किसी कारण से अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा उच्च कार्यालय के पत्र पर कार्रवाई नहीं की जाती, तब कार्रवाई के लिए उच्च कार्यालय द्वारा पुनः अधीनस्थ कार्यालय को समरण कराने के लिए पत्र लिखा जाता है। इसे अनुस्मारक कहते हैं। अनुस्मारक का स्वरूप मूल पत्र के स्वरूप के अनुसार ही होता है, अर्थात् यदि मूल पत्र कार्यालय ज्ञापन था तो अनुस्मारक भी कार्यालय ज्ञापन के रूप में ही होगा और यदि मूलपत्र अर्ध सरकार पत्र के रूप में था तो अनुस्मारक अर्धसरकारी पत्र के रूप में होगा, किन्तु कभी–कभी जब पिछले पत्रों के उत्तर नहीं मिल रहे हों या मामले का महत्व बढ़ गया हो तो अनुस्मारक अर्धसरकारी पत्र के रूप में भेजा जाता है ।

उदाहरण —

प्रेशक

बिषन सिंह अवर सचिव

भारत सरकार

क्रम संख्या / 108 / 68 प्रषासन

भारत सरकार वित्त मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 9 मार्च, 1975

सेवा में,

मुख्य सचिव

कार्यालयीन पत्र और आलेख 91

गुजरात सरकार

अहमदाबाद

विशय रू अहमदाबाद में बाढ़ नियंत्रण भवन निर्माण के लिए 3 लाख रूपये की स्वीकृति ।

महोदय,

उपर्युक्त विशय पर इस मंत्रालय के इसी क्रम संख्या तथा दिनांक 12 फरवरी, 1975 के पत्र के प्रसंग में निवेदन है कि अपेक्षित विवरण अभी तक आपके कार्यालय से प्राप्त नहीं हुआ

यह मामला अत्यधिक आवष्यक है, पूर्ण विवरण तत्काल भेजने की कृपा करें ।

पष्ठांकन

पष्ठांकन का उपयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है. 1. जब मूल–पत्र के प्रेशक के पास लौटाया जा रहा हो ।

भवदीय बिषन सिंह

जब मूल–पत्र को यथावत् मंत्रालय या सम्बद्ध कार्यालय को उसकी जानकारी के लिए, विचार जानने के लिये या विचाराधीन मामले का निपटारा करने के लिये भेजा जाता है ।

3. जब किसी पत्र की प्रतिलिपियां प्राप्तकर्ता के अतिरिक्त अन्य कार्यालयों को भी भेजी जानी हों। यहां यह ध्यातव्य है कि राज्य सरकारों के पास प्रतिलिपियां भेजने के लिए पष्ठांकन का प्रयोग नहीं किया जाता है ।

उदाहरण

राजस्थान षासन

सामान्य प्रषासन विभाग – पांच

क्रमांक कृकृकृकृ ./ एक (पांच), जयपुर, तारीख

स्थिति में अधिक से अधिक तारीख

(राज्य सतर्कता आयोग)

को मूल प्रति षीघ्र ही तथा किसी भी तक जांच तथा प्रतिवेदन / निपटाने / आवष्यक कार्रवाई

का प्रतिवेदन भेजन/ उचित कार्रवाई करने के लिए भेजी जा रही है। आवेदन पत्र प्राप्त होने की सूचना दी जा चुकी है और षिकायत करने वाले को, यदि वह चाहे तो, आपसे सम्पर्क स्थापित करने के लिए सूचित कर दिया गया है ।

संलग्न –

आवेदन / समाचार–पत्र की कतरन तारीख

विरूद्ध

क्रमांक

तारीख

विशय रू– पष्ठांकन क्रमांक

सचिव राज्य सतर्कता आयोग,

राजस्थान से के संक्षेप में विशय के लिए ।

एक (पांच) तारीख

संलग्न पत्रों सहित सचिव,

राज्य सतर्कता आयोग, राजस्थान, जयपुर से प्राप्त ।

प्रति.

सचिव,

राज्य सतर्कता आयोग,

राजस्थान, जयपुर

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. कार्यालयीन पत्र किसे कहते हैं ?
2. कार्यालयीन पत्र के स्वरूप को लिखिए हस्तारक्षरकृ पदनाम प्रारूप का क्या अर्थ है ?

3. परिपत्र क्या है ? इसकी विषेशताएं लिखिए ।
4. परिपत्र में किन बातों का उल्लेख किया जाता है, बताइए ।

5.आदेष से आप क्या समझते हैं ? आदेष का एक नमूना देकर बताइए ।

6.कार्यालय–आदेष से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित लिखिए
अधिसूचना से क्या तात्पर्य है ?

7.अधिसूचना का प्रकाषन किसमें होता है और उसके विशय क्या होते हैं ? ज्ञापन किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए द्य

8.अनुस्मारक की परिभाशा लिखते हुए इसकी विषेशताएं लिखिए ।

9.अनुस्मारक कब लिखा जाता है तथा इसका प्रारूप कैसा होता है ?
पष्ठांकन से क्या तात्पर्य है, यह किन स्थितियों में भेजा जाता है ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

अधिसूचना का प्रकाषन

. में होता है । (अखबारों में / गजट में)

नहीं होता । (स्वनिर्देष / आदेष)

ज्ञापन में स्मरण कराने के लिए भेजे जाने वाले पत्र को

कहते हैं। (साधारण पत्र / अनुस्मारक)

4. जब मूल–पत्र, पत्र के प्रेशक के पास लौटाया जा रहा हो तब जाता है। (पष्ठांकन / नोट) का उपयोग किया

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तर को चुनकर उसके सामने का चिन्ह लगाइए ।

प्रारूप का अर्थ है

1. (क) रूपरेखा

(ख) पत्र की षैली

(ग) कार्यालयीन पत्र

(घ) अनुमोदित पत्र

2. एक परिपत्र में कितने विशय होते हैं ?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) पांच

(घ) एक

3. ष्अधिसूचनाष् प्रकाषित होती है –

(क) दैनिक पत्रों में

(ग) राजपत्र (गजटों) में

(ख) साप्ताहिक पत्रों में

(घ) मासिक पत्रिकाओं में

इकाई – 4

जनसंख्या

डॉ. हरिनारायण पटैरिया

वर्तमान में विश्व की जनसंख्या में वषद्धि इतनी अधिक मात्रा में हो रही है कि यह विस्फोटक की सीमा में पहुंच चुकी है। इस अवधि में चिकित्सा की सुविधाओं से मष्तयु दर भी स्पश्ट रूप से घटती हुई दृश्टिगोचर होती है। पूर्व में यद्यपि जन्म दर में उच्चावचन होता था, इसी के अनुरूप मष्त्यु दर भी अधिक होने से जनसमूहों की संरचना का आकार पिरेमिड के प्ररूपिक दिखायी देता था । यद्यपि उन्नसवीं षताब्दी मष्त्यु दर में कमी आयी, है, तथापित आयु का संगठन प्रभावित नहीं हुआ है । यूरोप की इस अवधि की जनगणना से यह स्पश्ट है, परन्तु जनसंख्या वषद्धि के संदर्भ में यह देखा गया है कि प्राकृतिक रूप से इसकी वषद्धि, जिसे ग्लोबल घातांक कहा जाता है, से आयु संगठन अधिक सीमा तक प्रभावित होता है । जब जन्म और मष्त्यु दर का संतुलन धनात्मक होता है तब इससे यह विदित होता है कि पीढ़ी का विस्थापन अवष्यंभावी है । इस विस्थापन की गणना कुल संवर्धन दर के आधार पर निर्धारित हो सकती है, जिसे कोहार्ट विष्लेशण का सत्व कहा जा सकता है। पूर्व में जन्म दर से उच्चावचन होने से और मष्त्यु दर में कमी आने के परिणामस्वरूप आयु का संगठन पिरेमिड के आकार के प्रारूपिक ही था । यह आकार संगठन के संदर्भ में, यूरोप के विभिन्न देषों के भिन्न–भिन्न संजातीय विभेदों में देखा गया है ।

जनसंख्या की वषद्धि की अपनी प्रकृति में विभिन्नताओं के आधार पर भिन्न–भिन्न अवस्थाएं दर्षाती है। इससे संबंधित नियम सर्वनिश्ठ नहीं है । विकासषील देषों की अपेक्षा विकसित देषों में वषद्धि का प्रतिरूप भिन्न प्रकार का होता है इसका यह परिणाम होता है कि विभिन्न देषों में जनसमूह की वषद्धि की क्रियाविधि भी भिन्न होती है। यूरोप के विभिन्न संजातीय विभेदों में, वषद्धि से संबंधित कुछ निष्चित अवस्थायें निर्धारित की गयी हैं जिन्हें सामूहिक रूप से जनसमूह घटना चक्र कहते हैं । इनके विशय में यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक अवस्था में यहां के जनसमूहों में जननषक्ति और मष्त्यु – दर उच्च कोटि की होती है। वषद्धि की गति उसके परिणामस्वरूप धीमी होने लगती है। इसके उपरान्त दूसरी अवस्था में, जो कि वषद्धि से संबंधित प्रसार की प्राथमिक अवस्था, है, जननषक्ति उच्च और मष्त्यु दर में ह्रास उत्पन्न हो जाता है। इससे आगे की स्थिति में जनसमूह वषद्धि के दोनों कारकों अर्थात् जनन–क्षमता और

मष्त्यु–दर में ह्रास होने से वषद्धि की गति तीव्र हो जाती है। आगे चलकर यह भी देखा गया है कि इन दोनों में कमी होने से जनसमूह वषद्धि में स्थायित्व आ जाता है, इसके उपरान्त जनषक्ति में मष्त्यु – दर की अपेक्षा अत्यधिक कमी के फलस्वरूप वषद्धि में ह्रास उत्पन्न हो जाता है।

अमेरिकी जनसमूहों की वषद्धि को भी इसमें विभिन्नताओं की क्रियाविधि के आधार पर कई प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। इसका निर्धारण मष्त्यु – दर तथ जननषक्ति के आधार पर नहीं हो सकता । इसे ज्ञात करने के लिए इन अवस्थाओं का प्रतिस्थापन प्रकारीकरण द्वारा 1950 में हुआ, जो कि सार्वभौतिक आधार पर विकासषील और विकसित देषों में लागू किया जा सकता है। इसके अनुसार विकासषील देषों में जन्म तथा मष्त्यु दर सर्वनिश्ठ रूप से अधिक मात्रा में होती है। इसके उदाहरण अफ्रीका के विभिन्न जनसमूहों में देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत दक्षिण पूर्वी एषिया में जन्म दर अधिक रहती है, किन्तु इसकी अपेक्षा मष्त्यु दर में कमी स्पश्ट रूप से दृश्टिगोचर होती है । श्रीलंका, मलेषिया, चिली और क्यूबा में विद्यमान विभिन्न संजातीय विभेदों में वषद्धि की क्रियाविधि की प्रकृति से यह विदित होता है कि इन देषों में जन्म दर में ह्रास तथा मष्त्यु दर में कमी रहती है । जापान और यूरोप के कुछ देषों एवं उत्तरी अमेरिका में जन्म तथा मष्त्युदृदर निम्नकोटिकृत हो जाती है

जनसंख्या

अधिकतर जनांकिकी विषेशज्ञों के मतानुसार आधुनिक चिकित्सा तथा जनस्वास्थ्य के प्रसार से मष्त्यु–दर में कमी आ चुकी है। इसके विपरीत अन्य अवधारणाओं के अनुसार इस हेतु आर्थिक स्थिति ही उत्तरदायी है, परन्तु वास्तविक आधार पर आर्थिक स्थिति का मष्त्यु – दर में कमी अथवा वषद्धि से कोई परस्पर संबंध नहीं है। विकासषील देषों में, जहां आर्थिक उन्नति के सुअवसर कम हैं, जनसंख्या वषद्धि इसके विपरीत अधिक होती है। इस आधार पर यह विदित होता है कि जनसमूहों की अतिवषद्धि से आर्थिक विकास गतिषील नहीं हो पाता ।

जनसंख्या वषद्धि से संबंधित अनुभाविक आंकड़ों का अभिलेख उन्नीसवीं षताब्दी के प्रारंभ में यूरोप के कई देषों में पंजीयन प्रणाली के आधार पर होने लगा था। इसके उपरान्त सम्पूर्ण यूरोप में इस प्रकार की गतिविधि प्रारंभ होने से यहां के जनसमूह में इस दर का परिकलन 10 प्रतिषत हजार व्यक्ति दर्षाता है। इस दर में कमी तथा जन्म दर में वषद्धि होने से इस महाद्वीप में 1750 ये 1900 तक जनसंख्या की लगभग चौगुनी वषद्धि हो चुकी थी । सम्पूर्ण विश्व के जनसमूह का

परिमाण 1950 से 250.9 करोड़ और 1960 में बढ़कर तीन अरब एक करोड़ 93 लाख 76 हजार तक हो गया था । इस काल में संक्रामक व्याधियों, मलेरिया आदि पर नियंत्रण तथा औद्योगीकरण या असाधारण प्रसार होने से विश्व के मानव समूह की आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ था, जिससे मष्त्यु दर में कमी आने से जनसंख्या वष्द्धि की ओर उन्मुख हो रही थी। इसके अनुसार 1970 में विश्व की जनसंख्या तीन अरब उनहत्तर करोड़ उन्यासी लाख अठारह हजार हो गई थी जो 1980 में बढ़कर चार अरब पैंतालीस करोड़ दो लाख दस हजार की सीमा पार करने में सफलता प्राप्त कर चुकी थी ।

संयुक्त राश्ट्र संघ की 1988 की प्रकाषित पत्रिका से यह विदित होता है कि विकासषील महाद्वीप उदाहरणस्वरूप एषिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में, वर्तमान जनंसख्या वष्द्धि की ओर उन्मुख है । सम्पूर्ण अफ्रीका की जनसंख्या में 1960 की अवधि में क्रमिक वष्द्धि हुई और 1990 में यह 647518000 तक पहुंच गयी। लगभग यही प्रवष्त्ति लैटिन अमेरिका के जनसमूह में दिखायी देती है, क्योंकि यहां की जनसंख्या 1990 में 448096000 निर्धारित हो सकी थी। यही तथ्य एषिया के जनसमूह में भी परिलक्षित होता है। यहां की जनसंख्या में अधिकतम वष्द्धि 1960 से होती हुई दिखायी देती है जो 1990 में 3108478000 तक पहुंच गयी थी ।

औद्योगिक और विकासषील देषों की जनसंख्या वष्द्धि की तुलना से यह विदित होता है कि औद्योगिक देषों में विकासषील देषों की अपेक्षा 1900 तक वष्द्धि अधिक हो रही थी, किन्तु 1920 के उपरानत इसमें विपरीत स्थिति देखी गयी थी । उदाहरणस्वरूप उत्तर पष्चिम यूरोप में डच, आइसलैण्ड, नीदरलैण्ड और आयरलैण्ड के निवासियों की अपरिश्कृत जन्म दर 1965 में 20 से अधिक थी, जिसमें 1975 मेंर भी अधिक वष्द्धि होने से 23.7 तक हो चुकी थी, परन्तु 1990 में यह कम होकर मात्र 12 प्रति हजार रह गई । पूर्वी यूरोप की 1965 के सन्दर्भ में जन्म दर 17 के लगभग थी जो 1970–75 की अवधि में 16.8 हुई । इसमें पुनः वष्द्धि की ओर उच्चावचन होने से 1975–80 में 17.6 हुई, तदुपरान्त इसमें कमी 14.00 तक 1985 से 90 तक परिकलित की गई थी । दक्षिण यूरोप में 1975–1980 तक जन्म दर अधिक थी । इसका कारण यहां पर प्रचलित धार्मिक परम्पराएं कम्युनिस्टों की प्रारूपिक आर्थिक व्यवस्था तथा संक्रमण की स्थिति के कारण यह दर प्रभावित हुई थी, किन्तु अन्य कालानुक्रमों में इस दर में कमी देखी जा सकती है । इन भू–भागों की 1990 की जनंसख्या अन्य वर्शों की अपेक्षा अधिकतम थी,

पूर्वी यूरोप में 11,35,73,000, दक्षिण यूरोप में 14,45,35,000 तथा पष्चिम यूरोप में इस अवधि में 15,58,39,000 जनसंख्या थी ।

उत्तरी अमेरिका के जनसमूह की 1970—75 के काल में जन्म दिर 15.7 थी, जो कि आगामी वर्शों में कम होती गई थी और अन्त में इसका सबसे कम परिणाम 1985 से 1990 की अवधि में निर्धारित हुआ था। इस दर में संक्रमण अवस्था की अंत्यावस्था के कारण कमी आई थी, इसके विपरीत जनसंख्या में वष्द्धि 1960 से 1970 तक उत्तरोत्तर क्रम में हो रही थी । इसका प्रमुख कारण यहां पर प्रवासित सदस्यों का आगमन है ।

दक्षिणी अमेरिका में जनसंख्या वष्द्धि के निरीक्षण से यह विदित होता है कि इसके विभिन्न देषों में औसतन जन्म दर 1970 से 1990 तक 15 प्रति हजार से अधिक नहीं थी, इसके विपरीत मष्त्यु दर मात्र 9.8 ही थी। इसी कारण जनसंख्या वष्द्धि की दर अधिक निर्धारित की जा सकती है। इस भू—भाग में अधिक जन्म दर के देष— फ्रेंच ग्वायना, इक्वेडोर तथा पेरू आदि हैं, जहां कि औसतन जन्म दिर 3.5 थी। इससे विपरीत स्थिति चिली में पायी गयी थी। यहां पर अपरिश्कृत जन्म दर 1990 में सबसे कम थी । सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका की जनसंख्या का परिणाम 1990 तक 29,67,87,000 था जो कि बीते दषक की अपेक्षा अधिक कहा जा सकता है। इसी क्षेत्र में मध्य अमेरिका की ओर दृश्टिपात करने से यहां पर विभिन्न समय में जन्म तथा मष्त्यु दर में उच्चावचन स्पश्ट रूप से दृश्टिगोचर होता है। अपरिश्कृत मष्त्यु दर, विभिन्न अवधियों के सन्दर्भ में परिकलित की गयी थी जो इन्हीं अवधियों की अपरिश्कृत जन्म दर की अपेक्षा बहुत ही कम है। इससे यह अर्थ निरूपित हो सकता है कि यहां पर जनसंख्या वष्द्धि अमेरिका के अन्य भागों की अपेक्षा तीव्र गति से हो रही है। यहां 1960 में केवल 5,04,56,000 ही जनसंख्या थी, 1975 में यह बढ़कर 8,17,67,000 हो गयी एक दषक उपरान्त इसमें वष्द्धि होकर 10,67, 46,000 हो गयी और पुनः अर्द्धषतक उपरान्त 11,76,00,000 परिमाण दर्षाती थी ।

एषिया महाद्वीप को सर्वाधिक जनसंख्या के भू—भाग के विष्लेशण से संजोया गया है, क्योंकि यहां पर सम्पूर्ण विश्व की तुलना में अधिकतम जनसंख्या के देष निहित हैं । सम्पूर्ण एषिया की जनसंख्या वष्द्धि दर की ओर यदि दृश्टिपात किया जाए तब यह विदित होता है कि यहां पर अपरिश्कृत जन्म दर कई अमेरिकी देषों से कम तथा अन्यों के समतुल्य भी है, किन्तु विविध अर्धदषकों में जन्म दर का परिणाम मष्त्यु दर से अधिक होने के कारण यहां पर जनसंख्या विस्फोट की

संभावना है । ये जैविक आंकड़े इस प्रकार की संघटना के घटने में बाधक हैं। एषिया महाद्वीप की जनसंख्या 1960 में 1668010000 थी, जो एक दषक उपरान्त लगभग दोगुनी होकर 2,10,11,02,000 तक पहुंच चुकी थी और 1980 में 2,58,28,36,000 इसके पष्चात् 1990 में इसमें और भी अधिक वषद्धि होने से यह 3, 10, 84, 78, 000 के समीप पहुंच चुकी है। इस विशय में और भी तथ्य अर्जित करने के लिए इसके विभिन्न भू–भागों के जैविक आंकड़ों की ओर ध्यान आकृश्ट करना आवष्यक है ।

पूर्वी एषिया के अन्तर्गत विश्व की लगभग 1/4 जनसंख्या निहित है। यहां के प्रदेषों के जनसमूहों की जन्म दर 1970–75 में 29.4 प्रति हजार थी जो 1985–90 में घटकर 19.7 प्रति हजार ही रह गयी थी। इसके विपरीत दक्षिण पूर्वी एषिया के विभिन्न जनसमूहों में इन्हीं अवधियों में 30 से उपर ही जन्म दर पायी जाती है, जिससे यह प्रतीत होता है कि इनकी जननषक्ति दर पर रोकथाम के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया था। जापान की अपरिश्कृत जन्म दर 1975 से 16.5 थी । यह क्षेत्र तीव्र जनांकिकी अनुकलन का उदाहरण प्रस्तुत करता है । इससे विपरीत परिस्थितियां चीन में देखी जा सकती हैं। यहां पर भी इसी काल की जन्म दर बहुत अधिक 35 प्रति हजार से भी अधिक थी । ताईवान और हांगकांग चीन से सर्वथा भिन्न स्थिति दर्षाते हैं । इन देषों के जनसमूहों की औसतन अपरिश्कृत जन्म दर लगभग 30 से 35 की सीमा में विभिन्नताएं व्यक्त करती हैं । इन्हीं देषों की मष्त्यु दर के परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि हांगकांग में मष्त्यु दर 1975 में 5.0 थी जो कि जापान से कम थी और यह चीन से (70) प्रति हजार से भी अधिक नहीं थी । पूर्वी एषिया की जनसंख्या 1960 में 55856000 थी जिसमें 1970 में वषद्धि होने से 73670000 और 1980 में 98244000 तथा 1990 में 133401800 हो चुकी थी। यह अधिक जनसंख्या वषद्धि भी उच्च जननषक्ति की द्योतक है ।

दक्षिण पूर्वी एषिया में पूर्वी एषिया से विपरीत पर्यावर्णिक परिस्थितियां पायी जाती हैं। यहां के जन समूहों को पर्याप्त मात्रा में पोशण पदार्थ उपलब्ध रहता है। जिससे जन्म दर प्रत्यक्ष आधार पर सहबंधित है, किन्तु इसका परिणाम कम था। यह 1985–90 में 19.2 प्रति हजार था इसलिए यह पूर्वी एषिया से अधिक था । इस भू–भाग में अनेक देष सम्मिलित हैं, जिनमें प्रमुख फिलीपीन, बर्मा, कम्बोडिया और उत्तरी बोर्नियो आदि हैं। इन देषों जनांकिकी से संबंधित आंकड़े अप्राप्य ही हैं, अतएव जनसंख्या इनका अध्ययन असंभव ही है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र की

जनसंख्या 1970 में 289709000 और 1980 में 360063000 तक वषद्धि दर्षाती हुई 1990 में 440831000 तक पहुंच चुकी थी ।

पष्चिमी एषिया में भी दक्षिण एषिया के समान विभिन्न अवधियों में जन्म और मष्त्यु दर निर्धारित करने का प्रयास हो चुका है । यद्यपि यह दक्षिण एषिया की अपेक्षा कम है, तथापि विश्व के अन्य देषों की तुलना में अधिक परिमाण दर्षाती है।

यहां पर 1985दृ90 में जन्म दर 35.5 तथा इसी अवधि की मष्त्यु दर 8.4 प्रति हजार परिकलित की गयी थी, जिससे स्पश्ट है कि यह भूदृभाग सघन जनसंख्या से आच्छादित है। यहां की जनसंख्या 1980 में 98244000 तथा 1990 में 130769000 हो गयी थी ।

उत्तरी अफ्रीका के विभिन्न देषों की औसतन जन्म दर विश्व के अन्य भागों से अधिकतम परिकलित की गयी हे, जो 1985—90 की अवधि में 38 प्रति हजार थी । इसके विपरीत इसी अवधि में अपरिश्कृत मष्त्यु दर बहुत ही कम अर्थात् 10.7 के लगभग थी, जिससे यह विदित होता हैह कि जनसंख्या अधिकतम वषद्धि की ओर उन्मुख हो रही थी जिसका आकलन 1990 में 142649000 किया गया था इसी से लगभग मिलती—जुलती अवस्था दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न देषों में पायी गयी थी । यहां 1990 की औसत जन्म तथा मष्त्यु दर क्रमषः 33.4 तथा 10.7 थी । जनसंख्या यद्यपि उत्तरी अफ्रीका की अपेक्षा कम ही थी, जिसका आंकड़ा 40972000 था। पष्चिमी अफ्रीका के सम्बन्ध में में यहां के देषों के जनसमूहों से संबंधित जैविक आंकड़ों के निरीक्षण से यह विदित होता है कि ये भी उत्तर तथा दक्षिण अफ्रीका के ही प्रारूपिक स्थिति दर्षाते हैं। यहां भी विभिन्न अवधियों में जन्म दर मष्त्यु दर से अधिक आंकी गयी है जिससे जनसंख्या वषद्धि स्वाभाविक संघटना के अंतर्गत निहित है, जिससे 1990 की जनसंख्या 199511000 हो चुकी थी ।

लैटिन अमेरिकी देषों में विभिन्न देषों की औसतन जन्म दर यद्यपि अफ्रीकी देषों की अपेक्षा कम ही थी, जो कि सन् 1975 में अधिकतम 35.3 प्रति हजार तथा सन् 1990 के निम्नतम 29.1 थी। इसके विपरीत अफ्रीकी देषों की तुलना में मष्त्यु दर में कमी होने से जनसंख्या वषद्धि इनसे अधिक ही थी, जिसके परिणामस्वरूप 1990 में यहां की कुल जनसंख्या 448096000 थी ।

इसके विपरीत यूरोप की जनसंख्या का वषद्धि क्षेत्र में कोई विषेश योगदान नहीं है, क्योंकि यहां पर जन्म और मष्त्यु दर में विषेश अन्तर दृश्टिगोचर नहीं होता। 1985 और 1990 के मध्य यहां की जन्म दर 13.0 प्रति हजार और इसी अवधि की

मष्त्यु दर 10.7 परिकलित की गयी थी । ये दरें जनसंख्या वषद्धि हेतु अनुकूल नहीं है। यहां की जनसंख्या वषद्धि की प्रकृति के अध्ययन से यह निरूपित होता है कि इसकी गति इस क्षेत्र में मंद थी, जो कि विभिन्न अवधियों की जनसंख्या से स्पश्ट ही है। 1970 में यह 460132000 थी, 1980 में इसमें थोड़ी ही वषद्धि हुई और यह 484436000 हो गयी । यह 1990 में भी धीमी गति से वषद्धि करती हुई मात्र 497741000 तक ही पहुंची।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण यूरोप की वार्शिक वषद्धि दर विश्व के विभिन्न देषों की तुलना में सबसे कम है, जिससे यहां की जनसंख्या मंद गति से बढ़ रही है। इस विशय में यह दावे के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यहां के जनसमूह को वषद्धि हेतु प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यहां पर जन्म की तीव्रता कम होने से तथा मष्त्यु दर में भी उच्चावचन के परिणामस्वरूप यह वषद्धि प्रभावित हुई है। सम्पूर्ण यूरोप की प्राकृतिक वषद्धि दर 1990 में मात्र 2.3 प्रति हजार थी, लगभग यही वषद्धि दर पूर्वी, दक्षिणी तथा पष्चिमी यूरोप के जनसमूहों में भी इन्हीं अवधियों में पायी गयी थी । इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहां पर जनांकिी अनुकूलन की संघटना घटित नहीं हो सकती है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पश्ट है कि विश्व के किसी भी जनसमूह को जनांकिी की संक्रमण स्थिति सहे होकर गुजरना आवष्यक है । इस प्रक्रिया में मष्त्यु दर में कमी कई कारकों, उदाहरणस्वरूप संक्रामक व्याधियों तथा अकाल आदि पर नियंत्रण नहीं होने से आ जाती है। इसके साथ जननषक्ति पर जनसंख्या की अधिक वषद्धि के रोकथाम हेतु नियंत्रण किया जाता है । संक्रमण की स्थिति के प्रारंभ होने के पूर्व जन्म दर उच्च होती है, जो उच्च मष्त्यु दर द्वारा संतुलित होती रहती है। इससे जनसंख्या वषद्धि में स्थायित्व रहता है अथवा उसकी वषद्धि की गति मंद हो जाती है किन्तु आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्ध होने से मष्त्यु दर में कमी के कारण जनसंख्या वषद्धि की गति तीव्र हो जाती है। इस कारण इसे संक्रमण की दो अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ता है। प्रथम को पूर्व संक्रमण की अवस्था कहते हैं, जिसमें जन्म अथवा मष्त्यु दर कम होने के परिणामस्वरूप जन्म दर में वषद्धि होना स्वाभाविक ही हो जाता है। इस प्रकार की गतिविधि को जनांकिी संक्रमण अवस्था कहते हैं ।

इस क्षेत्र में अधिक प्रमाण हेतू यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों के जैविक आंकड़ों को समाहित किया गया है । पूर्वी यूरोप के विभिन्न समूहों की औसतन जन्म दर 14. 6 थी। इसके विपरीत इसी अवधि की मष्त्यु दर का परिमाण मात्र 11.3 प्रति हजार

तक ही सीमित था । इन दोनों जनांकिकी परिवर्तियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या वषद्धि में इनका योगदान अधिक नहीं था, जिससे इसकी गति तीव्र होने के विपरीत मंद ही थी । यह स्थिति विभिन्न दषकों की जनसंख्या से स्पश्ट हो सकती है। 1970 में इसका परिमाण 103128000, 1980 में 109397000 और 1990 के दषक में 113573000 पर पहुंच गया है ।

दक्षिण यूरोप की जनसंख्या के विष्लेशण से यह बोध होता है कि 1985–90 की जन्म दर मात्र 12.1 तथा मष्त्यु दर 11.0 प्रति हजार थी। इससे यह विदित होता है कि यहां की जनसंख्या वषद्धि की दर पूर्वी यूरोप की अपेक्षा बहुत ही कम थी, जिसका निर्धारण विभिन्न दषकों में समाहित जनसंख्या के आधार पर हो सकता है। 1970 में यहां की जनसंख्या 138339000 ही थी और 1980 में यह 138806000 हुई थी तथा 1990 के दषक में 144535000 ही हो पायी है।

पष्चिमी यूरोप के भी जन्म और मष्त्यु संबंधी आंकड़े कोई विषेश अन्तर नहीं दर्षाते । ये भी मंद जनसंख्या के ही द्योतक हैं। यहां की जनसंख्या 1970 में 148209000 थी, इसके परिमाण में मंद गति से वषद्धि होकर यह 1980 में 153754000 हुई तथा 1990 में 155839000 तक पहुंच गयी।

इसके विपरीत ओसेनिया के जनसमूहों में जन्म तथा मष्त्यु दर में विषेश अन्तर देखा गया है। 1985दृ90 में जन्म दर 20.6 तथा मष्त्यु दर 8.0 प्रति हजार थी । इससे यह विदित होता है कि यहां की जनसंख्या में तीव्र गति से वषद्धि हो रही थी । यह 1970 में 19329000, 1980 में 22794000 तथा 1990 26476000 तक पहुंच गयी ।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में भी लगभग यूरोप के ही समान मंद जनसंख्या वषद्धि आंकी गयी हे, कयोंकि जन्म और मष्त्यु के आंकड़ों में अधिक उच्चावचन नहीं पाया जाता । विभिन्न दषकों की जनसंख्या से यही ज्ञात होता है कि जनसंख्या वषद्धि मंदर से मध्य गति की ओर अग्रसर होती है। यह 1970 से 15371000 थी, 1980 में 17808000 हुई और 1990 में 20124000 हो गयी थी ।

इसके विपरीत परिणाम माइक्रोनेषिया के जनसमूह दर्षाते थे जहां कि विभिन्न कालानुक्रम में अपरिश्कृत जन्म तथा मष्त्यु दर में अंतर दिखायी देता था । जन्म दर, मष्त्यु दर की अपेक्षा अधिक थी, जिससे जनसंख्या वषद्धि में तीव्रता अवष्यम्भावी ही है। यह 1960 में 194000 और 1990 में लगभग दोगुनी होकर 379000 तक पहुंच गयी । यही स्थिति पालीनेषिया के जनसमूह में दिखायी देती है। यहां जनसंख्या वषद्धि तीव्र गति से हो रही है ।

सोवियत यूनियन में जनसंख्या वष्द्धि की गति मध्यम निर्धारित की जा सकती है, क्योंकि 1985दृ90 की जन्म दर 18.4 और मष्त्यु दर 10.6 ही थी। 1970 के दषक में यहां की जनसंख्या 242959000 थी जो 1980 में 265546000 तथा 1990 की अवधि में 287991000 तक पहुंच गयी है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पश्ट ही है कि सम्पूर्ण रूप से समस्त विश्व की जनसंख्या वष्द्धि की गति अति तीव्रतम नहीं है । वह जनसंख्या विस्फोटन की ओर अग्रसर नहीं हो रही, क्योंकि जन्म दर से मष्त्यु दर भी सहबंधित है, चूंकि इन्हीं दरों की प्रक्रियाओं से जनसमूहों का नवीनीकरण संभाव्य है । इसी जनसंख्या के परिणामस्वरूप नवीन पीढ़ी की उत्पत्ति होती है, जिस आधार पर यह निरूपित हो सकता है कि पुरानी पीढ़ी नवीन द्वारा विस्थापित होने में असमर्थ हो जाती है, जिसे जनसमूहों की प्राकृतिक वष्द्धि कहा जाता है।

युद्ध की विभीशिका, संक्रामक व्याधियों के प्रकोप तथा अकाल आदि से भी प्राकृतिक वष्द्धि प्रभावित होती देखी गयी है । इसकी गणना करने से यह विदित होता है कि इन विपत्तियों से किसी भी देष के सम्पूर्ण जनसमूह में 1 प्रतिषत ह्रास ही निर्धारित हो सका है। जब प्राकृतिक वष्द्धि दर, प्रत्येक हजार में 5 से 10 की सीमा तक रहती है, तब इस परिस्थिति में जनसंख्या एक षताब्दी में दुगुनी हो जाती है और जब यह वष्द्धि .4 से 5 का संख्यात्मक मान दर्षाती है तब लगभग दो षताब्दियों में किसी भी देष की जनसंख्या द्विगुणित हो पाती है । यह दर प्रतिकूल परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होती है, जो जन्म और मष्त्यु के संतुलन को असंतुलित कर देती है। इसके विपरीत जब, जन्म दर में कमी आने के पूर्व, मष्त्यु दर में भी कमी होने से यह वष्द्धि पूर्व की अपेक्षा सांख्यिकी आधार पर सार्थक अन्तर दर्षाने में सक्षम रहती है। इसकी तुलना पष्चिमी एषिया के विभिन्न देषों से करने पर यह विदित होता है कि यह 1985 और 1990 की अवधि में 27.0 प्रति हजार थी, जो एषिया महाद्वीप के समस्त भू—भागों की अपेक्षा अधिकतम थी । इसके उपरांत पूर्वी तथा दक्षिण — पूर्वी एषिया इस आधार पर कम प्राकृतिक वष्द्धि दर्षाते हैं । यह इसी कालानुक्रम में क्रमषः 13.0 और 19.2 ही थी । इससे यह प्रतीत होता है कि यहां के जनसमूहों की मष्त्यु—दर में कमी आ चुकी थी । जापान की प्राकृतिक वष्द्धि दर 1975 में 12.5 प्रति हजार थी । यह इस क्षेत्र में जनांकिी अनुकूलन का उदाहरण प्रस्तुत करती है। इससे विपरीत स्थिति चीन में देखी जा सकती है। यहां के जनसमूहों की यह वष्द्धि 1962 में 34 प्रति हजार थी, जो दक्षिण अफ्रीका की 1985—90 की अवधि से समानता दर्षाती है, जिसका परिमाण 32.4 था। चीन के समीपस्थ देषों जैसे ताईवान और हांगकांग में 1965 में क्रमषः 22.3 और 20.0 प्रति हजार प्राकृतिक वष्द्धि पायी गयी थी । यह वष्द्धि

चीन से बहुत कम थी । इससे यह विदित होता है कि इन देषों में जनसंख्या की वष्द्धि अधिक नहीं थी । उत्तरी अफ्रीका में प्राकृतिक वष्द्धि दर 1985–90 में 27.3 प्रति हजार थी, यह पष्चिम अफ्रीका से कम तथा दक्षिणी अफ्रीका (22.7) से अधिक थी । तद्नुसार यह कहा जा सकता है कि उत्तरी अफ्रीका में इस वष्द्धि हेतु अन्य भू–भागों की अपेक्षा अनुकूल परिस्थितियां पायी जाती हैं ।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में 1985–90 में प्राकृतिक वष्द्धि दर 7.7 ही थी । यह अमेरिकन देषों की अपेक्षा तुलनात्मक आधार पर कम ही थी, जिससे यह विदित होता है कि मष्त्यु तथा जन्म दर में अनुकूलन के आधार पर सामंजस्य था ।

अमेरिका के विभिन्न देषों में सबसे अधिक प्राकृतिक वष्द्धि दक्षिण अमेरिका में 24.8 प्रति हजार की सीमा में गणना की गयी थी । इसके पष्चात् उत्तर अमेरिका में इसी अवधि अर्थात् 1985–90 में 20.9 तथा मध्य अमेरिका में सबसे कम केवल 16.9 थी ।

उत्तरी अमेरिका के विशय में प्राकृतिक वष्द्धि के अध्ययन से यह निरूपित हो सकता है कि यह 1965 की अवधि में यहां के विभिन्न देषों में विभिन्नताएं दर्षाती थी जो कि यूनाइटेड स्टेट्स में 10.0 ही थी। यह अन्य देषों के परिप्रेक्ष्य में अधिक परिमाण दर्षाती है। उदाहरणस्वरूप ग्वाटेमाला में यह 26.7, जमैका में 33.5, मैक्सिको में 35.8 तथा सबसे अधिक साल्वाडोर में 36.0 है। यहां यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि प्रवासी सदस्यों का भी इस वष्द्धि में योगदान अधिक था। यहां की जनसंख्या संक्रमण अवस्था की अंत्यावस्था की ओर अग्रसर हो चुकी थी । इस कारण इसमें कमी आना स्वाभाविक ही था, परन्तु इसके विपरीत स्थिति दिखायी देती है, जिसका मुख्य कारण प्रवासित सदस्यों का इस क्षेत्र में इसकी वष्द्धि हेतु योगदान हो सकता है ।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पश्ट होता है कि विश्व के किसी भी जनसमूह के लिए जनांकिकी की संक्रमण स्थिति से होकर गुजरना आवष्यक ही है। इस प्रक्रिया में मष्त्यु दर में कमी, कई कारकों जैसे संक्रामक व्याधियों तथा अकाल आदि पर नियंत्रण होने से आ जाती है। इसके साथ ही जनसंख्या की अति वष्द्धि की रोकथाम हेतु जननषक्ति को भी नियंत्रित करना आवष्यक माना गया है । संक्रमण की स्थिति के प्रारंभ होने के पूर्व जन्म दर उच्च होती है, जो उच्च मष्त्यु दर द्वारा संतुलित होती रहती है, जिससे जनसंख्या वष्द्धि में स्थायित्व आ जाता है अथवा उसकी वष्द्धि की गति मंद हो जाती है किंतु वास्तविक आधार पर इस प्रकार की स्थिति निर्मित नहीं होती क्योंकि इसमें व्यवधान उत्पन्न करने हेतु अनेक कारक उत्तरदायी है ।

भारत में जनसंख्या की वषद्धि

सघन जनसंख्या का देष होने के कारण भारत की सम्पूर्ण विश्व के संदर्भ में स्थिति द्वितीय स्थान पर है। चीन इस क्षेत्र में भारत से भी आगे है, जहां की जनसंख्या 1990 में 90 करोड़ से भी अधिक हो चुकी थी । भारत की 1991 में जनसंख्या 843930861 थी, जो कि विगत दषकों की अपेक्षा अधिक है । इस प्रकार भारत को विश्व की 14 प्रतिषत जनसंख्या के पोशण का उत्तरदायित्व केवल 1.5 प्रतिषत आय के आधार पर वहन करना पड़ता है। जहां तक जनसंख्या घनत्व का प्रष्न है, 1971 में यह 177 प्रति व्यक्ति प्रति वर्गमील था, जो 1981 एवं 1991 में बढ़कर क्रमषः 218 एवं 267 हो गया। भारत के विभिन्न राज्यों में जनकृ घनत्व में विभिन्नता पायी जाती है। भारत के सबसे घने बसे हुए क्षेत्रों में, विषेशकर केन्द्र षासित प्रदेषों में, 1991 की जनगणना के अनुसार दिल्ली और चण्डीगढ़ प्रमुख हैं, जहां जनसंख्या का घनत्व क्रमषः 6319 व्यक्ति एवं 5670 व्यक्ति प्रति वर्गमील है । अन्य राज्यों में पष्चिम बंगाल में 266, केरल में 747, उत्तरप्रदेष में 471 तथा तमिलनाडू में 428 व्यक्ति प्रति वर्गमील जनसंख्या घनत्व पाया जाता है। जन घनत्व की दृश्टि से अरूणाचल प्रदेष सबसे विरल बसा क्षेत्र है, जहां 10 व्यक्ति प्रति वर्गमील निवास करते हैं ।

यदि भारत की जनसंख्या वषद्धि के विशय में सांखिकी आधार पर गणना की जाए, तब यह विदित होता है कि प्रत्येक वर्श यहां की जनसंख्या में दो करोड़ से अधिक सदस्य सम्मिलित हो जाते हैं पूर्व में यहां की जनसंख्या की वषद्धि की प्रकृति आधुनिक समय की अपेक्षा भिन्न थी । इसकी गति मंद थी, इसमें स्थायित्व भी पाया गया था। इसके विपरीत आधुनिक समय में यहां की जनसंख्या अधिकतम वषद्धि की ओर उन्मुख हो चुकी है। आज की तरह पूर्व में जनगणना का कोई प्रयोजन नहीं था, अतएव उस काल की जनसंख्या का मान, केवल अनुमान अथवा यत्र–तत्र उपलबध ऐतिहासिक अभिलेख, भू–अभिलेख अथवा भारत में आने वाले विदेषियों द्वारा लिखित अभिलेखों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। किंग्सलेडेविस (1959) के अनुसार ईसा की तीसरी षताब्दी पूर्व भारत की कुल जनसंख्या मात्र 10 करोड़ ही थी जो कि विश्व की समकालीन जनसंख्या की तुलना के आधार पर अधिक मानी जा सकती है, किन्तु यह संषयात्मक स्थिति ही प्रतीत होती है क्योंकि तत्संबंधित अभिलेखों का सर्वथा अभाव ही है और इससे संबंधित प्रमाण प्राप्त नहीं हो सके हैं जो कि कुछ भी हो, इस अवधि के उपरान्त यहां की जनसंख्या की वषद्धि में स्थायित्व परिलक्षित होने लगा था, क्योंकि उच्च जन्म दर, उच्च मष्त्यु दर द्वारा प्रतिस्थापित होती थी। इस अवधि में यह भी संभव है कि अनेक प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियां जैसे विशम जलवायु, संक्रामक

व्याधियों के प्रकोप, अकाल आदि का, उस काल के जनसमूह ने सामना किया होगा, जिससे ये समस्त कारक उसकी वष्द्धि में बाधक हुए होंगे। सोलहवीं षताब्दी में इस क्षेत्र अर्थात् भारत, जिसमें श्रीलंका और म्यानमार सम्मिलित थे, की जनसंख्या 13 करोड़ तक ही सीमित थी । तदुपरांत 1750 तक पुनः जनसंख्या वष्द्धि में स्थायित्व देखा जा सकता है । यह काल जनसंख्या वष्द्धि हेतु अनुकूल नहीं था क्योंकि यहां का जनसमूह युद्ध की विभीशिका से ग्रस्त हो चुका था जिससे जन्म तथा मष्त्यु दर में सामंजस्य होने से जनसंख्या वष्द्धि में रोक लगाना स्वाभाविक ही प्रतीत होता है।

ब्रिटिष षासन के प्रादुर्भाव से यहां पुनः षांति स्थापित हुई थी, जिससे जनसंख्या वृद्धि की ओर अग्रसर होने लगी थी । तद्नुसार 1847 में यह 13.3 करोड़ तक पहुंच गयी थी। भारत में 1860 से 1870 तथा इसके उपरान्त का काल, प्रगति का काल था । इसमें जन्म दर में वृद्धि होने लगी थी, किन्तु आगामी दषक में यहां के जनसमूह ने भयंकर अकाल का सामना किया था, जिसकी तीव्रता दक्षिण

जनसंख्या भारत में अधिक थी। इसके परिणामस्वरूप इस दषक में जन्म दर में कमी आने से षिषुओं की संख्या में वष्द्धि नहीं हो सकी थी। इस प्रकार कई दषकों से 1970 तक जन्म और मष्त्यु दर में अधिक संख्या में उच्चावचन होने से आयु संगठन में परिवर्तन स्वाभाविक ही था । इसके लिए अकाल ही उत्तरदायी थे।

जिनके प्रभाव से विभिन्न आयु के लोगों की जन्म और मष्त्यु दर में अप्रत्याषित रूप से अन्तर देखा जा सकता था। जन्म दर में कमी होने से षिषुओं के संख्यात्मक मान में अन्तर आ रही चुका था; युवकों तथा प्रौढ़ों की मष्त्यु दर की अधिकता से नवयुवकों की कमी हो जाती है जैसा कि 1870 के अकाल तथा संक्रामक व्याधियों के प्रकोप के समय परिलक्षित हुआ था। इनके प्रभाव से 5 वर्श के षिषुओं तथा 30 से 35 वर्श के युवकों की संख्या में बहुत कमी दिखायी देती थी। लगभग यही स्थिति 1900 के प्रथम दषक में पायी गयी थी ।

भारत के जनसमूह में दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यहां की जनसंख्या के आयु समूह संगठन में षिषुओं की अधिक संख्या तथा प्रौढ़ और वष्द्ध सदस्यों की संख्या कम दृश्टिगोचर होती है। इससे यह निरूपित होता है कि यहां के जनसमूह में मष्त्यु दर अभी भी बहुत अधिक है। यहां पर 1881 में 25.3 करोड़ निवासी निवास करते थे। इसका मुख्य कारण यह था कि युद्धों की समाप्ति से यहां के निवासियों का जीवन षांतिमय हो गया था, इसके साथ ही आधुनिक षिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं का प्रचार–प्रसार होने लगा था। इतना सब होते हुए भी जनसंख्या में अधिक वष्द्धि नहीं हो सकी थी। यहां की 1891 और 1901 की जनगणना इस

अवधि में जनसंख्या वषद्धि में ह्रास दिखाती है, क्योंकि इसके पूर्व जनसंख्या की वषद्धि 9 प्रतिषत थी। इस अवधि में 0.2 प्रतिषत तक कमी हुई थी। इस अवधि में लगातार अनावषश्टि से अन्न की अधिक मात्रा में कमी हो चुकी थी । उस समय आवागमन के साधन विकसित नहीं थे और सम्पूर्ण भारत दासता की बेड़ियों से जकड़ा था । विदेषी षासन ने इस स्थिति से निपटने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसका यह परिणाम हुआ कि गांव के गांव भूखमरी से प्रभावित होने से उजड़ने लगे थे। चारों ओर मष्त्यु का ही साम्राज्य था । मानव षुओं से भी गया – बीता जीवन बिताने हेतु बाध्य हो चुके थे । प्लेगम और मलेरिया आदि संक्रामक व्याधियों के कारण मष्त्यु दर और बढ़ गयी थी। इसके परिणामस्वरूप 20 करोड़ सदस्य काल–कवलित हो चुके थे। उधर जन्म दर भी घट गयी थी; जनसंख्या वषद्धि भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं थी, जिसकी दर 0.2 प्रतिषत तक न्यूनीकृत हो चुकी थी ।

1891 से 1901 तक के काल में भारत के अनेक भू–भाग जैसे कि दक्षिण तथा मध्य भारत, पंजाब, मुम्बई और सम्पूर्ण बंगाल इस प्रकार की विशम परिस्थितियों का सामना कर रहे थे । आगामी दषकों अर्थात् 1901–11 में इन विशम परिस्थितियों में कुछ सुधार हुआ था, जिससे प्राकृतिक वषद्धि दर 7.4 प्रति हजार तक पहुंच गयी थी । इस अवधि में अकाल और संक्रामक व्याधियों का प्रकोप कम हो चुका था तथा जीवन–यापन हेतु पोशण पदार्थों की उपलब्धि होने लगी थी, जिससे इनसे प्रभावित भू–भागों में जनसंख्या वषद्धि होने लगी थी । इन दषकों के उपरान्त 1911 और 1921 के दषकों में भारत प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने से विशम परिस्थितियों की चपेट में आ चुका था । इसके प्रभाव से स्कारलेट ज्वर प्राकृतिक जन्म दर घटकर 0.9 प्रति हजार तक सीमित हो गयी, अर्थात् जन्म और मष्त्यु दर बराबर सहित दर्षाती थी।

इसके पष्चात् 1921 – 31 का काल अमन–चौन तथा आर्थिक उन्नति का काल था, जिसे जनसंख्या की वषद्धि के लिए अनुकूल समय कहा जा सकता है। इसके कारण यह वषद्धि प्रत्यक्ष रूप से सहबंधित रहती है। 1921 की जनसंख्या लगभग 25.13 करोड़ थी जो 1931 में 27.39 करोड़ तक पहुंच गयी । यह संख्या इस काल की प्राकृतिक वषद्धि से भी संबंधित है जो कि 10 प्रति हजार ही थी । षासन भी यहां पर अकाल, सूखा तथा संक्रामक व्याधियों के प्रकोप से छुटकारा दिलाने के लिए जागरूक हो चुका था। पहले की अपेक्षा चिकित्सा सुविधाओं में सुधार हुआ था। आर्थिक स्थिति की उन्नति के लिए औद्योगीकरण का सूत्रपात हुआ । षिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु षासन प्रयासरत हो गया था । ये समस्त कारक

जनसंख्या वर्षद्धि की प्रक्रिया में उत्प्रेरक थे, जिसका यह परिणाम हुआ कि भारत की जनसंख्या

1941 में 31 करोड़ से भी अधिक हो गयी थी । इस अवधि तक मष्त्यु दर में कमी आने से प्राकृतिक वर्षद्धि दर 14 प्रति हजार थी। 1941 से 1951 का समय भारत के सन्दर्भ में पुनः संक्रमण का काल था, क्योंकि अब देष स्वतंत्र हो चुका था । अनेक योजनाओं का सूत्रपात हुआ था, जिनका नियोजन यहां के मानव समूह की आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों की स्थिति के अनुकूल ही प्रारंभ हुआ था । इसी समय देष के विभाजन से जनसंख्या का विनिमय भी बहुत अधिक मात्रा में हुआ जिससे इस भू–भाग में लगभग विप्लव जेसी स्थिति निर्मित हो चुकी थी। यहां के कर्णधारों ने इसका साहसपूर्वक सामना किया और पुनः षान्ति स्थापित की। इस काल की जनसंख्या 36 करोड़ से भी अधिक आंकी गयी थी, परन्तु प्राकृ तिक वर्षद्धि दर केवल 12.5 ही थी, क्योंकि जन्म दर कम और मष्त्यु दर भी इसी के अनुरूप ही थी ।

सबसे अधिक प्राकृतिक वर्षद्धि दर 1951–61 के दषक में थी जो 28.9 प्रति हजार थी। 1951 में जनसंख्या 36 करोड़ से भी अधिक और 1961 में 43.92 करोड़ की सीमा को पार कर चुकी थी । जनसंख्या वर्षद्धि इसी क्रम में होती हुई 1991 में 843930861 संख्यात्मक मान दर्षाती थी। इतनी अधिक जनसंख्या वर्षद्धि का मुख्य कारण मष्त्यु दर में कमी तथा जन्म दर में वर्षद्धि आदि है । 1901 से 1911 तक मष्त्यु दर 42.6 तथा जन्म दर 49.2 प्रति हजार थी । मष्त्यु दर 1991 में कम होकर मात्र 13.7 प्रति हजार तक ही सीमित हो चुकी थी । जन्म दर अधिक होने से प्राकृतिक वर्षद्धि दर 21.7 प्रति हजार थी । जनसंख्या वर्षद्धि का मुख्य कारण, यहां पर उपलब्ध चिकित्सा सुविधाएं हैं । चिकित्सा महाविद्यालयों की संख्या 1991 तक 100 से भी अधिक हो चुकी हैं और प्रषिक्षित नर्सों की सेवाएं, अब पूर्व जैसी अप्राप्य नहीं हैं। इन सुविधाओं से ग्रामीण समाज भी वंचित नहीं है । संक्रामक व्याधियों – चेचक, हैजा, प्लेग आदि का उन्मूलन हो चुका है और मलेरिया तथा तपेदिक की समाप्ति के लिए षासन प्रयत्नषील है। इसके प्रभाव से मष्त्यु दर में कमी होना स्वाभाविक ही है।

आधुनिक समय में आवगामन के साधन विकसित होने से किसी भी भू–भाग में पोशण पदार्थों की आवष्यकता के अनुरूप, इनकी पूर्ति की जा सकती है, जिससे अकाल जैसी स्थिति से भारत मुक्त हो चुका है। यहां पहले बाढ़ आदि के प्रकोप से बहुत अधिक मात्रा में विनाषलीला देखी जाती थी, किन्तु अब नदियों पर बांध आदि के निर्माण से इसमें कमी आ चुकी है, जिससे हरित क्रांति को भी बल मिला

है, सिंचाई सुविधाओं के विकास से यह भू–भाग खाद्य पदार्थों के सन्दर्भ में आत्मनिर्भर हो चुका है, किन्तु अभी तक निर्धन जनसमूह कुपोशण से प्रभावित है। इस विशय में यह अनुमानित किया गया है कि यहां की लगभग आधी जनसंख्या को उसके अच्छेक स्वास्थ्य की आवष्यकतानुसार पोशण पदार्थों की पूर्ति नहीं हो पाती है। भारत में प्रति व्यक्ति आय भी पोशण पदार्थों की पूर्ति हेतु उपयुक्त नहीं है। यहां पर श्रम षक्ति का भी अभाव ही है, क्योंकि यहां की जनसंख्या में बाल्यावस्था के सदस्यों का प्रतिषत अधिक होने से आर्थिक आधार पर निर्भरता का अनुपात अधिक है और श्रम षक्ति की वृद्धि दर भी निम्न ही है । यदि इसमें वृद्धि हो भी जाती है, तब भारत को उनके नियोजन की समस्या का सामना करना पड़ेगा ।

यहां की प्रति व्यक्ति वार्शिक आय 1986–87 में 1869.3 रूपये है, जो कि दुनिया केम विभिन्न देषों की अपेक्षा सबसे कम है । औद्योगीकरण से आय में वर्षद्धि के सुअवसर भी आते हैं, लेकिन जनसंख्या की वर्षद्धि इसमें रोक लगा देती है । जनसंख्या वर्षद्धि के अन्य दुश्परिणाम भी यहां के जनसमूह में देखे जा जा सकते हैं; जेसे निरक्षरता का अधिक प्रतिषत, आवास की असुविधा, रोगों से प्रभावित जनसमूहों के उपयुक्त उपचार में कमी, जिससे मर्ष्यु दर में वर्षद्धि आदि । इन समस्त समस्याओं का निदान भी आवष्यक है, अन्यथा भारतीय जनसमूह अधिक जनसंख्या वर्षद्धि से प्रभावित होकर प्रगति की ओर उन्मुख होने में असफल ही रहेगा।

भारत में जनसंख्या की अत्यधिक वर्षद्धि हेतु अनेक कारक उत्तरदायी हैं । इनके अन्तर्गत जन्म दर अधिक तथा मर्ष्यु दर में कमी होने से आयु संगठन में परिवर्तन अवष्यम्भावी है। इसके सिवाय यहां पर प्रचलित विवाह की प्रथा का भी इस क्षेत्र में योगदान है। यहां पर विवाह एक सामाजिक संस्था है, लगभग सभी सदस्यों का विवाह आवष्यक समझा जाता है, भले ही वह आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हो जनसंख्या या न हो। यहां किसी भी व्यक्ति का विवाह उसकी इच्छा पर नहीं, अपितु माता–पिता की इच्छा से सम्पन्न होता है । यद्यपि अब बाल–विवाह प्रथा पर षासन ने रोक लगा दी हे, तथापित ग्रामीण क्षेत्रों में इसका अभी भी प्रचलन है । इसका यह परिणाम होता हे कि वैवाहिक युग्म, संवर्धन की आयु तक पहुंचने ही संतति को जन्म देने लगते हैं। भारत की जलवायु भी जनसंख्या की वर्षद्धि के लिए उत्तरदायी है। यहां पर लड़कियों में ऋतुस्त्राव अन्य यूरोपीय देषों की अपेक्षा षीघ्र होने लगता है, जिससे वे संवर्धन के लिए परिपक्व होकर षिषुओं को जन्म

देने में सक्षम हो जाती हैं। यहां की स्त्रियों की औसतन वैवाहिक आयु 1987–88 में 18.9 ही थी ।

पूर्व में सापेक्षिक रूप से जन्म दर अधिक थी और आधुनिक समय में मष्त्यु दर में कमी होने से आयु संगइन में भी परिवर्तन हुआ ही है । उदाहरणस्वरूप 1981 की जनगणना के अनुसारलगभग 40 प्रतिषत जनसमूह 0दृ14 वर्श की आयु का था । 15–59 आयु समूह के अन्तर्गत लगभग 54 प्रतिषत से भी अधिक जनसंख्या आती थी तथा 60 से और अधिक आयु का केवल 6 प्रतिषत जनसमूह प्रतिनिधित्व करते हैं। 1986 में बाल्यावस्था से किषोरावस्था अर्थात् 0–14 वर्श के सदस्यों का प्रतिषत पूर्व के दषक के प्रतिषत से कम है जो 37 प्रतिषत से अधिक था और 15–59 आयु वर्ग का प्रतिषत 55.9 था। 60 वर्श अथवा इससे अधिक आयु के लोगों का प्रतिषत कम होकर मात्र 6.3 प्रतिषत तक ही सीमित हो चुका था । इससे मिलती–जुलती स्थिति 1991 के आंकड़ों के आधार पर निर्धारित हो सकती है । इस काल में 0–14 की आयु के सदस्यों का प्रतिषत अन्य दषकों की अपेक्षा कम हो चुका था जो कि मात्र 0–14 की आयु के सदस्यों का प्रतिषत अन्य दषकों की अपेक्षा कम हो चुका था जो कि मात्र 35.6 प्रतिषत ही था तथापि सांख्यिकी आधार पर तुलना करने से यह परिमाण विषिश्ट अन्तर का द्योतक नहीं था । प्रौढ़ों का प्रतिषत 57.8 और वष्द्धों का अन्य दषकों के अनुरूप ही 6.6 प्रतिषत तक सीमित था । इन आंकड़ों के आधार पर यह तथ्य प्रगट होता है कि भारत में उच्च जन्म दर और निम्न प्रतयाषित आयु होने के कारण यहां की जनसंख्या में 35 से 40 प्रतिषत तक परिमाण 15 वर्श की आयु के सदस्यों का निर्धारित हो सका है। इस प्रकार इन आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहां की जनसंख्या में युवकों की कमी है, जिनका योगदान श्रम के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। जनसंख्या को उद्वेलित करने वाले अन्य कारक इस प्रकार हैं –

हिन्दू सामाजिक–व्यवस्था के अनुसार पूर्व में किसी विधवा स्त्री का पुनर्विवाह सामाजिक नियमों के अनुसार नहीं हो सकता था भले ही वह स्त्री बाल्यावस्था में ही विधवा हो गयी हो । आधुनिक समय में षिक्षा के प्रचार और प्रसार के परिणामस्वरूप इस रोकथाम की गति मंद हो चुकी है। अतः इनके पुनर्विवाह होने से यह समूह, जो कि जनसंख्या में वष्द्धि के क्षेत्र में समाज द्वारा अनुपयुक्त घोशित हो चुका था, वह भी जनसंख्या वष्द्धि का कारण बन गया है। इस क्षेत्र में इनका कितना योगदान है इसे ज्ञात करने के लिए इनके परिमाण को जानना आवष्यक है। 1981 की जनगणना के अनुसार वैवाहिक पुरूशों का प्रतिषत 42. 05 था जो स्त्रियों की अपेक्षा 3.74 प्रतिषत कम था। इससे यह निरूपित होता है कि स्त्रियों का पुरूशों की तुलना में जनसंख्या वष्द्धि का योगदान अधिक है। इसके साथ ही

विधवा स्त्रियों का प्रतिषत 8.02 था जो विधुरों के प्रतिषत 2.43 से अधिक था । यह वर्ग जनसंख्या वष्द्धि में योगदान हेतु अनुपयुक्त ही है, क्यों जब तक इनका पुनः विवाह नहीं होता, वे जनसंख्या वष्द्धि में कोई योगदान नहीं कर सकेंगे। लगभग यही स्थिति 1991 की जनगणना से भी प्रकट होती है।

भारतीय धार्मिक अवधारणा के अनुसार मष्तक के तर्पण का अधिकार केवल पुरूशों तक ही सीमित है । अतः लड़कों की उत्पत्ति की कामना माता – पिता में अधिक रहती है। कृशि के आधुनिकीकरण होने से हरित क्रान्ति की सफलता की संभावना अधिक हो चुकी है। इसमें श्रम षक्ति की आवष्यकता की पूर्ति केवल पुरूशों द्वारा ही हो सकती है । यही प्रमुख कारण है जिससे यहां के जनसमूह का ध्यान लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की उत्पत्ति हेतु अधिक रहता है । उनके लालन–पालन में भी पक्षपात होता हे, लड़कियों की मष्त्यु दर 98 प्रतिषत हजार है, है, जबकि लड़कों की दर 96 प्रति हजार तक ही सीमित है । परिवार के वष्द्ध सदस्यों की देखभाल करने का उत्तरदायित्व लड़कों को ही वहन करना पड़ता है। अतः इस क्षेत्र में भी उनके महत्व को देखते हुए उनकी परिवार और समाज में महत्वपूर्ण स्थिति रहती है । इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि लड़कों पर लड़कियो की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया जाता है । इसका प्रतिकूल प्रभाव लड़कियों की उत्तरजीविता पर होता है, जिससे उनकी मात्रा में कमी होना स्वाभाविक ही है। 1981 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरूशों की तुलना में 934 स्त्रियां थीं जबकि 1991 में यह अनुपात 929 तक घट चुका है।

भारत की जनसंख्या वष्द्धि में महत्वपूर्ण कारक यहां पर उपलब्ध चिकित्सा सुविधाएं भी हैं ।; 1981 में चिकित्सा सुविधाओं पर प्रति व्यक्ति खर्च 23.53 रूपये ही था जो 1983 में बढ़कर 32.85 और 1991 में 37.30 हो चुका था। इसी प्रकार परिवार कल्याण पर 1981 से 1983 तक होने वाला व्यय 2.14 से बढ़कर 4.30 हो गया। यहां पर चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक कल्याण कार्यक्रम लागू किये गये, जिनके अन्तर्गत नये–नये चिकित्सा महाविद्यालय खोले गये, जिनकी संख्या 1947 में मात्र 20 ही थी परन्तु 1991 में इनमें वष्द्धि होने से 103 तक पहुंच चुकी थी इन सब तथ्यों के आधार पर यह विदित होता है कि चिकित्सा सुविधाएं निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही हैं । जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में मलेरिया उन्मूलन के लिए डी. डी.टी. का छिड़काव, तपेदिक से छुटकारा पाने हेतु बी. सी. जी. टीके आदि की षुरूआत हो चुकी थी । इन समस्त से मष्त्यु दर प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। यह 1901 – 11 की अवधि में 49.2 प्रति हजार थी, जो 1981दृ91 में कम होकर

13.7 प्रति हजार तक सीमित हो चुकी है । इतनी कमी के कारण जनसंख्या में वषद्धि होना स्वाभाविक ही है ।

इसके अलावा जनसंख्या वषद्धि के लिए अन्य कारक भी उत्तदायी है। आधुनिक समय में आवागमन के साधनों के विकसित होने से जिस भू–भाग में अनावषश्टि होती है, वहां के जनसमूहों को अकाल जैसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता है, क्योंकि इन साधनों द्वारा वे भू–भाग जो अकालग्रस्त नहीं रहते हैं, वहां से अन्न आदि आदि की पूर्ति हो जाती है । प्राकृतिक प्रकोपा उदाहरस्वरूप बाढ़ द्वारा होने वाली विनाषलीला को भी बांध बनाकर नियंत्रित करने के प्रयास चल रहे हैं । इस प्रकार यह कहा जा

ज सकता है कि भारत मेंजनसंख्या वषद्धि हेतु अनुकूल परिस्थितियां निर्मित हो चुकी हैं।

भारतीय षासन का जनसंख्या नीति से संबंधित मुख्य उद्देष्य, जन्म दर को कम करना और इसके अनुरूप मृतयु दर को भी नियंत्रित करना है, जिससे जनसंख्या वृद्धि पर रोक लग सकती है। भारत की राश्ट्रीय नीति के अन्तग्रत जनसंख्या से संबंधित समस्याओं का निदान, सामाजिक–आर्थिक अथवा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में हल किया जाता है। यहां पर परिवार नियोजन से संबंधित योजनाओं हमें निहित षिषु जन्म दर पर रोक लगाने हेतु नियोजित ढंग से नीति निर्धारित की गयी है जिससे सुखी और उन्नतिषील तथा देष की खुषहाली के लिए छोटे परिवार पर ध्यान केन्द्रित किया गया है तथा परिवार के सदस्यों का पालन–पोशण तथा षिषु उपयुक्त प्रकार से हो सकें ।

पूर्व में भी मानव समूह अधिक जनसंख्या वषद्धि पर रोक हेतु सजग थे । इसके लिए षिषु हत्या तथा गर्भ निरोध आदि प्रक्रियाएं अपनायी जाती थीं, जिससे जनसंख्या वषद्धि को नियंत्रित रखा जाता था । इससे अतिरिक्त वषद्धि और अपंग सदस्यों को भी समाप्त कर दिया जाता था । आधुनिक समय में भी जनसंख्या वषद्धि पर नियंत्रण करना आवष्यक है, क्योंकि वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था से मष्त्यु दर पर नियंत्रण हो चुका है, इस कारण जनसंख्या वषद्धि पूर्व की अपेक्षा अधिक हो रही है । सुप्रजनन के क्षेत्र में इस वषद्धि पर रोक भी महत्वपूर्ण है, जिससे नवजात षिषु की देखभाल भली–भांति हो सकती है, इसके अतिरिक्त माता के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता है।

सार्वभौमिक आधार पर यह स्वीकारा गया है कि जहां तक संभव हो जन्म दर को कम करना आवष्यक है। इस पर भी, विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वषद्धि

हो रही है। इसका मुख्य कारण परिवार नियोजन के क्रियान्वयन में आने वाली अनेक बाधाएं हैं, जिनमें प्रमुख धाम्रिक विश्वास है ।

जनसंख्या 104 धार्मिक विश्वास के अनुसार गर्भ निरोध और परिवार – नियोजन पाप के कार्य हैं रोमन कैलोलिक आज भी परिवार नियोजन के कार्य से सहमत नहीं हैं । इस्लाम में यह आधारभूत भावना प्रचलित है कि जितने अधिक बच्चे होंगे, उतना ही अधिक धर्म का प्रसार होगा। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी षिषुओं की उत्पतित को ईश्वरीय देन समझा जाता है । परिवार नियोजन कार्यक्रम क्रियान्वित करने के पूर्व किसी भी क्षेत्र के जनसमूह को उसके महत्व को उसके महत्व से परिचित करना आवष्यक है, जिससे वे इसेह अपनाने में तत्पर हो सकें। इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से प्रारंभ करने के लिए चिकित्सा और स्वास्थ्य अधिकारियों की आवष्यकता होती है, जिनकी नियुक्ति से इसका संचालन भलीभांति हो सकता है । परिवार नियोजन से संबंधित उपकरण की आपूर्ति भी महत्वपूर्ण है। सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में इस कार्यक्रम के नियोजन हेतु चलित वाहनों की सहायता भी आवष्यक हो जाती है। बिना गर्भ धारण किये, लैंगिक जीवन के उपभोग से भी लोगों को परिचित कराना आवष्यक है । यदि बच्चा पैदा करना ही है, तब उसके जन्म की अवधि से संबंधित ज्ञान का बोध भी आवष्यक ही है, जिससे नवजात षिषु और माता दोनों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न हो सके । विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त पति – पत्नी को बच्चे उत्पन्न करने के लिए हतोत्साहित करना भी महत्वपूर्ण है। परिवार नियोजन में निहित षल्य चिकित्सा के लिए सदस्यों को आर्थिक सहायता तथा उनहें अन्य सुविधाओं की पूर्ति करना चाहिए, जिससे वे इस ओर आकर्शित हो सकें। अधिक मात्रा में विभिन्न जनसमूहों को गर्भ निरोध और इससे संबंधित औशधियों की पूर्ति भी आवष्यक है, जिसके परिणामस्वरूप यह कार्यक्रम सुनियोजित ढंग से चल सके। इस कार्यक्रम को अधिक प्रभावषील बनाने हेतु धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं की सहायता भी लेनी चाहिए ।

भारत में सर्वप्रथम परिवार नियोजन से संबंधित कार्यक्रम 1925 में प्रारम्भ हुआ था, जब कर्वे ने इससे संबंधित चिकित्सालय प्रारंभ किया था। मैसूर के षासन ने इसके महत्व को स्वीकारते हुए 1930 में परिवार नियोजन निदान गृह की नींव स्थापित की थी। स्वतंत्रता के पूर्व राश्ट्रीय योजना समिति की स्थापना के उपरान्त परिवार नियोजन के कार्यक्रम का प्रसार अधिक होने लगा था। उत्तरप्रदेष में भी परिवार नियोजन संबंधी चिकित्सालय 1937 के पष्चात ही खोले गये थे। भारत के स्वतंत्र होने के उपरान्त, यहां के स्वदेषी षासन तंत्र ने इसके महत्व को समझते हुए बम्बई में इससे संबंधित संस्था का सूत्रपात किया था । भारत में परिवार नियोजन

कार्यक्रम का उत्तरदायित्व षासन तंत्र ने वहन किया । इसके अन्तर्गत योजनायें आज भी क्रियान्वित हो रही हैं ।

प्रथम पंचवर्शीय योजना में केवल तीन करोड़ रूपये ही इस मद में स्वीकृत हुए थे, जिसमें से अधिकतम राषि का उपयोग ही नही हो सका था । इस अवधि में योजना आयोग का मुख्य ध्येय जनसंख्या वषद्धि के प्रमुख कारणों को ज्ञात करना और भारतीय जनसमूह को परिवार नियोजन के महत्व से परिचित कराना थां उनकी यह भी योजना थी कि इस कार्यक्रम को चिकित्सा के क्षेत्र में समाकलित कर दिया जाये, जिससे चिकित्सक, नवयुवकों को इसके महत्व की अनुभूति कराने में सफल हो सके द्य इन विचारों के क्रियान्वयन के लिए 1953 में परिवार नियोजन षोध और योजना समिति गठित की गयी थी। इसके दो वर्श उपरान्त परिवार नियोजन अनुदान समिति का गइन हुआ था । इस अवधि में परिवार नियोजन के कार्यक्र में विषेश प्रगति नहीं हो सकी थी। उस समय सम्पूर्ण भारत में मात्र 147 चिकित्सालय ही प्रारम्भ हो पाये थे, जो इस विषाल भू–भाग को देखते हुए नगण्य ही थे । द्वितीय पंचवर्शीय योजना में परिवार नियोजन केन्द्रों का अधिक विस्तार हुआ था। यहां पर ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि जितना अनुदान इन पंचवर्शीय योजनाओं के अन्तर्गत स्वीकृत हुआ था, उसका सदुपयोग कभी भी नहीं हो सका। उसके जो भी कारण रहें हों किन्तु भारत के विभिन्न वर्ग के जनसमूहों ने इसके महत्व को समझा और इसे अपनाने हेतु वे तत्पर हो गये थे । इसका परिणाम यह हुआ कि यहां 100 प्रजनन योग्य दम्पत्ति में से 44 दम्पत्ति परिवार नियोजन की किसी भी विधि को अपनाने लगे थे ।

परिवार नियोजन के कार्यक्रम में 1987–88 में उल्लेखनीय प्रगति हुई थी। इस अवधि में इसे अपनाने वालों की संख्या 2 करोड़ 26 लाख तक पहुंच चुकी थी, लेकिन वार्शिक जनसंख्या वषद्धि की स्थिति अभी भी गंभीर थी । इसका कारण जन्म दर का अपेक्षाकृत अधिक होना और मष्त्यु दर में तेजी से कमी आना था। विश्व की कुल जनसंख्या का 15 प्रतिषत भाग भारत का निवासी है। इसके साथ ही जनसंख्या वषद्धि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों की उन्नति में बाधक है। यह तभी संभव है जब षुद्ध । संवर्धन दर 1 से अधिक न हो सके । षासकीय लक्ष्य 1990 के अंत तक इस प्रकार है – अपरिश्कृत जन्म दर 20.1 प्रतिषत, अपरिश्कृत मष्त्यु दर 10.4 प्रतिषत, षिषु मष्त्यु दर 8.7 प्रतिषत और दम्पत्ति सुरक्षा दर 42 प्रतिषत तक सीमित हो सके ।

इन्हीं आंकड़ों की उपलब्धि हेतु 1987 और 1988 में राश्ट्रव्यापी गहन परिवार नियोजन प्रारंभ हुआ था, जिसके अंतर्गत बहुउद्देषीय कार्यकर्ताओं के लिए प्रषिखण

कार्यक्रम आयोजित करना सुनिष्चित किया गया था चूंकि परिवार नियोजन हेतु स्वास्थ्य केन्द्रो ं की आवष्यकता होती है, अतएव परिवार नियोजन सेवाएं, स्वास्थ्य सेवाओं के निरंतर बढ़ते हुए ढांचे के माध्यम से सम्मिलित रूप से जारी रखने का उद्देष्य बनाया गया था । तदुपरान्त 1987–88 में नसबंदी हेतु 60 लाख आई. यू. डी., निवेषनों के लिए 42.50 लाख, प्रचलित गर्भ निरोधकों हेतु 107.50 लाख और गर्भ निरोधक गोलियों के लक्ष्य 20 लाख सदस्य निर्धारित किये गये थे । इस प्रकार इस अवधि के अंत में राश्ट्रीय स्तर पर समग्र रूप से कुल 226.90 लाख व्यक्ति परिवार नियोजन के लिए उद्यत हो चुके थे, जो कि परिवार नियोजन के कार्यक्रम में अब तक का सबसे अधिक कीर्तिमान था । समीक्षाधीन वर्श में बच्चों के जन्म में अन्तर रखने की तीन विधियां प्रयोग में लायी जाने लगी थीं, जिनमें आई. यू. डी. निवेषनों के अन्तर्गत लूप तथा कापर टी का उपयोग निहित था। 1987–88 में 42.67 लाख कापर टी लगाये गये थे, जो पिछले वर्शों की अपेक्षा 12. 5 प्रतिषत अधिक थे। इस विधि को अपनाने में आन्ध्रप्रदेष और तमिलनाडू के जनसमूहों ने असाधारण रूचि दर्षायी थी ।

भारत के ग्रामीण भूदृभागों के जनसमूह भी इस क्षेत्र में अछूते नहीं थे । इनसे संबंधित आंकड़े यह दर्षाते हैं कि 1986–87 में इनका परिणाम 77.7 प्रतिषत था । बड़े राज्यों में इस कार्यक्रम को अपनाने वालों का अनुपात उत्तरप्रदेष (90.27) का था । इसके विपरीत सबसे कम अनुपात का प्रतिषत केरल (62.87) के जनसमूहों में आंका गया था । इस प्रकार यह देखा गया है कि आई. यू. डी. कार्यक्रम के प्रारंभ से 1988 तक कुल 268.90 लाख निवेषन हो चुके थे जो कि 33.9 प्रति हजार तक सीमित थे। इसी काल में भारत के अनेक राज्य जैसे महाराश्ट्र, हरियाणा, हिमाचल प्रदेष, पंजाब, उत्तरप्रदेष आदि में औसतन दर जो 33.9 थी, उसे अधिक दर प्रति हजार प्रदर्षित की थी ।

गर्भ निरोधक गोलियों का उत्पादन 1987 में प्रारंभ हुआ जिनकी मार्च 1987 से मार्च 1988 तक 7 लाख चक्रों में बिकी हुई थी। देष में माला डी को भी लोकप्रिय बनाने का कार्यक्रम जारी है, जिसका 1988–89 में 136दृ150 लाख नग बेचने का लक्ष्य था । इन्ही वर्शों के दौरान खाने वाली गोलियों की निर्माता कम्पनियों द्वारा सीधी बिक्री की गयी, जिनके कुल 268.35 लाख चक्र जनसमूहों में वितरित हो सके थे। इस प्रकार परिवार नियोजन करने वालों की गणना करने से यह विदित होता है कि 1988 तक 540.20 लाख दम्पत्ति इसे अपनाने के लिए तत्पर हो चुके थे, जिनका प्रतिषत भारत के कुल दम्पत्ति की तुलना में मात्र 39.8 प्रतिषत ही था । इसमें से 28.9 प्रतिषत नसबंदी, 5.2 प्रतिषत आई. यू. डी. 4.2 प्रतिषत प्रचलित

गर्भ निरोधकों और 1.5 खायी जाने वाली गोलियों आदि को अपनाए हुए थे। इस सन्दर्भ में अन्वेशण से यह विदित होता है कि भारत के विभिन्न राज्यों – पंजाब, तमिलनाडू, दादर एवं नागर हवेली, केरल, पाण्डुचेरी, महाराश्ट्र के दम्पत्ति

महाराश्ट्र के दम्पत्ति (39.8) प्रतिषत की

(39.8) प्रतिषत की तुलना में अधिक प्रतिषत दर्षाते हैं ।

सम्पूर्ण भारत में महिला नसबंदी के संबंध में गणना करने से यह परिणाम दृ शिटगोचर होता है कि 25 से 29 वर्श की आयु में ये अधिकतम प्रतिषत व्यक्त करती है। इस आयु समूह की महिलाओं का 1984–85 में 52.7 प्रतिषत, 1985–86 में 62. 2 प्रतिषत और 1986–87 में 63.1 प्रतिषत था । इसी प्रकार आई.यू.डी. अपनाने वालों में भी यही आयु समूह सर्वाधिक प्रतिषत दर्षाता है, जो कि 1984–85 की जनसंख्या 106 अवधि में 33.2 प्रतिषत, 1985–86 में 41.6 प्रतिषत था । अधिकतम महिलाओं ने 1986–87 में इसे अपनाया था, जिनका प्रतिषत 52 से अधिक था । नसबंदी का सबसे कम प्रतिषत 15 – 16 वर्श की स्त्रियों में इन्हीं वर्शों में देखा गया, जो कि उचित ही है। आई. यू. डी. अपनाने वालों का सबसे कम प्रतिषत 40 से 44 वर्श के आयु समूह में देखा गया है।

सम्पूर्ण रूप से स्त्रियों और पुरुशों में नसबंदी के क्षेत्र में तुलना करने से यह विदित होता है कि इसे कराने वाले 1983दृ84 में कुल पुरूश मात्र 38.4 प्रतिषत ही थे, परन्तु इस अवधि में स्त्रियां 49 प्रतिषत थी । इसके पष्चात् 1985–86 की गणना के विष्लेशण से यह ज्ञात होता है कि 36.6 प्रतिषत पुरूश इस ओर आकृश्ट हो गये थे, जबकि महिलाएं इनसे अधिक जागरूक निकलीं जिनका प्रतिषत 50.5 था । लगभग यही स्थिति 1986–87 में स्त्री और पुरूशों में देखी गयी थी । पुरूशों का प्रतिषत 39.7 और स्त्रियों का बढ़कर 50.0 हो गया था

परिवार नियोजन के इन प्रयासों के फलस्वयप भारतीय जनसमूह की जन्म दर में कमी आ चुकी थी जो कि प्राप्त आंकड़ों से स्पश्ट ही है। 1941–51 में 13.31 प्रतिषत से बढ़कर यह 1961–71 में 24.80 हो गयी थी । यद्यपि 1971–81 के दषक में यह 25 प्रतिषत के लगभग स्थित हो चुकी थी, तथापितरत के 8 राज्यों ने पिछले दषक की अपेक्षा 13 प्रतिषत कमी दर्षाई थी इसके साथ 47 प्रतिषत जनसंख्या के 15 राज्यों तथा संघ क्षेत्रों ने भी लगभग यही प्रवषत्ति दिखायी थी, जिससे 1981–91 में देष की लगभग आधी जनसंख्या की वषद्धि में गिरावट आ चुकी थी । इस प्रकार इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के फलस्वरूप 1987–88 तक 99.4 लाख षिषुओं का जन्म रोका गया है । परिवा नियोजन के कार्यक्रम के प्रारंभ होने से अभी तक 953.1 लाख षिषुओं के जन्म को रोकने का अनुमान है ।

तद्नुसार यह कहा जा सकता है कि परिवार नियोजन का कार्यक्रम उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है जो कारगर ढंग से जनसंख्या को रोकने में सफल सिद्ध हो चुका है ।

इतना सब होते हुए भी भारत में जनसंख्या वषद्धि होने से अनेक समस्याएं उत्पन्न हो चुकी है। इनमें आर्थिक स्थिति प्रमुख है, क्योंकि यह स्थिति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस वषद्धिके कारण प्रभावित हो रही है। ऐसा माना जाता है कि भारत अत्यधिक जनसंख्या का देष है, जिसमें वषद्धि होने से जनांकिी विषेशज्ञों ने जनसंख्या विस्फोटन की संभावना व्यक्त की है, किन्तु यह सत्य नहीं है । परिवार नियोजन के कार्यक्रम से अब जन्म दर पर कुछ सीमा तक रोग लग चुकी है। इसके विपरीत आधुनिक चिकित्सा के प्रभाव से मष्त्यु दर में भी कमी आ चुकी है। यहां पर 2900 के जनसमूह पर एक प्रषिक्षित चिकित्सक उपलब्ध है और इसके केवल 1800 रोगियों की ही देखभाल करनी पड़ती है । इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहां पर उपयुक्त मात्रा में चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध हैं । अत्यधिक जनसंख्या सापेक्षित षब्दावली है, जो यह व्यक्त करती है कि अधिक जनसंख्या का जीवन–यापन सीमित साधनों पर होता है। तीव्र जनसंख्या वषद्धि से अधिक जनसंख्या का प्रादुर्भाव निरूपित हो सकता है, जिससे इसकी उत्तरजीविता हेतु सीमित साधन में कमी आ जाने से विकास की गति मंद और औद्योगीकरण की प्रक्रिया लगभग नगण्य होने लगती है ।

पूर्व उल्लिखित वर्णन से यह स्पश्ट ही है कि भारत में जनसंख्या वषद्धि पहले की अपेक्षा अधिक हो रही है। यहां की जनसंख्या 1991 तक 843930861 हो चुकी है। इस जनसंख्या वषद्धि की तुलना विश्व के अन्य देषों से करने पर यह प्रतीत होता है कि यह वषद्धि केवल भारत में ही नहीं हो रही है, अन्य देष भी इससे प्रभावित हैं। उदाहरण स्वरूप उत्तरी अफ्रीका में प्राकृतिक वषद्धि दर 1985–90 में 27.3 प्रतिषत, दक्षिण अमेरिका में 24.8 और सबसे कम यूरोपियन देषों में परिकलित की गयी थी । यह दर भारत में 1981दृ91 तक के दकष में 21.7 प्रति हजार ही थी । इस तुलनात्मक अध्ययन से यह निरूपित होता है कि यह वषद्धि अमेरिका के समतुल्य तथा अमेरिका के विभिन्न देषों से कम ही थी ।

विगत दशकों में भारत की जनसंख्या यह दर्शाती है कि प्रथम जनगणना के आरंभ से आज तक इसमें तीव्र वषद्धि हुई है। 1951 से 1981 के अल्पकाल में यह लैटिन अमेरिका की जनसंख्या के समतुल्य हो चुकी है और प्रतिवर्श आस्ट्रेलिया की जनसंख्या के बराबर सदस्य इसमें सम्मिलित हो रहे हैं। इनके जीवन–यापन के

लिए कम–से–कम 2.6 मिलियन टन अनाज, 2.6 मिलियन कमकान तथा 233 मिलियन मीटर कपड़े की आवष्यकता होगी। इनके अतिरिक्त उनकी आजीविका के लिए व्यवसाय अथवा नौकरी भी इतनी भी आवष्यक है, इस जटिल समस्या से भारत ग्रस्त है ।

अनाज के उत्पादन के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 1971–81 के दषक में 129518.17 हजार टन अनाज उत्पन्न हुआ था। 1984–85 तक इसमें वषद्धि होकर 16635.8 टन अधिक हुआ था जो कि 173 मिलियन हैक्टेयर भूमि पर कृशि करने का परिणाम है । इस खाद्य सामग्री के आधार पर यहां के प्रत्येक सदस्य को औसतन 480 ग्राम की पूर्ति की जा सकती है। इसमें अनाज एवं दालें सम्मिलित हैं। इतनी मात्रा में इनकी पूर्ति करने में तीन मिलियन टन खाद्य सामग्री की आवष्यकता है परन्तु अन्य पदार्थों जैसे षाक–भाजी, कंद–मूल, फल, मांस और अण्डे, वसा, दूध और अन्य तेली पदार्थ आदि षामिल करके यह कमी दूर हो सकती है और 39 मिलियन टन अनाज की बचत भी हो सकती है ।

उपयुक्त प्रकार के पोशण पदार्थों में से अनाज के प्रयोग से केवल विटामिन बी और फास्फोरस की पूर्ति हो सकती है । अन्य प्रकार के पोशण पदार्थों जैसे षाक, भाजी, फल, दूध, तेलीय पदार्थों को सम्मिलित करने से केवल कुछ सीमा तक वसा, कैल्षियम, विटामिन–सी और ए की ही कमी रह जाती है । तद्नुसार इन पोशण पदार्थों में केवल लवण तथा खनिज युक्त खाद्य पूर्ति से भारत के साधारण नागरिक को उसके स्वास्थ्य के अनुरूप पोशण की पूर्ति हो सकती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अनाज के सिवाय अन्य प्रकार के पोशण पदार्थों का उत्पादन भी आवष्यक है, जो कि पूर्व से ही हो रहा है, परन्तु मांग और पूर्ति में सामंजस्य और जनसमूहों की क्रय षक्ति कम होने से यहां अधिकतर सदस्य कुपोशण के षिकार है । आर्थिक स्थिति में सुधार तथा मांग तथा पूर्ति में संतुलन करने से यह समस्या हल हो सकती है, वैसे षासन इस ओर प्रयत्नषील है। यहां पर उपयुक्त योजनाबद्ध औद्योगीकरण से नियोजन के सुअवसर प्राप्त होने से निर्धनता में कमी आ सकती है। भारत में समस्त स्त्रोत होते हुए भी उनका दोहन नहीं हो रहा है । परिणामतः भारतीय अर्थतंत्र मे विकास की गति मंद ही है।

भारत में दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी बहुत अधिक मात्रा में होने लगा है जो यहां के विषाल जनसमूह की आवष्यकता की पूर्ति हेतु उपयुक्त है । उदाहरण स्वरूप कपड़े का उत्पादन यहां पर 4500 मिलियन मीटर हो रहा है जो यहां की आवष्यकता को देखते हुए अधिक ही माना जा सकता है। पक्के मकानों के निर्माण हेतु 7 मिलियन टन सीमेंट का उत्पादन देष में प्रत्येक वर्श

होता है । इनके अतिरिक्त 15 मिलियन टन लौह पदार्थ, जिसमें इस्पात भी सम्मिलित है, का उत्पादन संभव हो सका है। दैनिक उपयोग में आने वाली अन्य खाद्य सामग्री में 1984–85 की गणना के अनुसार 515 ग्राम खाद्य तेल, 1.2 ग्राम वनस्पति घी, 10.7 ग्राम षक्कर, 2 और 20.1 किलोवाट विद्युत की पूर्ति प्रतिदिन की जाती है। इतनी उपलब्धि होते हुए भी निर्धनता की रेखा के नीचे जीवन–यापन करने वालों का प्रतिषत 1989दृ90 तक 26 था, जिनका विकास आवष्यक है । भारत की इस प्रकार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कई क्षेत्रों में यह आत्मनिर्भरता अर्जित करने में सफल हुआ है।

किसी भी देष का आर्थिक विकास, उसकी श्रम षक्ति पर निर्भर रहता है । इस श्रम षक्ति की पूर्ति हेतु विभिन्न क्षेत्रों में प्रषिक्षित श्रमिक आवष्यक है, जिनके द्वारा काम सुचारू ढंग से सम्पन्न हो सके। ये किसी भी देष की जनसंख्या के परिमाण, आयु, संगठन तथा लिंग अनुपात आदि कारकों से सहबंधित रहते हैं। भारत की जनसंख्या में षैषव तथा तरूणावस्था के सदस्यों का अनुपात अधिक है, जिससे श्रम षक्ति की वृद्धि मंद गति से हो रही है, जो कि बढ़ती हुई जनसंख्या के समरूप नहीं है । इसके साथ ही यहां की श्रम षक्ति का उपयोग भी उपयुक्त मात्रा में विभिन्न क्षेत्रों में नहीं हो रहा है क्योंकि इस हेतु कुषल श्रमिकों का अभाव है, जिससे बेरोजगारी में वृद्धि होना स्वाभाविक ही है ।

जनसंख्या 108 यहां पर 1989–90 में 327 मिलियन श्रमिक थे, उनमें से 277 मिलियन सदस्यों को ही रोजगार के सुअवसर मिल सके। आज की परिस्थितियों में उच्च्व तकनीकी षिक्षा प्राप्त सदस्यों को रोजगार देने में षासन सफल नहीं है । अन्य क्षेत्रों में भी षिक्षित सदस्य बेरोजगारी से प्रभावित हैं ।

वैसे वास्तविक बेरोजगारी के परिमाण का निर्धारण जटिल समस्या है, किन्तु इसे ज्ञात करने हेतु यहां के विभिन्न व्यवसायों को जानना आवष्यक है । भारत का प्रमुख उद्योग कृशि है । इस उद्योग में संलग्न जनसमूहों का परिमाण 1981 की जनगणना के अनुसार, यहां की कुल जनसंख्या का 43.70 प्रतिषत पुरूश और 33. 20 स्त्रियां हैं जो मुख्य श्रमिकों की श्रेणी के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। इस कार्यक्रम में निहत सीमान्त श्रमिकों का प्रतिषत भी अन्य उद्योगों की अपेक्षा अधिकतम ही है जिसमें स्त्रियों का प्रतिषत 47.70 है । अन्य उद्योग–धंधों जैसे कि वनीकरण, मत्स्य पालन, आखेट तथा श्रम से संबंधित अनेक उद्योगों में संलग्न सदस्यों में पुरूश श्रमिकों का प्रतिषत मात्र 2.37 और स्त्री श्रमिकों का इनसे भी कम 1.84 प्रतिषत आंका गया । इनमें कार्यरत् सीमान्त श्रमिकों में से पुरूशों का प्रतिषत 3.61 और स्त्रियों का प्रतिषत 1.67 ही था । उद्योगों में 8.9 प्रतिषत पुरूश

मुख्य श्रमिकों के रूप में क्रियाषील है। इसमें स्त्रियों का भी योगदान आंका जा सकता है जो 3.60 प्रतिषत था । इस क्षेत्र में सीमान्त श्रमिकों की भी गणना की गयी है, जिनमें पुरूश और स्त्री क्रमषरू 5.0 और 2.0 प्रतिषत ही थे । व्यापारों में संलग्न यहां का जनसमूह विभिन्न उद्योगों की अपेक्षा कम प्रतिषत दर्षाता है जिसमें 7.41 प्रतिषत पुरूश और 2.04 प्रतिषत स्त्रियां संलग्न हैं। सीमान्त श्रमिकों के रूप में व्यापार में कार्यरत् पुरूश 4.75 और स्त्रियां 1.77 प्रतिषत तक ही सीमित थी ।

इस वर्णन से यह स्पश्ट ही है कि यहां का अधिकतम जनसमूह बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है । इसके उन्मूलन के लिए षासन का गहन प्रयास आवष्यक है ।

अन्तर्राश्ट्रीय व्यापार में भी भारत ने काफी प्रगति की है। स्वतंत्रता के पूर्व यहां विभिन्न पदार्थों द्वारा होने वाली आय 61.268 मिलियन और आयात 81.875 मिलियन ही थी, जिसमें संतुलन नहीं था । स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में दैनिक जीवन में प्रयुक्त विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन अधिक मात्रा में हो रहा है। अब यह देष खाद्य पदार्थों की ओर से आत्मनिर्भर होने के कारण निर्यातक भी हो चुका है। यहां से 1971दृ81 में 1051 मिलियन रूपये के खाद्य पदार्थों का निर्यात हुआ था इस प्रकार निर्यात ओर उत्पादन के प्रभाव से यहां के प्रति व्यक्ति आय में वषृद्धि अवष्यम्भावी है।

प्रति व्यक्ति आय का अनुकूल प्रभाव यहां के जनसमूहों की औसत आयु पर भी हुआ

हे । यह आयु 1931 में 23.67 वर्श थी, इसमें वषृद्धि होने के कारण 1980 में पुरुशों की आयु 54.1 वर्श और स्त्रियों की आयु इनसे

कुछ अधिक 54.7 वर्श हो चुकी थी । आगे चलकर 1986 से 1991 के मध्य स्त्रियों और पुरूशों की औसत आयु में पुनः वषृद्धि हुई । पुरूश की औसत आयु 58.1 और स्त्रियों की 59.1 आंकी गई। इस औसत आयु से यह ज्ञात होता है कि स्त्रियों की औसत आयु पुरूशों से 1 वर्श अधिक थी। भारत में इस प्रकार अनुकूल परिस्थितियां यहां के मानव की उत्तरजीवित क्षमता के परिमाण को अधिक करने हेतु विकसित हो चुकी हैं। औसत आयु में वषृद्धि के लिए मात्र स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार ही उत्तरदायी नहीं है, वरन् सामाजिक और आर्थिक स्थिति की उन्नति भी इसमें सहयोगी है ।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पश्ट है कि भारत प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है । यहां के षासन तथा राजनीतिक प्रणाली में स्थायित्व है ।

राजनीतिक विकास से यह स्पश्ट होता है कि यहां के राजनीतिज्ञ अपने आपको भारत के संविधान तथा संसद के प्रति उत्तरदायित्व को वहन करने के अनुकूल ढालने में सफल रहे हैं । यही मुख्य कारण है, जिससे भारत बहुत से क्षेत्रों में विकास में सफलता प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो चुका है। यहां का षासन और नागरिक भी सीमित परिवार के महत्व से परिचित हो चुके हैं जिससे परिवार नियोजन का कार्यक्रम प्रगति पर है । हरित क्रांति आने से खाद्य पदार्थों के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर हो चुका है, किन्तु बेरोजगारी की समस्या से देष को अभी तक छुटकारा नहीं मिल सका है। आगे चलकर इस समस्या का उग्र होना अवष्यम्भावी है, जिसका निदान आवष्यक है।

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. विश्व में जनसंख्या वर्षद्धि की समस्या तथा कारणों की विवेचना कीजिए ।
2. भारत में जनसंख्या नियंत्रण तथा परिवार नियोजन की नीतियों का इतिहास बताइये
3. विकासषील देषों के संदर्भ में जनसंख्या वर्षद्धि के कारण तथा प्रभावों की विवेचना कीजिए विकसित तथा विकासषील देषों की जनसंख्या वर्षद्धि की तुलनात्मक समीक्षा कीजिए ।
4. जनसंख्या वर्षद्धि तथा विकास के परस्पर सम्बन्धों की विवेचना कीजिए ।

5. जनांकिकी संक्रमण का क्या अर्थ है ?
6. जनसंख्या की जरूरत से ज्यादा वर्षद्धि के कौन–कौन से कारक उत्तरदायी हैं ?
7. जनसंख्या की जरूरत से ज्यादा वर्षद्धि का कारण यह है कि हमने मर्ष्यु पर तो नियंत्रण प्राप्त कर लिया है लेकिन जन्म पर नहीं । इस कथन को स्पश्ट कीजिए ।
8. विकास के फलवयप बढ़ती जनसंख्या की न्यूनतम आवष्यकताएं पूरी करने में हम सफल हुए हैं। इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं ?
9. भारत और अमेरिका की जनसंख्या वर्षद्धि की तुलना कीजिए ।
10. भारत और चीन की जनसंख्या वर्षद्धि की तुलना कीजिए ।

11. जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रमों के सफल न होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण धार्मिक पूर्वाग्रह है़ इस कथन को स्पश्ट कीजिए ।

12. जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों में अपनायी गई नीति की समीक्षा कीजिये ।

13. भारत में जनसंख्या वषद्धि से होने वाली समस्याओं के बारे में लिखिए ।

सही उत्तर को चुनकर उसके सामने का चिन्ह लगाइए ।

भारत की वर्तमान जनसंख्या है.

1. (क) 90 करोड

(ग) 1 अरब 10 करोड़

(ख) 1 अरब

(घ) 1 अरब 20 करोड़ है ।

2. भारत में 1981 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरूशों की तुलना में स्त्रियों की संख्या थी–

(क) 920 प्रति हजार

(ख) 922 प्रति हजार

(ग) 924 प्रति हजार

(घ) 934 प्रति हजार

3. भारत की ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिषत है.

(क) 72 प्रतिषत

(ख) 76 प्रतिषत

(ग) 80 प्रतिषत

(घ) 84 प्रतिषत

4. भारत में पिछली जनगणना हुई थी –

(क) 1986

(ख) 11991

(ज) 1996

(घ) 2001

2 गरीबी और बेरोजगारी

डॉ. आनन्द पयासी

समाज का जब एक वर्ग न्यूनतम जीवन स्तर से वंचित रहता है तो यह कहा जाता है कि समाज में व्यापक निर्धनता विद्यमान है । इस प्रकार से निर्धनता का आषय इस बात से निकाला जाता है कि समाज का एक वर्ग अपने जीवन की बुनियादी आवष्यकताओं को भी पूरा करने में सक्षम नहीं है और वह उन्हें पूरा नहीं कर सकता है। अतः हम स्पश्ट रूप से कह सकते हैं कि गरीबी का संबंध जीवन की मूलभूत आवष्यकताओं की पूर्ति से जुड़ा हुआ है।

गरीबी की अवधारणा

यदि हम गरीबी का विवेचन करें तो सबसे महत्वपूर्ण बात यह आती है कि जीवन स्तर गरीबी की रेखा के नीचे का है । अतः यह प्रष्न आता है कि यह गरीबी की रेखा है क्या ? गरीबी वास्तव में अपने आप में एक ऐसा षब्द है कि इसको परिभाशित करना ही कठिन होता है। गरीबी की विवेचना में गरीबी की रेखा की विवेचना ही सबसे महत्वपूर्ण है। गरीबी का रेखा वह आधार है जिसके द्वारा हम इस गरीबी को परिभाशित कर सकते हैं । गरीबी का विचार कैलोरी उपभोग की मात्रा से जोड़ा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 2400 कैलोरी तथा षहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 2100 कैलारी से कम उपभोग करने वाले व्यक्ति निर्धन माने जाते हैं ।

योजना आयोग द्वारा गठित न्यूनतम आवष्यकता प्रभावपूर्ण उपभोक्ता मांग पर कार्यकारी दल ने 1979 में उपभोग के इन न्यूनतम स्तरों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रति व्यक्ति प्रतिमास व्यय की राषि वर्श 1973–74 के मूल्यों के आधार पर लगभग रूपये 49/– तथा षहरी क्षेत्रों के लिए रूपये 56.6 आंकी थी तथा इससे कम व्यय करने वाले व्यक्ति गरीब माने गये ।

कीमतों में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए व्यय की यह सीमा लगातार बढ़ती गई । प्रत्येक पांच वर्श में राश्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित उपभोग व्यय के आंकड़ों का प्रयोग करके निर्धन व्यक्तियों का अनुमान लगाया जाता है जिसे निर्धनता अनुपात कहा जाता है ।

गरीबी का अनुमान

भारत में गरीबी का अनुमान लगाने के लिए कोई सीधे या उपयुक्त आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं लेकिन अलग अर्थषास्त्रियों ने इसके अलग–अलग अनुमान लगाये हैं। श्री बी.एस. मिनहास एवं श्री ए. वैद्यनाथन के अनुसार योजना आयोग की परिभाशा पर आधारित हैं जबकि श्री पी. के. वर्धन, दाण्डेकर एवं रथ तथा एम.एस. अहलूवालिया ने अपनी–अपनी परिभाशा की है । इस कारण से गरीबी के अलग–अलग अनुमान हैं ।

इसके अनुसार वह उपभोग व्यय वांछनीय है जो कैलोरी के रूप में कम से कम न्यूनतम आवष्यक आहार उपलब्ध करा सके। 1960–61 में यह ग्रामीण क्षेत्रों में 170 /– रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिवर्श तथा षहरी क्षेत्रों हमें 271 रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिवर्श था । यदि इस आधार को माना जाये तो श्री दाण्डेकर व रथ के अनुसार 60–61 के दषक में 40 प्रतिषत ग्रामीण जनसंख्या और 50 प्रतिषत षहरी जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे थी । दाण्डेकर एवं रथ ने विकास से होने वाले लाभों का वितरण जनसंख्या के विभिन्न वर्गों को कितना हो पाया है यह जानने के लिए 68–69 के सर्वेक्षण को आधार बनाया और उसमें यह पाया गया कि 60 और 61 से 68 और 69 के बीच जो औसत उपभोग हुआ है, वह बढ़ा है, वह वास्तविक रूप से 4.8 प्रतिषत की वृद्धि करा सका है।

2. पी. के. वर्धन के अनुमान

गरीबी और बेरोजगारी 11 1 60–61 की कीमतों पर गरीबी की रेखा ग्रामीण क्षेत्रों में 15 रूपये प्रति मास तथा षहरी क्षेत्रों में 18 रूपये प्रति माह प्रतिव्यक्ति थी । इनके अनुसार 68–69 में 55 प्रतिषत ग्रामीण जनसंख्या और 41 प्रतिषत षहरी जनसंख्या गरीबों की रेखा के नीचे थी । यदि योजना आयोग द्वारा परिभाशित गरीबी की रेखा को लेते हैं तो ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्रों में गरीबी के अनुपात और ज्यादा होंगे।

3. बी. एस. मिनहास के अनुमान –

श्री मिनहास ने 56दृ57 एवं 67–68 की गरीबी रेखा के दो अनुमान परिभाशित किये । इनके प्रथम अनुमान के अनुसार उन्होंने योजना आयोग की षहरी गरीबों की परिभाशा ली है जब कि दूसरे अनुमान में उन्होंने अपनी परिभाशा ली है। 1960–61 की कीमतों के अनुसार षहरी क्षेत्रों में न्यूनतम निर्धनता 240 / प्रतिवर्श प्रति व्यक्ति है। वर्श 1956–57 में 65 प्रतिषत लोग गरीबी की रेखा

के नीचे थे। यह 67–68 में 50 प्रतिषत थी । 60–61 की कीमतों में 200 /– रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिवर्श यदि रखी जाये जैसा कि इन्होंने अपनी परिभाशा में परिभाशित किया था, तो गरीबी की रेखा के नीचे न केवल लोगों का अनुपात 50–51 में 52.4 प्रतिषत से गिरकर 67–68 में 31.1 प्रतिषत रह जाता है । इसके साथ ही गरीबी की काफी कमी नजर आती है ।

4. एम. एम. अहलूवालिया के अनुमान –

कुल संख्या में 1960–61 की कीमतों में श्री अहलूवालिया ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की रेखा को 15 रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह परिभाशित किया तथा प्रति वर्श में बदलती कीमतों के अनुरूप गरीबी की रेखा को समायोजित करने क ेलिए खेतिहर मजदूरों की मजदूरी के मूल्य सूचकांकों का प्रयोग किया है। श्री अहलूवालिया के अनुमान के अनुसार 56–57 में ग्रामीण क्षेत्र की जनता का 54.1 प्रतिषत गरीबी की रेखा के नीचे जनता थी। यह प्रतिषत वर्श 60–61 में 38.9 प्रतिषत रह गया और 73–74 में यह बढ़कर 46.1 प्रतिषत हो गया ।

5. योजना आयोग के गरीबी के अनुमान –

योजना आयोग में छठवीं पंचवर्शीय योजना में ग्रामीण जनता के लिए गरीबी की रेखा 79–80 की कीमतों पर 77 रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह परिभाशित की थी। इसके आधार पर योजना आयोग में अनुमान लगाया कि 1977दृ78 में 50.82 प्रतिषत ग्रामीण जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे थी जबकि 72–73 में यह प्रतिषत 54.09 प्रतिषत थी । षहरी क्षेत्रों में गरीबी की रेखा 1979–80 की कीमतों पर 88 रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह निर्धारित की गई और इसके आधार पर 77–78 में 38.19 षहरी क्षेत्र की जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे थी और 72–73 में यह प्रतिषत 44.22 था और षहरी तथा ग्रामीण दोनों प्रकार के गरीबों को एक साथ लेने पर 77–78 में देष की जनसंख्या का 48.13 प्रतिषत भाग गरीबी की रेखा के नीचे था । योजना आयोग ने 89–90 में गरीबी की रेखा के नीचे रहने वालों का प्रतिषत 38.39 आंका। सातवीं पंचवर्शीय योजना 85दृ90 में वर्श 83–84 के लिए गरीबी के अनुमान राश्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण पर आधारित है। सातवीं पंचवर्शीय योजना के अनुसार 83–84 में 40.2 प्रतिषत ग्रामीण जनता गरीबी रेखा से नीचे थी । इस प्रकार योजना आयोग का यह कथन था कि 77–78 से 83–84 के बीच गरीबी में कमी आयी है ।

6. विश्व बैंक के अनुमान

विश्व बैंक ने ”भारत, निर्धन, रोजगार एवं सामाजिक सेवाएंश 1979 में गरीबी की रेखा निर्धारित करने के लिए योजना आयोग की विधि को ही आधार बनाया ।

विश्व बेंक के अनुसार 1977–78 के लिए प्रचलित कीमतों पर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 55.2 रूपये और षहरी क्षेत्रों के 68.6 रूपये और 1985 के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के लिए रूप 89 और षहरी क्षेत्रों के लिए रूपये 11.2 निर्धनता रेखा निर्धारित की गई । विश्व बैंक ने निर्धन व्यक्तियों के अनुमान गरीबी की रेखा के 75 प्रतिषत व्यक्तियों के अनुमान को आधार बनाकर लगाए हैं। इसके आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में वर्श 1970 में 53 प्रतिषत, 1983 में 44.9

प्रतिषत और 1988 में 44.7 प्रतिषत तथा षहरी क्षेत्रों में 1970 में 45.5 प्रतिषत 1983 में 36.4 प्रतिषत और 1988 में 33.6 प्रतिषत गरीबी बताई गई है। इस प्रकार 1970, 1983 और 1988 में ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता में गिरावट हुई है। निरपेक्ष रूप से जनसंख्या में वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन जनसंख्या 1970 में 23. 6 प्रतिषत थी जो 1988 में 25.2 प्रतिषत हो गई ।

गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाली षहरी जनसंख्या का अनुपात 1970 में 45.5 था जो कि 1983 में 36.4 प्रतिवर्श और 1988 में और गिरकर 33.6 रह गया। इस प्रकार देखा जाये तो षहरी निर्धन व्यक्तियों की संख्या जो 1970 में 5.05 करोड़ थी वह 1983 में 6.46 करोड़ और 1988 में बढ़कर 7 करोड़ हो गई । गरीबी का कुल अनुपात 1970 में 52 प्रतिषत था जो 1988 में गिरकर 40 प्रतिषत रह गया लेकिन कुल संख्या में यह 1970 में 28.7 प्रतिषत जो बढ़कर 1988 में 32.2 प्रतिषत हो गया ।

भारत में जनसंख्या का अनुपात वर्श 1970 में 31 था और वर्ष 1988 में इसमें गिरावट आई और यह गिरकर 19 रह गई है ।

अनुसूचित जाति तथा जनजातियों का ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता का अनुपात एक तिहाई था और अति निर्धनों का 38 प्रतिषत तथा षहरी क्षेत्रों में निर्धनों का अनुपात 13 प्रतिषत और अति निर्धनों में 15 प्रतिषत था ।

मजदूरी पर आश्रित परिवारों के व्यक्तियों का ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनों का अनुपात वर्श 1983 में लगभग 46 प्रतिषत था ।

गरीबी के कारण

विश्व में अनेक राष्ट्र गरीबी की समस्या से जूझ रहे हैं। अपने देश में भी गरीबी की समस्या सबसे बड़ी है समस्या है और जन सामान्य इसके कारण अनेक कठिनाइयों को झेल रहा है। भारत में गरीबी लोगों के दुःखों का बहुत बड़ा कारण है और इस देष की बहुत बड़ी जनसंख्या इस गरीबी के कारण अनेक कठिनाईयों

का सामना कर रही है। समग्र रूप से विचार करने पर देखा जाये तो जिन कारणों से गरीबी होती है उनमें मुख्य कारण निम्न प्रकार से हैं –

1. रोजगार में धीमी वषद्धि –

भारत में श्रमिकों की संख्या में तेजी से वषद्धि हुई है जबकि रोजगार के अवसरों में उतनी तेजी से वषद्धि नहीं हुई है। इसके मुख्य रूप से दो कारण रहे हैं। एक तो विकास की दर काफी धीमी रही जिसके कारण पर्याप्त पूंजी निर्माण के फलस्वयप अपेक्षित मात्रा में उत्पादक रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हो सके। इसके साथ ही देष में पूंजी उत्पादन अनुपात ऊंचा होने के कारण उत्पादन मात्रा भी नहीं बढ़ी है, जिसका परिणाम यह हुआ की रोजगार के अवसर बहुत कम हुए तथा जिस मात्रा में पूंजी का उत्पादन बढ़ाने की अपेक्षा की गई थी, वह भी उस अनुपात में नहीं हुआ, इस कारण गरीबी का फैलाव हुआ और गरीबों की संख्या बढी ।

2. निम्न आय अर्जक परिसम्पत्तियां

रोजगार की कमी के कारण जहां मजदूरी नहीं बढ़ी वहीं पर आय अर्जक परिसम्पत्तियों के अभाव में मजदूरी भिन्न आय भी नगण्य बनी रही और इसका परिणाम यह हुआ कि देष में सम्पत्ति का असमान वितरण होने के कारण गरीबी व्यक्तियों के पास आय नहीं के बराबर रही। फलस्वरूप निर्धन व्यक्तियों की कुल आय में मजदूरी भिन्न आय जैसे कि किराया, ब्याज, लाभ आदि का नगण्य योगदान बना हुआ है। इसका परिणाम यह हुआ कि रोजगार के अवसर भी कम हुए और पूंजी की उपलब्धता भी कम हुई जिससे नये पूंजी बढ़ाने के अवसर भी नहीं मिले और गरीबी बढ़ी ।

3. निम्न आय उपार्जन –

अपर्याप्त उत्पादक रोजगार तथा परिसम्पत्तियों के अभाव के अतिरिक्त एक बात यह है कि जिन कार्यों में निर्धन व्यक्ति लगे होते हैं वहां षोशण के कारण उनकी आय कम होती है। विषेश रूप से अव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रों में ऐसा होता है जैसे कि खेती, लघु उद्योग आदि इन क्षेत्रों में श्रमिक

मजदूर संघ के रूप में पर्याप्त रूप से संगठित नहीं होते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि मिल–मालिक मजदूरों का षोशण करते हैं और उनको जो वास्तविक मजदूरी मिलनी चाहिए उससे कम मजदूरी देने में सफलता पा जाते हैं। इस प्रकार यह गरीबी का एक कारण उत्पन्न होता है ।

गरीबों के लिए अपर्याप्त जन सेवाएं

रोजगार मजदूरी एवं अन्य आय के कम होने की स्थिति में जन साधारण का पूंजी उपभोग बढ़ नहीं पाया जिसका परिणाम यह हुआ है कि गरीब लोगों को सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति ही अपर्याप्त बनी रही। इन सबका कारण यह रहा है कि गरीबों के लिए अनेक आवष्यक सेवाओं जैसे पेयजल, सफाई, स्वास्थ्य, प्राथमिक और प्रौढ़ षिक्षा आदि को अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता दी जाती रही है। इसके फलस्वरूप इनका वांछित दर से विस्तार संभव नहीं हो सका है और इनका वांछित दर से पर्याप्त विस्तार नहीं होने के कारण इनको जो मिलने वाले लाभ थे वे भविश्य में मिलने वाले लाभों से एक वर्ग हमेषा अछूता रहा। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से जो लाभ मिलने चाहिये उससे भी वे वंचित हो गये और यह भी गरीबी का एक कारण बना ।

5. जनसंख्या में भारी वषद्धि–

गरीबी के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण भारी जनसंख्या की वषद्धि भी रही है । जनसंख्या में भारी वषद्धि होने के कारण गरीबी लोगों के उस भाग पर और भी प्रतिकूल असर पड़ा है। आबादी बढ़ने के कारण परोक्ष रूप से ऐसे परिवारों की आर्थिक स्थिति का और भी नुकसान हुआ है। दूसरी ओर परोक्ष रूप से इनके बचत और निवेष में भी रूकावटें पैदा की गई। इससे आर्थिक विकास की गति मन्द पड़ जाती है । फलस्वरूप गरीबी के समस्या और अधिक बढ़ जाती है। इसके साथ ही विकास की जो दर है वह गरीबी के कारण उन लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाती है जो कि निर्धारित की जाती है और मूलभूत सुविधाओं के लिए यदि प्रयास कर के सफलता प्राप्त करने का लक्ष्य भी पाया जाता है तो अधिक संख्या में आबादी बढ़ जाने के कारण वह यहां भी अपर्याप्त रह जाती है। इस प्रकार यदि यह कहें कि इस गरीबी का सबसे बड़ा कारण जनसंख्या की अबाध और अत्याधिक वषद्धि है तो यह कहना अतिष्योक्ति नहीं होगी।

इस प्रकार गरीबी अपने आप में एक ऐसा षब्द है जिसे परिभाशित करना बहुत कठिन है। गरीबी को हम एक सामाजिक अवस्था कह सकते हैं, जिसमें समाज का एक वर्ग अपनी अनिवार्य आवष्यकताओं की पूत्रि करने में भी अक्षम होता है । जब समाज का एक तबका अपने जीवन स्तर की न्यूनतम आवष्यकता की इन परिस्थितियों में जीने के लिए बाध्य होता है वह गरीबी में जीने वाले समाज के रूप में या वर्ग के रूप में जाना जाता है। इससे स्पश्ट हो जाता है कि तीसरी दुनिया के अधिकतर देष जहां रहने वाले लोगों को उनके न्यूनतम जीवन स्तर की सुविधायें उपलब्ध नहीं होतीं वे गरीबी का जीवन जी रहे होते हैं। इसके साथ ही

यह भी उल्लेखनीय है कि विकासषील देष योरोप और अमेरिका में भी कुछ हिस्सों में इस प्रकार की गरीबी, समाज में देखने को मिलती है। इस प्रकार गरीबी को हम जीवन–यापन की एक अवस्था के रूप में भी कह सकते हैं ।

यदि गरीबी को हम समाज के किसी वर्ग के रूप में परिभाशित करना चाहें या देखना चाहें तो हम यह कह सकते हैं कि जीवन में जो अच्छा जीवन जीने के लिए आवष्यकताओं या वस्तुओं की उपलब्धता है उनका अभाव ही गरीबी कहलाता है। इससे यह स्पश्ट हो जाता है कि गरीबी की परिभाशा विभिन्न देषों में एक जैसी परिभाशित नहीं की जा सकती । यदि हम संयुक्त राज्य अमेरिका (यू. एस. ए.) की गरीबी की अवस्था को देखना चाहें तो उनकी गरीबी की स्थिति भारतवर्श की गरीबी की स्थिति से भिन्न होगी । उसका कारण होगा कि जीवन स्तर में न्यूनतम आवष्यकताओं की पूर्ति का स्तर अमेरिका में बहुत अधिक है जबकि यह स्तर भारतवर्श में बहुत कम होता है । अतः हम इसे इस रूप में भी कह सकते हैं कि गरीबी की परिभाशा में जो उसकी न्यूनतम आवष्यकताओं और जीवन स्तर का स्वरूप है वह उस देष के औसत नागरिकों को मिलने वाली सुविधाओं से भी जोड़कर परिभाशित किया जाता है ।

114 हिन्दी भाशा एवं समसामयिकी –

यदि समाज के एक बड़े तबके को हम जीवन जीने की न्यूनतम आवष्यकताओं की प्रतिपूर्ति नहीं कर पाते और वह वर्ग जीवन–यापन के न्यूनतम स्तर को भी समाज के अधिकतम लोगों को मिलना चाहिए उसे हम गरीबों के रूप में परिभाशित कर सकते हैं। हम यदि देखें तो अच्छे जीवन स्तर का अभाव या उससे वंचित रहने को ही गरीबी कहा जा सकता है। इन सब बातों को यदि सामूहिक रूप से मिला लिया जाये गरीबी को हम इस प्रकार से परिभाशित कर सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में उसके जीवन–यापन की न्यूनतम आवष्यकताओं जैसे

अनाज, दाल, दूध, सब्जियां, मक्खन और जितनी कैलोरी की पूर्ति करने वाले भोजन लेने की आवष्यकता होती है उससे यदि वह वंचित रह जाता है या उसका स्तर उससे कम होता है तो उसे गरीबी की श्रेणी में माना जायेगा और यदि देष में इस प्रकार की जीवन–यापन करने वाले लोगों की संख्या अधिक है तो वह गरीबी की रेणी में आने वाला देष कहलाएगा। इसके विपरीत यदि समाज का एक विषेश वर्ग अपनी आवष्यकताओं से बहुत वस्तुएं प्राप्त करता है। वैभवषाली ढंग से जीवन जीता है। उस स्थिति में यहां पर गरीबी अपना रंग और भी विकृत रूप में दिखलाती है या गरीबी ज्यादा परिलक्षित होती है ।

अर्थषास्त्र के रूप में यदि हम देखें तो पाते हैं कि गरीबी को हम दो प्रकार से विभाजित करके जांच सकते हैं। एक सार्वभौम और दूसरी सापेक्ष या इसको इस तरह से भी कहते हैं कि एक निरपेक्ष और दूसरी सापेक्ष ।

1.

निरपेक्ष गरीबी

निरपेक्ष गरीबी से आषय यह होता है कि भौतिक रूप से षरीर के लिए जो न्यूनतम आवष्यकताएं अनाज, दाल, दूध और मक्खन जो आवष्यक होती है, वह पैसे के अभाव के कारण उनकी, उपलब्ध संभव नहीं हो पाती है अर्थात् जीवन के लिए जो न्यूनतम आवष्यकताएं हैं उनकी प्रतिपूर्ति व्यक्ति अपने जीवन में नहीं कर पाता है तो उसे निरपेक्ष गरीबी के रूप में कहा जाता है या समाज में मूल जनसंख्या और उसकी आय तथा व्यय सबको देखते हैं और यह पाते हैं कि औसत आवष्यकता जितनी होती है उससे कम उस समाज की आय और व्यय होता है या न्यूनतम जीवन स्तर का जो मापदण्ड है उसके अनुरूप यह आय और व्यय नहीं छू पाते हैं तो यह गरीबी की रेखा के नीचे का जीवन स्तर कहलाता है ।

2. सापेक्ष गरीबी

सापेक्ष गरीबी के रूप में यह कहा जाता है कि यदि कुल आबादी के विभिन्न वर्गों की आय का वितरण इस प्रकार से होता है कि समाज में 5 से 10 प्रतिषत लोगों की आय और व्यय बहुत अधिक होता है और 5 से 10 प्रतिषत जो सबसे कम आय और व्यय वाले होते हैं तो इन 5 से 10 प्रतिषत लोगों के बीच में तुलना की जाती है और उसके आधार पर सापेक्ष गरीबी को निकाला जाता है। इस प्रकार 5 से 10 प्रतिषत उच्च्य वर्ग और 5 से 10 प्रतिषत तक गरीबी में रहने वाले लोगों में आय की जो तुलना की जाती है वह आय के आधार पर तुलना की जाती है। उन देषों में जहां सम्पन्नता बहुत अधिक है वहां यह अंतर आसानी से देखा जा सकता है, लेकिन अविकसित राश्ट्रों में या विकासषील देषों में गरीबी का बहुत बड़ा कारण यह अंतर भी है ।

बेरोजगारी की अवधारणा

भारत एक अविकसित देष है जिसकी विकासषील अर्थ नीति है । इस प्रकार से भारत में बेरोजगारी की समस्या उन औद्योगिक रूप से विकसित राश्ट्रों की अपेक्षा भिन्न है । लार्ड केनिस ने बताया था कि विकसित अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी मांग की कमी का परिणाम है। इसका आषय स्पश्ट है कि यदि विकसित अर्थव्यवस्था

में मषीनें बंद हो जाएं और श्रमिकों की मांग कम हो जाये और इस मांग के कम होने के कारण उत्पादन बहुत लम्बे समय तक नहीं हो सकता है, इस कारण उन्होंने कहा कि बेरोजगारी के उपचार के लिए आवयक है कि मांग अधिकता में रहे जिसके कारण उद्योगों में उत्पादन अधिक हो और मषीनों की गति धीमी न हो, वस्तुओं और सेवाओं की मांग पर्याप्त रूप से बनी रहे ।

गरीबी और बेरोजगारी

देष के आर्थिक विकास में बेरोजगारी अनेक समस्याएं उपस्थित करती है तथा यह विकास की गति को मंद कर देती है। रोजगार बढ़ने से अर्थव्यवस्था की आय में भी वष्द्धि हो जाती है। जन साधारण की बढ़ी हुई आय स्थानीय रूप से उत्पादित आधारभूत उपभोक्ता वस्तुओं की मांग में वष्द्धि करती है ।अविकसित एवं अर्द्ध विकसित राश्ट्रों में बेरोजगारी को एक सामाजिक बुराई माना जाता है जिससे समाज के विकास पर अनेक बुरे प्रभाव पड़ते हैं ।बेरोजगारी से आर्थिक विकास अवरूद्ध हो जाता है तथा विकास की गति भी मंद पड़ जाती है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि श्जब मांग के योग्य एवं मांग के इच्छुक व्यक्तियों को प्रचलित मजदूरी दरों पर कार्य नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति को बेरोजगारी की स्थिति कहते हैं ।

यदि गंभीरता से देखा जाये तो बेरोजगारी को समझने के लिये हमको रोजगार को समझना आवष्यक हो जाता है और यदि हम रोजगार को अच्छी तरह से समझ लेंगे तो बेरोजगारी को समझना बहुत आसान हो जाता है। सबसे पहले हम यह देखेंगे कि रोजगार की कितनी श्रेणियां होती हैं ।

रोजगार को हम चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं

1. पूर्ण रोजगार
2. अदृष्य बेरोजगारी
3. सामयिक बेरोजगारी
4. प्राविधिक बेरोजगारी

यदि हम पूर्ण रोजगार और अदृष्य बेरोजगारी को समझ लें गे तो सामयिक और प्राविधिक बेरोजगारी अपने आप स्पश्ट हो जाती है ।

पूर्ण रोजगार –

पूर्ण रोजगार के संबंध में विभिन्न अर्थषास्त्रियों ने अपने अलग–अलग विचार रखे हैं। कीन्स ने अनिच्छुक बेरोजगारी के अभाव को पूर्ण बेरोजगारी कहा है । कीन्स ने अनिच्छुक बेरोजगारी की ऐसी

ज स्थिति बताई है जिसमें मुद्रा में मजदूरी की तुलना में वस्तुओं की मजदूरी के मूल्य में वषद्धि होने से वर्तमान मुद्रा मजदूरी पर कार्य करने के इच्छुक कुल मजदूरों की पूर्ति और उस मजदूरी पर कुल मांग वर्तमान रोजगार की मात्रा की तुलना में अधिक होगी । पूर्ण रोजगार एक काल्पनिक स्थिति है, इसे प्राप्त करना संभव नहीं हो पाता है। अतः पूर्ण रोजगार की स्थिति उस समय पहुंची है जब वास्तविक मजदूरी रोजगार की समान्त अनुपयोगिता के बराबर हो जाती है और इसके कारण समाज में कोई भी श्रमिक वास्तविक मजदूरी से कम पर कार्य करने को तत्पर नहीं होते हैं। यदि कोई श्रमिक इस मजदूरी पर कार्य करने को तैयार नहीं हो तो यह स्पश्ट हो जाता है कि उसको रोजगार में दिलचस्पी नहीं है, इस कारण से वह स्वेच्छा से बेरोजगार है। इसके साथ ही कीन्स ने पूर्ण रोजगार की दूसरी परिभाशा भी दी है। उनका कथन है कि – श्पूर्ण रोजगार एक ऐसी स्थिति है जिसमें कुल रोजगार उत्पादन की प्रभावषाली मांग में वषद्धि करके पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है।

विलियम विवर्ज ने पूर्ण रोजगार की अधिक विस्तषत परिभाशा बताई है। उनके अनुसार श्पूर्ण रोजगार का अर्थ बेरोजगार व्यक्तियों की तुलना में अधिक रिक्त स्थान रखना । इसका अर्थ यह है कि नौकरी उचित मजदूरी पर उपलब्ध है और इस प्रकार ऐसे स्थान पर केंद्रित है कि बेरोजगार व्यक्ति उन्हें सरलता से प्राप्त करने की आषा रख सकते हैं।

मिसेज रॉबिन्सन ने पूर्ण रोजगार को भिन्न प्रकार से परिभाशित किया है । उनके मतानुसार श्संकुचित अ में यह कहना उचित लगता है कि पूर्ण रोजगार कभी भी नहीं प्राप्त किया जा सकता है जबकि संक्रांति काल विद्यमान है बजाये इसके कि पूर्ण रोजगार को प्रभावषाली अर्थ में प्रयोग किया, जिसमें इसे प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी बेरोजगारी जो विद्यमान रहती है उसे संक्रांतिकाल के रूप में ही रखें। इस प्रकार व्यवहार में पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त करना संभव नहीं होता । चाहे वह राश्ट्र कितनी ही अधिक विकसित स्थिति में क्यों न हो।श लर्नर ने कीन्स की ही भांति पूर्ण रोजगार की परिभाशा दी है। उनके अनुसार श्रोजगार के उस स्तर को पूर्ण रोजगार कहते हैं जहां पर व्यय में कोई वृद्धि उस प्रभावी मजदूरी व मूल्यों में स्फूर्त प्रवृत्ति की होती है ।

देष में पूर्ण रोजगार प्राप्त करना योजना का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य रहा है, क्योंकि वास्तविक जगत में पूर्ण रोजगार को प्राप्त करना कठिन कार्य माना गया है । प्रचलित मजदूरी की दर पर यदि समस्त व्यक्ति रोजगार पा जाते हैं तो उसे रोजगार की स्थिति में कहा जाता है। इसमें रोजगार प्राप्ति की दृश्टि से केवल उन व्यक्तियों को ही सम्मिलित किया जाता है जो प्रचलित एवं विद्यमान मजदूरी पर कार्य करने को तत्पर रहते हैं । केवल वे व्यक्ति ही बेरोजगार माने जाते हैं जो अपनी इच्छा से कार्य करनेक को तत्पर नहीं हों । इस प्रकार जो व्यक्ति काम मिलने पर भी काम नहीं करे उसे बेरोजगार नहीं माना जा सकता । पूर्ण रोजगार का यह कभी भी अर्थ नहीं होता कि वहां प्रारंभ की बेरोजगारी पूर्णतः अनुपस्थित है। प्रारंभ की बेरोजगारी तो अनिवार्य रूप से पाई ही जायेगी क्योंकि समाज में कुछ न कुछ व्यक्ति इस प्रकार केम अवष्य होंगे जो कि अच्छी मजदूरी और प्रलोभन मिलने के बाद भी किसी न किसी कारण कार्य करने के इच्छुक नहीं होंगे और बेरोजगार रहेंगे। कुछ लोग आलस्यवष् या अपने स्थान के मोह के कारण मजदूरी एवं आकर्शक प्रलोभन प्राप्त होने पर भी रोजगार प्राप्त नहीं करते और सदैव बेरोजगार बने रहते हैं । इस प्रकार से समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हो सकते हैं जो कि एक काम को छोड़कर दूसरे की तलाष में लगे रहते हैं और उस बीच के समय में वे बेरोजगार बने रहते हैं।

बेरोजगारी की प्रकृति –

बेरोजगारी की प्रकृति विकसित और अर्द्धविकसित राश्ट्रों में भिन्न–भिन्न प्रकार की पाई जाती है। विकसित राश्ट्रों में व्यापार चक्रों के कारण बेरोजगारी उत्पन्न होती है लेकिन अविकसित राश्ट्रों में चक्रिय बेरोजगारी बहुत महत्व नहीं रखती है । मंदी होने पर मौद्रिक आय तो प्रभावित होती है परन्तु उत्पादन व वास्तविक आय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । इन राश्ट्रों में आत्मनिर्भरता पाई जाती हे, जिससे आय में कोई कमी नहीं आ पाती है, और उत्पादक अपने उत्पादन का अधिकांष भाग उपयोग करके उसका एक अंष ही बाजार में बेचता है । व्यापार चकों में वास्तविक आय में कोई प्रभाव नहीं पड़ता । विकसित एवं अविकसित राश्ट्रों में कृशि उत्पादन प्रायः स्थित रहता है । कृशि उपज की कुल लागत में स्थिर लागत का अंष अधिक व परिवर्तित लागत का अंष बहुत कम होता है, जिससे मंदी काल में भी मूल्य सीमान्त लागत से नीचे नहीं गिरते । परिणाम स्वरूप उत्पादन को नियंत्रित करना अलाभकारी माना जाता है । कृशि का परिवर्तनकारी स्वभाव होने के कारण यह संभव नहीं है कि उत्पादन को सीमान्त या नियंत्रित करके उसके मूल्य में वष्द्धि कर दी जाये जबकि यह बात औद्योगिक वस्तुओं के संबंध में आसानी से संभव हो जाती है। कृशि के क्षेत्र में विनियोजित

(प्दचनज) और प्राप्ति (व्नजचनज) की राषि में समन्वय का अभाव बहुत होता और अल्पकाल में उत्पादन को सीमित करके व्यवहार बहुत कम आय षून्य होती है। इसके विपरीत कृशि में पूर्ति जोड़कर नीचे की ओर गिरते हुए होते हैं तथा मंदी काल में पूर्ति में वष्द्धि एवं माल में कमी हो जाती है। विकसित राश्ट्रों में मजदूरी प्राप्त करने वालों की संख्या बहुत अधिक होती है और इन राश्ट्रों में मजदूरी की दरों में लोच का अभाव पाया जाता है क्योंकि सामाजिक सम्पत्तियां, अधिनियम, श्रमिक संघ आदि का अधिक प्रभाव पड़ता है । जिन व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त रहता है उनकी आय अपरिवर्तित रहती है। इसके साथ ही अर्द्ध विकसित राश्ट्रों के यहां भी यह स्थिति होती है। वहां की अधिकांष जनता स्वयं नियोजित होती

सामाजिक बेरोजगारी

यह उस स्थिति को बताती है कि जिसमें पूरे समय के लिए कार्य नहीं मिलता है । कार्य किसी मौसम में ही मिलता है और मौसम समाप्त होने पर कार्य नहीं मिलता है जैसा कि चीनी मिल में गन्ने की कटाई के समय तथा कृशि में मौसम के अनुसार कार्य होता है। इसी के साथ–साथ एक सीमित अवधि तक उत्पादन करने वाले उद्योग और विभिन्न अवसरों पर उत्पादित किये जाने वाली खेती पर भी यह स्थिति लागू होती है । अपना देष भी अर्द्ध विकसित राश्ट्रों की श्रेणी में आता है । अतः यह जानना आवष्यक है कि अर्द्ध विकसित राश्ट्रों में बेरोजगारी किन–किन रूपों में पाई जाती है ।

अर्द्ध विकसित राश्ट्रों में बेरोजगारी – अर्द्ध विकसित राश्ट्रों में बेरोजगारी निम्न रूप में पाई जाती है

ऐच्छिक बेरोजगारी

घर्शणात्मक बेरोजगारी

ढांचागत बेरोजगारी

ऐच्छिक बेरोजगारी

जब श्रमिक किसी प्रचलित दर पर स्वेच्छा से कार्य करने को तत्पर न हो तो ऐसी बेरोजगारी को ऐच्छिक बेरोजगारी कहेंगे । इसमें परिस्थितियां अनुकूल होने पर भी व्यक्ति ऊँची मजदूरी की मांग करता है तथा काम मिलने पर भी काम करने को तत्पर नहीं रहता ।

घर्शणात्मक बेरोजगारी

जब घर्शणात्मक बेरोजगारी विद्यमान हो तो उसे प्रायः पूर्ण रोजगार कहा जा सकता है,

परन्तु यह असंभव हे कि घर्शणात्मक बेरोजगारी के विचार को सही रूप से बताया जा सके तो भी घर्शणात्मक के कारण हुई बेरोजगारी एवं प्रभावषाली मांग की कमी के कारण बेरोजगारी का अंतर करने के लिये अनुसूचित नियम का बनना असंभव है। इसे हम इस प्रकार से भी बता सकते हैं कि देष में कुछ ऐसे उद्योग होते हैं जिनकी मांग बढ़ती है और कुछ अन्य उद्योगो की मांग घटती है। मांग के इस प्रकार से परिवर्तन होने से श्रमिक काम की तलाष में एक उद्योग से दूसरे उद्योग में जाने का प्रयास करते हैं परन्तु रोजगार बदलने में उन्हें समय लग जाता है और इस बीच में जब वे पहला रोजगार छोड़कर दूसरे उद्योग में रोजगार नहीं करते तब तक बीच में बेरोजगार रहते हैं । इस प्रकार की बेरोजगारी को ही

संकांतिकालीन बेरोजगारी कहते हैं। इस प्रकार श्जो बेरोजगारी नौकरी की सामान्य अपर्याप्तता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है उसे अपस्फीति बेरोजगारी कह सकते हैं और ऐसी बेरोजगारी जो श्रमिकों की उन्नति के कारण हो उसे घर्शणात्मक बेरोजगारी कहते हैं अर्थात् घर्शणात्मक बेरोजगारी वह है जो पूर्ण रोजगार से उत्पन्न होती है।"

ढांचागत बेरोजगारी

जब किसी उद्योग से श्रमिक हटाये जाते हैं परन्तु हटाये गये श्रमिक अन्य उद्योगों में इस कारण जाना नहीं चाहते या जाने में असमर्थ होते हैं क्योंकि वहां मजदूरी अपेक्षाकृत कम है या उसमें विषेश रूप से प्रषिक्षण की आवष्यकता है या पुराने उद्योग में ही बने रहते हैं तब ऐसी बेरोजगारी को ढांचागत बेरोजगारी कहते है

अदृष्य बेरोजगारी

अदृष्य बेरोजगारी का अर्थ है कि विषेश स्थिति में कृशि में श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता षून्य हो । अतः श्रम का कुल उत्पादन घटाये बिना ही कुछ अतिरिक्त श्रमिकों को यदि कृशि से हटा लिया जाये तो उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा । अर्द्ध विकसित राश्ट्रों के आर्थिक विकास के अभाव में राश्ट्र के विषेशज्ञों ने अदृष्य बेरोजगारी के लिये अर्द्ध बेरोजगारी षब्द का प्रयोग किया है । जब किसी उद्योग में श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता षून्य हो और उसमें ऐसे श्रमिकों को हटा देने से भी उद्योग की कुल उपज में कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तो ऐसे हटाये गये श्रमिक अदृष्य बेरोजगार समझे जायेंगे। ऐसी बेरोजगारी प्रायः वहां पाई जाती है जहां, वैकल्पिक या पूर्ण रोजगार के अभाव में अधिक श्रमिक अकृशि में लगे हों । यदि सहज रूप से देखा जाये तो अदृष्य बेरोजगारी निम्न दो रूपों में दिखाई पड़ती है रू–

1. कम उत्पादक कार्य हो जाना

व्यक्ति को उसकी क्षमता की तुलना में कम उत्पादकता कार्यों में रोजगार प्रदान करना। दूसरे षब्दों में व्यक्ति द्वारा पाई जाने वाली योग्यता का कम उपयोग करने पर जो परिस्थिति पैदा होती है उसका अदृष्य बेरोजगारी की श्रेणी में रखा जा सकता है

2. अधिक व्यक्तियों को रोजगार देना

किसी कार्य को करने के लिये जितने व्यक्ति आवष्यक और पर्याप्त होते हैं उसकी तुलना में ज्यादा व्यक्तियों को कार्य करने के लिये लगा दिया जाता है तो इसे भी अदृष्य बेरोजगारी के रूप में कहा जा सकता है ।

श्रीमती रॉबिन्सन के अनुसार श्अदृष्य बेरोजगारी एक ऐसी स्थिति है जिसमें श्रमिकों को कम उत्पादन कार्य में लगाया जाता है क्योंकि आर्थिक कार्य में चक्रिय घटना के कारण उन्हें अपनी नियमित नौकरी छोड़नी पड़ती हैं । अर्द्ध विकसित राश्ट्रों की तुलना में अदृष्य बेरोजगारी की प्रकृति में भिन्नता पाई जाती हैं, जहां यह चक्रिय न होकर दीर्घकालीन होती है। यह प्रायः श्रमिकों के होने पर स्वयं नियोजित ‘ैमसम्फ्उचसवलमक) व्यक्ति पर लागू होती है और प्रभावषाली मांग की कमी के कारण दृष्य न होकर पूरक साधनों की कमी के कारण अदृष्य हो जाती है ।

ए. के. सेन का मत है कि श्अदृष्य बेरोजगारी सामान्य रूप से प्रति व्यक्ति के कार्यकारी घण्टों के क्रम संख्या का रूप धारण कर लेती है ।

अदृष्य बेरोजगारी के विचार को वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक बनाने का श्रेय प्रोफेसर नरकसे को है। नरकसे के मतानुसार श्अदृष्य बेरोजगारी प्रमुख रूप से अर्द्ध विकसित देषों में दृश्टिगोचर होती है। जहां पर जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है।

भारत में बेरोजगारी के कारण –

किसी भी देष में बेरोजगारी की समस्या सबसे बड़ी और दुःखद समस्या है। यदि देष के बेरोजगार लोगों को नवयुवकों को रोजगार उपलब्ध नहीं होता और काम की तलाष में इधर–उधर भटकते रहते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उनके मन में कुण्ठा जाग्रत होती है और उनकी जीविकोपार्जन के लिये एक नई समस्या खड़ी हो जाती है और किसी न किसी प्रकार से अपनी तथा अपने कुटुम्ब की जीवन रक्षा के लिये वे इस प्रकार के कार्य करने को मजबूर हो जाते हैं जो कि अपराध की श्रेणी में आते हैं, इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि विभिन्न प्रकार के अपराधों की वषद्धि में बेरोजगारी की

गरीबी और बेरोजगारी

समस्या का भी बहुत बड़ा हाथ रहता है। भारत में भी बेरोजगारी की समस्या विकराल है और यहां लाखों नौजवान तथा श्रमिक रोजगार की तलाष में भटक रहे हैं । हमारे यहां बेरोजगारी के लिये निम्नलिखित कारणों को मुख्य रूप से जिम्मेदार माना जाता है

1. बढती जनसंख्या

बेरोजगारी में तीव्र गति से वषृद्धि का महत्वपूर्ण कारण बढ़ती जनसंख्या है, जो 2.1 प्रतिषत की दर से बढ़ रही है जबकि रोजगार की सुविधाएं इस दर से नहीं बढ़ रही है ।

2. दोशपूर्ण षिक्षा प्रणाली

देष में षिक्षित बेरोजगारी बढ़ने का मुख्य कारण हमारी दोशपूर्ण षिक्षा प्रणाली है। यहां षिक्षा सिद्धान्त प्रधान है जबकि व्यवसाय प्रधान होना चाहिए । यही कारण है कि यहां जून 1989 के अन्त में 1.75 लाख षिक्षित बेरोजगार थे जो हाईस्कूल या इनसे अधिक षिक्षा प्राप्त किए हुए

3. हस्तकला एवं उद्यमों की अवनति थे।

बेरोजगारी बढ़ाने में हस्तकला व लघु उद्योगों की अवनति ने भी काफी योगदान दिया है। इन उद्योगों की अवनति का प्रमुख कारण मषीनों के प्रयोग में वषृद्धि का होना है। इससे इन उद्योगों के श्रमिकों को भी अन्य कार्य देखने के लिए विवष होना पड़ा है जिससे बेरोजगारी में वषृद्धि हुई है।

4. त्रुटिपूर्ण नियोजन

देष में 1951 से नियोजन की पद्धति को अपनाया है, लेकिन दुर्भाग्यवष् यह नियोजन त्रुटिपूर्ण रहा है। इसमें रोजगार मूलक नीति का प्रतिपादन नहीं किया गया है। अतः बेरोजगारी बढ़ी है । नियोजन करने वालों ने इस दिषा में समुचित ध्यान नहीं दिया कि अपने देष की जनसंख्या किस गति से बढ़ रही है और किस प्रकार से अधिक जनसंख्या को रोजगार की आवष्यकता होगी । उनको अपनी नीतियों का नियोजन जिस प्रकार से अधिक रोजगार के लिये करना चाहिये था उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया । साम्यवादी देष चीन में अपने यहां से भी अधिक आबादी है लेकिन वहां पर नियोजन इस प्रकार से किया गया है कि अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलता है और श्रमिक षक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग करके कम मूल्य में वस्तुएं बनाकर विश्व बाजार में चीन अपने उत्पादन की अलग छाप छोड़ रहा है।

5. मन्द पूंजी निर्माण

देष में पूंजी निर्माण की गति मन्द रही है जिसके कारण उद्योगों, व्यवसायों व सेवाओं का विस्तार भी धीमी गति से हुआ है जबकि जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ने के कारण रोजगार सुविधाएं उस दर से नहीं बढ़ पायी है।

6. यन्त्रीकरण एवं अभिनवीकरण

भारत की गिनती विकासषील देष में होने के कारण यन्त्रीकरण एवं अभिनवीकरण करना पड़ रहा है। देष में स्वचालित मषीनें लगाई जा रही हैं । कृशि में यन्त्रीकरण बढ़ रहा है, इन सबके परिणाम स्वरूप बेरोजगारी बढ़ रही है ।

7. स्त्रियों द्वारा नौकरी

स्वतंत्रता से पूर्व बहुत थोड़ी–सी स्त्रियां नौकरी करती थीं लेकिन आज इनकी संख्या एवं प्रतिषत पहले से कहीं अधिक है। इससे पुरूशों में बेरोजगारी बढ़ी है । स्त्रियों में लगन, अध्ययन की क्षमता और कार्य के प्रति जवाबदारी अधिक है । अतः नौकरी में अब स्त्रियों को अधिक प्रमुखता प्रत्येक संस्थान द्वारा दी जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप पुरूशों की अपेक्षा स्त्रियों को काम करने के लिये ज्यादा पसन्द किया जा रहा है । इस कारण से पुरूशों के रोजगार के अवसर कम हुए हैं ।

8. विदेषों से भारतीयों का आगमन

पिछले कुछ वर्शों से भारत मूल के निवासियों को कुछ देषों से निकाला जा रहा है । इस देष में ब्रिटेन, लंका, यूगाण्डा, कीनिया तथा फिजी आदि प्रमुख हैं । इन देषों से भारतीयों के आने के कारण भी बेरोजगारी में वर्षद्धि हुई है

9. दोशपूर्ण दृश्टिकोण

इस देष में सरकारी नौकरी को ही इज्जत की दृश्टि से देखा जाता है। गैर–सरकारी नौकरी या स्वरोजगार को हेय दृश्टि से देखा जाता है । इस दोशपूर्ण दृश्टिकोण के कारण भी बेरोजगारी बढ़ी है ।

10. मजदूरी व उत्पादन में अन्तर

देष में नियोजन के कारण मुद्रा प्रसार बना हुआ है, जिससे मूल्य वर्षद्धि होती रहती है। इससे प्रभावित होकर श्रमिकों की मांग पर श्रमिकों के वेतन व भत्ते बढ़ा दिये जाते हैं, जिससे वस्तुओं की लागत और मूल्य बढ़ जाते हैं लेकिन वस्तुओं की मांग कम हो जाती है। इससे उत्पादन कम करने के कारण बेरोजगारी में वर्षद्धि हो जाती है ।

11. बाजार की अंतर्राश्ट्रीय स्वरूप की मान्यता

आज सम्पूर्ण दुनिया के देष एक–दूसरे पर इतने आश्रित हो गये हैं कि हर देष में अनेक देषों का माल आता है और अनेक देषों में जाता रहता है । यह प्रक्रिया भारत में भी चालू है जिसके परिणाम स्वरूप यह हो रहा है कि अनेक देषों से सस्ता माल अपने देष में आता हे। यहां पर श्रम और विभिन्न कारणों से उत्पादन

लागत मूल्य अधिक होता है जो कि विदेषी माल की अपेक्षा गुणवत्ता में भी कम होता है । विदेषी माल गुणवत्ता में अधिक अच्छा होने एवं कम मूल्य में उपलब्ध होने के कारण यहां के माल की खपत दिनोंदिन कम हो रही है। अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर भी यहां के माल को अधिक प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है। अतः वहां उसकी अधिक मांग नहीं हो पाती है। इस कारण से मांग कम होने से पूर्ति भी कम होती है, जिसके कारण उत्पादन कम करना पड़ता है । उत्पादन कम होने के कारण मजदूरों की छंटनी करनी पड़ती है। कम श्रमिकों की आवष्यकता होती है जिससे बेरोजगारी की समस्या लगातार पैदा होती है और इसका परिणाम यह हो रहा है कि कई लघु और छोटे उद्योग बंद हो रहे हैं जैसे कपड़ा या काटन मिलें बंद हो गई हैं या बंद होने की कगार पर हैं क्योंकि वे आज अपने आप को बाजार में सक्षम नहीं बना पा रही है। इस प्रकार दिनोंदिन उद्योगों के बंद होने से बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है। बेरोजगारी निवारण संबंधी सरकारी नीति –

भारत में बेरोजगारी दूर करने की दिषा में यद्यपि कुछ छोटे–मोट उपाय किये जाते रहे हैं तथापि सरकार द्वारा अब तक किसी ठोस दीर्घकालीन नीति को नहीं अपनाया गया है । वास्तव में जिन गणितीय मॉडलों को पंचवर्शीय योजनाओं के दस्तावेजों में आधार लिया गया है उनमें रोजगार को अधिकतमीकरण लिये जाने वाले चर के रूप में लिया ही नहीं गया है। फिर भी बेरोजगारी की समस्या के निवारण के लिये समय–समय पर कई कार्यक्रम लागू किये गये हैं। इनमें प्रमुख है रू–

1. रोजगार गारण्टी योजना

रोजगार गारण्टी योजना का प्रारंभ महाराश्ट्र सरकार द्वारा 1972–73 में किया गया था । इसका उद्देष्य ग्रामीण क्षेत्रों के सभी 18 वर्श से अधिक अकुषल लोगों को रोजगार प्रदान करना था । इन लोगों को निर्धारित मजदूरी के बदले अकुषल प्रकृति का कार्य कराया गया था । इस योजना के अन्तर्गत सरकार ने यह आश्वासन दिया था कि यदि 50 या अधिक व्यक्तियों का समूह रोजगार की मांग करता है तो सरकार 5 किलोमीटर के घेरे के अंदर परियोजना प्रारंभ करके उन्हें रोजगार प्रदान करेगी। षर्त यह थी कि काम उत्पादक होना चाहिए। श्रम पर खर्च और कच्चे माल व वस्तुओं पर खर्च में 60रू40 का अनुपात निर्धारित किया गया था। 1983–84 में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 16 करोड़ 45 लाख श्रम दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया ।

2. कार्य के बदले अनाज कार्यक्रम

काम के बदले अनाज कार्यक्रम का प्रारंभ 1977 में किया गया था, इस कार्यक्रम का उद्देष्य

गरीबी और बेरोजगारी रोजगार का सष्जन करना, आय और खानपान के स्तर में सुधार करना, टिकाऊ सामाजिक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना तथा ग्रामीण आधारित संरचना को मजबूत करना था । इस योजना के अन्तर्गत काम करने वाले लोगों को मजदूरी के एक अंष के रूप में अनाज उपलब्ध कराने की व्यवस्था था ऐसा इसीलिए संभव हो सका क्योंकि केन्द्रीय सरकार ने अपने भण्डारों में से राज्य सरकारों को काफी बड़ी मात्रा में अनाज उपलबध कराया। जब तक यह योजना लागू रही इससे न केवल बड़े पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराया अपितु वहां बहुत सी सामुदायिक परिसम्पत्तियों का भी निर्माण किया जिससे ग्रामीण जीवन में गुणात्मक सुधार करने में सहायता मिली।

3. राश्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम

काम के बदले अनाज कार्यक्रम को पुनर्गठित करके इसका नाम राश्ट्रीय ग्राम रोजगार कार्यक्रम रखा गया। इसको अक्टूबर 1980 में चालू किया गया। इस कार्यक्रम को भी केन्द्र द्वारा चालू की गई योजना के रूप में जिसमें 50 प्रतिषत सहायता प्राप्त थी, कार्यान्वित किया गया । यह कार्यक्रम ग्रामीण जनसंख्या के उन हिस्सों के लिये बनाया गया है जिनके पास साल के कुछ महीनों में कोई काम नहीं होता और जो अधिकतर मजदूरी रोजगार पर निर्भर करते हैं । यह कार्यक्रम छठीं पंचवर्शीय योजना तक लागू रहा और सातवीं योजना के एक हिस्से तक लागू रहा ।

लागू

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिला स्तर पर रोजगार योजना बनाई जाती है। इस योजना में यह अनुमान लगाया जाता है कि कितने लोग काम करना चाहेंगे और कितने रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकेंगे। इसकी सहायता के लिए आवष्यक है कि राज्य सरकारों के पास विभिन्न खण्डों में प्रारंभ करने लायक परियोजनाएं हों और इन परियोजनाओं को अलग–अलग छितरे हुए इलाकों में आवष्यकतानुसार किया जा सके। परियोजनाओं को तैयार करना एक सतत् प्रक्रिया है, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि इन परियोजनाओं को तैयार करने के लिये आवष्यक तकनीकी विषेशता विभिन्न विकासखण्डों के पास उपलब्ध नहीं है। योजना आयोग के अनुसार परियोजनाओं का चुनाव करते समय सामाजिक वानिकी, चारागाहों का विकास, भूमि व जल संरक्षण, सिंचाई, बाढ़ नियन्त्रण, गांवों में तालाबों का निर्माण व उनका रख–रखाव, स्कूलों और डिस्पेन्सरियों

के भवनों का निर्माण जैसी परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि गांवों के वातावरण तथा ग्रामीण लोगों को रहने की दषाओं में सुधार लाया जा सके ।

राश्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत छठीं योजना के दौरान 1620 करोड़ रूपये के प्रावधान के विरूद्ध केन्द्र तथा राज्य सरकारों का वास्तविक व्यय करोड़ रूपये था। सातवीं योजना के पहले तीन वर्शों (1985–86 से 1987–88) में इस कार्यक्रम पर 2,038 करोड़ रूपये खर्च किये गये और इसके परिणामस्वरूप 10, 831 लाख मानव विकास रोजगार अर्जित किया गया। इस योजना को 1989–90 में जवाहर रोजगार योजना में मिला दिया गया ।

4. राश्ट्रीय भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम

यह कार्यक्रम 1983 में प्रारम्भ किया गया ताकि भूमिहीन श्रमिकों के लिए रोजगार सुविधाएं पैदा की जा सकें। इस कार्यक्रम का उद्देष्य खेतिहर मजदूरों के परिवारों में से कम से कम एक सदस्य को साल में लगभग 100 दिन रोजगार उपलब्ध कराना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत खेतिहर मजदूरों को रोजगार प्रदान करने के उद्देष्य से आधारिक संरचना का निर्माण करने के कार्यक्रम बनाने थे । उदाहरण के लिये –

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों तथा मुक्त – बंधुआ मजदूरों के लिए इन्दिरा आवास योजना के अन्तर्गत मकानों का निर्माण,

सामाजिक वानिकी व फर्म वानिकी के कार्यक्रम,

ग्रामीण क्षेत्रों में षौचालयों का निर्माण तथा अन्य निर्माण कार्यक्रम जैसे लघु सिंचाई योजनाओं, भूमि व जल संरक्षण, गांवों में तालाब का का निर्माण, भूमि का विकास तथा बेकार पड़ी भूमि को कृशि योग्य बनाना, प्राथमिक स्कूलों के लिए भवनों का निर्माण आदि । 500 करोड़ रूपये वाले इस कार्यक्रम के पूरे वित्तीय साधन केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराने की व्यवस्था थी तथापि इसके कार्यान्वयन की जिम्मेदारी राज्यों को सौंपी गई।

सातवीं योजना के पहले तीन वर्शों के दौरान इस कार्यक्रम की प्रगति से पता चलता है कि इस पर 1,734 करोड़ रूपये खर्च किये गये और इससे 8,580 लाख मानव श्रम दिवस को रोजगार उपलब्ध कराया गया।

समन्वित ग्रामीण विकास कार्य

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम छठीं पंचवर्शीय योजना में प्रारंभ किया गया था और मूल रूप से गरीबी उन्मूलन के उद्देष्य से बनाया गया था, परन्तु विभिन्न परिसम्पत्तियों के निर्माण के माध्यम से यह कार्यक्रम एक स्व–रोजगार कार्यक्रम था । उदाहरण के लिए इसके जरिये प्राथमिक क्षेत्र में पषुपालन, रेषम कीट पालन तथा भूमि – आधारित गतिविधियों, द्वितीयक क्षेत्र में बुनाई, हाथकरघे इत्यादि के काम तथा तष्तीयक क्षेत्र में सेवा व व्यावसायिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया गया । छठीं पंचवर्शीय योजना में इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी विकासखण्ड में औसतन 3,000 परिवारों को सहायता प्राप्त करवानी थी। छठीं योजना में इस कार्यक्रम के लिए 1,500 करोड़ रूपये की व्यवस्था की गई और बैंकों से कहा गया कि चुने हुए परिवारों को ऋणों के माध्यम से 3,000 करोड़ रूपये उपलब्ध कराये

समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम के अधीन सातवीं पंचवर्शीय योजना में 1985 से 1988 तक 2.273 करोड़ रूपये की सहायता निर्धन वर्गों को उपलब्ध करायी गयी । इसके अतिरिक्त 3,682 करोड़ रूपये वित्तीय संस्थाओं से उधार के रूप में उपलब्ध कराये गये । 1991–92 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत सहायता प्राप्त परिवारों की संख्या 2.54 मिलियन थी ।

6. जवाहर रोजगार योजना

वित्त मंत्री के बजट भाशण 1989–90 में जवाहर रोजगार योजना का विचार दिया गया। इसके लिए साधन जुटाने के उद्देष्य से आयकर दाताओं पर कर निर्धारण वर्श 1990–91 से 50,000 रूपये से अधिक आय पर 8 प्रतिषत की दर से अधिभार लगाया गया। इसके अन्तर्गत राश्ट्रीय ग्राम रोजगार कार्यक्रम और ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम का विलय कर दिया गया। जवाहर रोजगार योजना के मुख्य लक्ष्य निम्न है

जवाहर रोजगार योजना का लक्ष्य प्रत्येक पंचायत तक पहुंचना है ।

इस कार्यक्रम का प्रषासन ग्राम पंचायत के अधीन होगा।

जवाहर रोजगार योजना में केन्द्र का भाग 80 प्रतिषत तथा राज्य का 20 प्रतिषत होगा ।

राज्य में वित्त के आवंटन का आधार निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या का अनुपात होगा ।

इसके बाद जिला स्तर पर साधन के आवंटन के लिए पिछड़ेपन की कसौटियों को आधार

बनाया जाएगा ।

इसके तहत् गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों के कम से कम एक सदस्य की 50 से 100 दिन के रोजगार की गारण्टी होगी ।

योजना का मुख्य लक्ष्य यह है कि रोजगार का 30 प्रतिषत स्त्रियों के लिए सुरक्षित होगा ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. समाज में व्यापक निर्धनता से आप क्या क्या समझते है ?
2. गरीबी रेखा से क्या आषय है ?
3. ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्रों की गरीबी की मुख्य अवधारणा क्या है ?
4. अनुपात से आप क्या समझते हैं ?
5. निर्धनता अनुपात
6. भारत में गरीबी का अनुमान किन–किन अर्थषास्त्रियों ने मुख्यतः लगाया है ?
7. योजना आयोग एवं विश्व बैंक के गरीबी अनुमान में मुख्यतः क्या अंतर है ?
8. गरीबी रेखा के लिए विश्व बैंक के अनुमान 1977 – 1978 एवं 1985 क्या है ?
9. अनुसूचित जाति तथा जनजातियों एवं षहरी क्षेत्रों में निर्धनता, अति निर्धनता के स्पश्ट करें ।
10. गरीबी के मुख्य कारण विश्व एवं भारत के परिप्रेक्ष्य में बताये ।
11. जनसंख्या में भारी वषद्धि गरीबी के मुख्य कारण के रूप में प्रतिपादित करें।
12. निरपेक्ष एवं सापेक्ष गरीबी से आप क्या समझते है ?
13. अविकसित एवं विकासषील देषों में बेरोजगारों की क्या अवधारणा है ?
14. अविकसित राश्ट्रों में रोजगार की प्रमुख श्रेणियां बताते हुए किसी एक का संक्षेप में वर्णन करें । अर्द्धविकसित राश्ट्रों में बेरोजगारी कितने रूपों में पाई जाती है ?

15. भारत में बेरोजगार के क्या कारण हैं ?

16. भारत में बेरोजगारी के लिए ष्बाजार में अंतर्राश्ट्रीय स्वरूपष की मान्यता कैसे उत्तरदायी है ? स्पश्ट करें

17. भारत में बेरोजगारी निवारण की प्रमुख कौन – कौन सी सरकारी नीतियां हैं ?

18. जवाहर रोजगार योजना को संक्षेप में समझायें ।

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र में प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन कम कैलोरी व्यय करने पर गरीब माना जाता

(क) 2400 कैलोरी, 2100 कैलोरी है

(ख) 2100 कैलोरी 2100 कैलोरी

(ग) 1800 कैलोरी 1400 कैलोरी

(घ) 2400 कैलोरी 2700 कैलोरी

2. योजना आयोग के दल ने वर्श 1979 में 1973–74 के मूल्य के आधार पर ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र में प्रतिमाह व्यय राषि से कम व्यय वाले व्यक्ति गरीब हैं–

(क) 56.6 रूपये 49 पैसे

(ख) 49 रूपये एवं 56.6 रूपये

(ग) 60 रूपये 65 रूपये

(घ) 65 रूपये एवं 60 रूपये

3.योजना आयोग ने 1989–90 में गरीबी की रेखा के नीचे रहने वालों का प्रतिषत आंका है

(क) 39.38 प्रतिषत

(ख) 49.38 प्रतिषत

(ग) 38.39 प्रतिषत

(घ) 40.40 प्रतिषत

4. भारत में जनसंख्या का अनुपात वर्श 1970 में एवं 1988 में था –

(क) 19 एवं 31

(ख) 20 एवं 40

(ग) 40 एवं 20

(घ) 31 एवं 19

5.अविकसित राश्ट्र में रोजगार की प्रमुख श्रेणी नहीं है –

(क) पूर्ण रोजगार

(ग) सामयिक बेरोजगारी

(ख) अदृष्य बेरोजगारी

(घ) असामयिक बेरोजगारी

6. भारत सरकार की बेरोजगारी निवारण संबंधी सरकारी नीति में नहीं है

(क) रोजगार गारण्टी योजना

(ख) जवाहर योजना को लागू न करना

(ग) कार्य के बदले अनाज का कार्यक्रम (घ) राश्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना

स्वरूप एवं परिभाशा

(ख) अनुवाद

अनुवाद का का षाब्दिक अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना । किसी कथन का अनुवर्ती कथन, पुनः कथन अथवा पुनरुक्ति । वर्तमान में एक भाशा में कही हुई बात को दूसरी भाशा में कहना या बतलाना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद एक ऐसी तकनीकी है जिसका आविश्कार मनुश्य ने बहुभाशिक स्थिति में विडम्बनाओं से बचने के लिए किया था । अनुवार का लक्ष्य भाशा के भाव – वैभव को ही नहीं अपितु उसकी उसी तरह की व्यंजना को भी दूसरी भाशा में यथावत् रूपांतरित करना अनुवाद का लक्ष्य होता है। अनुवाद को ”सांस्कृतिक सेतुश की संज्ञा दी जाती है । अनुवाद में मुख्य रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं को आधार बनाया जाता है –

अनुवाद में मूलकृति के विचारों का पूर्ण अन्तरण होना चाहिए ।

लेखन शैली और विधि लगभग वही होना चाहिए जो मूलकृति की हो ।

अनुवाद में मूलकृति के समस्त गुण एवं सहजता होना चाहिए ।

ष्अनुवाद प्रायः उतना ही प्राचीन है जितना मूल लेखन और इसका इतिहास भी उतना ही भव्य और जटिल है, जितना साहित्य की किसी दूसरी षाखा का ।ष

अनुवाद से तात्पर्य एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना है । अनुवाद एक प्रकार का ऑपरेषन अर्थात् सक्रिय है जिसके द्वारा एक भाषा की पाठ – सामग्री दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित की जाती है ।

आजकल अनुवाद षब्द अंग्रेजी के ट्रान्सलेषन पर्याय के रूप में प्रतिश्ठित है । अंग्रेजी कोश के अनुसार ट्रान्सलेषन का सीधा अर्थ है – एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना । इस संदर्भ में अंग्रेजी के प्रसिद्ध भाषाविद् जे.सी. केटफर्ड के अनुसार श्अनुवाद एक भाषा (स्त्रोत भाषा) की मूल पाठ – सामग्री का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में समानार्थक (ईक्विबेलेंट) मूल पाठ सामग्री का स्थानापन्न है।"

इस प्रकार अनुवाद में तीन बातों का ध्यान रखना आवष्यक है पाठ–सामग्री

समतुल्य / समनार्थक

पुनर्स्थापना –

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अनुवाद को निम्नलिखित तीन रूपों के अन्तर्गत रखा जा सकता

षाब्दिक अनुवाद

भावानुवाद

पर्याय के आधार पर अनुवाद

अनुवाद के उद्देष्य

अनुवाद के प्रमुखतः तीन उद्देष्य हैं

1. दूसरी भाषा के साहित्य से अपनी भाषा के साहित्य को समष्द्ध करना

126 हिन्दी भाषा एवं समसामयिकी

2. दूसरी भाषाओं की षैलियों, मुहावरों, दार्षनिक तथ्यों, वैज्ञानिकों एवं तकनीकी ज्ञान की

3. प्राप्त ।

विचार–विनिर्मय

स्त्रोत भाशा और लक्ष्य भाशा

वह भाशा जिसमें कथित बात को दूसरी भाशा में अनुदित किया जाता है – स्त्रोत भाशा कहलाती है तथा वह भाशा जिसमें अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाशा कही जाती है ।

अनुवादक

अनुवाद करने वाले को ष्अनुवादकष् कहा जाता है । अनुवादक के लिए स्त्रोत भाशा एवं लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान होना अनिवार्य है । प्रत्येक भाशा की अपनी संरचना होती है। इन संरचनाओं के प्रयोग के विषेश परिवेष और अपने मुहावरे होते हैं अतः अनुवाद का स्त्रोत भाशा तथा लक्ष्य भाशा से इनकी संरचना, परिवेष एवं मुहावरे के साथ परिचित होना आवष्यक है ।

कोई भी अनुवादक किसी पाठ (ज्म•ज) को पूरी तरह समझे बिना उसका अनुवाद नहीं कर सकता । कोष देखकर एक भाशा के षब्दों के स्थानों पर दूसरी भाशा के षब्द रख देना अनुवाद नहीं है । अनुवाद करने में कोष एक महत्वपूर्ण सहायक उपादान है किन्तु विशय की समझ और चिन्तन की तर्कषक्ति के अभाव में कोष भी सहायक नहीं हो सकता ।

वस्तुत5 अनुवाद में स्त्रोत भाशा के ऐसे अनेक संदभों को भी पहचानने और लक्ष्य भाशा में रूपान्तरित करने की आवष्यकता होती है जो लक्ष्य भाशा में नहीं होते। यह देखा गया है कि कभी – कभी अनुवादक स्त्रोत भाशा के कथन को लक्ष्य भाशा में प्रस्तुत करते हुए, मूल कथ्य और अनुवाद में समानता लाने के अति उत्साह में ऐसे प्रयोग भी कर देता है जो लक्ष्य भाशा की प्रकृति और सांस्कृतिक परम्परा से मेल नहीं खाते ऐसे अनुवाद अस्वाभाविक लगते हैं, हास्यास्पद भी प्रतीत होते हैं।

अतः अनुवादक को –

1. स्त्रेत और लक्ष्य भाशा की प्रकृति और परिवेष तथा

2. उनकी सांस्कृतिक–ऐतिहासिक पष्ठभूमि से पूर्णतः परिचित होना चाहिए ।

अच्छे अनुवाद की विषेशताएं और अनुवाद प्रक्रिया

अच्छे अनुवाद में अभिव्यक्ति सुबोध प्रांजल तथा प्रवाहमय होती है। साथ ही प्रामाणिकता के लिए षाब्दिक और वास्तविक परिषुद्धता भी होना आवष्यक है। जिस अनुवाद में स्त्रोत भाशा में कथित अभिव्यक्ति ज्यों की त्यों लक्ष्य भाशा में आ जाए, वह उत्तम कोटि का अनुवाद होता है ।

अच्छे अनुवाद में यह भी प्रयत्न किया जाना चाहिए कि मूल रचना की षैली सुरक्षित रहे । मूल रचना की षैली सुरक्षित रखने का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल षाब्दिक अनुवाद कर दिया जाए। अनुवाद की भाशा स्त्रेत भाशा की प्रकृति के अनुरूप हो । यदि स्त्रेत भाशा में कोई मुहावरा है तो उस मुहावरे की प्रकृति से मिलता हुआ मुहावरा लक्ष्य भाशा का भी अनुवाद में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इससे स्वाभाविक प्रवाह बना रहता है ।

अच्छे अनुवाद की भाशा समझ में आने योग्य और सुबोध हो । भाशा के सौन्दर्य का निर्वाह करते हुए अनुवाद सामग्री के विचार और भावों को सुरक्षित रखना अपेक्षित है।

अनुवाद के लिए आवष्यक है कि अनुवादक हो –

ही इसलिए अच्छे अनुवाद की जाने वाली सामग्री की विशय वस्तु का अच्छा ज्ञान हो, सामग्री की ज्ञानात्मक चेतना हो, स्त्रोत भाशा का लक्ष्य भाशा पर पूरा अधिकार हो, दोनों भाशाओं की संरचनात्मक बुनावट, पदबंध प्रयोग, वाक्य संगइन आदि की पूरी समझ हों ।

ऐसा होने पर ही वह स्त्रोत भाशा से लक्ष्य भाशा में सहज और प्रवाहमय अनुवाद कर सकेगा ।

अनुवाद

प्रारंभ में विज्ञान और वाणिज्य की अंग्रेजी पुस्तकों के जो अनुवाद किये गये थे वे स्त्रेत भाशा अंग्रेजी में लिखी गई सामग्री से भी कठिन थे । अनुवादकों ने हिन्दी भाशा की प्रकृति का ध्यान नहीं रखा और वाक्य विन्यास इतना जटिल हो गया कि अंग्रेजी में लिखी सामग्री एक बार भले ही समझ में आ जाए पर हिन्दी में अनूदित सामग्री को समझना कठिन था । अनुवाद प्रक्रिया की मूलभूत समस्या लक्ष्य भाशा में अनुवाद सामनार्थी खोजने की है । अतः स्त्रोतभाशा की पाठ – सामग्री को पूरी तरह समझे बिना अनुवादक लक्ष्य भाशा के समनार्थी षब्दों के द्वारा उसे प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। साथ ही लक्ष्य भाशा के वाक्यों तथा संरचनात्मक तत्वों को भी अत्यंत सावधानीपूर्वक प्रयुक्त करना चाहिए। एक षब्द अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ देता है इसलिए मूलपाठ के संदर्भ और प्रयोग परिवेष को समझकर ही समानार्थी षब्दों का चयन किया जाना चाहिए । प्रत्येक भाशा में अभिव्यक्ति का अपना एक विषेश मुहावरा होता है । इसका लक्ष्य भाशा में अनुवाद कठिन होता है अतः इसका अनुवाद लक्ष्य भाशा की प्रकृति को ध्यान में रखकर करना चाहिए । अनुवाद करते समय सांस्कृतिक परम्पराओं का ध्यान भी रखा जाना चाहिए । वाक्य में पदों का अनुक्रम भी लक्ष्य भाशा की

अनुक्रम – व्यवस्था के अनुरूप होना चाहिए । लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा से अनुवाद करते समय षब्दों के लिंग, वचन और व्याकरणिक रूपों की संगति को ध्यान में रखना चाहिए । वाक्यांष और लोकोक्तियों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा को अस्पश्ट एवं अव्यवस्थित नहीं बनाना चाहिए ।

अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह यांत्रिक या निर्जीव न लगे । अनुवाद प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान का होना भी आवष्यक है ।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा का निम्नलिखित वाक्य देखें

The boy] who does not understand that his future dependes on hard studies] is a fool-

यदि हिन्दी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है –

वह लड़का, जो यह नहीं समझता कि उसका भविश्य सख्त अध्ययन पर निर्भर करता है, मूर्ख है। तो यह वाक्य विन्यास हिन्दी भाषा के वाक्य विन्यास के अनुरूप नहीं होगा, िंतक के लिए यहां ष्सख्तष षब्द भी उपयुक्त समानार्थी नहीं लगता । यदि अनुवाद निम्नलिखित हो –

वह लड़का मूर्ख है जो यह नहीं समझता कि उसका भविष्य कठोर अध्ययन पर निर्भर है। तो अनुवाद का वाक्य – विन्यास हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप होगा। इसी प्रकार –

वाक्य–विन्यास

Soharab] was killed by his own father Rustam का अनुवाद सोहराब मार दिया गया था अपने पिता रूस्तम के द्वारा । उचित नहीं है, हिन्दी में सोहराब अपने पिता रूस्तम के ही हाथों मारा गया। अनुवाद उपयुक्त होगा ।

अतः लक्ष्य भाषा के वाक्य – विन्यास को ध्यान में रखकर ही अनुवाद किया जाना चाहिए। जैसा कि कहा गया है प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति का एक अपना विषेश मुहावरा होता है, इसका लक्ष्य भाषा में यथावत् अनुवाद कठिन होता है, इनका अनुवाद लक्ष्य भाषा का प्रकृति के अनुरूप ही होना चाहिए । देखें– स्त्रोत भाषा अंग्रेजी

लक्ष्य भाशा हिन्दी में षब्दषः अनुवाद कार में कोई कमरा नहीं है ।

सही अनुवाद कार में कोई स्थान नहीं है ।

यदि अनुवादक ष्दव तववउ मुहावरे का अर्थ नहीं जानता और कोष में से तववउ का अर्थ ष्कमराष देखकर अनुवाद कर देता है तो यह भ्रश्ट अनुवाद ही होगा ।

2. वह खाना ले रही है ।

आदि विषेश प्रयोग हैं।,

वह खाना खा रही है ।

इनके अनुवाद हिन्दी

की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए ।

वह वायोलिन पर खेल

रहा है ।

वह वायोलिन बजा रहा है।

उदाहरण–

(अ) स्त्रोत भाशा अंग्रेजी

The central core of Gandhiji's teaching was meant not for his country or his people alone but for all mankind and is valid not only for today but for all time- He wanted all men to be free so that they could grow unhampered into full self realisation- He wanted to abolish the eÛploitation of man by man in any shape or form because both eÛploitation and submission to it are a sin not only against society but against the moral law] the law of out being- The means to be compatible with this end therefore] he said] have to be purely moral] namely] unadulterated truth and non&violence- He had been invited by many foreigners to visit their countries and deliver his message to them directly but he declined to accept such invitations as] he said] he must make good what he claimed for Truth and Ahimsa in his own country before he could launch on the gigantic task of winning or rather converthing the world- With the attainment of freedom by India]

by following his method] through in a limited way and in spite of all the immperfections in its practice] the condition precedent for taking his message to other countries was to a certain eÛtent fulfilled- And although the partition had caused wounds and raised problems which claimed all his time and energy] he might have been able to turn his attention to this larger question even in the midst of his distractions- But Providence had ordained otherwise] May some individual or nation arise and carry forward the effort launched by him till the eÛperiment is completed] the work finished and the objective achieved!

लक्ष्य–भाशा हिन्दी

गांधीजी की षिक्षा का मर्म केवल उनके देष भारत या यहां की जनता के लिए ही सीमित नहीं था । वह सारी मानवदृजाति के लिए था; और वह केवल वर्तमान काल के लिए ही नहीं, परन्तु त्रिकाल के लिए सत्य है। वे चाहते थे कि सारे मानव स्वतंत्र हों, जिससे वे अपना अबाधित मनुश्य द्वारा होने वाला सभी प्रकार का षोशण मिटा देना चाहते थे; क्योंकि षोशण करना और षोशण का षिकार होना दोनों ही पाप है– न केवल समाज के प्रति बल्कि नैतिक नियम के प्रति भी, हमारे जीवन के नियम के प्रति भी इसलिए उनका कहना था कि इस उद्देष्य के अनुरूप ही साधन भी सर्वथा नैतिक अर्थात् विषुद्ध सत्य और अहिंसा पर आधारित होने चाहिये । अनेक विदेषियों ने अपने देषों में गांधीजी को बुलाया था, ताकि वे अपना संदेष उन्हें स्वयं दे सकें, परन्तु गांधीजी ने ये निमन्त्रण स्वीकार नहीं किये। उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा के विशय में उनका जो दावा है उसे पहले उन्हें अपने ही देष में पूरा करना चाहिये, उसके बाद ही वे संसार का हृदय जीतने या उसके विचार बदलने का भागीरथ कार्य हाथ में ले सकते हैं । सीमित रूप में ही सही और पालन में अनेक अपूर्णताएं रहने के बावजूद भी उनकी अहिंसक कार्य–पद्धति का अनुसरण करके जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली, तब किसी हद तक दूसरे देषों में उनका संदेष ले जाने की वह पूर्व षर्त पूरी हो गई, और यद्यपि देष के विभाजन के कारण ऐसे आघात लगे और ऐसी समस्याएं पैदा हुईं जिन पर उन्हें अपना सारा समय और सारी षक्ति लगानी पड़ी, फिर भी वे अपनी व्यवस्तताओं के बीच भी इस विषाल और व्यापक प्रष्न की ओर ध्यान देने की क्षमता रखते थे, परन्तु विधाता को कुछ और ही स्वीकार था । भगवान करे कोई व्यक्ति या राश्ट्र ऐसा आगे आये, जो गांधी जी के आरम्भ किये हुए प्रयास को उस समय तक जारी रखे जब तक उनका प्रयोग पूरा न हो जाये, कार्य समाप्त न हो जाये और उद्देष्य सिद्ध न हो जाये ।

(ब) स्त्रोत भाशा हिन्दी

आदर्षवादियों को आम तोर पर गगन–विहारी, अव्यावहारिक समझा जाता है ।

गांधीजी का आदर्षवाद गगन – विहार करने जैसा नहीं था । उनका यह दावा था और उसे उन्होंने सिद्ध कर दिखाया था कि वे व्यावहारिक आदर्षवादी थे। उन्होंने दिखा दिया कि भलाई को परिणामकारी कैसे बनाया जा सकता है। अपने सत्य के आग्रह और पूर्ण पालन से उन्हें वास्तविकता पर पूरा नियंत्रण प्राप्त हो गया था और मानव–स्वभाव का अद्वितीय ज्ञान प्राप्त हो गया था । उसकी षक्तियों और उसकी दुर्बलताओं को जानने के कारण वे अचूक अंतर्ज्ञान से अपने अस्त्र चुन सकते थे और मिट्टी से षूरवीरों को जन्म दे सकते थे। षायद हमारी जानकारी में अन्य कोई व्यक्ति गांधी जी की तरह इतने विभिन्न प्रकार के मनुश्यों और प्रतिभाषाली व्यक्तियों को अपने चारों तरफ इकट्ठा करने या उन्हें एक साथ रखने में समर्थन नहीं हुआ। पंडित नेहरू ने अपनी अनोखी षैली में लिखा है, श्हमारा एक–दूसरे से सर्वथा भिन्न लोगों का जमघट था। हमारी पृश्ठभूमियां, हमारी जीवन – प्रणालियां और हमारी विचारधाराएं सब कुछ भिन्न थीं, परन्तु हमने एक सामान्य उद्देष्य की पूर्ति के लिए ऐसे नेता के साथ अपना विकास किया, जिसे (हम) अपने विभिन्न दृश्टिकोणों से एक महान् और भव्य विभूति समझते थे

लक्ष्य–भाशा अंग्रेजी

Idealists are generally classed as visionaries] unpractical people] Gandhiji's idealism was not Utopian- He was no "ineffectual angel beating his luminous wings in the void"- He claimed and proved himself to be a practical idealist- He showed how goodness could be made effective- His insistence on truth and full practice thereof gave him a firm hold of reality and endowed him with an unrivalled knowledge of human nature& its potentialities as well as its weaknesses& which enabled him to choose his instruments with an unerring instinct and make heroes out to clay- Perhaps no other person we know- was able to draw round him men and talents of such diverse types as Gandhiji] or to hold them together as a team- "We were an odd assortment]" Pandit Nehru has recorded in his inimitable style] "very different from each other(different in our background] ways of thinking but—————we——— frw in the service of a common cause] with a leader to whom ———— ¼we½ looked up -" from our different viewpoints] as a great and magnificent personality-"

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. अनुवाद की परिभाशा एवं स्वरूप लिखिए ।

2. अनुवाद के उद्देष्य क्या है ?

3. स्त्रोत भाशा और लक्ष्य भाशा में अंतर बताइए ।

4. अनुवादक किसे कहते हैं ?

6. एक अच्छे अनुवादक की विषेशताएं लिखिए ।

7. अनुवादक को किस तरह की ष्अनुवाद प्रक्रिया अपनानी चाहिए ?

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

It is not my intension here to discuss socialism] either practically or theoretically] although I fell obliged] this earth will find their way to socialism in their own way] no socialism thus craeted will be Soviet Socialism or particularly like it- electric charges was first observed in eÛperimental science as a property of matter producing force actions between unlike substances which has been rubbed together- If for eÛample] hard rubber is rubbed with fur] then the rubber and the fur are found to attract each other] and both have the power to attract dust particles-

the success of an industrial organisation depends upon the degree of discipline with which all those who manage the organisation work- All that motivates to give willing observance of rules of the organisation constitutes the essence of discipline- this conformity to rules has to come from with in] though it can be enforced from without-

निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए ।

हम उस महान् देष के निवासी हैं जो मात्र भौतिक षक्ति में नहीं वरन् उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बातों में महान् है । यदि हम अपने देष के लिए सुयोग्य हैं तो हमें विषाल ह्रदय एवं मस्तिश्क रखना चाहिए क्योंकि ओछे व्यक्ति बड़े–बड़े कार्यों को सम्पन्न करने तथा उनका सामना करने में कुछ नहीं कर सकते । हम प्रत्येक को अपना कर्तव्य करना चाहिए और दूसरे के कर्तव्यों के बारे में ही विचार करते रहना चाहिए ।

षरीर की जैविक क्रिया – विधि में जब किसी प्रकार का अवरोध पैदा हो जाता है तो षारीरिक व्यवस्था में असंतुलन आ जाता है । यह असंतुलन अल्पकालिक अथवा स्थाई हो सकता है। इस प्रकार की अव्यवस्था ही रोग का लक्षण लेकर

उभरती है। तपेदिक तथा अन्य कई बीमारियां पहले स्थाई एवं प्राणघातक मानी जाती थीं पर आयुर्विज्ञान की बढ़ती सीमाओं के साथ असाध्य रोगों की सूची सिमटते – सिमटते आज कैंसर तक पहुंच गई है।

राजनेताओं, सरकारी कर्मचारियों और प्रषासकों के स्वार्थ, उनके अधिकार, प्रतिशठा और पद के साथ–साथ ऐसे आर्थिक लाभ में भी निहित हो सकते हैं जो विषेश समाज के हितों से बहुत भिन्न हों। इसके साथ–साथ, अल्प विकसित देषों में उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने तथा उन पर रोक लगाने में, अधिक उन्नत देषों की अपेक्षा जनमत कम प्रभावषाली हो सकता है।

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. अनुवाद का षाब्दिक अर्थ है –

(क) किसी के कहने के बाद कहना

(ख) किसी के कहने को स्वयं कहना

(ग) किसी कथन की पुनरावषत्ति करना

(घ) किसी कथन का भाव व्यक्त करना

2. अनुवाद में कितनी बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) छः

3. स्त्रोत भाशा कहते हैं –

(क) कथित भाशा का दूसरी भाशा में अनुवाद

(ख) साहित्य से पूर्व भाशा को

(ग) दूसरी भाशा की षैलियों से पूर्ण भाशा को

(घ) अर्थ व्यक्त करने वाली भाशा को

4.लक्ष्य भाशा कहते हैं –

(क) वह भाशा जो कथित बात को कहती है

(ख) वह भाशा जिसमें अनुवाद होता है

(ग) वह भाशा जो औपचारिक होती है

(घ) वह भाशा जो वैज्ञानिक होती है

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. आजकल अनुवाद षब्द अंग्रेजी के

2. अनुवाद करने में

के पर्याय के रूप में प्रतिश्ठित हैं ।

(ट्रांसलेषन / इंक्विलेंट)

एक महत्वपूर्ण सहायक उपादान है।

(ग्रन्थ / कोष)

3. अनुवाद करते समय का भी ध्यान रखना चाहिए ।

4. अनुवाद की प्रक्रिया के अन्तर्गत

(धार्मिक/सांस्कृतिक परम्पराओं)

ज्ञान का होना भी आवष्यक है ।

(षास्त्रीय / व्यावहारिक)

ईकाई — 5

(क) – 1

ऊर्जा

डॉ. अरूण रघुवंषी

कार्य और ऊर्जा का परस्पर गहरा सम्बन्ध है । किसी भी कार्य को संपादित करने के लिए ऊर्जा आवष्यक होती है। साधारणतः श्कार्य करने की क्षमता ऊर्जा कहलाती है ।श सृश्टि की रचना और विकास का मूलभूत कारण ऊर्जा ही रही है। पाशाण युग से अंतरिक्ष युग तक मानव ने कठिन और लम्बी विकास–यात्रा पूरी की है। इस महान् यात्रा में मानव का संबल रही है – ऊर्जा, विभिन्न रूपों में उसका साथ निभाने वाली नैसर्गिक संगिनी । विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं को उपयोग कार्य में बदलने के द्वारा ही मानव सभ्यता का विकास हुआ है।

मनुश्य के षरीर की मांसपेषियों में संग्रहित ऊर्जा सम्भवतः ऊर्जा का सर्वाधिक सामान्य रूप है जिसे वह आदिकाल से उपयोग में लाता रहा है । प्रागैतिहासिक काल में मनुश्य यह जैविक ऊर्जा कंदमूल–फल खाकर प्राप्त करना था । ऊर्जा के किसी बाह्यस्त्रोत का उपयोग मानव ने तब किया जब उसने अग्नि का उपयोग करना सीखा । प्रारम्भ में आग का उपयोग वह जानवरों को भगाने तथा रहने के स्थान को गर्म तथा प्रकाषित रखने के लिए किया करता था । कृशि के तरीकों की जानकारी तथा तकनीकी अर्दृश्टि के विकास के साथ आग का उपयोग भोजन पकाने, घर के निर्माण हेतु ईंटें पकाने, मिट्टी के पक्के मर्तबान बनाने में करने लगा

समय के साथ मनुश्य ने यांत्रिक कार्यों के लिए कुछ सरल मषीनें जैसे घिरनी, आनत – तल, उत्तोलक, गियर और पेंच का आविश्कार किया । पर ये सरल मषीनें न तो ऊर्जा प्रदान करती थीं और न ही वे ऊर्जा को एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित करती थी । आटा पीसने की हाथ की चक्की, कुएं से जल खींचने का रेहट और बैलगाड़ी ऐसी ही मषीनें थीं जिन्हें चलाने के लिए मनुश्य स्वयं की ऊर्जा या अपने पालतू पषुओं की ऊर्जा का उपयोग करता था। बाद में उसने वायु और गतिषील जल की ऊर्जा का उपयोग पवन चक्कियों तथा पवन चक्कियों द्वारा करना सीखा । आधुनिक युग में बहते हुए पानी को बांधकर उसमें संचित ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने में उपयोग किया जाने लगा। फिर बाह्य दहन इंजनों तथा अन्तः दहन इंजनों में कोयले तथा पेट्रोल से उत्पन्न उश्मा ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में बदला जाने लगा। वर्तमान षतक के मध्य तक आते–आते मनुश्य

MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University

नाभिकीय ऊर्जा के उपयोग में निशणात हो गया। आधुनिक जीवन का आधार मनुश्य द्वारा ऊर्जा के विभिन्न रूपों की खोज तथा उसके उपयोग में निहित है । सभ्यता का इतिहास प्रमुख रूप से मानव द्वारा ऊर्जा दोहन के विकास की कहानी है। ऊर्जा की परिभाशा और प्रकार ऊर्जा की सरल परिभाशा देना कठिन है। ऊर्जा कोई वस्तु नहीं है। इसको हम देख नहीं सकते । यह कोई जगह नहीं घेरती, न ही इसकी कोई छाया ही पड़ती है । दूसरो षब्दों में कहें तो कहेंगे कि अन्य वस्तुओं की भांति यह द्रव्य नहीं है । तथापि बहुधा द्रव्य से इसका घनिश्ठ सम्बन्ध रहता है, क्योंकि हर द्रव्य में यह कुछ–न–कुछ मात्रा में उपस्थित रहती है। इस कारण इसका अस्तित्व उतना ही वास्तविक है जितना किसी अन्य वस्तु का । किसी पिण्ड समुदाय में, जिनके ऊपर किसी बाहरी बल का प्रभाव नहीं रहता, इसकी मात्रा घटती–बढ़ती रहती है। विज्ञापन में, खासकर भौतिक विज्ञान में, ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्थान है।

पारिभाशिक रूप में, किसी वस्तु या पदार्थ में लगे बल के प्रभाव से किसी प्रकार का परिवर्तन

होना कार्य कहलाता है। यह परिवर्तन किसी भी प्रकार का हो सकता है, जैसे कि वस्तु की स्थिति में परिवर्तन या उसके वेग या आकृति या तापमान या रंग या भौतिक या रासायनिक संगठन में परिवर्तन । अर्थात् प्रत्येक परिवर्तन के लिये कार्य का होना आवष्यक है और कार्य के लिए ऊर्जा आवष्यक है। इस प्रकार शकिसी भौतिक पिण्ड या निकाय द्वारा कार्य करने की क्षमता अर्थात् परिवर्तन करने की क्षमता निकाय की ऊर्जा कहलाती है ।श दूसरे षब्दों में कार्य करने की क्षमता ही उस निकाय की ऊर्जा है ।

जब धनुश से षिकार करने वाला कोई षिकारी धनुश की प्रत्यंचा को खींचकर धनुश की कमान को झुकाता है तो धनुश में जो ऊर्जा आ जाती है उसका उपयोग बाण को षिकार तक पहुंचाने में किया जाता है । नदी या झरने के बहते जल में जो ऊर्जा होती है उसका उपयोग पवनचक्की को चलाने या अन्य कार्यों में किया जाता है। इसी प्रकार बारूद में जो ऊर्जा होती है उसका उपयोग पत्थर की षिलाएं तोड़ने या तोप से गोले दागने में किया जाता है । विद्युत धारा में जो ऊर्जा होती है उसका उपयोग मोटर या मोटर चलित उपकरणों के चालन में किया जाता है। सूर्य के प्रकाष में उपस्थित ऊर्जा का उपयोग सौर उपकरणों में किया जाता है। प्रकृति में हरे पेड़–पौधे प्रकाष में उपस्थित ऊर्जा को भोज्य पदार्थों के निर्माण में उपयोग में लाते हैं । अणुबम में नाभिकीय ऊर्जा का उपयोग षत्रु का विध्वंस करने या ताप विद्युत उत्पन्न करने में किया जाता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऊर्जा अनेक रूपों में पायी जाती है। झुके हुए बाण में या ऊंचाई पर रखे पत्थर में उसकी स्थिति विषेश के कारण जो ऊर्जा होती है, उसे स्थितिज ऊर्जा (च्वजमदजपंस मदमतहल) कहते हैं। बहते हुए पानी या बन्दूक से निकली गोली या तरकष से निकले बाण में ऊर्जा उसकी गति के कारण होती है; उसे गतिज ऊर्जा (ज्ञपदमजपब मदमतहल) कहते हैं। किसी वस्तु में गतिज तथा स्थितिज ऊर्जा दोनों एक साथ हो सकती है । उदाहरण के लिए आकाष में ऊँचाई पर उड़ते हुए वायुयान में स्थितिज तथा गतिज दोनों ही ऊर्जा होती है। किसी वस्तु के स्थितिज तथा गतिज ऊर्जा के योग को यांत्रिक ऊर्जा कहते हैं ।

लकड़ी, बारूद या अन्य किसी ज्वलनषील पदार्थ की ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा कहलाती है । आकाष में कड़कती बिजली या तार में बहती बिजली की धारा की ऊर्जा विद्युत ऊर्जा है। सूर्य के प्रकाष की ऊर्जा प्रकाष ऊर्जा कहलाती है। सूर्य में जो ऊर्जा है वह उसके ऊंचे ताप के कारण है। इसको उश्मा ऊर्जा कहते हैं । विभिन्न उपायों द्वारा एक प्रकार की ऊर्जा को दूसरे प्रकार की ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। इन परिवर्तनों में ऊर्जा की मात्रा सदा एक ही रहती है । उसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। इसे ऊर्जा अविनाषिता– सिद्धान्त कहते हैं ।

ऊपर कहा गया है कि कार्य करने की क्षमता को ऊर्जा कहते हैं, परन्तु सम्पूर्ण ऊर्जा को कार्य रूप में परिणित करना सदा सम्भव नहीं होता । अतः यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि ऊर्जा वह वस्तु है जो उतनी ही घटती है जितना कि कार्य होता है । यही कारण है कि ऊर्जा के मापन के वे ही एकंक (न्दपजे) होते हैं जो कार्य के होते हैं। कार्य का एकक जूल (श्रवनसम संकेत श्र) माना गया है, अतः ऊर्जा किसी भी रूप में हो, सदा जूल में मापी जाती है । यदि कारक के कार्यक करने की दर 1 सेकण्ड में 1 जूल है तो उसकी षक्ति (च्वूमत) 1 जून / सेकण्ड कही जाती है । भाप के इंजन के आविश्कारक जेम्स वाट के सम्मान में षक्ति के एकंक या मात्र को वॉट (जज संकेत) कहा जाता है । व्यावहारिक रूप में षक्ति को अश्वषक्ति (भ्वतेम च्वूमत) मात्रक द्वारा व्यक्त किया जाता है । इन मात्रकों का सम्बन्ध इस प्रकार का होता है –

एक अश्व षक्ति = 746 वॉट = जूल / सेकण्ड । एक किलोवॉट (1 ज्ञ्ॅ) एक हजार वॉट के बराबर होता है। व्यापारिक स्तर पर ऊर्जा का मात्रक किलोवॉट घण्ट (ज्ञ्ँी) प्रयोग में लाया जाता है । यह याद रखना लाभदायक होगा कि एक किलोवॉट घण्टा ऊर्जा 3600000 जूल के बराबर होती है । ऊर्जा और विकास

आज हम ऊर्जा के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते । ऊर्जा मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। आधुनिक जीवन की सुख–सुविधाओं की बात छोड़िए इसके बिना जीवन की अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति भी असम्भव है । आज ऊर्जा विकास का पर्याय है। किसी भी देष के आर्थिक विकास तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिए भोजन के बाद सबसे महत्वपूर्ण वस्तु ऊर्जा ही है। देष की खुषहाली का पता लगाने के लिए प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत ही मानदण्ड के रूप में अपनाया जाता है। दूसरे षब्दों में किसी देष की प्रगति और विकास उस देष में ऊर्जा के उत्पादन और खपत में प्रतिबिम्बत होता है ।

ऊर्जा और समषद्धि में कितना अधिक सम्बन्ध है इसका अनुतमान हमें विकसित और विकासषील देषों के जीवन स्तर के अन्तर को देखकर लग सकता है । विकसित देषों में ऊर्जा की प्रति व्यक्ति खपत 5 से 11 किलोवॉट है जबकि विकासषील देषों में यह केवल 1 से 1.5 किलोवॉट के बीच है। ऊर्जा की खपत का विश्वस्तरीय औसत 2 किलोवॉट है । यह ऊर्जा बिजली, ताप, प्रकाष, यांत्रिक ऊर्जा, रासायनिक ऊर्जा आदि के रूप में उपयोग की जाती है ।

किसी देष द्वारा उपयोग में की जाने वाली ऊर्जा का परिमाण उसके नागरिकों की जीवन–पद्धति तथा उन प्रक्रमों पर निर्भर करता है जिनके द्वारा उस देष में विभिन्न प्रकार की सामग्री का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए अमेरिका तथा भूजतपूर्व सोवियत रूस की सम्मिलित जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग 11 प्रतिषत है, परन्तु ये देष विश्व में उत्पन्न कुल ऊर्जा का 50 प्रतिषत उत्पन्न करते हैं और उसकी खपत करते हैं । इसकी तुलना में भारत कुल ऊर्जा का केवल 2 प्रतिषत उत्पन्न तथा खपत करता है जबकि हमारी जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिषत है।

ऊर्जा की आवष्यकता भोजन, ईंधन, बिजली आदि के रूप में होती है। पर्याप्त ऊर्जा के बिना किसी भी प्रकार का औद्योगिक विकास सम्भव नहीं है। बड़े पैमाने पर खेती करने, जल प्रदाय, कपड़े का उत्पादन और भवनों के निर्माण के लिए पर्याप्त मात्रा में बिजली बेहद आवष्यक है । सभी उत्पादन करने वाली विधियों को ऊर्जा की आवष्यकता होती है।

आधुनिक मनुश्य, आदिम मनुश्य की अपेक्षा 100 गुना अधिक ऊर्जा उपयोग करता है । जनसंख्या वषद्धि, सुविधाजनक घरेलू साधनों में वषद्धि, तीव्र औद्योगीकरण और षहरीकरण के कारण विकसित तथा विकासषील दोनों ही देषों में ऊर्जा की खपत तेजी से बढ़ रही है। दूसरी ओर ऊर्जा के अत्यधिक दोहन से पारम्परिक स्त्रोत कम होते जा रहे हैं। इससे विश्वभर में ऊर्जा का संकट उपस्थित हो गया

है। ऊर्जा संकट तथा विकासषील देष भाप के इंजन के आविश्कार से लेकर आज तक आधुनिक औद्योगिक समाज अधिकतर कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस जैसे संकेन्द्रित ऊर्जा स्त्रोतों पर निर्भर रहा है । ये ईंधन हमारी पष्थ्वी के अन्दर बहुत ही सीमित क्षेत्र में वितरित है। इन पदार्थों का संग्रहण करोड़ों वर्शों की अवधि में पष्थ्वी के अन्दर दबे जैव अवषेशों पर अत्यधिक ताप और दबाव की स्थितियों में अत्यन्त धीमी गति से होने वाले भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तनों द्वारा हुआ है । यही कारण है कि ये ईंधन दुर्लभ हैं तथा इसकी पुनः स्थापना असम्भव होती है । उदाहरण के लिए हमारे देष में ज्ञात कोयला भण्डार लगभग 80 अरब टन है । इसमें ये लगभग 150 करोड़ टन कोयला प्रतिवर्श खोदकर निकाला जा रहा है। अनुमान है कि षताब्दी के अंत तक यह उत्खनन 400 करोड़ टन तक हो जाएगा । खपत की यह दर रही तो ये भण्डार मात्र दो सौ तीन सौ वर्श तक ही हमारा साथ दे सकेंगे । यही तथ्य वर्तमान ऊर्जा संकट का आधारभूत कारण है ।

ऊर्जा के स्त्रोतों का मूल्य, अधिक मांग तथा सीमित प्रदाय के कारण बढ़ रहा है । यह स्थिति, जिसमें ऊर्जा का प्रदाय सीमित और मांग अधिक होती है, ऊर्जा संकट कहलाती है ऊर्जा संकट वर्तमान में विश्व स्तर पर उपस्थित बहुआयामी समस्याओं का एक चिरप्रतिश्ठित (ब्सेंपबंस) उदाहरण है । यह संकट 1977 में पेट्रोल की कीमत में वष्द्धि के साथ उभर कर सामने नहीं आया वरन् ऊर्जा संकट के पर्याप्त लक्षण वर्शों से नजर आ रहे थे, विषेशकर भारत जैसे विकासषील देषों में। 1973 में तेलबन्दी ने इन देषों के सामने एक चुनौती प्रस्तुत की । इसने उन्हें आर्थिक विकास में ऊर्जा के स्त्रोतों के महत्व तथा परस्पर सहयोग की आवयकता की याद दिलायी। उस समय यह आषंका व्यक्त की गई कि ऊर्जा के ऊंचे मूल्य इन दिषों की अर्थव्यवस्था को धाराषायी कर देंगे। यद्यपि इन देषों की आर्थिक स्थिति में गंभीर विस्थापन देखे गये पर इनका परिणाम उतना विनाषकारी नहीं था। इस ऊर्जा संकट ने विकसित तथा विकासषील देषों को एक दूसरे से विरूद्ध आमने–सामने खड़े होने की सम्भावना बना दी थी, पर यह स्थिति अभी तक उपस्थित नहीं हुई है ।

यूं तो, 115 देष जिन्हें विकासषील देष कहा जा सकता है, विश्व की 75 प्रतिषत आबादी रखते हैं, पर उनके हिस्से में दुनिया की सारी ऊर्जा का केवल 15 प्रतिषत ही आता है। संयुक्त राश्ट्र की परिभाशा के आधार पर इन देषों कोतीन वष्हत् वर्गों में बांटा जा सकता है

(1) तेल आयात करने वाले विकासषील देष (ओ. आई.डी. सी.) जिनकी संख्या लगभग 90 है तथा जिनके हिस्से में 1.5 बेरल/प्रतिदिन आता है; यह विश्व की कुल खपत का 10 प्रतिषत के बराबर है। इस ग्रुप के अन्तर्गत भारत, अर्जेंटाइना तथा ब्राजील आते हैं ।

तेल उत्पादक तथा निर्यातक देषों के संघ (ओपेक) के बाहर के तेल निर्यातक देष (ओपक इतर) । इस ग्रुप के अन्तर्गत लगभग 13 देष आते हैं जो संस्था लाख बेरल तेल प्रतिदिन उत्पन्न करते हैं जिसका 75 प्रतिषत निर्यात किया जाता है । मेक्सिको इस वर्ग का सबसे अग्रिम देष है। कुछ दूसरे देष हैं मिस्त्र, मलेषिया तथा ट्यूनिषिया ।

(3) ओपेक देष यद्यपि विश्व की कुल ऊर्जा का 26.4 प्रतिषत तथा विश्व में कुल तेल का 50 प्रतिषत तक उत्पन्न करते हैं तब भी पारम्परिक परिभाशा की दृश्टि से इन देषों को विकासषील देष ही कहा जायेगा ।

विश्व ऊर्जा उत्पादन तथा खपत में विकासषील देषों के विभिन्न ऊर्जा स्त्रोतों के योगदान को सारणी क्र. 1 में प्रतिषत रूप में दर्षाया गया है। अफ्रीका, दक्षिणी एषिया तथा दक्षिण – पूर्वी अनेक विकासषील देष लाक्षणिक रूप में जनसंख्या वषद्धि की ऊंची दर तथा सीमित ऊर्जा संसाधनों से उपजी दुविधा का सामना कर रहे हैं। चीन को छोड़कर दक्षिण तथा दक्षिण पूर्वी एषियाई क्षेत्र विश्व की लगभग 30 प्रतिषत आबादी को समाहित किये हुए हैं, पर यहां ज्ञात जीवाष्म ईंधन सम्पदा का केवल 2 प्रतिषत ही मिलता है। इन अर्थव्यवस्थाओं में ऊर्जा की मूल्य प्रत्यास्था बहुत कम होती है, क्योंकि इनका वर्तमान षनिर्वाहष उपयोग आधार स्तर तक भी नहीं पहुंच रहा होता है जिससे ऊर्जा खपत को कम करने की गुंजाइष बहुत कम रहती है। कुछ विकासषील क्षेत्रों के ग्रामीण भागों में विद्युतीकरण धीमा रहा है। इस प्रकार यहां ऊर्जा की दमित मांग अधिक है । यह तो मानना होगा कि जनसंख्या वषद्धि तथा दूसरी गम्भीर समस्याओं को कुछ हद तक नियन्त्रित करते हुए कुछ–न–कुछ विकास तो होगा ही अतः इन क्षेत्रों में ऊर्जा खपत की दर में विकसित देषों की तुलना में तीव्रता से वषद्धि होगी। यह कितनी तेजी से होगा यह नहीं कहा जा सकता। यह निष्चित है कि इन देषों में ऊर्जा की बढ़ती हुई कीमत तथा आर्थिक विकास के स्तर के बीच तीव्र किया–प्रतिक्रिया होगी ।

सारणी क्र. 1 रू विश्व ऊर्जा उत्पादन तथा उपयोग में विकासषील देषों का योगदान

उत्पादन प्रतिषत

उपभोग प्रतिषत

वर्श

ऊर्जा स्त्रोत

ओपेक इतर

ओपेक इतन

1970

तेल

7.0

11.5

1976

9.3

14.1

1970

प्राकृतिक गैस

3.4

3.2

1976

4.3

3.7

1970

कोयला

21.0

21.0

1976

2593

25.4

ऊर्जा

136

1970

जलीय तथा

14.8

14.8

1976

नाभिकीय षक्ति

16.5

16.5

1970

1976

अन्य सभी प्रकार की

11.1

13.4

ऊर्जा

13.4

15.8

स्त्रोतरू यू.एन. सीरिज जनरल क. 21 वर्ल्ड एनर्जी सप्लाय 1972–76 धन की उपलब्धता तथा आयात ही मुख्यतः इस विकास की राह में प्रमुख अवरोध प्रस्तुत करते हैं । ओपेक इतर देषों के ग्रुप में भारत, ब्राजी तथा अर्जेटाइना सम्पूर्ण ऊर्जा खपत का 50 प्रतिषत प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः ये देष ही भविश्य की ऊर्जा मूल्य वषद्धि से प्रभावित होंगे। इनमें से अनेक देष औद्योगीकरण द्वारा अपनी जनता की दषा सुधारने के कठिन प्रयत्न कर रहे हैं। इनके आयात खर्च का अधिकांष तेल के आयात पर खर्च हो रहा है।

वर्तमान ऊर्जा संकट को मुख्य रूप से प्राकृतिक साधनों के तीव्र उपयोग पर प्रतिबन्ध की संज्ञा दी जा सकती हे । इसका प्रभाव विकसित देषों की अपेक्षा विकासोन्मुख देषों पर अधिक पड़ा है। इन देषों में औद्योगिक प्रगति षिथिल हो

गयी है, अन्न उत्पादन वांछनीय स्तर तक नहीं हो पा रहा है, पेट्रोलियम के भाव आकाष को छूते नजर आते हैं, घरेलू स्तर पर भी इसका प्रभाव पड़ा है, अर्थव्यवस्था में भारी व्यवधान पड़ा है।

अन्य विकासषील देषों की भांति भारत को भी आर्थिक विकास के वांछित स्तर को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा की आवष्यकता है । यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देष में ऊर्जा के उत्पादन और खपत में भारी वषद्धि हुई है फिर भी अन्य देषों की तुलना में यह अब भी काफी कम है। हमारी ऊर्जा की प्रति व्यक्ति औसत खपत, जो कि किसी भी देष की समषद्धि और विकास का प्रतीक है, विश्व की औसत खपत का आठवां हिस्सा है। यदि भारत की तुलना केवल एषियाई देषों से की जाये तो भी स्थिति उत्वाहवर्धक नहीं प्रतीत होती और यह स्थिति तब है जबकि पहली, योजनाकाल से ही ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास षुरू कर दिये गये थे ।

वर्तमान स्थिति रू

भारत और विश्व के संदर्भ में जीवाष्मीय / अजीवाष्मीय ईंधनों की 1987 की स्थिति सारणी–2 में दी गई है। इन आंकड़ों में प्रमाणित संसाधन, प्राप्त किये जा सकरने वाले संसाधन और आगे अनुमानित संसाधन षामिल है। विश्व तथा भारत सहित कुछ देषों की ऊर्जा की कुल आवष्यकता (पारम्परिक ईंधन के रूप में) और प्रति व्यक्ति ऊर्जा की आवष्यकता सारणी – 3 में दिखायी गयी है। कनाडा में प्रति व्यक्ति ऊर्जा की आवष्यकता 11 से 13 अरब जूल है । भारत में 1970–71 से 1991–92 तक व्यावसायिक ऊर्जा के आंकड़े सारणी–4 में दिये गये हैं। सभी स्त्रोतों का हिस्सा सारणी –5 में दिया गया है। कोयले का हिस्सा सबसे अधिक 60 प्रतिषत है, इसके बाद तेल (करीब 30 प्रतिषत) और पन बिजली (34) का स्थान है ।

सारणी क्रमांक–2 रू जीवाष्म ईंधन, परमाणु और जल–विद्युत संसाधन – 1987

(जहां अलग से बतायी गयी है, उन्हें छोड़कर मात्राएं दस लाख मीट्रिक टन में है)

ऊर्जा तथा पर्यावरण

आज ऊर्जा के साथ एक अन्य पहलू भी जुड़ा है, वह है पर्यावरण । ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोतों में एक भी ऐसा नहीं है जिसका पर्यावरण पर कुछ–न–कुछ प्रभाव न पड़ता हो । विषेशज्ञों के अनुसार कोयला और तेल जैसे जीवाश्म ईंधन पारिस्थितिक असंतुलन और पर्यावरण का कारण बनते हैं। पेट्रोलियम पदार्थों के जलने से वायु प्रदूशण होता है। गैर व्यावसायिक ऊर्जा क्षेत्र क्षेत्र में

लकड़ी, कृशि से निकले व्यर्थ तथा मिट्टी के तेल इत्यादि के जलने से पर्यावरण प्रदूशण होता है ।

भारत एक कृशि प्रधान देष है। यहां की 80 प्रतिषत जनता गांवों में रहती है। यहां घरों में जलाये जाने वाले ईंधन जैसे गोबर के कण्डे, लकड़ी घासफूस, कचरा आदि से बहुत वायु प्रदूशण होता है । ये ईंधन जब जलते हैं तो अनेक गैसें निकलती हैं जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाय ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाईड्रोजन सल्फाइड तथा अमोनिया । साथ ही होते हैं ईंधन के अधजले या बिना जल कण । हमारे देष में लगभग साढ़े पांच लाख गांव हैं, जहां प्रतिवर्श 7दृ7 करोड़ टन ईंधन जलाया जाता है। इसमें 2.35 करोड़ टन लकड़ी तथा षेश गोबर तथा अन्य कृशि पदार्थ होता है। इससे होने वाले प्रदूशण की गंभीरता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। एक अध्ययन के अनुसार गुजरात में महिलाएं खाना पकाने के दौरान अपनी श्वास द्वारा वायु में निलंबित जितने कणों को अपने षरीर के अंदर लेती हैं वह विश्व स्वास्थ्य संगठन ॅवतसक भ्मंसजी व्तहंदपेंजपवद ॅ.भ्.) द्वारा निर्धारित सुरक्षित मानक की तुलना में 40 गुना अधिक है ।

सायकल, बैलगाड़ी तथा तांगों को छोड़कर लगभग षेश सारे यातायात के साधनों में कोयला, पेट्रोल या डीजल जैसे ईंधन उपयोग में लाये जाते हैं । इन वाहनों में ईंधन के जलने से जो धुआं निकलता है उसमें कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड तथा लेड जैसी प्रदूशक गैंसें तथा पदार्थ उपस्थित रहते हैं। दुनिया भर में 50 करोड़ मोटर वाहन सड़कों पर दौड़ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार बड़े महानगरों में कारें तथा दो पहिये वाले वाहन प्रतिदिन 400 टन तक प्रदूशक पदार्थ वायु छोड़ रहे हैं ।

यद्यपि ताप बिजलीघरों में सभी सावधानियां बरती जाती हैं और समय–समय पर इनमें सुधार किये गये हैं, लेकिन इनसे निकलने वाले धुएं से होने वाले प्रदूशण की समस्या अब भी विद्यमान है । कतिपय विषेशज्ञों की राय में पन – बिजली बनाने के बड़े बांध भी परिस्थितिकीय असंतुलन का कारण बनते हैं। बांध की वजह से बड़ी संख्या में हटाए जाने वाले लोगों के बसाने की समस्या पैदा हो जाती है। उन्हें परियोजना स्थल से दूसरे स्थान पर ले जाना पड़ता है। परिणामस्वरूप लोगों को बहुत परेषानियां उठानी पड़ती हैं। इसी आधार पर टिहरी बांध और सरदार सरोवर जैसी बड़ी परियोजनाओं का पर्यावरणवादियों द्वारा विरोध किया जा रहा है। कभी–कभी राजनैतिक कारणों से भी परियोजनाओं

को लागू करने में असामान्य देरी होती है और लागत में भारी बढ़ोतरी हो जाती है। इसी प्रकार परमाणु बिजलीघरों से संबंधित समस्याएं भी हैं । यद्यपि इन बिजलीघरों की सुरक्षा के लिए अनेक सावधानियां बरती जाती हैं; फिर भी विश्व के विभिन्न भागों में कई ऐसी बड़ी दुर्घटनाएं घटी हैं जिनसे जनसामान्य के मन में विकिरण के खतरे के बारे में बड़ा भय समाया हुआ है। अमेरिका के थ्री मोइल आइलैण्ड के नाभिकीय विद्युत संयंत्र तथा रूस के चेर्नोबल स्थित रिएक्टर में हुई दुर्घटनाएं ऐसे ही उदाहरण हैं ।

ऊर्जा विकल्प तथा समाधान

ऊर्जा की कमी का प्रभाव जीवन के सभी पक्षों पर पड़ता है । इस कारण कोई भी देष, चाहे वह विकसित हो, विकासषील हो या अल्पविकसित हो, ऊर्जा समस्या के प्रति उदासीन होकर नहीं रह सकता। आयात की बढ़ती कीमतों तथा भविश्य में भी इनके बढ़ते जाने की संभावना के परिप्रेक्ष्य में तेल उत्पादक इतर देष तेल आयात के विकल्पों की तलाष में लगने पर मजबूर हुए हैं । वैज्ञानिकों ने दो दिषाओं में अपना ध्यान केन्द्रित किया है रू– नये ऊर्जा स्त्रोतों की खोज और उपयोग विधियां ढूंढना तथा दूसरा पारम्परिक रूप से उपलब्ध स्त्रोतों के रूप में सौर ऊर्जा, तापीय ऊर्जा, जैविक परिवर्तन से उत्पन्न जैव ऊर्जा, अवषेश उत्पाद से ऊर्जा प्राप्ति आदि को महत्व दिया जा रहा है ।

पर्यावरण संरक्षण की आवष्यकता को दृश्टि में रखते हुए ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोतों का महत्व और भी बढ़ गया है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जैव ऊर्जा तथा लघु पन बिजली परियोजनाओं से पर्यावरण प्रदूशण की समस्या उत्पन्न नहीं होती। हमारे लिए तो इन साधनों का उपयोग करना और भी महत्वपूर्ण है । गैर–परम्परागत साधनों से ऊर्जा उत्पन्न करके भविश्य की बढ़ती हुई आवष्यकताओं को भी पूरा करने में काफी हद तक मदद मिलेगी। बस, आवष्यकता है इस दिषा में प्रभावी प्रयास करने की ।

ऊर्जा का संरक्षण भी महत्वपूर्ण है। ऊर्जा के महत्व के बावजूद आज भी हम देष में इसका पूरा सदुपयोग नहीं कर पाते और फलस्वरूप इसका काफी अपव्यय हो रहा है, जिसे रोकना होगा । अतः इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। ऊर्जा उत्पादन, आपूर्ति और उपयोग के लिए कुशल प्रौद्योगिकी का विकास भी जरूरी है। इसमें संदेह नहीं कि इस समय हमारे समक्ष कई बाधाएं हैं पर फिर भी यदि दृढ़ निष्चय से प्रयास किये जाएं तो काफी हद तक ऊर्जा की कमी की समस्या से निपटा जा सकता है ।

लघुउत्तरीय प्रष्न

1. ऊर्जा क्या है ? ऊर्जा के विभिन्न प्रकारों का विवरण देते हुए, ऊर्जा के महत्व को दर्षाईये ।

2.विकासषील देषों में ऊर्जा का संकटष विशय पर निबंध लिखिए ।

3. भारत के सन्दर्भ में ऊर्जा के वर्तमान संकट का विवरण देते हुए इस समस्या के समाधान के उपायों की जानकारी दीजिए ।

4. ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोतों के महत्व पर निबंध लिखिए द्य

5. ऊर्जा एव विश्व अर्थव्यवस्था के परस्पर संबंधों की विवेचना कीजिए ।

6. पांच ऐसी मषीनों के नाम बतायें जो न ऊर्जा के एक रूप को दूसरे रूप में बदलती है न ऊर्जा प्रदान करती हैं।

7. प्राकृतिक षक्तियों के इस्तेमाल से चलने वाली पांच मषीनों के नाम लिखिए ।

8. सभ्यता का इतिहास प्रमुख रूप से मानव द्वारा ऊर्जा दोहन की कहानी है।ष इस कथन को स्पश्ट कीजिए ।

9.ऊर्जा के पारम्परिक स्त्रोत कौन–कौन से हैं ?

10. ऊर्जा के गैर पारम्परिक स्त्रोतों से आप क्या समझते हैं ?

11. ऊर्जा कितने प्रकार की होती है।

12. षकिसी देष का विकास उसकी ऊर्जा खपत से सीधे–सीधे संबंधित होता है।ष इस कथन को स्पश्ट कीजिए ।

13. ओपेक देष क्या है ?

14. ष्भारत में परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों के परिवर्द्धन को षासकीय नीति में उचित स्थान नहीं मिला है। इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

15. ऊर्जा और पर्यावरण का संबंध स्पश्ट कीजिये ।

16. ष्ऊर्जा स्त्रोतों का अनाप–षनाप दोहन और पर्यावरण का नाष विकास की ओर अग्रसर मानवीय समाज की नियति हैष। इस कथन को स्पश्ट कीजिए ।

17. वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों से आप क्या समझते हैं ?

18. संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए

1. सौर ऊर्जा

2. ऊर्जा के मात्रक

3.ऊर्जा और विकास ।

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

सही उत्तरों का चयन कर उनके आगे का चिन्ह लगाइए ।

1. ऊर्जा के बारे में यह कथन असत्य है

(क) यह जगह नहीं घेरता

(ख) इसको देख नहीं सकते

(ग) इसकी छाया नहीं पड़ती

(घ) यह वस्तुओं की भांति द्रव्य है

2. ऊर्जा की खपत का विश्वस्तरीय औसत है –

(क) 3 किलोवाट

(ग) 2 किलोवाट

(ख) 4 किलोवाट (घ) 1 किलोवाट

3. भारत में प्रति व्यक्ति ऊर्जा की आवष्यकता है

(क) 8 से 12 अरब जूल

(ख) 10 से 12 अरब जूल

(ग) 11 से 13 अरब जूल

(घ) 9 से 11 अरब जूल

हमारी ऊर्जा की प्रति व्यक्ति औसत खपत विश्व की औसत खपत का हिस्सा है

(क) सातवां

(ग) पांचवा

5. विकासषील देषों की संख्या है.

(क) 117

(ग) 115

(ख) आठवां

(घ) नौंवा

(ख) 119 (घ) 125

षक्तिमानता का अर्थषास्त्र

डॉ. ओंकार षरण श्रीवास्तव

संयुक्त राश्ट्र (यू.एन.ओ) के विकास कार्यक्रम (यू. एन. डी. पी.) में यह जोर दिया गया है कि अब तो प्रति व्यक्ति आय बढ़ना, न्यूनतम आवष्यकताओं की पूर्ति किया जाना व आर्थिक विकास को परम्परागत रूप से देखते रहना पर्याप्त नहीं है । विभिन्न देष गरीबी हटाने की बात करते हैं गरीबी को समूल नश्ट करने की बात नहीं करते, अर्थात् गरीबी की मात्रा में कमी करने की बात करते हैं उसे सम्पूर्ण रूप से समाप्त करने की बात नहीं करते । आर्थिक षक्तिमानता लाने के लिए निम्न बिन्दुओं पर जोर दिया जाता है।

1. सर्वप्रथम है परिसम्पत्ति विहीनता जिसे दूर करना चाहिए । भारत में 20 प्रतिषत लोग ऐसे हें जिनके पास कोई भी उत्पादक परिसम्पत्ति नहीं है और लगभग 15 प्रतिषत इनमें से अर्थात् 2000 में लगभग 15 करोड़ व्यक्ति ऐसे हैं जिनके पास घरेलू परिसम्पत्ति के नाम पर भी कुछ नहीं है। एक कहावत है –

श जिसका जितना दामन है उतनी उसको सौगात मिलती हैश अर्थात् भीख मांगने और लेने के लिए भी दामन के कपड़े का आकार महत्वपूर्ण होता है, ग्रामीण क्षेत्रों में भू–सुधारों के बावजूद भी कृशि में लगे व्यक्ति भूमिहीन हैं अर्थात् कृशि मजदूर हैं बेनामी रूप से आज भी लोग हजारों हैक्टेयर के मालिक हैं, आर्थिक इजारेदार बहुत ही असमान भू–वितरण को उत्पन्न किये हैं । भारत के भू–सुधारों के बारे में विश्व में सबसे प्रसिद्ध बात यह है कि उन्हें क्रियान्वित नहीं किया गया ।

द्य

षासकीय विकास कार्य का फल सम्पत्ति की मालकियत पर निर्भर रहता है । अगर सिंचाई सुविधाओं का विकास हो और बिजली भी मुफ्त मिले तो भूमिहीन व्यक्ति को तो कोई लाभ न होगा । आदिवासियों से उनके वन–सम्पदा दोहन केम अधिकार छीनने से उनकी षक्तिमानता में कमी आयी ।

2. षक्तिमानता का दूसरा आधार या विपणन योग्य योग्यता है । षिक्षा जिसे औपचारिक षिक्षा कहते हैं या परम्परागत षिक्षा वह अब बेमायने है । भारत में षिक्षकों को स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयों तक रोजनदारी दर से या ठेका मजदूरी दर, अब षिक्षक नियुक्त होते हैं । कम्प्यूटरीकरण से साधारण ऑफिस में

बाबूगिरी भी अब नहीं मिलेगी । अतः ग्रामीण व षहरी क्षेत्रों में हुनरमंद योग्यताएं जिनकी बाजार मांग हो उन्हें प्राप्त करने से कार्य / रोजगार मिल सकेगा ।

आय में वषद्धि, बिना भौतिक उत्पादन में वषद्धि से, मुद्रा स्फीति बढ़ती रही है। क्षमताओं व योग्यताओं हके विकास से उत्तम किस्म की वस्तुएं व सेवाओं के उत्पादन से बाजार विकसित होगा तथा मुद्रा स्फीति भी रूकेगी। अमर्त्य सेन ने भी 2001 में पुनः इसी बात पर बल दिया कि सम्पूर्ण भारत केरला मॉडल अपनाये ताकि पिछड़ेपन, टोना–टोटकाबाजी, रूढ़िवाद, जातिवाद, वर्गभेद, असमानता की मनोवषत्ति तथा विचारधारा जैसे मॉडल के अनुसार कोई कार्य अधिक समय तक नहीं चल सकता क्योंकि हर मॉडल स्थैकि होकर रह जाता है । षिक्षा को बहुलतावाद सहिश्णुता को पुश्ट करना होगा। वर्ग संघर्श आर्थिक मुद्दों पर षान्तिप्रिय हो, जातिवाद के आधार पर हिंसक संग्रह किसी को षक्तिमानता प्रदान नहीं कर सकता। आतंकवाद सषक्तिकरण का अस्त्र नहीं है । षिक्षा – प्रषिक्षण से असमानतायें दूर होती हैं, असमानतायें कम होने से षिक्षा प्रषिक्षण बढ़ता है । फिर व्यक्ति स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर हर सेवा व सुविधा को हक से मांगते हैं व उन्हें मिलती है। कम से कम 12 वर्शों की मायनेदार प्रषिक्षण / षिक्षा षक्तिमानता के लिए उस समय उपयुक्त होगी जबकि वह संसाधनों के अनुरूप आय कमाने व रोजगार प्राप्त करने के अवसर दें। ग्रामीण क्षेत्रों में कृशि ठीक से कैसे करें, वन षक्तिमानता का अर्थषास्त्र व फल कैसे बढ़ायें यह षिक्षा राजनीति कैसे पढ़ें व करें इससे ज्यादा जरूरी है।

3. आरक्षण रू षक्तिमानता के लिए अपर्याप्त रू सम्पूर्ण विश्व ने भारत की आरक्षण पद्धति को परखा। इससे षक्तिमानता आयी तो परन्तु सभी के हिस्से में नहीं आयी । मध्यप्रदेष में (जिसमें वर्तमान छत्तीसगढ़ भी षामिल था) आदिवासियों के पास अपनी जनसंख्या के अनुपात से कुछ अधिक ही जमीन थी परन्तु आरक्षण के लाभ उठाकर वे सभी षक्तिमान न हो सके। इसके चार कारण मुख्य थे

1. आरक्षित वर्ग के व्यक्ति सुविधावादी वर्ग बनने के बाद स्वयं लाभान्वित होते रहे । किन्तु उन्होंने

अपने मूल वर्ग को अलक्षित रहने दिया ।

2. आरक्षण से षक्तिमानता दिलाने की योजना को दूशित राजनीति में आर्थिक विकास का वास्तविक कार्यक्रम नहीं बनने दिया ।

3. आरक्षण के चलते विषिश्ट योग्यता एवं क्षमता प्राप्त करने की संभावनाएं प्रभावित हुई ।

4. जिन्होंने आरक्षण की सुविधा दी उन्होंने ही षासकीय रोजगार कम कर दिये एवं भर्ती नियम ऐसे जटिल बनाए कि 50 वर्श बीत जाने के बाद भी आरक्षित सभी पद भी नहीं भरे जा सके हैं।

यू.एन.डी.पी. तो आरक्षण जैसी योजना को मात्र आर्थिक सहायता के रूप में मानती है।

5. विकास का सामाजिक अंकेक्षण तथा उसमें पारदर्षिता के अभाव में अभी विकास की राषियों का झिरन और गबन आम बात बन गयी है। सड़कें हैं नहीं परन्तु उनके बनाने व रख–रखाव के खर्चों का किताबों में इंद्राज है एवं भुगतान होता रहा है । जनसाधारण की षक्तिमानता के लिए खुले दरबार में पारदर्षिता व जवाबदारी होना तथा सार्वजनिक दण्ड होना चाहिए। यू.एन. डी. पी. इसे देष के कानूनी दायरे में रखना चाहती है, भीड़ तंत्र का न्याय नहीं परन्तु वह न्याय पद्धति नहीं जहां बड़े लोग हमेषा छूट जाते हैं ।

6. वैयक्तिक, सामूहिक, सहकारी, कल्याणकारी (सरकारी) एवं स्वयंसेवी संगठनों की गतिविधियां समन्वित रूप से क्रियान्वित हों। 2001 के सूखे में केवल अलवर को छोड़कर, राजस्थान के सभी जिले सूखे की चपेट में थे । जनता के प्रयास से जल संग्रहण करके सम्पूर्ण जिलों के ग्रामीण इलाकों की स्थिति ही बदल दी । वह पूरा जिला सरसब्ज है। पानी है तो आदानों का प्रयोग हो सकता है।

श्सरकार या किसी की भी, कहीं भी, कैसे भी आलोचना करने का अधिकार षक्तिमानता नहीं है । वह तो विकास में भागीदार होना और गरीबी व पिछड़ेपन की पुरानी खायी पाटना है ।

7. षक्तिमानता प्राप्त करने की कीमतें भी चुकाना होंगी । कम बच्चों को पैदा करना तथा दो बच्चों को पैदा करने का मान बदला – मूल्य रूप में स्वीकारना होगा। अंचल क्षेत्रीय विशमतायें दूर करना, षक्तिमानता बढ़ाने का कार्य है। यह गरीबी में समानता नहीं, बल्कि समृद्धि में समानता का प्रष्न है। भारत में समृद्धि, ग्रामीण औद्योगीकरण से नहीं बल्कि उद्योगों के ग्रामीणीकरण से आयेगी । जन समूह द्वारा, उनके स्थानों पर उनके लिए संगत उत्पादन कर सब लोगों का एक साथ विकास, षक्तिमानता देगा ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. षक्तिमानता का अर्थषास्त्रष् इसका क्या अभिप्राय है ?

2. गरीबी हटाना एवं गरीबी उन्मूलन में क्या अंतर है ?

3. आर्थिक षक्तिमानता लाने के लिए मुख्यतः कौन–सी बातों पर जोर दिया जाता है ?

4. परिसम्पत्ति विहीनता को दूर करने से षक्तिमानता कैसे प्रभावित होती है, समझाइए ।

5. विपणन योग्य योग्यता षक्तिमानता में किस तरह प्रभावी है ?

6. ‘आरक्षण षक्तिमानता के लिए अपर्याप्त हैष् । इस कथन को स्पश्ट करें ।

7. विकास का सामाजिक अंकेक्षण तथा उसमें पारदर्षिता कैसे ष्षक्तिमानताष् के लिए आवष्यक है ?

8. वैयक्तिक, सामूहिक, सहकारी, कल्याणकारी सरकारी एवं एन.जी.ओ. का एक साथ क्रियान्वित होना क्यों आवष्यक है ?

9. ष्आर्थिक षक्तिमानता प्राप्त करने के लिए कुछ कीमतें चुकानी पड़ती हैं।ष् इस कथन को स्पष्ट करे ।

10.गरीबी में समानता नहीं, समषद्धि में समानताष् इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य का चिन्ह लगाइए ।

यू.एन.ओ. के यू.एन.डी.पी. में अब प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाना न्यूनतम आवष्यकताओं की पूर्ति व आर्थिक विकास को परम्परागत रूप से देखना पर्याप्त है । (सत्य / असत्य)

विभिन्न देष गरीबी हटाने की बात करते हैं गरीबी उन्मूलन की नहीं । (सत्य / असत्य) षासकीय विकास कार्य का फल सम्पत्ति की मालकियत पर निर्भर करता है । (सत्य / असत्य) आरक्षित वर्ग के व्यक्ति सुविधावादी बनने के बाद स्वयं लाभान्वित होते रहे, उन्होंने अपने मूल वर्ग से सम्बन्ध ही न रखे । (सत्य / असत्य)

भारत में समषद्धि उद्योगों के ग्रामीणीकरण से नहीं ग्रामीण औद्योगीकरण से आयेगी ।

(सत्य / असत्य)

(ख) – 1

प्रतिवेदन

किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना के सोद्देष्य सूक्ष्म निरीक्षणोपरांत तैयार किया गया वह सम्पूर्ण विवरण प्रतिवेदन कहलाता है, जो उस व्यक्ति, वस्तु एवं घटना की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत करने के साथ–साथ उपादेयता का भी परीक्षण प्रस्तुत कर रहा हो ।

विभिन्न संस्थाओं, संगठनों, समितियों की सामूहिक या इनके अन्तर्गत आने वाले विभागों एककों (इकाइयों), एकांषों की साधारण या विषेश बैठकें समय–समय पर होती रहती हैं। इन बैठकों में जो कुछ भी विचार–विमर्ष होता है अथवा इन संस्थाओं, संगठनों, समितियों या इनके विभागों–उपविभागों द्वारा किसी खास आयोजन में जो कुछ भी किया – कलाप किए जाते हैं उनका प्रतिवेदन तैयार करना कई कारणों से आवष्यक होता है – कभी विचार–विमर्ष के बाद लिए गए निर्णयों के क्रियान्वयन के लिए, कभी आगामी बैठक में पूर्व बैठकों का ब्यौरा प्रस्तुत करने के लिए और कभी बैठक या आयोजन का ही लेखा–जोखा प्रस्तुत करने के लिए।

कभी–कभी किसी संस्थान, संगठन या उसकी एक इकाई या व्यक्ति विषेश के क्रियाकलापों की जांच–पड़ताल या छानबीन करने के लिए उसकी कार्य–पद्धति में सुधार लाने के लिए, उसके कार्य–क्षेत्र के विस्तार के लिए, उसकी उपयोगिता या उपादेयता की परख के लिए जांच समिति या जांच अधिकार नियुक्त किए जाते हैं । ऐसी जांच समिति या ऐसे जांच अधिकारी पूरी जांच–परख करने के बाद अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं

इस प्रकार प्रतिवेदन विभिन्न प्रकार के सोद्देष्य प्रस्तुत किए गए विवरणात्मक लेखे –जोख का समेकित नाम है, जिसका उपयोग चालू व्यवस्था की समीक्षा करके उसे और कारगर बनाने के लिए किया जाता है ।

उदाहरण –

दंगे की घटना की जांच के लिए गठित समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन विगत 14 दिसम्बर 1986 महीने कपलज में हुए जातीय दंगे के कारणों की जांच के लिए (1)

श्री फिलिप टकर, 14 वां मकान, सत्ताइसवां रासता और श्री नसीरूद्दीन अहमद, छब्बीसवां मकान, 17 वां रास्ता, कभी हमपेषे और दोस्त थे। तीन वर्श पहले श्री टकर की पुत्री मारिया और श्री नसीरूद्दीन के पुत्र एजाज के बीच पैदा हुए प्रेम–संबंध के कारण दोनों व्यक्तियों में आपसी तनाव पैदा हो गया। छः महीनों तक दोनों पक्ष गुप्त रूप से एक दूसरे को हानि पहुंचाने का प्रयास करते रहे। इसमें श्री टकर का पलड़ा भारी रहा और उन्होंने व्यावसायिक नाकाबंदी कर श्री नसीरूद्दीन के कारोबार को लगभग चौपट कर दिया । आर्थिक दबाव के कारण एजाज को कुवैत जाना पड़ा, जहां उसे काफी अच्छी नौकरी मिल गई । इस तरह मामला दब–सा गया ।

साल भर बाद एजाज छुट्टियां मनाने आया और वापसी में मारिया को भी कुवैत ले गया तो श्री टकर बिफर उठे। उन्होंने श्री नसीरूद्दीन के उपर हर प्रकार से धावा बोल दिया, गुण्डों से उन्हें बुरी तरह पिटवाया और उनकी दुकान में आग लगवा दी। अंततोगत्वा श्री नसीरूद्दीन को षहर छोड़कर भागना

पड़ा ।

सात माह पहले एजाज ने कुवैत से तीन लाख रूपये आने पिता को भेजे । धनबल के आते ही श्री नसीरूद्दीन में बदला लेने की भावना जाग पड़ी उन्होंने बाहर से बड़ी संख्या में गुण्डों को एकत्रित किया और एक दिन श्री टकर के ऊपर पुरजोर हमला बोल दिया । इस प्रकार दो व्यक्तियों की रंजिष दो सम्प्रदायाओं के झगड़े के रूप में उभर आई ।

(2) इधर नगरपालिका के चुनाव में श्री नसीरूद्दीन के नेतष्त्व में उनके सम्प्रदाय के लोग एक पार्टी के साथ मैदान में उतरे तो श्री टकर के नेतष्त्व में दूसरे सम्प्रदाय वाले दूसरी के साथ सामने आए । साम्प्रदायिकता ने राजनैतिक पार्टियों की आड़ ले ली और दंगे को राजनैतिक रंग मिल गया ।

(3) दो सम्प्रदायों, फिर दो पार्टियों के विद्वेश में दोनों सम्प्रदायों से संबद्ध विदेषी राश्ट्रों ने भी योगदान दिया। कुवैत से एजाज ने जोड़ा तो टकर ने अमेरिका से गुहार की। दोनों सम्प्रदायों के लिए गोपनीय ढंग से आर्थिक सहायताएं आने लगी। चूंकि विदेषी मुद्रा का आगमन हमारी आर्थिक व्यवस्था के लिए वरदान है, अतः सरकारी नीतियां भी इस टकराव को धार देने में सहायक रहीं। इस प्रकार दो व्यक्तियों का झगड़ा दो राश्ट्रों के बीच चलने वाले षीतयुद्ध के रूप में बदल गया, जिसकी अभिव्यक्ति इस दंगे के रूप में हुई है ।

(4) दंगे में जिन औजारों का प्रयोग हुआ, उनमें अधिकांष देषी ही थे, विदेषी औजारों में केवल पिस्तौल का प्रयोग हुआ है, जिसकी तस्करी आसानी से हो सकती है।

(5) दंगे में कुल मिलाकर 7 आदमी मरे, 34 घायल हुए । मष्तकों में 5 और घायलों में 17 स्थानीय नहीं थे, बल्कि बाहर से आये थे । इससे सिद्ध होता है कि दंगा करने वाले अधिकांष लोग भाड़े पर बाहर से लाए गए और दंगा सुनियोजित रूप से करवाया गया ।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में निम्नलिखित सिफारिषें की जाती हैं

(क) दोनों सम्प्रदायों में सद्भाव बढ़ाने के लिए वरिश्ठ लोगों को आगे आना चाहिए। सबसे पहले श्री कर एवं श्री नसीरूद्दीन को मिलाना चाहिए ।

(ख) विदेषों से पैसे की आमद को नियंत्रित करना चाहिए ।

(ग) व्यक्तिगत मसालों को हल करने के लिए पुलिस को प्रारम्भ में ही ठोस कदम उठाना चाहिए था । अब पुलिस को सतर्क रहना चाहिए और कानून तथा व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पैसे और राजनीति के दबाव में नहीं आना चाहिए ।

(घ) दंगा पीड़ित लोगों की सरकार स्तर पर कोई सहायता नहीं करना चाहिए। इससे लोग दंगा करने वाले और कराने वाले दोनों को भूलकर सरकार को दोश देने लगते हैं। जनता को जागष्त करना चाहिए कि वह दंगा करने वालों और

दिसम्बर तक ग्वालियर में तानसेन के मकबरे पर आयोजित तानसेन समारोह में हुई। बारह दिसम्बर की षाम को मध्यप्रदेष षासन के इस आयोजन का प्रारम्भ कुछ औपचारिकताओं से हुआ । उद्घाटन केन्द्रीय संचार मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने किया और अध्यक्षता प्रदेष के मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा ने। इस अवसर पर प्रमुख गायक श्री निवृत्ति बुआ सरनायक को तानसेन सम्मान से पुरस्कृत किया गया और संचार मंत्री ने तानसेन पर एक डाक टिकट भी जारी किया ।

इस औपचारिकता के बाद संगीत की पहली सभा का षुभारम्भ श्री कृश्णाराम चौधरी के षहनाई वादन से हुआ। वातावरण आध्यात्मिक था । इस वातावरण में राग वागेश्वरी की पूर्वी धुन ने रसज्ञ श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया । उसके बाद सम्मानित वयोवृद्ध गायक निवृत्ति बुआ सनायक ने राग ललिता – गौरी में उत्कृ श्ट गायन प्रस्तुत किया। उनके बाद ध्रुपद के मूर्धन्य गायक पंडित सियाराम तिवारी ने तानसेन के ही राग दरबारी में आलाप के साथ अपना गायन षुरू किया। उन्होंने ध्रुपद षैली के नाद विस्तार में "किनहूं न पायो पार" गाकर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। समापन धमार षैली में निबद्ध श खेलत होरी ष्याम बिहारी" से किया। इस प्रथम रात्रि का सबसे अधिक मुग्ध करने वाला कार्यक्रम दिल्ली की ही एक अपेक्षाकृत कम जानी–पहचानी गायिका श्रीमती जे. राव का गायन था । उन्होंने राग झिंझोटी में ख्याल शसांवरो मन भावो" और खमाज में एक ठुमरी प्रस्तुत की। बाद में उसी में एक तराना गाया । बोल थे शसांवरे सलोने से लागे नैन तब से पड़त नाहीं जिया को चौनश । सच तो यह है कि श्रीमती राव ने अपने कंठलालिल्य से श्रोताओं का दिल जीत लिया। हर श्रोता की जबान पर उनके ही गायन की चर्चा थी ।

अगले दिन सुबह दूसरी सभा की षुरूआत श्री बलजीत सिंह के तार षहनाई वादन से हुई । तार षहनाई का अपना आनंद है। बलजीत ने तार षहनाई पर अहीर भैरव मिश्र भैरवी में धुन प्रस्तुत की । षहनाई और तबला वादन की संगत रोमांचकारी थी । इस युवा कलाकार में काफी संभावनाएं हैं। उनके बाद श्रीमती दालिया राहुल ने दादरा, टप्पा और ठुमरी में निश्णात होने का परिचय अपने कंठ संगीत से दिया। "नाहक गवनवा कराये, तुम सांची कहो रैन आगे कहां रे धायेश के गायन के लिए इनकी बहुत सराहना की गई । अन्त में उन्होंने कबीर दास का भजन शभजो रे भैया राम गोविन्द हरीश गाकर श्रोताओं का मन मोह लिया । उनके बाद मंच पर श्री लक्ष्मण पंडित पधारे। उन्होंने ख्याल, टप्पा और तराना गायन षैली पर अपने विलक्षण अधिकार का परिचय दिया । ख्याल के बोल थे शभली बजाई रे तू ने बांसुरिया बनवारी"। षुद्ध सारंग में उन्होंने शतू है निराकार श और भैरवी में तुलसीदास का भजन शतब मैं जानकीनाथ कहाऊं" गाकर गायन

में अपनी प्रौढ़ता का परिचय दिया । इस दूसरी सभा का समापन श्री उमाषंकर मिश्र के गायन के साथ हुआ द्य आपने गुजरी तोड़ी बजाई और सितार वादन में दुर्लभ दक्षता प्रदर्षित की। उन्होंने तीन साल में दो गत के अलावा अन्य मनोहारी रचनाएं भी प्रस्तुत की घटनाओं, समारोहों आदि का प्रतिवेदन 148

समारोह की तीसरी सभा में श्री राजन मिश्र और श्री साजन मिश्र का गायन विषेश उल्लेखनीय रहा। बनारस घराने के इन दोनों भाइयों ने ख्याल, टप्पा, तराना और भजन गायकी में काफी नाम कमाया है इनकी गायकी ने रसज्ञ श्रोताओं का मन मोह लिया । स्वर पवित्रता लिए हुए थे। इसी सभा में श्रीमती एन. राजन ने राग दरबारी बेलवादन में प्रस्तुत किया। श्रीमती राजन ने अपने बेलवादन में रागों की षुद्धता का विषेश ध्यान रखा था। देष की इस अग्रणी बेलवादिका ने वस्तुतः अपनी मनोहारी लयकारी से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया था।

रविवार की सुबह समारोह की चौथी सभा में उस्ताद षमषुद्दीन देसाई फरीदी ने अपनी रूद्र वीणा वादन से श्रोताओं के कानों में रस घोल दिया । किराना घराने के इस संगीताकार की बारीकी काबिले तारीफ थीं। रूद्रवीणा का नियंत्रण मुग्ध करने वाला था । इसी सभा में श्रीमती सुमन चौधरी ने राग गुजरी तोड़ी में ख्याल ”जा – जार रे पथिकवा श गाकर श्रोताओं को आनंदित कर दिया। श्रीमती चौधरी का स्वर संतुलन गजब का था । उन्होंने अपने गायन का समापन राग भैरवी में टप्पा और ठुमरी श्ष्याम न आए श गाकर किया। ग्वालियर के ही पंडित कृशण राव षंकर पंडित की इस षिश्या का गायन वस्तुत5 रसविभोर करने वाला था। इस सभा के अन्त में युवा कलाकार श्री बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत किया । तबले पर उनका साथ उस्ताद फैय्याज खां दे रहे थे। बुद्धादित्य ने सबसे पहले राग दरबारी प्रस्तुत किया। उनके वादन से लगा कि इन दिनों वह अपनी पूरी तैयारी पर हैं। उनके वादन की सफाई से ऐन्द्रिक सौंदर्य की अनुभूति होती थी। बाद में सितार और तबले की जुगलबंदी ने कई बार रसिक श्रोताओं को संगीत के सागर में आकण्ठ डूबो दिया । उस्तार फैय्याज खां के तबला वादन की सफाई ऐसी थी कि कई बार श्रोताओं के मुख से वाह-वाह के स्वर निकल पड़े।

इस समारोह की पांचवी और अंतिम सभा सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी । इस दिन उस्ताद जिया मोईनुद्दीन खां डागर ने बीन बजाकर श्रोताओं को आनंद के सागर में गोते लगवाए तो पंडित जसराज ने अपने गायन से आध्यात्मिक रस वर्शा की

। ख्याल गायन में टप्पे की तान एवं स्वरों का लगाव पंडित जी की अपनी विषेशता है। वह अपने गायन में स्वयं तो डूब ही जाते हैं, श्रोताओं को भी गोते लगवाते हैं । इस विलक्षण स्वर साधक की गायकी अंतर्चेतना को झंकृत कर देती है । इस सभा का समापन उस्ताद अमजद अली खां के सरोद वादन से हुआ । अमजद अली खां इस समय देष के श्रेश्ठतम सरोदवादक हैं । उनकी इकहरी तान, गमक और लय चातुर्य इतना चमत्कृत करने वाला है कि श्रोता झूम उठते हैं। ग्वालियर में ही जन्मे इस युवा कलाकार में वस्तुतः अद्‌भुत खमता है । मध्यरात्रि के बाद तक चलने वाली इस अंतिम सभा में अमजद अली खां सरोद बजाते रहे और श्रोता उसकी लय पर झूमते रहे । यह अवर्णनीय रसवर्शा थी ।

अन्त में इतना और कहना होगा कि इस समारोह में भाग लेने वाले श्रोता, आम श्रोताओं से अलग संगीतप्रेमी थे। तीनों दिन सुबह–षाम पंडाल खचाखच भरा रहा। संगीत की लहरे उठती – गिरती रहीं । मन भीगता रहा और श्रोता झूमते रहें ऐसे संगीत प्रेमी श्रोता भी कम देखने को मिलते हैं ।

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. प्रतिवेदन किसे कहते हैं ?

2. प्रतिवेदन का स्वरूप लिखिए ।

3. प्रतिवेदन की क्या उपयोगिता (उपादेयता) है ?

4. अपने महाविद्यालय के वार्शिकोत्सव का एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए ।

5. किसी दुर्घटना की जांच का प्रतिवेदन तैयार कीजिए ।

(ख) – 1

विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र

निमंत्रण पत्र औपचारिक पत्रों के अन्तर्गत आते हैं। षादी–विवाह, नामकरण, भोज, विभिन्न संस्कार, उद्‌घाटन समारोह, उत्सव आदि के साथ प्रत्येक व्यक्ति एवं परिवार जुड़े रहते हैं। साथ ही एक सामाजिक आचरण से भी लोग बंधे रहते हैं अतः ऐसे संस्कार सम्बन्धी कार्यक्रमों से जुड़े निमंत्रण पत्रों तथा किसी समारोह, संगोश्ठी के उद्‌घाटन या समापन से सम्बद्ध, किसी सम्मेलन में भाग लेने से सम्बद्ध, व्याख्यान देने या सुनने से सम्बद्ध औपचारिकता के निर्वाह की अपेक्षा से जुड़े निमंत्रण पत्रों की आवष्यकता लगातार बनी रहती है।

निमंत्रण पत्रों के उद्देष्य (नामकरण, षादी, व्याख्यान, स्वागत आदि), स्थान, तिथि एवं समय, निमंत्रण देने वाला तथा उसके सहयोगियों के नाम आदि का स्पश्ट

उल्लेख रहता है। उन स्पश्टताओं के अभाव में निमंत्रण पत्र अधूरे तथा संदेहास्पद हो जाते हैं ।

उदाहरण –

(1) उद्घाटन समारोह का निमंत्रण–पत्र

महोदय,

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (सील)

म.प्र. उच्च्च षिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित बी. ए. प्रथम वर्श (हिन्दी) के भाशा विशयक नवीन पाठ्यक्रम का प्रषिक्षणदृकार्यक्रम स्नातकोत्तर हिन्दी एवं भाशा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया जा रहा है । यह कार्यक्रम दिनांक 10 जनवरी 1987 से लेकर दिनांक 14 जनवरी 1987 तक सम्पन्न होगा। कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 10 जनवरी 1987 को पूर्वान्ह 10. 30 बजे हिन्दी के सुप्रसिद्ध भाशाविद् डॉ. हरदेव बाहरी करेंगे। इसकी अध्यक्षता दर्षन विभाग की आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ. छाया राय करेंगी ।

इस अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थित हैं ।

स्थान विश्वविद्यालय समिति कक्ष

(2) विशय विषेशज्ञ के रूप में निमंत्रण–पत्र

क ख ग निदेषक षिक्षकदृप्रषिक्षणदृकार्यक्रम

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (म. प्र.)

दिनांक 26.11.1986

क्रमांक–3/अ का. / 86–87 बिलासपुर

प्रति, डॉ. राम रमण पाण्डेय,

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,

आगरा

विशय : इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आधार पाठ्यक्रम पर षिक्षकों को प्रषिक्षण देने हेतु । महोदय,

एकीकृत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत म.प्र. उच्च षिक्षा अनुदान आयोग के निर्देषानुसार आधार पाठ्यक्रम में हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के षिक्षकों को प्रषिक्षण दिया जाता

है, इस हेतु विश्वविद्यालय द्वारा गठित समिति ने आपको विशय विषेशज्ञ के रूप में आमंत्रित करने की अनुषंसा की है । षिक्षकों को प्रषिक्षण षीतकालीन अवकाष में 26.12.86 से 30.12.86 तक दिया जाना है ।

अतः कृपया उक्त दिवसों में षिक्षकों को प्रषिक्षण देने हेतु अपनी स्वीकृति भेजकर अनुगष्हीत करें । इसके लिए यात्रा–व्यय के अतिरिक्त आयोग के नियमानुसार मानदेय भी दिया जाएगा

भवदीय

क ख ग

कुल सचिव

(3) नवनिर्मित भवन के उद्घाटन उत्सव का निमंत्रण–पत्र

35– ए, प्रोफेसर कालोनी, भोपाल,

आदरणीय वाजपेयी जी,

सादर नमस्कार ।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनांक 30 नवम्बर, 91 को मेरे नव–निर्मित कार्यालय का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया है। उद्घाटनकर्ता सुप्रसिद्ध विद्वान, मानस मर्मज्ञ प्रो. पुरूशोत्तमजी दीक्षित रहेंगे। इस षुभ अवसर पर आप सपरिवार (बाई, अरूण, दीपक, श्रद्धा, रजनी व बच्चों सहित) सादर आमन्त्रित हैं । पधारने की कृपा करें। आपका आषीर्वाद हमारा मार्ग प्रषस्त करेगा । हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी ।

पाने वाले का नाम व पता –

श्री राम चन्द्र वाजपेयी

3, सुभाश नगर इन्दौर

(4) विवाहोत्सव का निमंत्रण–पत्र

स्नेहकांक्षी

क ख ग

लघु उत्तरीय प्रष्न

1. निमंत्रण पत्र से क्या अभिप्राय है ?

2. निमंत्रण पत्रों की क्या आवष्यकता है ?

3. निमंत्रण पत्र कितने प्रकार के होते हैं। किसी एक निमंत्रण पत्र का प्रारूप देकर समझाइए ?

4. निमंत्रण के महत्व के बारे में लिखिए द्य

5. निमंत्रण पत्र की भाषा के बारे में लिखिए

चयनात्मक उत्तरों वाले प्रष्न

निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य

का चिन्ह लगाइए ।

1. निमंत्रण पत्र पत्रों के अन्तर्गत आते हैं

(क) अनौपचारिक

(ख) औपचारिक

(ग) सामाजिक

2. सभी निमंत्रण पत्र में नहीं होता

(क) समय

(ग) तिथि

(घ) पारिवारिक

(ख) स्थान

(घ) छायाचित्र

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. **डॉ. उदय नारायण तिवारी** – ***हिंदी भाषा का विकास***
2. **डॉ. नामवर सिंह** – ***हिंदी का भविष्य***
3. **डॉ. रामविलास शर्मा** – ***भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा***
4. **डॉ. गंगा प्रसाद विमल** – ***समकालीन हिंदी भाषा विमर्श***
5. **डॉ. नित्यानंद तिवारी** – ***हिंदी भाषा: संरचना और प्रयोग***
6. **डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी** – ***हिंदी साहित्य और समाज***
7. **डॉ. मैनेजर पांडेय** – ***हिंदी में समकालीन विमर्श***
8. **डॉ. अशोक वाजपेयी** – ***भाषा, संस्कृति और आधुनिकता***
9. **डॉ. गणेश देवी** – ***भाषा और भाषिक राजनीति***
10. **डॉ. परमानंद श्रीवास्तव** – ***समसामयिक हिंदी और चुनौतियाँ***
11. **डॉ. रविकांत** – ***मीडिया और हिंदी भाषा***
12. **डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल** – ***भाषा, समाज और विचार***
13. **डॉ. कैलाश चंद्र मिश्र** – ***हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका***

MATS UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS: Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 Toll Free ODL MODE : 81520 79999, 81520 29999

Website: www.matsodl.com